



अव्यक्त वाणी संकलन (1969 - 2015)

भाग 3

विकर्माजीत भव ।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क : बी.के निलिमा (मो. 9869131644, 8422960681)



शुभकामनाएँ एवं आशीर्वचन



परम आदरणीय नलिनीदीदी जी,
संचालिका, घाटकोपर सबझोन

जैसे भक्ति मार्ग में चित्र दिखाया है - सागर के बीच साँप के ऊपर श्रीकृष्ण नाच रहे हैं। उसने साँप को भी जीता। उसके सिर पर पाँव रखकर नाचा। कितने भी जहरीले साँप हों लेकिन मैं आत्मा उन पर भी विजय प्राप्त कर नाच करने वाली हूँ। यही श्रेष्ठ शक्तिशाली स्मृति हमें समर्थ बना देगी। कैसी भी भयानक परिस्थिति हो, माया के विकराल रूप हों, सम्बन्ध सम्पर्क वाले परेशान करने वाले हों, वायुमण्डल कितना भी जहरीला हो लेकिन कृष्ण बनने वाली आत्मायें ऐसी स्थिति रूपी स्टेज पर सदा नाचती रहती हैं। कोई प्रकृति वा माया वा व्यक्ति, वैभव उसे हिला नहीं सकता। माया को ही अपनी स्टेज वा शैया बना देगे।

विकर्माजीत स्टेज बच्चों की अन्तिम स्टेज है। शक्ति अर्थात् विकर्माजीत। विकर्माजीत अर्थात् विकर्म, विकल्प के त्यागी, विकल्प या व्यर्थ संकल्प-मुक्त स्टेज। विकर्माजीत स्टेज बनने के लिए ' **विकर्माजीत भव** ' यह पुस्तिका अनमोल मार्गदर्शन करेगी।

इस पुस्तिका में विविध प्रकार के आकर्षण, अधीनता, आसक्तियाँ, अलबेलापन, आलस्य, अवगुण, अनेक प्रकार के बोझ, चंचलता, बंधन, थकावट, लगाव, उदासी, मनमत, परमत, विविध प्रकार की कम्प्लेटस, माया के रूप, कमजोरी आदि बिदूओं का सकलन किया है। उन पर अटेन्शन देकर महीन चैकिंग से अपने आपको चेक कर सकते हैं कि कोई कमी है? अगर कमी है तो उसके क्या कारण हैं। क्योंकि कारण को समझेंगे तो निवारण कर सकेंगे।

यह पुस्तिका व्यर्थ संकल्प, विकार, भय, चिंता और कमजोरियों पर विजय प्राप्त कर सदा बेफिकर, मायाजीत, निश्चिन्त, निर्भय, विकर्माजीत बनकर चढ़ती कला में जाने की सहयोगी बनेगी।

बापदादा के वरदानों की स्मृति के साथ विजयी भव, सफलतामूर्त भव, विकर्माजीत भव!!!
धन्यवाद।

विकर्माजीत भव ।

भाग - 3

सूची

क्र.	कमी	पृष्ठ क्र.
1	बंधन	1-41
2	भारीपन/बोझ	42-87
3	चिंता	88-98
4	चोरी	99-105
5	कम्प्लेंट	106-120
6	डिफेक्ट और ईफेक्ट	121-129
7	देह अभिमान	130-149

1. बन्धन

18.1.69(दिव्य सन्देश)... सभी बच्चों के उल्हनों के पत्र सूक्ष्मवतन में पाये। रेस्पान्ड में बापदादा बच्चों को कह रहे हैं कि ड्रामा की भावी के बन्धन में सर्व आत्मायें बंधी हुई हैं। सभी पार्ट बजा रही हैं। उसी ड्रामा के मीठे-मीठे बन्धन अनुसार आज अव्यक्त वतन में पार्ट बजा रहा हूँ। सभी बच्चों को दिल व जान सिक व प्रेम से अव्यक्त रूप से याद प्यार बहुत-बहुत-बहुत स्वीकार हो। जैसे बाप की स्थिति है वैसे बच्चों को स्थिति रखनी है"।

18.1.69(दिव्य सन्देश)... बाबा ने सम- झाया कि यह है ड्रामा का बन्धन। ब्रह्मा भी ड्रामा के सर्कल से निकल नहीं सकते। ड्रामा के बन्धन से कोई भी निकल नहीं सकते। उस जीरो प्याइन्ट तक पहुँच गये लेकिन फिर भी ड्रामा का मीठा बन्धन है।

4.3.69.. .. अब अपने को आपे ही ज्यादा में ज्यादा सर्विस के बन्धन में बांधना चाहिए। इस एक बन्धन से ही अनेक बन्धन मिट जाते हैं।

17.4.69.. .. कोई कहते बन्धन हटा दो। लेकिन यह तो एक बन्धन हटेगा दूसरा आयेगा। तन का बन्धन हटेगा, मन का आयेगा, धन का आयेगा, सम्बन्ध का आयेगा फिर क्या करेंगे? यह खुद नहीं हटेंगे। अपनी ही शक्ति से हटाने हैं।

15.9.69.. .. जैसे कोई भी चीज को आग में डालने के बाद उसका रूप-रंग सब बदली हो जाता है। तो जो भी थोड़े आसुरी गुण, लोक-मर्यादायें हैं, कर्मबन्धन की रस्सियां, ममता के धागे जो बंधें हुए हैं उन सबको जलाना है। इस स्नेह की अग्नि में पड़ने से यह सब छूट जायेगा। तो अपना रंग-रूप सब बदलना है। इस लगन की अग्नि में पड़कर परिवर्तन लाने के लिए तैयार हो?

20.10.69.. .. चाहे पिछले संस्कार चाहे, पिछले कर्म बन्धन चाहे, वर्तमान की भूले जो भी कुछ होता है। उनका मूल कारण अपनी विस्मृति है। अपनी विस्मृति के कारण यह सभी व्यर्थ बातें सहज को मुश्किल बना देती है। स्मृति रहने से क्या होगा? जो लक्ष्य रख करके आये हो स्मृति सम्पूर्ण विस्मृति असम्पूर्ण। विस्मृति है तो बहुत ही विघ्न है। और स्मृति है तो सहज और सम्पूर्णता। जो बातें सुनाई अगर इस स्मृति को मजबूत करते जाओ तो विस्मृति आपे ही भाग जायेगी।

20.10.69.. .. साकारी से निराकारी बनने में कितना समय लगता है? जबकि अपना ही असली स्वरूप है फिर भी सेकेण्ड में क्यों नहीं स्थित हो सकते?

अब तक कर्मबन्धन? क्या अब तक भी कर्मबन्धन की आवाज सुनते रहेंगे? जब यह पुराना शरीर छोड़ देंगे तब तक कर्मबन्धन सुनते रहेंगे।

20.12.69... जैसे शुरू में एलान निकला कि सभी को इस घड़ी मैदान में आना है जैसे अब भी रिपीट जरूर होना है लेकिन भिन्न-भिन्न रूप में। ऐसे नहीं कि बापदादा भविष्य को जानकर के आप सभी को एलान देवे और आप इस सर्विस के बन्धन में भी अपने को बांधे हुए रखो। बन्धन होते हुए भी बन्धन में नहीं रहना है। कोई भी आत्मा के बन्धन में आना यह निर्बन्धन की निशानी नहीं है। इसलिए सभी को एक बात पास विद आनर्स की पास करनी है, जो बातें आपके ध्यान में भी नहीं होंगी, स्वप्न में भी नहीं होंगी उन बातों का एलान निकलना है। और ऐसे पेपर में जो पास होंगे वही पास विद आनर्स होंगे।

जैसे कोई भी बन्धन से मुक्त होते जैसे ही सहज रीति शरीर के बन्धन से मुक्त हो सके, नहीं तो शरीर के बन्धन से भी बड़ा मुश्किल मुक्त होंगे। फाइनल पेपर है अन्त मती सो गति। अन्त में सहज रीति शरीर के भान से मुक्त हो जाये यह है पास विद आनर की निशानी।

18.1.70... .. बापदादा वर्तमान के साथ भविष्य भी जनता है। तो भविष्य कर्मबन्धन की रस्सियों को काटना अप्पना कर्तव्य है। अगर कोई भी रस्सी टूटी हुई नहीं होती है तो मन की खिंचावट होती रहती है। इसलिए रस्सियाँ कटवाने के लिए ठहरे हैं। रस्सियाँ अगर टूटी हुई है तो फिर कोई रुक सकता है? छुटा हुआ कब कोई भी बंधन में रुक नहीं सकता।

7.6.70... .. - जितना-जितना अपने को सर्विस के बन्धन में बांधते जायेंगे तो दूसरे बन्धन छूटते जायेंगे। आप ऐसे नहीं सोचो कि यह बन्धन छूटे तो सर्विस में लग जाँ। ऐसे नहीं होगा। सर्विस करते रहो। बन्धन होते हुए भी अपने को सर्विस के बन्धन में जोड़ते जाओ। यह जोड़ना ही तोड़ना है।

कर्म बन्धन शक्तिशाली है या यह ईश्वरीय बन्धन? ईश्वरीय बन्धनों को अगर तेज़ करो तो कर्म बन्धन आपे ही ढीले हो जायेंगे। बन्धन से ही बन्धन कटता है। जितना ईश्वरीय बन्धन में बंधेंगे उतना कर्म बन्धन से छूटेंगे। जितना वह कर्मबन्धन पक्का है तो उतना ही यह ईश्वरीय बन्धन को भी पक्का करो तो वह बन्धन जल्दी कटेगा।

6.8.70... .. रचयिता जब चाहे रचना का आधार ले जब चाहे तब रचना के आधार को छोड़ दे ऐसे रचयिता बने हो? जब चाहें तब न्यारे, जब चाहें तब प्यारे बन जाँ। इतना बन्धनमुक्त बने हो? यह देह का भी बन्धन है। देह अपने बन्धन में बांधती है। अगर देह बन्धन से मुक्त हो तो यह देह बन्धन नहीं डालेगी। लेकिन कर्तव्य का आधार समझ आधार को जब चाहें तब ले सकते हैं ऐसी प्रैक्टिस चलती रहती है? देह के भान को छोड़ने अथवा उससे न्यारा होने में कितना समय लगता है? एक सेकण्ड लगता

है? सदैव एक सेकण्ड लगता है व कभी कितना, कभी कितना। (कभी कैसी, कभी कैसी) इससे सिद्ध है कि अभी सर्व बन्धनों से मुक्त नहीं हुए हो। जितना बन्धनमुक्त उतना ही योगयुक्त होंगे और जितना योगयुक्त होंगे उतना ही जीवनमुक्त में उंच पद की प्राप्ति होती है। अगर बन्धनमुक्त नहीं तो योगयुक्त भी नहीं। उसको मास्टर सर्वशक्तिमान कहेंगे? देह के सम्बन्ध और देह के पदार्थों से लगाव मिटाना सरल है लेकिन देह के भान से मुक्त हो जाना। जब चाहें तब व्यक्त में आर्यें। ऐसी प्रैक्टिस अभी जोर शोर से करनी है। ऐसे ही समझें जैसे अब बाप आधार ले बोल रहे हैं वैसे ही हम भी देह का आधार लेकर कर्म कर रहे हैं। इस न्यारेपन की अवस्था प्रमाण ही प्यारा बनना है। जितना इस न्यारेपन की प्रैक्टिस में आगे होंगे उतना ही विश्व को प्यारे लगने में आगे होंगे। सर्व स्नेही बनने के लिए पहले न्यारा बनना है। सर्विस करते हुए, संकल्प करते हुए भी अपने को और दूसरों को भी महसूसता ऐसी आनी चाहिए कि यह न्यारा और अति प्यारा है। जितना जो स्वयं न्यारा होगा उतना औरों को बाप का प्यारा बना सकेंगे।

31.12.70.. .. सेवा में किसी भी प्रकार की सेवा चाहे प्रवृत्ति की, चाहे व्यवहार की, चाहे ईश्वरीय सेवा, प्रवृत्ति चाहे लौकिक सम्बन्ध हो, कर्मबन्धन के आधार से सम्बन्ध हो लेकिन प्रवृत्ति में सेवा करते परिवर्तन संकल्प यही करो - मरजीवा जन्म हुआ अर्थात् लौकिक कर्मबन्धन समाप्त हुआ। कर्मबन्धन समझ कर नहीं चलो। कर्मबन्धन, कर्मबन्धन सोचने और कहने से ही बन्ध जाते हो। लेकिन यह लौकिक कर्मबन्धन का सम्बन्ध अब मरजीवे जन्म के कारण श्रीमत के आधार पर सेवा के सम्बन्ध का आधार है। **कर्मबन्धन नहीं, सेवा का सम्बन्ध है।** सेवा के सम्बन्ध में वैरायटी प्रकार की आत्माओं का ज्ञान धारण कर, सेवा का सम्बन्ध समझ करके चलेंगे तो बन्धन में तंग नहीं होंगे।

21.1.71.. .. बांधेली स्वतन्त्र रहने वालों से अच्छी हैं। स्वतन्त्र अलबेले रहते हैं। बांधेली की लगन अच्छी रहती है। याद को पावरफुल बनाओ। याद कम होगी तो शक्ति नहीं मिलेगी। याद में रहते यह व्यर्थ न सोचो कि सर्विस नहीं करती। उस समय भी याद में रहो तो कमाई जमा होगी। यह सोचने से याद की पावर कम होगी। **बन्धन से मुक्त करने के लिए अपनी चलन को चेन्ज करो। जो घर वाले देखें कि यह चेन्ज हो गई है। जो कड़ा संस्कार है वह चेन्ज करो। वह अपना काम करें आप अपना काम करो। उनके काम को देख घबराओ नहीं। जितना वो अपना काम फोर्स से कर रहे हैं, आप अपना फोर्स से करो। उनके गुण उठाओ कि वह कैसे अपना कर्तव्य कर रहे हैं, आप भी करो। सारी सृष्टि की आत्माओं की भेंट में कितनी आत्माओं को यह भाग्य प्राप्त हुआ है। तो**

। खुशी तो नयनों में, मस्तक में, होठों में झलकती रहनी चाहिए। जो है ही खुशी के खज़ाने का मालिक, उसके बालक हो। तो खज़ाने के अधिकारी तो हो ना।

जितना समीप सम्बन्ध में आने वाले होंगे वह स्पष्ट अनुभव करेंगे। ऐसी अनुभवी आत्माओं को कर्मबन्धन तोड़ने में देरी नहीं लगेगी। नकली चीज़ को छोड़ना मुश्किल नहीं होता है।

5.3.71.. ..जैसे आपकी प्रवृत्ति में कई आवश्यक बातें सामने आती हैं तो प्रबन्ध करते हो ना। इस रीति अपने को स्वतन्त्र बनाने के लिए भी कोई न कोई प्रबन्ध रखो। कोई साथी बनाओ। आपस में भी एक-दो दैवी परिवार वाले सहयोगी बन सकते हैं। लेकिन तब बनेंगे जब इतना एक- दो को स्नेह देकर सहयोगी बनायेंगे। **प्लैन रचना चाहिए कैसे अपने बन्धन को हल्का कर सकती हैं। कई चतुर होते हैं तो अपने बन्धनों को मुक्त करने के लिए युक्ति रचते हैं।** ऐसे नहीं कि प्रबन्ध मिले तो निकल सकती हूँ। प्रबन्ध अपने आप करना है। अपने आप को स्वतन्त्र करना है। दूसरा नहीं करेगा।

योगयुक्त होकर ऐसा प्लैन सोचने से इच्छा पूर्ति के लिए प्रबन्ध भी मिल जायेंगे। सिर्फ निश्चय-बुद्धि होकर अपने उमंग को तीव्र बनाओ। उमंग ढीला होता है तो प्रबन्ध भी नहीं मिलता, मददगार कोई नहीं मिलता। इसलिए हिम्मतवान बनो तो मददगार भी कोई न कोई बन जायेंगे। अब देखेंगे कि अपने को स्वतन्त्र बनाने की कितनी शक्ति हरेक ने अपने में भरी है।

13.3.71.. .. जो समझते हैं कि सर्व बन्धनमुक्त बने हैं वह हाथ उठायें। सर्विस के कारण निमित्त मात्र रहे हुए हैं, वह दूसरी बात है। लेकिन अपना बन्धन खत्म किया है? ऐसे समझते हैं कि अपने रूप से बन्धनमुक्त होकर के सिर्फ निमित्त मात्र सर्विस के कारण इस शरीर में कर्तव्य अर्थ बैठे हुए हैं? (मैजारिटी ने हाथ उठाया) जिन्होंने भी हाथ उठाया वह कभी संकल्पमात्र भी संकल्प वा शरीर के, परिस्थितियों के अधीन वा संकल्प में थोड़े समय के लिए भी परेशानी वा उसका थोड़ा भी लेशमात्र अनुभव करते हैं वा उससे भी परे हो गये हैं? **जब बन्धनमुक्त हैं तो मन के वश अर्थात् व्यर्थ संकल्पों के वश नहीं होंगे। व्यर्थ संकल्पों पर पूरा कन्ट्रोल होगा। परिस्थितियों के वश भी नहीं होंगे। परिस्थितियों का सामना करने की सम्पूर्ण शक्ति होगी। जिन्होंने हाथ उठाया वह ऐसे हैं? तो इन बन्धनों में अभी बंधे हुए हैं ना। जो बन्धनमुक्त होगा उनकी निशानी क्या होगी? जो बन्धनमुक्त होगा वह सदैव योगयुक्त होगा। **बन्धनमुक्त की निशानी है योगयुक्त****

13.3.71.. .. शक्तिरूप आत्मा के लिए कोई बन्धन काटना मुश्किल होगा? बन्धन-मुक्त होने के लिए योगयुक्त होना है। और योगयुक्त बनने से स्नेह और सहयोग युक्त

बन जाते हैं। तो ऐसे बन्धनमुक्त बनो। सहज-सहज करते भी कितना समय लग गया है।

ऐसी स्थिति अब जरूर होनी चाहिए। जो बन्धनमुक्त की स्थिति सुनाई कि शरीर में रहते हुए सिर्फ निमित्त ईश्वरीय कर्तव्य के लिए आधार लिया हुआ है। अधीनता नहीं। निमित्त आधार लिया है। जो निमित्त आधार शरीर को समझेंगे वह कभी भी अधीन नहीं बनेंगे। निमित्त आधारमूर्त ही सर्व आत्माओं के आधारमूर्त बन सकते हैं।

साथी और साक्षी - ये दो शब्द प्रैक्टिस में लाओ तो यह बन्धनमुक्त की अवस्था बहुत जल्दी बन सकती है। सर्वशक्तिमान का साथ होने से शक्तियाँ भी सर्व प्राप्त हो जाती हैं। और साथ-साथ साक्षी बनकर चलने से कोई भी बन्धन में फंसेंगे नहीं। तो बन्धनमुक्त हुए हो ना। इसके लिए ये दो शब्द सदैव याद रखना। वह योग, वह सहयोग। दोनों बातें आ गईं। अब ऐसा पुरुषार्थ कितने समय में करेंगे? बिल्कुल बन्धनमुक्त होकर के साक्षीपन में निमित्तमात्र इस शरीर में रहकर कर्तव्य करना है।

18.3.71.. .. । जो योगयुक्त होगा वह बन्धन- मुक्त जरूर होगा। योगयुक्त का अर्थ ही है देह के आकर्षण के बन्धन से भी मुक्त। जब देह के बन्धन से मुक्त हो गये तो सर्व बन्धन मुक्त बन ही जाते हैं। तो समर्पण अर्थात् सदा योगयुक्त और सर्व बन्धन मुक्त। यह निशानी अपनी सदा कायम रखना।

18.3.71.. .. बन्धनमुक्त बनने की इच्छा है लेकिन पहले देह-अभिमान का बन्धन तोड़ना है। फिर सर्व बन्धनमुक्त आपेही बन जायेंगे। समझा? अभी यही कोशिश करना।

19.8.71.. .. अपने सर्व बन्धनों को जानते हो ना कि किस-किस प्रकार के बन्धन हैं जो योगयुक्त होने में रूकावट डालते हैं? जैसे सर्व दुःखों की लिस्ट निकालते थे, वैसे भिन्न-भिन्न बन्धनों की लिस्ट निकालो। उस लिस्ट को सामने रखते हुए चेक करो कि कितना बन्धनों से मुक्त हुए हैं और कितने बन्धन अभी तक रहे हुए हैं। इससे अपने सम्पूर्ण योगयुक्त अर्थात् सम्पूर्ण स्टेज को परख सकते हो कि कितना सम्पूर्ण स्टेज के नजदीक पहुंच पाये हैं। बन्धनों की लिस्ट सामने लाओ, कितने प्रकार के बन्धन होंगे? इनकी लिस्ट निकलेगी तो जाल माफिक दिखाई देगी। कितनी महीन तारों की जाल बनाते हैं। तो अब जज करो कि कितने बन्धन रह गये हैं और कौन-कौनसे रह गये हैं? कोई बड़े- बड़े बन्धन हैं वा छोटे-छोटे बन्धन हैं? ज्यादा मेहनत किन बन्धनों को चुकत् करने में लगती है? सभी से कड़े से कड़ा बन्धन कौनसा है? (देह-अभिमान)यह तो सभी बन्धनों का फाउण्डेशन है। लेकिन प्रत्यक्ष रूप में सभी से कड़ा बन्धन कौनसा है? लोक-लाज तो बहुत छोटी बात है, यह तो फर्स्ट स्टेप है। सभी से बड़े ते बड़ा अन्तिम बन्धन है श्रीमत के साथ अपने ज्ञान-बुद्धि को मिक्स करना अर्थात् अपने को समझदार

समझकर श्रीमत को अपनी बुद्धि की कमाल समझकर काम में लगाना। जिसको कहेंगे ज्ञान-अभिमान अर्थात् बुद्धि का अभिमान। यह सभी से सूक्ष्म और बड़ा बन्धन है। इस बन्धन से क्रास किया तो मानो सभी से बड़े ते बड़ा जम्प दिया। कोई भी बात में अगर कोई मधुर शब्दों में भी कमजोरी का इशारा दे और उसी समय कोई संस्कार, स्वभाव वा सर्विस के लिए बुराई आकर करते हैं; तो दोनों ही बातें सामने रखते हुए सोचो कि ज़रा भी वृत्ति में वा दृष्टि में वा सूरत में फर्क आता है? ज़रा भी फर्क नहीं आये, ज़रा भी हिम्मत-उल्लास में अन्तर नहीं आये - इसको कहा जाता है इस बन्धन को क्रास करना। अगर मुख से न बोला लेकिन सुनी हुई बात का व्यर्थ संकल्प भी चला तो इसको कहेंगे बड़े ते बड़ा बन्धन।

जो गायन है निन्दा-स्तुति, हार-जीत, महिमा वा ग्लानि में समान; अर्थात् बुद्धि में नॉलेज रहेगी कि यह हार है, यह जीत है, यह महिमा है, यह ग्लानि है, लेकिन एकरस अवस्था वा स्थिति से डगमग न हो-इसको कहा जाता है समानता। नॉलेज होते हुए भी डगमग नहीं होना - यह है विजय। तो इस कड़े बन्धन को क्रास कर लिया अर्थात् सम्पूर्ण फरिश्ता बन गय। इसके लिए मुख्य प्रयत्न कौनसा है? यह अवस्था कैसे रखें जो इस बन्धन को भी क्रास कर लें?

ज्ञान-अभिमान को कैसे क्रास करें? इसका पुरुषार्थ क्या है? आप सभी ने जो भी बातें सुनाई वह भी अटेन्शन में रखने की हैं। लेकिन साथ-साथ इस कड़े बन्धन को क्रास करने के लिए सदैव यह बातें याद रहें कि हम कल्याणकारी बाप की सन्तान हैं। जो भी देखते हैं, सुनते हैं उनमें अकल्याण का रूप होते हुए भी अपनी कल्याण की बात को निकालना है। भले रूप अकल्याण का, हार वा ग्लानि का हो, क्योंकि स्थिति को डगमग करने के कारण यह तीनों ही होते हैं। तो रूप भले यही दिखाई दे लेकिन उस अकल्याण के रूप को कल्याणकारी के रूप में ट्रॉन्सफर करने की शक्ति वा ग्लानि को भी उन्नति का रूप समझ धारण करने की शक्ति वा हार से भी आगे के लिए हजार गुणा विजयी बनने की हिम्मत, उल्लास और युक्ति निकालने की शक्ति अगर अपने पास है तो कभी भी सूरत और सीरत में उनका असर नहीं पड़ेगा। तो रहस्य क्या हुआ? कोई भी बात को वा समस्या को ट्रॉन्सफर कर ट्रान्सपेरेन्ट (पारदर्शी) बनना है अथवा अपकारी पर भी उपकारी बनना है।

26.10.71.. .. जैसे चंचल बच्चे को किसी न किसी प्रकार से कोई न कोई बन्धन में बाँधने का प्रयत्न किया जाता है - चाहे स्थूल बन्धन, चाहे वाणी द्वारा कोई न कोई प्राप्ति का आधार देकर उनको अपने स्नेह में बांधा जाता है। ऐसे बुद्धि को वा संकल्प को भी कोई न कोई बन्धनों में बाँधना पड़ेगा। वह बन्धन कौनसा? जहाँ भी बुद्धि जाती

है उसको पहले चेक करो। चेक करने के बाद जहाँ संकल्प वा वृत्ति जाती है उसी लौकिक वा देहधारी वस्तु को परिवर्तन करते हुए, इन देहधारी वा लौकिक वस्तु की तुलना में अलौकिक, अविनाशी वस्तु स्मृति में लाओ। जैसे कोई देहधारी में वृत्ति चंचल होती है, जिस सम्बन्ध में चंचल होती है वही सम्बन्ध का प्रैक्टिकल अनुभव अविनाशी बाप द्वारा करो। मानो प्रवृत्ति के सम्बन्ध में वृत्ति चंचल होती है, इसी सम्बन्ध का अलौकिक अनुभव सर्व सम्बन्ध निभाने वाले बाप से प्राप्त करो, तो जब प्राप्ति की पूर्ति हो जायेगी तो फिर चंचलता की निवृत्ति हो जायेगी। समझा? अगर सर्व सम्बन्ध और सर्व प्राप्ति एक बाप द्वारा हो जाएं तो अन्य तरफ बुद्धि चंचल होगी? तो सर्व सम्बन्धों से एक ही बड़े ते बड़ा बन्धन यही है कि अपनी चंचल वृत्ति को सर्व सम्बन्धों के बन्धन में एक बाप के साथ बांधो, तो सर्व चंचलता सहज ही समाप्त हो जायेगी। और कोई सम्बन्ध वा प्राप्ति के साधन दिखाई नहीं देंगे तो वृत्ति जायेगी कहाँ? अपने आप को ऐसे बांधो जैसे दृष्टान्त प्रसिद्ध है कि सीता को लकीर के अन्दर बैठने का फरमान था। ऐसे अपने को हर कदम उठाते हुए, हर संकल्प करते हुए बाप के फरमान की लकीर के अन्दर समझो। अगर संकल्प में भी फ़रमों के लकीर से निकलते हो तब व्यर्थ बातें वार करती हैं। तो सदैव फ़रमों की लकीर के अन्दर रहो तो सदा सेफ रहेंगे। कोई भी प्रकार के रावण के संस्कार वार नहीं करेंगे और न ही समय-प्रति-समय अपना समय इन्हीं बातों में मिटाने के लिए व्यर्थ गंवायेंगे। न वार होगा, न बार-बार व्यर्थ समय जायेगा। इसलिए अब फ़रमों को सदा याद रखो। ऐसे फरमांबरदार बनने के लिए ही भट्टी में आये हो ना। तो ऐसा ही अभ्यास करके जाना जो एक संकल्प भी फ़रमों के बिना न हो। ऐसे फरमांबरदारी का तिलक सदा स्मृति में लगा रहे। यह तिलक लगाना, फिर देखेंगे -- फ़र्स्ट नम्बर कौन आता है, इस तिलक को धारण करने में फ़र्स्ट प्राइज लेने वाला कौन होता है? अच्छा।

20.5.72... .. ज्ञानस्वरूप होने के बाद वा मास्टर नॉलेजफुल, मास्टर सर्वशक्तिवान होने के बाद अगर कोई ऐसा कर्म जो युक्तियुक्त नहीं है वह कर लेते हो, तो इस कर्म का बन्धन अज्ञान काल के कर्मबन्धन से पद्मगुणा ज्यादा है। इस कारण बन्धन-युक्त आत्मा स्वतन्त्र न होने कारण जो चाहे वह नहीं कर पाती। महसूस करते हैं कि यह न होना चाहिए, यह होना चाहिए, यह मिट जाए, खुशी का अनुभव हो जाए, हल्कापन आ जाए, सन्तुष्टता का अनुभव हो जाए, सर्विस सक्सेसफुल हो जाए वा दैवी परिवार के समीप और स्नेही बन जाएं। लेकिन किये हुए कर्मों के बन्धन कारण चाहते हुए भी वह अनुभव नहीं कर पाते हैं। इस कारण अपने आपसे वा अपने पुरुषार्थ से अनेक आत्माओं को सन्तुष्ट नहीं कर सकते हैं और न रह सकते हैं। इसलिए इस कर्मों की गुह्य गति

को जानकर अर्थात् त्रिकालदर्शा बनकर हर कर्म करो, तब ही कर्मातीत बन सकेंगे। छोटी गलतियां संकल्प रूप में भी हो जाती हैं, उनका हिसाब-किताब बहुत कड़ा बनता है। छोटी गलती अब बड़ी समझनी है। जैसे अति स्वच्छ वस्तु के अन्दर छोटा- सा दाग भी बड़ा दिखाई देता है। ऐसे ही वर्तमान समय अति स्वच्छ, सम्पूर्ण स्थिति के समीप आ रहे हो। इसलिए छोटी-सी गलती भी अब बड़े रूप में गिनती की जाएगी। इसलिए इसमें भी अनजान नहीं रहना है कि यह छोटी- छोटी गलतियां हैं, यह तो होंगी ही। नहीं। अब समय बदल गया। समय के साथ-साथ पुरुषार्थ की रफ्तार बदल गई। वर्तमान समय के प्रमाण छोटी-सी गलती भी बड़ी कमजोरी के रूप में गिनती की जाती है। इसलिए कदम-कदम पर सावधान! एक छोटी-सी गलती बहुत समय के लिए अपनी प्राप्ति से वंचित कर देती है। इसलिए नॉलेजफुल अर्थात् लाइट-हाउस, माइट-हाउस बनो। अनेक आत्माओं को रास्ता दिखाने वाले स्वयं ही रास्ते चलते-चलते रुक जाएं तो औरों को रास्ता दिखाने के निमित्त कैसे बनेंगे? इसलिए सदा विघ्न-विनाशक बनो।

22.7.72... .. सदा अपने इस स्मृति को परिवर्तन करने का पुरुषार्थ करो। मैं गृहस्थी हूँ, फलाने बन्धन वाली हूँ वा मैं फलाने जिम्मेवारी वाली हूँ - उसके बजाय अपने मुख्य 5 स्वरूप स्मृति में लाओ। जैसे 5 मुखी ब्रह्मा दिखाते हैं ना। 3 मुख भी दिखाते हैं, 5 मुख भी दिखाते हैं। तो आप ब्राह्मणों को भी 5 मुख्य स्वरूप स्मृति में रहें तो मर्ज निकल विश्व के कल्याणकारी के फर्ज में चलें जायेंगे। वह स्वरूप कोनसे हैं जिस स्मृति-स्वरूप में रहने से यह सभी रूप भूल जावें? स्मृति में रखने के 5 स्वरूप बताओ। जैसे बाप के 3 रूप बताते हो वैसे आप के 5 रूप हैं - (1) मैं बच्चा हूँ (2) गॉडली स्टूडेंट हूँ (3) रूहानी यात्री हूँ (4) योद्धा हूँ और (5) ईश्वरीय वा खुदाई-खिदमतगार हूँ। यह 5 स्वरूप स्मृति में रहें। सवेरे उठने से बाप के साथ रूह-रूहान करते हो ना। बच्चे रूप से बाप के साथ मिलन मनाते हो ना। तो सवेरे उठने से ही अपना यह स्वरूप याद रहे कि मैं बच्चा हूँ। तो फिर गृहस्थी कहाँ से आवेगी? और आत्मा बाप से मिलन मनावे तो मिलन से सर्व प्राप्ति का अनुभव हो जाये। तो फिर बुद्धि यहाँ-वहाँ क्यों जावेगी? इससे सिद्ध है कि अमृतवेले की इस पहले स्वरूप की स्मृति की ही कमजोरी है। इसलिये अपने गिरती कला के रूप स्मृति में आते हैं। ऐसे ही सारे दिन में अगर यह पाँचों ही रूप समय- प्रति-समय भिन्न कर्म के प्रमाण स्मृति में रखो तो क्या स्मृति-स्वरूप होने से नष्टोमोहा: नहीं हो जावेंगे? इसलिये बताया -- मुश्किल का कारण यह है जो सिकल को नहीं देखती हो। तो सदैव कर्म करते हुए अपने दर्पण में इन स्वरूपों को देखो कि इन स्वरूपों के बदली और स्वरूप तो नहीं हो गया। रूप बिगड़ तो नहीं गया। देखने से बिगड़े हुए रूप को सुधार लेंगे और सहज ही

सदाकाल के लिये नष्टोमोहा: हो जावेंगे। समझा? अभी यह तो नहीं कहेंगे कि नष्टोमोहा: कैसे बने? नहीं। नष्टोमोहा: ऐसे बने। 'कैसे' शब्द को 'ऐसे' शब्द में बदल देना है। जैसे यह स्मृति में लाती हो कि हम ही ऐसे थे, अब फिर से ऐसे बन रहे हैं। तो 'कैसे' शब्द को 'ऐसे' में बदल लेना है। 'कैसे बने' इसके बजाये 'ऐसे बने', इसमें परिवर्तन कर लो तो जैसे थे वैसे बन जावेंगे। 'कैसे' शब्द खत्म हो ऐसे बन ही जावेंगे।

16.5.74.. .. बन्धन-मुक्त ही योग-युक्त हो सकता है। यदि कोई भी स्वभाव, संस्कार, व्यक्ति अथवा वैभव का बन्धन अपनी तरफ आकर्षित करता है, तो बाप की याद की आकर्षण सदैव नहीं रह सकती। किसी के भी वश होते समय, उस आत्मा के प्रति यही शब्द कहा जाता है कि, यह 'वशीभूत' है। वशीभूत होना, यह भी पाँच भूतों के साथ-साथ राँयल रूप का भूत है। जैसे भूतों की प्रवेशता से अपना स्वरूप, अपना स्वभाव, अपना कर्तव्य, और अपनी शक्ति भूल जाती है, वैसे ही किसी बात के वशीभूत होने से, यही रूपरेखा बनती है। वशीकरण मन्त्र देने वाले कभी भी वशीभूत नहीं हो सकते। तो अब यह चैक करो कि कहीं वशीभूत तो नहीं हो?

30.6.74.. .. आत्मा को निराकारी व अव्यक्त स्टेज से व्यक्त में लाने का कारण क्या होता है? एक कर्मों का बन्धन, दूसरा सम्बन्ध का बन्धन, तीसरा व्यक्त सृष्टि के पार्ट का बन्धन और देह का बन्धन-चोला तैयार होता है और आत्मा को पुराने से नये में आकर्षित करता है-तो इन सब के बन्धनों को सोचो। स्थापना के पार्ट का जो बन्धन है, वह व्यक्त से अव्यक्त रूप में और ही तीव्र गति से हो रहा है। इस कल्प के अन्दर अब अन्य देह के आकर्षण का बन्धन नहीं, देहधारी बन कर्म-बन्धनों में आने का बन्धन समाप्त कर लिया। जब सर्व-बन्धनों से मुक्त आत्मा बन गई, तो यह व्यक्त देह व व्यक्त देश आत्मा को खींच नहीं सकते। जैसे साइन्स द्वारा भी स्पेस में चले जाते हैं और धरनी के आकर्षण से परे हो जाते हैं, तो धरनी उनको खींच नहीं सकती। ऐसे ही जब तक नये कल्प में, नये जन्म और नई दुनिया में पार्ट बजाने का समय नहीं आया है, तब तक यह आत्मा स्वतन्त्र है और वह व्यक्त-बन्धनों से मुक्त है। समझा?

2.2.75.. .. वर्तमान समय-प्रमाण पुरुषार्थ की गति चिन्तन के बजाय चिन्ता के स्वरूप में होनी चाहिए। सेवा के विशेष प्रोग्राम तो बनाते हो, दिन-रात चिन्ता भी रहती है कि कैसे सफल करें और उसके लिए भी दिन-रात समान कर देते हो। लेकिन यह चिन्ता सुख स्वरूप चिन्ता है। अनेक प्रकार की चिन्ताओं को मिटाने वाली यह चिन्ता है। जैसे सर्व- बन्धनों से छूटने के लिए एक शुभ-बन्धन में स्वयं को बाँधते हो, इस बन्धन का नाम भले ही बन्धन है लेकिन बनाता यह निर्बन्धन ही है। ऐसे ही इसका नाम चिन्ता

हैं लेकिन प्राप्ति बाप द्वारा वर्से की है। ऐसे ही इस चिन्ता से सदा-सन्तुष्ट, सदा-हर्षित और सदा कमल-पुष्प समान रहने की स्थिति अथवा स्टेज सहज बन जाती है।

2.2.75.. .. स्वयं का स्वयं ही शिक्षक बनकर जब तक स्वयं को इस बन्धन में नहीं बाँधा है, तब तक अन्य आत्माओं को भी सर्व-बन्धनों से सदा के लिये मुक्त नहीं कर पाओगे। समझा?

26.10.75.. .. टीचर्स स्वतन्त्र हैं, कोई कर्म-बन्धन नहीं सिर्फ सेवा का बन्धन है। वह बन्धन, बन्धन नहीं, लेकिन बन्धन-मुक्त करने वाला है। जब सब बातों में स्वतन्त्र हो, तो टीचर्स की बेहद की बुद्धि होनी चाहिए।

5.2.77... .. ज्ञान का फल अर्थात् परमात्म-ज्ञानी का मुख्य लक्षण - हर संकल्प में, बोल में, कर्म में, सम्पर्क में मुक्ति और जीवन्मुक्ति की स्टेज होगी जिसको न्यारा और प्यारा कहते हैं। वह स्टेज है 'जीवन्मुक्ति' की। कर्म करते हुए भी बन्धनों से मुक्त। अतः परमात्म-ज्ञानी का विशेष लक्षण है सब में मुक्त और जीवन मुक्त स्थिति। ज्ञान अर्थात् समझ। समझदार सदा स्वयं को बन्धनमुक्त, सर्व आकर्षणों से मुक्त बनाने की समझ रखता है। तो परमात्म-ज्ञानी का विशेष लक्षण हुआ - मुक्त और जीवन्मुक्त।

6.2.77.. .. जैसे आत्मा और शरीर साथ-साथ है, अलग हो जाए तो मुर्दा बन जाते। वैसे अगर कर्म के साथ योग नहीं तो वो कर्म बेकार हो जाते। बन्धन डालने वाली आत्मा भी पुरुषार्थ में सहयोगी है। बन्धन से और ही अधिक इच्छा बढ़ती है तो बन्धन, बन्धन नहीं लेकिन सहयोग हुआ ना! अगर सहयोग की दृष्टि से देखो तो मजा आयेगा। बन्धन को बन्धन की दृष्टि देखेंगे तो कमजोर बन जायेंगे।

26.4.77.. .. जो अपने आपको स्वतंत्र नहीं कर सकते, स्वयं ही अपनी कमजोरियों में गिरते रहते वे विश्व परिवर्तक कैसे बनेंगे। तो अपने बन्धनों की सूची (List) सामने रखो। सूक्ष्म-स्थूल सबको अच्छी रीति चैक करो। अब तक भी अगर कोई बन्धन रहा है तो बन्धनमुक्त कभी भी नहीं बन सकेंगे। 'अब नहीं तो कब नहीं!' सदा यही पाठ पक्का करो। समझा? स्वतंत्रता ब्राह्मण जन्म का अधिकार है। अपना जन्म सिद्ध अधिकार प्राप्त करो। अच्छा।

26.4.77.. .. 63 जन्म तो पिंजरे में रहे, अब बाप आ करके पिंजरे से मुक्त करते हैं। जब मुक्त आत्मा बन गए फिर पिंजरे में क्यों जाए? अर्थात् बन्धन में क्यों आए? निर्बन्धन हो? कभी भी क्या करे - माया आ गई! चाहते नहीं थे - लेकिन हो गया; ऐसे तो नहीं बोलते या सोचते? पुरुषार्थी हैं, अभी थोड़ा बहुत तो रहेगा ही, कर्मातीत तो नहीं है - यह पुरुषार्थहीन बनाने के संकल्प है। बाप द्वारा प्राप्त हुआ

खज़ाना और उस खज़ाने के सुख व आनन्द का अनुभव अभी नहीं किया तो सतयुग में भी नहीं करेंगे।

5.5.77.. .. आजकल के वातावरण में हर आत्मा किसी न किसी बात के बन्धन वश हैं। चारों ओर की आत्माएं, कोई तन के दुःख के वशीभूत, कोई सम्बन्ध के वशीभूत, कोई इच्छाओं के वशीभूत, कोई अपने संस्कार जो कि दुःखदाई संस्कार हैं, दुःखदाई स्वभाव हैं, उनके दुःख के वशीभूत, कोई प्रभु-प्राप्ति न मिलने के अशान्ति में भटकने के दुःख वशीभूत, कोई जीवन का लक्ष्य स्पष्ट न होने के कारण परेशान, कोई पशुओं की तरह खाया-पिया, जीवन बिताया, लेकिन फिर भी संतुष्टता नहीं। कोई साधना करते, त्याग करते, अध्ययन करते, फिर भी मंजिल को प्राप्त नहीं होते, पुकारने, चिल्लाने के ही दुःख के वशीभूत, ऐसे अनेक प्रकार के बन्धनों वश, दुःख- अशान्ति के वश आत्माएं अपने को लिबरेट करना चाहते हैं। ऐसे अपने आत्मा के नाते, भाइयों को दुःखी देख रहम आता? दिखाई देता है? आत्माओं के दुःखमय जीवन को कोई सहारा नहीं मिल रहा है। देखने आता है वा अपने में बिजी हो?

लौकिक रीति से जीवन में बचपन का समय, स्टडी (Study;पढ़ाई) का समय अपने प्रति होता है। उसके बाद रचना के प्रति समय होता है अर्थात् दूसरों के प्रति जिम्मेवारी का समय होता है। अलौकिक जीवन में भी पहले स्वयं को परिपक्व करने का पुरुषार्थ किया, अब विश्व-कल्याणकारी बन विश्व की आत्माओं के प्रति वा अपने निजी परिवार के प्रति। विश्व की सर्व आत्माएं आपका परिवार हैं, क्योंकि बेहद के बाप के बच्चे हो; तो बेहद के परिवार के हो। तो अपने परिवार प्रति रहम नहीं आता? तो अभी रहम दिल बनो। मास्टर रचता बनो। स्वयं कल्याणकारी नहीं, लेकिन साथ-साथ 'विश्वकल्याणकारी' बनो। अपने जमा की हुई शक्तियों वा ज्ञान के खज़ाने को मास्टर ज्ञान-सूर्य बन, वृत्ति, दृष्टि और स्मृति के अर्थात् शुभ भावना के श्रेष्ठ संकल्प द्वारा, अपने जीवन में गुणों की धारणाओं द्वारा, इन सब साधनों की किरणों द्वारा अशान्ति को मिटाओ। जैसे सूर्य एक स्थान पर होते हुए भी अपने किरणों द्वारा चारों ओर का अन्धकार दूर करता है, ऐसे मास्टर ज्ञान-सूर्य बन दुःखी आत्माओं पर रहम करो।

वशीभूत आत्माओं को बन्धनयुक्त से बन्धनमुक्त बनाना, विकारी से निर्विकारी बनाना, अर्थात् लौकिक से अलौकिक बनाना यही अलौकिक जीवन का हमारा कार्य अर्थात् कर्तव्य है। वशीभूत आत्मा को छुड़ाने वाला स्वयं वशीभूत हो नहीं सकता।

5.6.77.. .. ट्रस्टी बन्धन वाला नहीं होता, स्वतंत्र आत्मा होता, किसी भी आकर्षण में परतंत्र होना भी ट्रस्टीपन नहीं। 'ट्रस्टी माना ही स्वतंत्र।'

7.6.77... तीव्र पुरुषार्थ का उमंग, उत्साह कम क्यों हो जाता? वा योगयुक्त की बजाए व्यर्थ संकल्पों तरफ क्यों भटक जाते? वा अपने स्वभाव-संस्कारों का बन्धन क्यों नहीं चुकतू होता? कारण क्या होता है? कारण जानते हो? विशष कारण है - जैसे शुरू में आते हो तो बाप से प्राप्त हुए पुरुषार्थ की युक्तियों और मेहनत से करने लग जाते हो। दिन-रात थकावट अथवा माया की रूकावट कोई की परवाह नहीं करते। बाप मिला, वर्सा पाना है, अधिकारी बनना है - इसी नशे में कदम को बहुत तीव्र रूप से आगे बढ़ाते चलते हो। लेकिन अब क्या करते? जैसे आजकल के जमाने में मेहनत करना मुश्किल लगता है। तनख्वाह चाहिए लेकिन मेहनत नहीं चाहिए। वैसे ब्राह्मण आत्माएं भी मेहनत से अलबेली हो जाती हैं वा आलस्य में आ जाती हैं। बनना चाहते सभी महावीर, महारथी, लेकिन मेहनत प्यादे की भी नहीं करते। बनी बनाई स्टेज चाहते हैं - मेहनत से स्टेज बनाने नहीं चाहते। सोचेंगे हम कम किसमें भी न होवें, नाम महारथियों के लिस्ट में हो। लेकिन महारथी का वास्तविक अर्थ है 'महारथी की महानता'; उसमें स्थित होना मुश्किल अनुभव करते हैं। सहयोगी नाम का एडवान्टेज ठीक उठाते हैं। इस कारण जो कदमकदम पर मेहनत और अटेंशन चाहिए; पुरुषार्थी जीवन की स्मृति चाहिए, बाप के साथ की समर्थी चाहिए, वह प्रेक्टिकल में नहीं है। मेहनत नहीं करने चाहते, लेकिन बाप की मदद से पार होना चाहते हैं। बाप का काम ज्यादा याद रखते हैं, अपना काम भूल जाते हैं, इस कारण जो युक्तियाँ बताई जाती हैं वह कार्य में नहीं लगाते, समय पर यूज़ करने नहीं आती। लेकिन बार-बार बाप से पूछने आते हैं - योग क्यों नहीं लगता, क्या करूँ? बन्धन क्यों नहीं कटता, क्या करूँ? जब रिवाईज कोर्स चल रहा है, रियलाइजेशन कोर्स (REALIZATION; अनुभूति) चल रहा है, तो क्या कोर्स में बाप-दादा ने यह बताया नहीं है? कुछ रह गया है क्या जो फिर सुनाना पड़े? यह तो पहले दूसरे क्लास का कोर्स है। इस कारण सुने हुए को मनन करो। मनन न करने से शक्तिशाली न बन कमज़ोर हो गए हो। और कमज़ोर होने के कारण बार-बार रूकते हो। चढ़ती कला का अनुभव नहीं कर पाते हो। इसलिए सदा यह याद रखो कि हम निमित्त बनी हुई आत्माओं की चढ़ती कला से ही सर्व का भला है। अच्छा।

12.6.77... अपने आपसे पूछो, हर कर्म इन्द्रिय कमल समान बनी है? नयन कमल बने हैं? हस्त कमल बने हैं? कमल अर्थात् कर्म करते हुए भी विकारी बन्धनों से मुक्त। देह को देख भी रहे हैं लेकिन देखते हुए भी नयन कमल वाले, देह के आकर्षण के बन्धन में नहीं आर्येंगे। जैसे कमल जल में रहते हुए जल से न्यारा अर्थात् जल के आकर्षण के बन्धन से न्यारा, अनेक भिन्न-भिन्न सम्बन्ध से न्यारा रहता है। कमल के सम्बन्ध भी बहुत होते हैं। अकेला नहीं होता है, प्रवृत्ति मार्ग की निशानी का सूचक है। ऐसे

ब्राह्मण अर्थात् कमल पुष्प समान बनने वाली आत्माएं प्रवृत्ति में रहते, चाहे लौकिक, चाहे अलौकिक साथ-साथ किचड़े अर्थात् तमोगुणी पतित वातावरण रहते हुए भी न्यारे।

12.6.77.. .. गीत रोज गाते हो - 'मेरा तो एक शिवबाबा दूसरा न कोई।' ऐसी स्थिति है? दूसरा कोई सम्बन्ध, स्नेह, सहयोग वा प्राप्ति, व्यक्ति वा वैभव द्वारा बाप से किनारा करने वाला रहा है? है कोई व्यक्ति व वस्तु जो बन्धनमुक्त आत्मा को अपने आकर्षण के बन्धन में बांधने वाली? जब दूसरा कोई नहीं तो निरन्तर बन्धनमुक्त और योगयुक्त आत्मा का अनुभव करते हो? व कहते हो, दूसरा कोई नहीं परन्तु है। कोई है व सब समाप्त हो गये? अगर है तो गीत क्यों गाते हो? बाप-दादा को खुश करने लिए गाते हो? वा कह कर अपनी स्थिति बनाने के लिए गाते हो? ब्राह्मण जीवन की विशेषता जानते हो? 'ब्राह्मण अर्थात् सोचना, बोलना, करना सब एक हो। अन्तर न हो।' तो ब्राह्मण जीवन की विशेषता कब धारण करेंगे? अभी वा अन्त में?

कल्याणकारी युग अथवा समय कहते हो न! सारे कल्प की कमाई का समय कहते हो, श्रेष्ठ कर्म रूपी बीज बोने का समय कहते हो। पांच हजार वर्ष के संस्कारों का रिकार्ड भरने का समय कहते हो। विश्वकल्याण, विश्व परिवर्तन का समय कहते हो। समय के ज्ञान वाले भी वर्तमान समय को गंवाते हुए आने वाले समय पर छोड़ दें तो उसको क्या कहा जायेगा? समय भी आपकी क्रियेशन (Creation;रचना) है। क्रियेशन के आधार पर क्रियेटर (Creator;रचियता) का पुरुषार्थ हो अर्थात् समय के आधार पर स्वयं का पुरुषार्थ हो तो उसे क्रियेटर कहा जायेगा।

वायदा तो यही किया है मेरा तो एक ही सहारा है लेकिन प्रैक्टिकल क्या है? एक सहारे का प्रैक्टिकल प्रमाण क्या अनुभव होगा? सदा एक अविनाशी सहारा लेते, इस कलयुगी पतित दुनिया से किनारा किया हुआ अनुभव करेगा। ऐसी आत्मा की जीवन नैया कलयुगी दुनिया का किनारा छोड़ चली। सदा स्वयं को कलयुगी पतित विकारी आकर्षण से किनारा किया हुआ अर्थात् परे महसूस करेंगे। कोई भी कलयुगी आकर्षण उसको खेंच नहीं सकते। जैसे कई कहते हैं थोड़ा अनुभव होता है, याद रहती है, शक्ति मिलती है। शक्ति स्वरूप का अनुभव होता है लेकिन सदा नहीं रहता, उसका कारण? अवश्य एक सहारे के बजाए कोई न कोई हद के सहारे का आधार लिया हुआ है। आधार भी हिलता है और स्वयं भी हिलता है अर्थात् हलचल में आते हैं। तो अपने आधार को चैक करो। चैक करना आता है? चैक करने के लिए दिव्य अर्थात् समर्थ बुद्धि चाहिए। अगर नहीं तो बुद्धिवान आत्माओं के सहयोग से अपनी चेकिंग करो।

7.1.78.. .. जैसे स्थूल वस्त्र उतार देते हैं वैसे यह देह अभिमान के वस्त्र सेकेण्ड में उतारने हैं। जब चाहें धारण करें, जब चाहें न्यारे हो जाएं। लेकिन यह अभ्यास तब होगा जब किसी भी प्रकार का बन्धन नहीं होगा। अगर मन्सा संकल्प का भी बंधन है तो डिटेच (Detach) हो नहीं सकेंगे।

14..2.78.. .. कुमारियां निर्बन्धन हैं किसलिए? सेवा के लिए। ड्रामा में यह भी एक लिफ्ट है। इस लिफ्ट का लाभ लेना चाहिए। जितना-जितना अपना समय ईश्वरीय सेवा में लगाती जायेंगी तो लौकिक सर्विस का भी सहयोग मिलेगा, बन्धन नहीं होगा। कुमारियां बाप को अति प्रिय हैं क्योंकि जैसे बाप निर्बन्धन है वैसे कुमारियां हैं। तो बाप समान हो गई ना। अच्छा।

5.12.78.. .. वाह बाप, वाह ड्रामा और वाह मेरा पार्ट - सदा इसी स्मृति में हर कार्य करते ऐसे अनुभव होता है -- जैसे कर्म करते हुए भी कर्म के बन्धन से मुक्त, सदा जीवन मुक्त है। सतयुग की जीवनमुक्ति का वर्सा तो प्राप्त होगा ही लेकिन अभी के जीवनबन्ध से जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव सतयुग से भी ज्यादा है। तो अभी भी अपने ज्ञान और योग की शक्ति से जीवनमुक्त अवस्था का अनुभव करते हैं कि अभी भी बन्धन हैं? बन्धन सब समाप्त हो गये और जीवनमुक्त हो गए। कुछ भी हो जाये लेकिन जीवन मुक्त होने के कारण ऐसे अनुभव होता है जैसे एक खेल कर रहे हैं, परीक्षा नहीं लेकिन खेल है। तन का रोग हो जाए - माया के अनेक प्रकार के वार भी हों लेकिन खेल अनुभव हो। खेल में दुःख नहीं होता, खेल किया ही जाता है मनोरंजन के लिए, दुःख के लिए नहीं। तो खेल समझने से जीवन-मुक्त स्थिति का अनुभव करेंगे। जीवनमुक्त हो या जीवन बन्ध हो? शरीर का,सम्बन्ध का कोई भी बन्धन न हो। यह तो खेल-खेल में फर्ज अदाई निभा रहे हैं। फर्ज अदाई का भी खेल कर रहे हैं। निर्बन्धन आत्मा ही ऊँची स्थिति का अनुभव कर सकेगी। बन्धन वाला तो नीचे ही बंधा रहेगा, निर्बन्धन ऊपर उड़ेगा। सभी ने अपना पिंजरा तोड़ दिया है, बन्धन ही पिंजरा है। तो बन्धनों का पिंजरा तोड़ दिया। फर्ज अदाई भी निमित्तमात्र निभानी है, लगाव से नहीं। फिर कहेंगे निर्बन्धन। ट्रस्टी बनकर चलते हो तो निर्बन्धन हो। कोई भी मेरापन है तो पिंजरे में बन्द हो। अभी पिंजरे की मैना नहीं स्वर्ग की मैना हो गई। शुरु-शुरु का गीत है ना पिंजरे की मैना.... अभी तो स्वर्ग की परियाँ हो गईं, सभी स्वर्ग में उड़ने वाली हो। पिंजरे की मैना से फरिश्ते बन गईं। अभी कहाँ भी ज़रा भी बन्धन न हो। मन का भी बन्धन नहीं। क्या करूँ, कैसे करूँ, चाहता हूँ, होता नहीं यह भी मन का बन्धन है। चाहता हूँ कर नहीं पाता तो कमज़ोर हुआ ना। इस बन्धन से भी मुक्त उसको कहा जाता है निर्बन्धन। जब बाप के बच्चे बने तो बच्चा अर्थात् स्वतन्त्र।

इसीलिए कहा जाता है स्टूडेंट लाइफ इज़ दी बैस्ट लाइफ। तो कौन हो आप - बच्चे हो या बूढ़े हो? बच्चा अर्थात् निर्बन्धन। अगर अपने को पास्ट जीवन वाले समझेंगे तो बन्धन है, मरजीवा हो गये तो निर्बन्धन। चाहे कुमार हो चाहे वानप्रस्थी हो लेकिन सब बच्चे हैं। सिर्फ एक कार्य जो बाप ने दिया है “याद करो और सेवा में रहो”, इसी में सदा बिज़ी रहो।

7.12.78.. .. टीचर्स को अपने भाग्य को देख सदा बाप के गुण गाने चाहिए। वाह बाबा और वाह ड्रामा यही गीत सदा चलता रहे। इसी खुशी में चाहे तन का बन्धन हो चाहे मन का हो लेकिन कुछ नहीं लगेगा। सदा बिज़ी रहने से किसी भी प्रकार से माया का वार, वार नहीं कर सकता। माया की हार होगी वार नहीं हो सकता।

21.12.78.. .. अभी तक भी अगर बचपन की बातें वा बचपन के संस्कार रह गये हों तो समाप्त करो। बन्धन है, क्या करूँ, कैसे करूँ यह सब बचपन के नाज़ नखरे हैं, अब यह दिन समाप्त हो गये, हैं क्या? त्रिकालदर्शी अपने को नहीं जान सकते जो कहते हो क्या करूँ! अब इसमें टाइम नहीं गँवाना - होना तो चाहिए, होता नहीं है, चाहते हैं कर नहीं पाते, यह बचपन की बातों का खेल अब समाप्त। इसका ही अब समाप्ति समारोह मनाओ। अच्छा।

4.1.80.. .. आप लोगों में यह भी एक विशेषता है कि जब चाहो नौकरी छोड़ सकते हो जब चाहो कर सकते हो। निर्बन्धन हो। सिर्फ मन और संस्कारों का बन्धन न हो। वैसे देह और देह के धर्मों से फ्री हो। आधे बन्धनों से पहले ही फ्री हो, बाकी थोड़े बन्धनों को याद और सेवा से खत्म कर दो। सभी हाई जम्प लगाने वाले हो।

14.1.80.. .. बोझ के कारण ईश्वरीय सेवा के मैदान पर हल्के होकर सदा सफलता मूर्त नहीं बन सकते। कर्म बन्धन के, लोकलाज के बोझ नीचे ले आते हैं। जिस लोक को छोड़ चुके उस लोक की लाज रखते हैं और जिस संगमयुग वा संगम लोक के बन चुके, उस लोक की लाज रखना भूल जाते हैं। जो लोक भस्म होने वाला है उस लोक की लाज सदा स्मृति में रखते और जो लोक अविनाशी है और इसी लोक से भविष्य लोक बनना है उस लोक की स्मृति दिलाते भी कभी-कभी स्मृति स्वरूप बनते हैं। गृहस्थ व्यवहार और ईश्वरीय व्यवहार दोनों में समानता रखना अर्थात् सदा दोनों में हल्के और सफल होना।

25.1.80.. ..महावीर बच्चों को कर्म करते भी किसी भी कर्मबन्धन से मुक्त, सदा डबल लाईट रूप में रहना है।

1.2.80.. .. सेवा का लगाव भी सोने की जंजीर है। यह भी बन्धन बेहद से हद में ले आता है। इसलिए सदा सेवा में न्यारे और बाप के प्यारे बनकर चलो। ऐसी स्थिति में रहने वाले सदा सफलतामूर्त रहेंगे।

4.2.80.. .. 'प्रवृत्ति में रहते पर-वृत्ति में रहना'। पर-वृत्ति अर्थात् आत्मिक रूप। ऐसे आत्मिक रूप में रहने वाला सदा न्यारा और बाप का प्यारा होगा। कुछ भी करेगा लेकिन ऐसे महसूस होगा जैसे काम नहीं किया है लेकिन खेल किया है। खेल में मजा आता है ना, इसलिए सहज लगता है। तो **प्रवृत्ति में रहते खेल कर रहे हो, बन्धन में नहीं।** स्नेह और सहज योग के साथ-साथ शक्ति की और एडीशन करो तो तीनों के बैलेन्स से हाईजम्प लगा लेंगे।

6.2.1980.. .. बाप-दादा ने सेवा के लिए समय दिया हुआ है। सेवाधारी का पार्ट बजा रहे हो। तो अपने को देखो यह शरीर का बन्धन तो नहीं है अथवा यह पुराना चोला टाइट तो नहीं है? टाइट ड्रेस तो पसन्द नहीं करते हो ना? ड्रेस टाइट होगी तो एवररेडी नहीं होंगे। बन्धन मुक्त अर्थात् लूज ड्रेस, टाइट नहीं। आर्डर मिला और सेकण्ड में गया। ऐसे बन्धन-मुक्त, योगयुक्त बने हो? जब वायदा ही है 'एक बाप दूसरा न कोई' तो बन्धनमुक्त हो गये ना।

19.3.81.. .. जैसे रात दिन इकट्ठा नहीं रह सकते वैसे मास्टर नालेजफुल और बन्धन दोनों इकट्ठा नहीं हो सकते। **नालेजफुल की शक्ति से बन्धनों को खत्म करो।**

25.3.81.. .. बापदादा निरंतर बच्चों से मिलन मनाते रहते हैं और मनाते रहेंगे। अनेक बच्चे होते भी हरेक बच्चे के साथ बाप मिलन मनाते ही हैं। क्योंकि **शरीर के बन्धन से मुक्त बाप और दादा दोनों एक सेकेण्ड के अन्दर अनेकों को भासना दे सकते हैं।**

19.3.81.. .. सदा अपने को निर्बन्धन आत्मा महसूस करते हो? किसी भी प्रकार का बन्धन तो नहीं महसूस करते? नालेजफुल की शक्ति से बन्धनों को खत्म नहीं कर सकते हो? नालेज में लाइट और माइट दोनों हैं ना। नालेजफुल बन्धन में कैसे रह सकते हैं? जैसे दिन और रात इकट्ठा नहीं रह सकते, वैसे मास्टर नालेजफुल और बन्धन, यह दोनों इकट्ठा कैसे हो सकते। नालेजफुल अर्थात् निर्बन्धन। बीती सो बीती। जब नया जन्म हो गया तो पास्ट के संस्कार अभी क्यों इमर्ज करते हो? जब ब्रह्माकुमार-कुमारी बन गये तो बन्धन कैसे हो सकता? ब्रह्मा बाप निर्बन्धन है तो बच्चे बन्धन में कैसे रह सकते? इसलिए सदा यह स्मृति में रखो कि हम मास्टर नालेज- फुल हैं। तो जैसा बाप वैसे बच्चे।

19.3.81.. .. जैसे मेला वा प्रदर्शनी करते हो तो उद्घाटन के लिए कैंची से फूलों की माला कटवाते हो। तो आज क्या करेंगे? खुद ही कैंची हाथ में उठायेंगे। वह भी दो तरफ

जब मिलती है तब चीज़ कटती है। तो ज्ञान और योग दोनों के मेल से माया की समस्याओं का बन्धन खत्म हो गया, यह खुशखबरी सुनाओ।

9.10.81.. .. बन्धनमुक्त होने के पहले स्वयं को गुणों के फूलों से सम्पन्न करना है तो स्वतः ही बन्धनमुक्त हो ही जायेंगे।

17.10.81.. .. जैसे बाप न्यारा होते हुए प्रवेशकर कार्य के लिए आते हैं, ऐसे फरिश्ता आत्मार्ये भी कर्म बन्धन के हिसाब से नहीं लेकिन सेवा के बन्धन से शरीर में प्रवेश हो कर्म करते और जब चाहे तब न्यारे हो जाते। ऐसे कर्मबन्धनमुक्त हो - इसी को ही फरिश्ता कहा जाता है।

17.10.81.. .. ब्राह्मण जीवन कर्मबन्धन का जीवन नहीं होता। कर्मयोगी का जीवन होता। मालिक बन कर्म करते तो कर्मबन्धन नहीं हुआ लेकिन कर्मन्द्रियों के मालिक बन जो चाहो, जैसा कर्म चाहों, जितना समय कर्म करने चाहो वैसे कर्मन्द्रियों से कराने वाले होंगे। तो ब्राह्मण अर्थात् फरिश्ता।कर्मबन्धनी आत्मा नहीं लेकिन सेवा के शुद्ध बन्धन वाली।यह देह सेवा के अर्थ मिली है। आपके कर्मबन्धन के हिसाब किताब के जीवन का हिसाब समाप्त हुआ। यह नया जीवन है।

फरिश्ता बनना अर्थात् मेरे-मेरे के बन्धन से मुक्त बनना। अलौकिक जीवन में भी मेरा एक बाप दूसरा मेरा कोई नहीं। तो ऐसे फरिश्ते बने हो?

3.11.81.. .. यह पराया देश और पराया राज्य है,जिसमें पुराना-ही-पुराना दिखाई देता है। व्यक्ति देखो वा वस्तु देखो सब क्या दिखाई देता है? सब जड़जड़ीभूत हो गये हैं। चारों ओर अंधकार छाया हुआ है। ऐसे देश में आप सभी बंधनों में बंधे हुए बन्धनयुक्त आत्मा बन गये तब बाप आकर स्वरूप और स्वदेश की स्मृति दे बन्धनमुक्त बनाए स्वदेश में ले जाते हैं।साथ-साथ स्वराज्य के अधिकारी बनाते हैं।

23.11.81.. .. सेवाधारी का अर्थ ही है - बन्धनमुक्त, जीवनमुक्त। कितने हद की जिम्मेवारियों से छूटे हुए हो। और अलौकिक जिम्मेवारी भी बाप की है, इससे भी छूटे हुए हो। सिर्फ सेवा किया-आगे चलो। जिम्मेवारी का बोझ नहीं है। क्या किसी के ऊपर कोई बोझ है? सेन्टर का बोझ है क्या? सेन्टर को चलाने का बोझ नहीं है, यह फिकर नहीं रहता है कि जिज्ञासू कैसे आवें (रहता है) तो बोझ हुआ ना!

सफलता भी तब होगी जब यह समझो कि मैं बढ़ाने वाली नहीं हूँ लेकिन बाप की याद से स्वतः बढ़ेगी। मैं बढ़ाने वाली हूँ, तो बढ़ नहीं सकती। बाप को बोझ दे देंगे तो बढ़ती रहेगी। इसलिए इससे भी निश्चुरने रहना। जितना स्वयं हल्के होंगे उतना सेवा और स्वयं सदा ऊपर चढ़ती रहेंगी अर्थात् उन्नति को पाती रहेंगी। जब मैं-पन आता है तो बोझ हो जाता है और नीचे आ जाते हो।इसलिए इस बोझ से भी निश्चिन्ता।सिर्फ याद

के नशे में सदा रहो। बाप के साथ कम्बाइन्ड सदा रहो तो जहाँ बाप कम्बाइन्ड हो गया वहाँ सेवा क्या है? स्वतः हुई पड़ी है। अनुभवी हो ना?

8.1.82.. .. जब उड़ते हो तो फ्री हो, स्वतन्त्र हो। और उड़ने के बजाए नीचे आ जाते हो तो बन्धन में आ जाते हो। उड़ती कला अर्थात् बन्धनमुक्त, योगयुक्त।

10.1.82.. ..जैसे बाप के लिए सबके मुख से एक ही आवाज निकलती है - "मेरा बाबा"। ऐसे आप हर श्रेष्ठ आत्मा के प्रति यह भावना हो, महसूसता हो, जो हरेक समझे कि यह - 'मेरी माँ' है। यह बेहद की पालना। हरेक से मेरे-पन की भावना आये। हरेक समझे कि यह मेरे शुभचिन्तक, सहयोगी सेवा के साथी हैं। इसको कहा जाता है - 'बाप समान'। इसको ही कहा जाता है - कर्मातीत स्टेज के तख्तनशीन। जो सेवा के कर्म के भी बन्धन में न आओ। हमारा स्थान, हमारी सेवा, हमारे स्टूडेंट, हमारी सहयोगी आत्मार्यें, यह भी सेवा के कर्म का बन्धन है। इस कर्मबन्धन से - 'कर्मातीत'।

22.3.82.. .. पवित्रता की शक्ति आत्मा को अनेक जन्मों के विकर्मों के बन्धन से छुड़ा देती है।

6.4.82.. .. जब देह का भान छूट जाता तो क्या बन जाते? आत्मा, देही वा मालिक। देह के बन्धन से मुक्त अर्थात् जीवनमुक्त राज्य अधिकारी। जब राज्य अधिकारी बन गये तो सर्व प्रकार की अधीनता समाप्त हो जाती। क्योंकि देह के दास से देह के मालिक बन गये। ऐसा अन्तर अनुभव किया ना! दासपन छूट गया। दास और अधिकारी दोनों साथ-साथ नहीं हो सकते। दासपन की निशानी है - मन से, चेहरे से उदास होना। उदास होना निशानी है दासपन की। और अधिकारी अर्थात् स्वराज्यधारी की निशानी है - मन और तन से सदा हर्षित। दास सदा अपसेट होगा। राज्यअधिकारी सदा सिंहासन पर सेट होगा, दास छोटी सी बात में और सेकेण्ड में कनफ्यूज हो जायेगा और अधिकारी सदा अपने को कम्फर्ट (आराम में) अनुभव करेगा। इन निशानियों से अपने आप को देखो - मैं कौन? दास वा अधिकारी? कोई भी परिस्थिति, कोई भी व्यक्ति, कोई भी वैभव, वायुमण्डल, शान से परे अर्थात् तख्त से नीचे उतार दास तो नहीं बना देते अर्थात् शान से परे परेशान तो नहीं कर देते हैं? तो दास अर्थात् परेशान, और अधिकारी अर्थात् सदा मास्टर सर्वशक्तवान, विघ्न विनाशक स्थिति की शान में स्थित होगा। परिस्थिति वा व्यक्ति, वैभव, शान में रह मौज से देखता रहेगा। दास आत्मा सदा अपने को परीक्षाओं के मजधार में अनुभव करेगी। अधिकारी आत्मा मांझी बन नैया को मजे से परीक्षाओं की लहरों से खेलते-खेलते पार करेगी।

8.4.82.. .. कर्मों का हिसाब कितना गुह्य है - इसको जानो। किसी भी आत्मा द्वारा अल्पकाल का सहारा लेते हो वा प्राप्ति का आधार बनाते हो, उसी आत्मा के तरफ बुद्धि

का झुकाव होने के कारण कर्मातीत बनने के बजाए कर्मों का बन्धन बंध जाता है। एक ने दिया दूसरे ने लिया - तो आत्मा का आत्मा से लेन-देन हुआ। तो लेन-देन का हिसाब बना वा समाप्त हुआ? उस समय अनुभव ऐसे करेंगे जैसे कि हम आगे बढ़ रहे हैं लेकिन वह आगे बढ़ना, बढ़ना नहीं, लेकिन कर्म बन्धन के हिसाब का खाता जमा किया। रिजल्ट क्या होगी! कर्म-बन्धनी आत्मा, बाप से सम्बन्ध का अनुभव कर नहीं सकेगी। कर्मबन्धन के बोझ वाली आत्मा याद की यात्रा में सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव कर नहीं सकेगी, वह याद के सबजेक्ट में सदा कमजोर होगी। नॉलेज सुनने और सुनाने में भल होशियार, सेन्सीबुल होगी लेकिन इसेन्सफुल नहीं होगी। सर्विसएबुल होगी लेकिन विघ्न विनाशक नहीं होगी। सेवा की वृद्धि कर लेंगे लेकिन विधिपूर्वक वृद्धि नहीं होगी। इसलिए ऐसी आत्मायें कर्म बन्धन के बोझ कारण स्पीकर बन सकती हैं लेकिन स्पीड में नहीं चल सकती अर्थात् उड़ती कला की स्पीड का अनुभव नहीं कर सकती। तो यह भी दोनों प्रकार के देह के सम्बन्ध हैं जो 'महात्यागी' नहीं बनने देंगे। तो सिर्फ पहले इस देह के सम्बन्ध को चेक करो - किसी भी आत्मा से चाहे घृणा के सम्बन्ध में, चाहे प्राप्ति वा सहारे के सम्बन्ध से लगाव तो नहीं है? अर्थात् बुद्धि का झुकाव तो नहीं है? बार-बार बुद्धि का जाना वा झुकाव सिद्ध करता है कि बोझ है। बोझ वाली चीज झुकती है। तो यह भी कर्मों का बोझ बनता है इसलिए बुद्धि का झुकाव न चाहते भी वहाँ ही होता है। समझा - अभी तो एक देह के सम्बन्ध की बात सुनाई।

तो अपने आप से पूछो - कि देह के सम्बन्ध का त्याग किया? वा लौकिक से त्याग कर अलौकिक में जोड़ लिया? कर्मातीत बनने वाली आत्मायें, इस कर्म के बन्धन का भी त्याग करो। तो ब्राह्मणों के लिए इस सम्बन्ध का त्याग ही त्याग है। तो समझा त्याग की परिभाषा क्या है?

9.1.83.. .. कई ऐसे भी मिसाल हुए हैं जो बिल्कुल एन्टी थे लेकिन शुभ भावना से निमित्त बनने वाले से भी आगे जा रहे हैं। तो शुभ भावना से फुल फोर्स से ट्रायल करनी चाहिए। अगर फिर भी नहीं होता है तो फिर डायरेक्शन लेकर कदम उठाना चाहिए क्योंकि कई बार ऐसे किनारा कर देने से कहाँ डिस सर्विस भी हो जाती है। और कई बार ऐसा भी होता है कि आने वाली ब्राह्मण आत्मा की कमी होने के कारण अन्य आत्मायें भी भाग्य लेने से वंचित रह जाती हैं। इसलिए पहले स्वयं ट्रायल करो फिर अगर समझते हो यह बड़ी प्राबल्म है तो निमित्त बनी आत्माओं से वेरीफाय कराओ। फिर वह भी अगर समझती है कि अलग होना ही ठीक है फिर अलग हुए भी तो आपके ऊपर जवाबदारी नहीं रही। आप डायरेक्शन पर चले। फिर आप निश्चिन्त। कई बार ऐसा होता है - जोश में छोड़ दिया, लेकिन अपनी गलती के कारण छोड़ने के बाद भी

वह आत्मा खींचती रहती है। बुद्धि जाती रहती है यह भी बड़ा विघ्न बन जाता है। तन से अलग हो गये लेकिन मन का हिसाब-किताब होने के कारण खींचता रहता इसलिए निमित्त बनी हुई आत्माओं से वेरीफाय कराओ। क्योंकि यह कर्मों की फिलासफी है। जबरदस्ती तोड़ने से भी मन बार-बार जाता रहता है। कर्म की फिलासफी को ज्ञान स्वरूप होकर पहचानो और फिर वेरीफाय कराओ। फिर **कर्म-बन्धन को ज्ञान युक्त होकर खत्म करो।**

21.2.83... साइलेन्स की शक्ति का विशेष यंत्र है - “शुभ संकल्प”, इस संकल्प के यंत्र द्वारा जो चाहो वह सिद्धि स्वरूप में देख सकते हो। पहले स्व के प्रति प्रयोग करके देखो। तन की व्याधि के ऊपर प्रयोग करके देखो तो **शान्ति की शक्ति द्वारा कर्म बन्धन का रूप, मीठे सम्बन्ध के रूप में बदल जायेगा। बन्धन सदा कड़वा लगता है, सम्बन्ध मीठा लगता है। यह कर्मभोग - कर्म का कड़ा बन्धन साइलेन्स की शक्ति से पानी की लकीर मिसल अनुभव होगा। भोगने वाला नहीं, भोगना भोग रही हूँ - यह नहीं लेकिन साक्षी दृष्टा हो इस हिसाब किताब का दृश्य भी देखते रहेंगे। इसलिए तन के साथ-साथ मन की कमज़ोरी, डबल बीमारी होने के कारण जो कड़े भोग के रूप में दिखाई देता है वह अति न्यारा और बाप का प्यारा होने के कारण डबल शक्ति अनुभव होने से कर्मभोग के हिसाब की शक्ति के ऊपर वह डबल शक्ति विजय प्राप्त कर लेगी। बीमारी चाहे कितनी भी बड़ी हो लेकिन दुःख वा दर्द का अनुभव नहीं करेंगे। जिसको दूसरी भाषा में आप कहते होकि ‘सूली से कांटे के समान’ अनुभव होगा। ऐसे टाइम में प्रयोग करके देखो। कई बच्चे करते भी हैं। इसी प्रकार से तन पर, मन पर, संस्कार पर अनुभव करते जाओ और आगे बढ़ते जाओ। यह रिसर्च करो। इसमें एक दो को नहीं देखो। यह क्या करते, इसने कहाँ किया है। पुराने करते वा नहीं करते, बड़े नहीं करते, छोटे करते, यह नहीं देखो। पहले मैं इस अनुभव में आगे आ जाऊँ क्योंकि यह अपने आन्तरिक पुरुषार्थ की बात है। जब ऐसे व्यक्तिगत रूप में इसी प्रयोग में लग जायेंगे। वृद्धि को पाते रहेंगे तब एक-एक के शान्ति की शक्ति का संगठित रूप में विश्व के सामने प्रभाव पड़ेगा।**

24.2.83... सदा उड़ती कला में जाने का आधार क्या है? ‘डबल लाइट’। तो सदा उड़ते पंछी हो ना। **उड़ता पंछी कभी किसके बन्धन में नहीं आता। नीचे आयेंगे तो बन्धन में बंधेंगे।** इसलिए सदा ऊपर उड़ते रहो। उड़ते पंछी अर्थात् सर्व बन्धनों से मुक्त, जीवन मुक्त।

27.3.83... अपने से पूछो - स्वतन्त्र हो या परतंत्र हो? **परतंत्रता के बन्धन अपने ही मन के व्यर्थ कमज़ोर संकल्पों की जाल है।** उसी रची हुई जाल में स्वयं को परतंत्र तो

नहीं बना रहे हो? क्वेश्चन की जाल है। जो जाल रचते हो उसका चित्र निकालो तो क्वेश्चन का ही रूप होगा। क्वेश्चन क्या उठते हैं, अनुभवी हो ना! क्या होगा, कैसे होगा, ऐसेतो नहीं होगा, यह है जाल। पहले भी सुनाया था - संगमयुगी ब्राह्मणों का एक ही सदा समर्थ संकल्प है कि - “जो होगा वह कल्याणकारी होगा। जो होगा श्रेष्ठ होगा, अच्छे ते अच्छा होगा।” यह संकल्प है जाल को समाप्त करने का। जबकि बुरे दिन, अकल्याण के दिन समाप्त हो गये। संगमयुग का हर दिन बड़ा दिन है, बुरा दिन नहीं। हर दिन आपका उत्सव है ना। हर दिन मनाने का है। इस समर्थ संकल्प से व्यर्थ संकल्पों की जाल को समाप्त करो।

27.3.83.. .. बेहद सेवा का लक्ष्य रखो तो हद के बन्धन स्वतः टूट जायेंगे। लक्ष्य दो तरफ का होता है तो लौकिक अलौकिक दोनों में सफल नहीं हो सकते। लक्ष्य क्लीयर हो तो लौकिक में भी मदद मिलती है। निमित्त मात्र लौकिक, लेकिन बुद्धि में अलौकिक सेवा हो तो मजबूरी भी मुहब्बत के आगे बदल जाती है।

3.4.83.. .. उपराम स्थिति अर्थात् उड़ती कला की निशानी। उड़ता पंछी बन कर्म के इस वल्प वृक्ष की डाली पर आयेगा। उड़ती कला के बेहद के समर्थ स्वरूप से कर्म किया और उड़ा। कर्म रूपी डाली के बन्धन में नहीं फँसेगा। कर्म बन्धन में फँसा अर्थात् हद के पिंजरे में फँसा। स्वतन्त्र से परतन्त्र बना। पिंजरे के पंछी को उड़ता पंछी तो नहीं कहेंगे ना। ऐसे कल्प वृक्ष के भिन्न-भिन्न कर्म की डाली पर बाप के उड़ते पंछी श्रेष्ठ आत्मायें कभी-कभी कमजोरी के पंजों से डाली के बन्धन में आ जाते हैं। फिर क्या करते? कहानी सुनी है ना! इसको कहा जाता है हद को पार करने की शक्ति कम है। इस कल्प वृक्ष के अन्दर चार प्रकार की डालियाँ हैं। लेकिन पाँचवी डाली ज्यादा आकर्षण वाली है। गोल्डन, सिल्वर, कॉपर, आयरन और संगम है हीरे की डाली। फिर हीरो बनने के बजाए हीरे की डाली में लटक जाते हैं। संगमयुग का ही सर्व श्रेष्ठ कर्म है ना। यह श्रेष्ठ कर्म ही हीरे की डाली है। चाहे संगमयुगी कैसा भी श्रेष्ठ कर्म हो लेकिन श्रेष्ठ कर्म के भी बन्धन में फँस गया, जिसको दूसरे शब्दों में आप सोने की जंजीर कहते हो। श्रेष्ठ कर्म में भी हद की कामना, यह सोने की जंजीर है। चाहे डाली हीरे की है, जंजीर भी सोने की हो लेकिन बन्धन तो बन्धन है ना! बापदादा सर्व उड़ते पंछियों को स्मृति दिला रहे हैं। सर्व बन्धनों अर्थात् हदों को पार कर्ता बने हो!

13.4.83.. .. सभी का कल्याण चाहते हो तो स्वयं शक्तिरूप बन सर्वशक्तित्वान के साथी बन शुभ भावना रख चलते चलो। चिन्तन वा चिन्ता मत करो। बन्धन में नहीं फँसो। अगर बन्धन है तो उसको काटने का तरीका है - ‘याद’। कहने से नहीं छूटेंगे, स्वयं को छुड़ा दो तो छूट जायेंगे।

2.5.83.. जब कोई बन्धन से मुक्त हो जाता है तो खुशी में नाचता है। आप भी बन्धनमुक्त आत्मार्यें सदा खुशी में नाचते रहो। बस गीत गाओ और खुशी में नाचो। यह तो सहज काम है ना! सदा याद रखो-जीवनमुक्त आत्मार्यें हैं। सब बन्धन समाप्त हो गये, मेहनत से छूट गये, मुहब्बत में आ गये। तो सदा हल्के होकर उड़ो।

4.5.83.. जैसे तेज आग जल रही हो तो उसके आगे कोई भी आयेगा नहीं, दूर भागेगा। आप भी योग अग्नि को ऐसा जगाओ जो कोई बन्धन डालने वाला सामने आ ही न सके। जैसे कोई जानवर को भगाना होता है तो आग जला देते हैं, आग के सामने कोई जानवर नहीं आ सकता। ऐसे लगन की अग्नि को तेज करो। अगर अभी तक बन्धन हैं तो लगन है लेकिन अग्नि नहीं बनी है। लगन है तब यहाँ पहुँची लेकिन लगन अग्नि बन जाए तो निर्बन्धन हो जाओ। लगन फुल फोर्स में हो।

9.5.83.. .. कोई भी कर्म अपने बन्धन में बाँधता है तो उसको साक्षी नहीं कहेंगे। फँसने वाला कहेंगे। न्यारा नहीं कहेंगे। कभी आँख भी धोखा न दे। शारीरिक सम्बन्ध में आना अर्थात् आँख का धोखा खाना। तो कोई भी कर्मेन्द्रिय धोखा न दे। साक्षी रहें और सदा बाप के साथी रहें। हर बात में बाप याद आवे। महान आत्मार्यें भी नहीं, निमित्त आत्मार्यें भी नहीं लेकिन बाबा ही याद आये। कोई भी बात आती है तो पहले बाप याद आता या निमित्त आत्मार्यें याद आती? सदा एक बाप दूसरा न कोई, आत्मार्यें सहयोगी हैं लेकिन साथी नहीं है, साथी तो बाप है। सहयोगी को अपना साथी समझना यह रांग है। तो सदा सेवा के साथी लेकिन सेवा में साथी बाप है। निमित्त सहयोग देते हैं, ऐसा सदा स्मृति स्वरूप हो!

11.5.83.. .. एक-एक माता एक-एक सेवाकेन्द्र सम्भाले। अगर फुर्सत नहीं है तो आपस में दो तीन का ग्रुप बनाओ। ऐसे नहीं घर का बन्धन है, बच्चे हैं। जिनकी मातायें सोशलवर्कर होती हैं उनके भी तो बच्चे होते हैं ना। वह भी सीख जाते हैं। तो अब अपने आपको हैण्डस बनाओ और सेवा को बढ़ाओ। कोई न कोई को निकालकर उनको स्थान दे आगे बढ़ते जाओ। अभी शक्तियाँ मैदान पर आओ। जो पालना ली है उसका रिटर्न दो। जितना सेवा बढ़ायेंगे उतना स्वयं को भी उसका फल मिलेगा, वर्तमान भी शक्तिशाली होगा, और भविष्य तो बनता ही है। जितनी सेवा करेंगे उतना निर्विघ्न रहेंगे और खुशी भी रहेगी। अच्छा

17.5.83.. .. आप शिव शक्तियाँ हो, आपको कोई बन्धन में बाँध नहीं सकता। बकरियों को बन्धन में बांध सकते हैं, शक्तियों को नहीं। शक्तियों की सवारी शेर पर है, शेर खुले में रहता है, बन्धन में नहीं, तो सदा हम बाप की राइट हैण्ड हैं - यह याद रखना। अच्छा।

19.5.83... .. मेरापन मिटाना ही सर्व बन्धन मुक्त बनना है। मेरा धन, मेरी पत्नी, मेरा पति, मेरा बच्चा ज्ञान में नहीं चलता, उसकी बुद्धि का ताला खोल दो। सिर्फ उन्हीं का क्यों सोचते हो! मेरे के भाव से क्यों सोचते! यह कभी भी कोई बच्चे ने अभी तक नहीं कहा है कि मेरे गांव की वा देश की आत्मा का ताला खोलो। कहते मेरी पत्नी का, मेरे बच्चों का, मेरेपन का भाव, बेहद में नहीं ले आता। इसलिए बेहद की शुभ भावना हर आत्मा के प्रति रखते हुए सर्व के साथ उन आत्माओं को भी देखो। क्या समझा! तेरा तो तेरा हो गया। मेरा कोई बोझ नहीं। चाहे बापदादा कहाँ भी सेवा प्रति निमित्त बनावे। तन द्वारा सेवा करावे, मन द्वारा मन्सा सेवा करावे, जहाँ रखे, जिस हाल में रखे, चाहे दाल-रोटी खिलावे, चाहे 36 प्रकार के पकवान खिलावे। लेकिन जब मेरा कुछ नहीं तो तेरा तू जानो। आप क्यों सोचते हो? भगवान अपने बच्चों को सदा तन से, मन से, धन से सहज रखेगा। यह बाप की गैरन्टी है। फिर आप लोग क्यों बोझ उठाते हो? उस दिन भी सुनाया ना कि सब कुछ तेरा करने वाले हो तो जो बाप खिलावे तो खाओ, पिओ और मौज करो, याद करो। सिर्फ एक डियुटी आपकी है बस। बाकी सब डियुटी बाबा आपेही निभायेंगे। एक ही डियुटी तो कर सकते हो ना! मेरा कहते हो तब मन चंचल होता है। यही सोचते हो ना कि यह मुश्किल बात है। मुश्किल है नहीं लेकिन कर देते हो। मेरेपन का भाव मुश्किल बना देता। और तेरेपन का भाव सहज बना देता है। विश्व कल्याण की भावना रखो तो विश्व-कल्याण का कर्तव्य जल्दी समाप्त हो जायेगा। और अपने राज्य में चले जायेंगे।

30.7.83... .. स्वतन्त्र पंछी हैं ना सभी? कोई सेवा का बन्धन नहीं। स्वतन्त्र पंछी तो ताली बजायी और उड़े। ऐसे हैं ना! **स्वतन्त्र पंछी, किसी भी विशेष स्थान और विशेष सेवा का बन्धन नहीं । विश्व की सेवा का बन्धन। बेहद सेवा का बन्धन।** इसलिए स्वतन्त्र हो। जब भी जहाँ आवश्यकता है वहाँ पहले मैं।

18.1.84... .. बापदादा सभी बच्चों के स्नेह के संकल्प और समर्थ संकल्पों का रेसपान्ड कर रहे हैं। “सदा बापदादा के स्नेही भव”। “सदा समर्थ समान भव, सदा उमंग-उत्साह से समीप भव, लगन की अग्नि द्वारा बन्धनमुक्त स्वतन्त्र आत्मा भव”। बच्चों के बन्धनमुक्त होने के दिन आये कि आये। बच्चों के स्नेह के दिल के आवाज़, कुम्भकरण आत्माओं को अवश्य जगायेंगे। यही बन्धन में डालने वाले, स्वयं प्रभु स्नेह के बन्धन में बंध जायेंगे। बापदादा विशेष बन्धन वाली बच्चियों को शुभ दिन आने की दिल की राहत दे रहे हैं।

20.1.84... .. इस ग्रुप में किसी को भी कहें कि यहाँ बैठ जाओ तो एवररेडी हो? **कोई का पीछे का कोई बन्धन तो नहीं है।** ऐसे भी होगा, जब समय आयेगा सभी को टिकेट

कैन्सिल कराके यहाँ बिठा देंगे। ऐसे समय पर कोई सैलवेशन भी नहीं लेंगे। सभी को याद है - जब ब्रह्मा बाप अव्यक्त हुए तो वह 4 दिन कैसे बिताये? मकान बड़ा था? खाना बनाया था? फिर 4 दिन कैसे बीता था! विनाश के दिन भी ऐसे ही बीत जायेंगे। उस समय लवलीन थे ना। ऐसे ही लवलीन स्थिति में समाप्ति होगी। फिर यहाँ की पहाड़ियों पर रहकर तपस्या करेंगे। तीसरी आँख से सारा विनाश देखेंगे। ऐसे निश्चिंत हो ना। कोई चिंता नहीं। न मकान की, न परिवार की, न काम की। सदा निश्चिंत क्या होगा यह क्वेश्चन नहीं। जो होगा अच्छा होगा। इसको कहा जाता है - 'निश्चिंत'।

24..2.84.. .. सबसे ज्यादा अपने तरफ आकर्षित करने वाले डाली यह देह का भान है। जरा भी पुराने संस्कार, स्वभाव अपने तरफ आकर्षित करते माना देह का भान है। मेरा स्वभाव ऐसा है, मेरा संस्कार ऐसा है, मेरी रहन-सहन ऐसी है, मेरी आदत ऐसी है, यह सब देह भान की निशानी है। तो इस डाली से उड़ते पंछी हो? इसको ही कहा जाता है - कर्मातीत स्थिति। कोई भी बन्धन नहीं। कर्मातीत का अर्थ यह नहीं है कि कर्म से अतीत हो लेकिन कर्म के बन्धन से न्यारे। तो देह के कर्म, जैसे किसका नेचर होता है - आराम से रहना, आराम से समय पर खाना, चलना यह भी कर्म का बन्धन अपने तरफ खींचता है। इस कर्म के बन्धन अर्थात् आदत से भी परे। क्योंकि निमित्त हो ना। 12.3.84..सभी सदा न्यारे और बाप के प्यारे! कोई बन्धन नहीं।सेवा का भी बन्धन नहीं। बाप ने भेजा है बाप जाने। निमित्त बने हैं, जब तक और जहां निमित्त बनावें तब तक के लिए निमित्त हैं। ऐसे डबल लाइट हो ना! पाण्डव भी न्यारे और प्यारे हैं ना। बन्धन वाले तो कोई नहीं हैं। न्यारा बनना ही प्यारा बनना है।

2.4.84.. .. ब्राह्मण जीवन है ही मिलने और मनाने के लिए। इसी विधि द्वारा सदा कर्म करते हुए कर्मों के बन्धन से मुक्त कर्मातीत स्थिति का अनुभव करते हो। कर्म के बन्धन में नहीं आते लेकिन सदा बाप के सर्व सम्बन्ध में रहते हो। करावनहार बाप निमित्त बनाए करा रहे हैं। तो स्वयं साक्षी बन गये। इसलिए इस सम्बन्ध की स्मृति बन्धन मुक्त बना देती है। जहाँ सम्बन्ध से करते वहाँ बन्धन नहीं होता। मैंने किया, यह सोचा तो सम्बन्ध भूला और बन्धन बना! संगमयुग बन्धमुक्त सर्व सम्बन्ध युक्त, जीवनमुक्त स्थिति के अनुभव का युग है। तो चेक करो सम्बन्ध में रहते हो या बन्धन में आते? सम्बन्ध में स्नेह के कारण प्राप्ति है, बन्धन में खींचातान, टेन्शन के कारण दुःख और अशान्ति की हलचल है। इसलिए जब बाप ने 'बिन्दु' का सहज हिसाब सिखा दिया तो देह का बन्धन भी समाप्त हो गया। देह आपकी नहीं है। बाप को दे दिया तो बाप की हुई। जब आपका निजी बन्धन, मेरा शरीर या मेरी देह यह बन्धन

समाप्त हुआ। मेरी देह कहेंगे क्या, आपका अधिकार है? दी हुई वस्तु पर आपका अधिकार कैसे हुआ? दे दी है वा रख ली है? कहना तेरा और मानना मेरा यह तो नहीं है ना! जब तेरा कहा तो मेरे-पन का बन्धन समाप्त हो गया। यह हृद का मेरा, यही मोह का धागा है। धागा कहो, जंजीर कहो, रस्सी कहो, यह बन्धन में बांधता है। जब सब कुछ आपका है यह सम्बन्ध जोड़ लिया तो बन्धन समाप्त हो सम्बन्ध बन जाता है। किसी भी प्रकार का बन्धन चाहे देह का, स्वभाव का, संस्कार का, मन के झुकाव का यह बन्धन सिद्ध करता है बाप से सर्व सम्बन्ध की, सदा के सम्बन्ध की कमजोरी है। कई बच्चे सदा और सर्व सम्बन्ध में बन्धन मुक्त रहते। और कई बच्चे समय प्रमाण मतलब से सम्बन्ध जोड़ते हैं। इसलिए ब्राह्मण जीवन का अलौकिक रूहानी मजा पाने से वंचित रह जाते हैं। न स्वयं, स्वयं से सन्तुष्ट और न दूसरों से सन्तुष्टता का आशीर्वाद ले सकते। ब्राह्मण जीवन श्रेष्ठ सम्बन्धों का जीवन है ही - बाप और सर्व ब्राह्मण परिवार का आशीर्वाद लेने का जीवन। आशीर्वाद अर्थात् शुभ भावनायें, शुभ कामनायें। आप ब्राह्मणों का जन्म ही बापदादा की आशीर्वाद कहो, वरदान कहो इसी आधार से हुआ है। बाप ने कहा - आप भाग्यवान, श्रेष्ठ विशेष आत्मा हो। इसी स्मृति रूपी आशीर्वाद वा वरदान से शुभ भावना, शुभ कामना से आप ब्राह्मणों का नया जीवन, नया जन्म हुआ है। सदा आशीर्वाद लेते रहना। यही संगमयुग की विशेषता है! लेकिन इन सबका आधार - सर्व श्रेष्ठ सम्बन्ध है। सम्बन्ध मेरे-मेरे की जंजीरों को, बन्धन को सेकण्ड में समाप्त कर देता है। और सम्बन्ध का पहला स्वरूप वो ही सहज बात है बाप भी बिन्दु में भी बिन्दु और सर्व आत्मायें भी बिन्दु। तो बिन्दु का ही हिसाब हुआ ना। इसी बिन्दु में ज्ञान का सिन्धु समाया हुआ है। दुनिया के हिसाब में भी बिन्दु 10 को 100 बना देता और 100 को हजार बना देता है। बिन्दु बढ़ाते जाओ और संख्या बढ़ाते जाओ। तो महत्व किसका हुआ? बिन्दु का हुआ ना। ऐसे ब्राह्मण जीवन में सर्व प्राप्ति का आधार बिन्दु है।

1.5.84... प्रश्न:- फरिश्ता बनने के लिए किस बन्धन से मुक्त होना पड़ेगा?

उत्तर:- मन के बन्धनों से मुक्त बनो। मन के व्यर्थ संकल्प भी फरिश्ता नहीं बनने देंगे। इसलिए फरिश्ता अर्थात् जिसका मन के व्यर्थ संकल्पों से भी रिश्ता नहीं। सदा यह याद रहे कि हम फरिश्ते किसी रिश्ते में बंधने वाले नहीं।

7.5.84.. .. प्रवृत्ति में रहते प्रवृत्ति के बन्धन से परे अर्थात् पर-वृत्ति वा न्यारे और प्यारे। ऐसे बन्धनमुक्त बन प्रवृत्ति के कार्य को निभाने वाले हो ना! बन्धन में बन्धने वाले नहीं लेकिन बन्धनमुक्त हो कर्म करने वाले। मन का भी बन्धन नहीं। एक है तन का बन्धन, दूसरा है मन का बन्धन, तीसरा है सम्बन्ध का बन्धन, व्यवहार का

बन्धन। तो सब बन्धनों से मुक्त। निर्बन्धन आत्मा बंध नहीं सकती। सारे बन्धन लगन की अग्नि से भस्म करने वाले। लगन अग्नि है। अग्नि में जो चीज़ डाले सब भस्म! ऐसी बन्धनमुक्त आत्मा उड़ने के सिवाए रह नहीं सकती। बन्धन फँसाता है, निर्बन्धन उड़ाता है। बन्धन का पिंजड़ा खुला तो पंछी उड़ेगा ना! कोई कितना भी गोल्डन पिंजड़ा लेकर आये उस पिंजड़े में भी फँसने वाले नहीं। यह माया सोने का रूप धारण करके आती है। 'सोना' माना आकर्षण करने वाला। यादगार में भी दिखाते हैं - सोना-हिरण बनकर आई। तो सोने का हिरण अच्छा तो नहीं लगता। जब उड़ता पंछी हो गये तो सोना हो या हीरा हो लेकिन पिंजड़े के पंछी नहीं बन सकते।

9.5.84.. .. माताओं से:- सभी मातायें, जगत मातायें हो गईं ना! जगत का उद्धार करने वाली जगत मातायें। हृद के गृहस्थी की मातायें नहीं। सदा विश्व कल्याणकारी। जैसे बाप विश्व-कल्याणकारी है वैसे बच्चे भी विश्व-कल्याणकारी। तो घर में रहती हो या विश्व की सेवा के स्थान पर रहती? विश्व ही आपकी सेवा का स्थान है। बेहद में रहने वाली, हृद में रहने वाली नहीं। ज्यादा समय किसमें जाता है, हृद की प्रवृत्ति में या बेहद में? जितना बेहद का लक्ष्य रखेंगी तो हृद के बन्धनों से सहज मुक्त होती जायेंगी। जो अभी संकल्प आता है कि समय नहीं मिलता, इच्छा है लेकिन शरीर नहीं चलता, शक्ति नहीं है... यह सब बन्धन है। जब दृढ़ संकल्प कर लेते कि बेहद की सेवा में आना ही है, लगना ही है तो यह बन्धन सेकण्ड में समाप्त हो जाते हैं। समय स्वतः मिल जायेगा। शरीर आपे ही चलने लग जायेगा। यह अनुभव है भी और भी कर सकती हो। श्रेष्ठ कार्य के लिए समय न मिले, शरीर काम न करे, यह हो नहीं सकता। पहिये लग जायेंगे। जब उमंग उत्साह के पहिये लग जाते हैं तो न चलने वाले भी चलने लग पड़ते हैं। बीमारी भी खत्म हो जाती है। जैसे लौकिक में कोई आवश्यक काम करना होता है तो क्या करते हो? उतना समय बीमारी भाग जाती है ना! बाद में भले ही सो जाओ लेकिन उस समय मजबूरी से भी करती हो ना! तो जैसे हृद के कार्य में न चाहते भी चल पड़ते, ऐसे यहाँ भी खुशी-खुशी से चल पड़ेंगे। जब मजबूरी के पहिये भी चला सकते हैं तो यह खुशी के पहिये क्या नहीं कर सकते! तो उमंग उत्साह और खुशी के पहिये लगाकर यह हृद के बन्धन काटो। पति का बन्धन, बच्चों का बन्धन तो खत्म हुआ, अभी इन सूक्ष्म बन्धनों से भी मुक्त बनो। उड़ो और उड़ाओ। यह ऐसा है, वह ऐसा है.. यह भी रस्सी है। इसको भी तोड़ो, यह भी नीचे ले आती है। तो बन्धनमुक्त उड़ते पंछी बनो।

11.5.84... यह कुमार जीवन ही ऊँचा या नीचा होने वाली है। ऐसी जीवन में आप बाप के बन गये। विनाशी जीवन के साथी के कर्मबन्धन में बंधने के बजाए सच्चा जीवन का साथी ले लिया। कितने भाग्यवान हो!

कुमार कम्बाइण्ड तो बने लेकिन इस कम्बाइण्ड में बेफिकर बादशाह बन गये। कोई झंझट नहीं, बेफिकर हैं। आज बच्चा बीमार हुआ, आज बच्चा स्कूल नहीं गया... या कोई बोझ नहीं। सदा निर्बन्धन। एक के बन्धन में बंधने से अनेक बन्धनों से छूट गये। खाओ पियो मौज करो और क्या काम! अपने हाथ से बनाया और खाया। जो चाहो वह खाओ। स्वतन्त्र हो। कितने श्रेष्ठ बन गये। दुनिया के हिसाब से भी अच्छे हो। समझते हो ना कि दुनिया के झंझटों से बच गये। आत्मा की बात छोड़ो, शरीर के कर्म बन्धन के हिसाब से भी बच गये। ऐसे सेफ हो। कभी दिल तो नहीं होती कि कोई जानी साथी बना दें? कोई कुमारी का कल्याण कर दें? ऐसी दिल होती है? यह कल्याण नहीं है - अकल्याण है। क्यों? एक बन्धन बंधा और अनेक बन्धन शुरू हुए। यह एक बन्धन अनेक बन्धन पैदा करता। इसलिए मदद नहीं मिलेगी। बोझ होगा। देखने में मदद है लेकिन है अनेक बातों का बोझ। जितना बोझ कहो उतना बोझ है। तो अनेक बोझ से बच गये। कभी स्वप्न में भी नहीं सोचना। नहीं तो ऐसा बोझ अनुभव करेंगे जो उठना ही मुश्किल। स्वतन्त्र रहकर बन्धन में बंधे तो पद्मगुणा बोझ होगा। वह अनजान से बिचारे बंध गये, आप जानबूझकर बंधेंगे तो और पश्चाताप का बोझ होगा। कोई कच्चा तो नहीं है? कच्चे की गति नहीं होती। न यहाँ का रहता, न वहाँ का रहता। आपकी तो सद्गति हो गई है ना। सद्गति माना श्रेष्ठ गति। थोड़ा संकल्प आता हैं? फोटो निकल रहा है। अगर कुछ नीचे ऊपर किया तो फोटो आयेगा। जितने पक्के बनेंगे उतना वर्तमान और भविष्य श्रेष्ठ है।

कुमारियों ने अपने आपको आफर किया? जहाँ भी सेवा में भेजें वहाँ जायेंगी? पक्का सौदा किया है या कच्चा? पक्का सौदा है तो जहाँ बिठाओ, जो कराओ....ऐसे तैयार हो? अगर कोई भी बन्धन है तो पक्का सौदा नहीं। अगर खुद तैयार हो तो कोई रोक नहीं सकता। बकरी को बाँध कर बिठाते हैं, शेर को कोई बाँध नहीं सकता। तो शेरनी किसके बंधन में कैसे आ सकती! वह जंगल में रहते भी स्वतन्त्र है। तो कौन हो? शेरनी! शेरनी माना मैदान में आने वाली। जब एक बल एक भरोसा है तो 'हिम्मत बच्चों की, मदद बाप की'। कैसा भी कड़ा बन्धन है लेकिन हिम्मत के आधार पर वह कड़ा बन्धन भी सहज छूट जाता है। जैसे दिखाते हैं - जेल के ताले भी खुल गये तो आपके बन्धन भी खुल जायेंगे। तो ऐसे बनो। अगर थोड़ा सा भी बन्धन है तो उसको योग अग्नि से भस्म कर दो। भस्म हो जायेगा तो नाम-निशान गुम। तोड़ने से फिर भी

गाँठ लगा सकते। इसलिए तोड़ो नहीं लेकिन भस्म करो तो सदा के लिए मुक्त हो जायेंगी।

7.1.85... कुमारियाँ हैं ही निर्बन्धन। औरों का भी बन्धन खत्म करेंगी ना। सदा बाप के साथ पक्का सौदा करने वाली। हिम्मत है तो बाप की मदद भी मिलेगी। हिम्मत कम तो मदद भी कम।

14.1.85.. .. सभी बाप के संग के रंग में रंगे हुए नष्टोमोहा हो? या थोड़ा-थोड़ा मोह है? बच्चों में नहीं होगा लेकिन पोत्रों-धोत्रों में होगा। बच्चों की सेवा पूरी हुई दूसरों की सेवा शुरू हुई। कम नहीं होती। एक के पीछे एक लाइन लग जाती है। तो इससे बन्धन मुक्त हो! माताओं की कितनी श्रेष्ठ प्राप्ति हो गई। जो बिल्कुल हाथ खाली बन गई थीं वह अभी मालामाल हो गई। सब कुछ गँवाया अभी फिर से बाप द्वारा सर्व खजाने प्राप्त कर लिए तो मातायें क्या से क्या बन गई? चार दीवारों में रहने वाली विश्व का मालिक बन गई। यह नशा रहता है ना कि बाप ने हमको अपना बनाया तो कितना भाग्य है। भगवान आकर अपना बनाये ऐसा श्रेष्ठ भाग्य तो कभी नहीं हो सकता। तो अपने भाग्य को देख सदा खुश रहती हो ना। कभी यह खजाना माया चोरी न करे।

30.1.85... सभी अपने को श्रेष्ठ कुमारियाँ अनुभव करती हो? साधारण कुमारियाँ या तो नौकरी की टोकरी उठाती या तो दासी बन जाती हैं। लेकिन श्रेष्ठ कुमारियाँ विश्व-कल्याणकारी बन जाती हैं। ऐसी श्रेष्ठ कुमारियाँ हो ना! जीवन का श्रेष्ठ लक्ष्य क्या है? संगदोष के या संबंध के बंधन से मुक्त होना यही लक्ष्य है ना? बन्धन में बंधने वाली नहीं। क्या करें बंधन है, क्या करें नौकरी करनी है, इसको कहा जाता है बंधन वाली। तो न संबंध का बंधन, न नौकरी टोकरी का बंधन। दोनों बंधन से न्यारे वही बाप के प्यारे बनते हैं। ऐसी निर्बन्धन हो?

6.3.85.. .बापदादा सभी बांधेलियों को यही कहते कि योग अर्थात् याद की लगन को अग्नि रूप बनाओ। जब लगन अग्नि रूप बन जाती तो अग्नि में सब भस्म हो जाता। जो यह बन्धन भी लगन की अग्नि में समाप्त हो जायेंगे और स्वतन्त्र आत्मा बन जो संकल्प करते उसकी सिद्धि को प्राप्त करेंगी। स्नेही हो, स्नेह की याद पहुँचती है। स्नेह के रेसपाण्ड में स्नेह मिलता है लेकिन अभी याद को शक्तिशाली अग्नि रूप बनाओ। फिर वह दिन आ जायेगा जो सम्मुख पहुँच जायेंगी।

18.3.85.. .. आप रूहों में इतनी स्नेह की शक्ति है जो रूहों के रचयिता बाप को रूह-रूहान के लिए निर्वाण से वाणी में ले आते हो। ऐसी श्रेष्ठ रूह हो जो बन्धनमुक्त बाप को भी स्नेह के बन्धन में बांध देते हो। दुनिया वाले बन्धन से छुड़ाने वाले कह कर

पुकार रहे हैं और ऐसे बन्धनमुक्त बाप बच्चों के स्नेह के बन्धन में सदा बंधे हुए हैं। बाँधने में होशियार हो। जब भी याद करते हो तो बाप हाजर है ना! हज़ूर हाजर है।

27.3.85... हर व्यक्ति, वस्तु, कर्म के बन्धन से अतीत होना, न्यारा होना - इसको ही कर्मातीत अवस्था कहते हैं। कर्मातीत माना कर्म से न्यारा हो जाना नहीं। कर्म के बन्धनों से न्यारा। न्यारा बनकर कर्म करना अर्थात् कर्म से न्यारे। **कर्मातीत अवस्था अर्थात् बंधनमुक्त, योगयुक्त, जीवनमुक्त अवस्था!**

18.11.85... .. कुमार अर्थात् निर्बन्धन। सबसे बड़ा बन्धन मन के व्यर्थ संकल्पों का है। इसमें भी निर्बन्धन। कभी-कभी यह बन्धन बांध तो नहीं लेता है? क्योंकि संकल्प शक्ति हर कदम में कमाई का आधार है। याद की यात्रा किस आधार से करते हो? संकल्प शक्ति के आधार से बाबा के पास पहुँचते हो ना! अशरीरी बन जाते हो। तो मन की शक्ति विशेष है। व्यर्थ संकल्प मन की शक्ति को कमज़ोर कर देते हैं। इसलिए इस बन्धन से मुक्त। कुमार अर्थात् सदा तीव्र पुरुषार्थी। क्योंकि जो निर्बन्धन होगा उसकी गति स्वतः तीव्र होगी। बोझ वाला धीमी गति से चलेगा। हल्का सदा तीव्रगति से चलेगा। अभी समय के प्रमाण पुरुषार्थ का समय गया। अब तीव्र पुरुषार्थी बन मंजल पर पहुँचना है।

गृहस्थी जीवन है बन्धन वाली और कुमार जीवन है बन्धन मुक्त। तो निर्बन्धन आत्मा बन औरों को भी निर्बन्धन बनाओ।

18.1.86... .. पहली मुख्य बात है -किसी भी प्रकार के हृद के बन्धन में बंधे हुए तो नहीं हैं ना! **बन्धन मुक्त ही बेहद की सेवा में सफल होंगे।**

ब्राह्मण जन्म लेना अर्थात् याद का बन्धन बांधना। जैसे वह ब्राह्मण जीवन में कोई न कोई निशानी रखते हैं- तो इस ब्राह्मण जीवन की निशानी है - 'याद'। याद में रहना नैचुरल हो। इसलिए याद अलग की, सेवा अलग की, नहीं। दोनों इकट्ठे हों। इतना टाइम कहाँ है जो याद अलग करो, सेवा अलग करो।।इसलिए याद और सेवा सदा साथ है ही। इसी में ही अनुभवी भी बनते हैं, सफलता भी प्राप्त करते हैं।

16.3.86... .. जैसे आप लोग कहते हो ना सेकण्ड में मुक्ति वा जीवनमुक्ति का वर्सा लेना सभी का अधिकार है। तो समाप्ति के समय भी नम्बर मिलना थोड़े समय की बात है। लेकिन जरा भी हलचल न हो। बस बिन्दी कहा और बिन्दी में टिक जायें। बिन्दी हिले नहीं। ऐसे नहीं कि उस समय अभ्यास करना शुरू करो - मैं आत्मा हूँ...मैं आत्मा हूँ.. यह नहीं चलेगा। क्योंकि सुनाया - वार भी चारों ओर का होगा। लास्ट ट्रायल सब करेंगे। प्रकृति में भी जितनी शक्ति होगी, माया में भी जितनी शक्ति होगी, ट्रायल करेगी। **उनकी भी लास्ट ट्रायल और आपकी लास्ट कर्मातीत, कर्मबन्धन मुक्त स्थिति**

होगी। दोनों तरफ की बहुत पावरफुल सीन होगी। वह भी फुलफोर्स, यह भी फुलफोर्स। लेकिन सेकण्ड की विजय, विजय के नगाड़े बजायेगी। समझा लास्ट पेपर क्या है! सब शुभ संकल्प तो यही रखते भी हैं और रखना भी है कि नम्बरवन आना ही है। तो सबमें चारों ओर की बातों में विन होंगे तभी वन आयेंगे। अगर एक बात में जरा भी व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ समय लग गया तो नम्बर पीछे हो जायेगा। इसलिए सब चेक करो। चारों ही तरफ चेक करो।

11.4.86.. .. फरिश्ता कभी किसी भी बन्धन में नहीं बँधता। तो कोई भी बँधन तो नहीं है! मन का भी बन्धन नहीं। जब बाप से सर्वशक्तियाँ मिल गई तो सर्व शक्तियों से निर्बन्धन बनना सहज है। फरिश्ता कभी भी इस पुरानी दुनिया के, पुरानी देह के आकर्षण में नहीं आता। क्योंकि है ही डबल लाइट। तो सदा ऊँची स्थिति में रहने वाले। उड़ती कला में जाने वाले 'फरिश्ते' हैं, यही स्मृति अपने लिए वरदान समझ, समर्थ बनते रहना।

18.1.87..स्नेह सबसे बड़ी आकर्षित करने की शक्ति है जो परम-आत्मा, बन्धनमुक्त को भी, शरीर से मुक्त को भी स्नेह के बन्धन में बाँध लेती है, अशरीरी को भी लोन के शरीरधारी बना देती है। यही है बच्चों के स्नेह का प्रत्यक्ष प्रमाण।

18.1.87.. .. सेवा में कोई बन्धनयुक्त बन सेवा करते और कोई बन्धनमुक्त बन सेवा करते। सेवाधारी ब्रह्मा बाप भी है। लेकिन सेवा द्वारा हृद की रॉयल इच्छायें सेवा में भी हिसाबकिताब के बंधन में बाँधती हैं। लेकिन सच्चे सेवाधारी इस हिसाब-किताब से भी मुक्त हैं। इसी को ही - कर्मातीत स्थिति कहा जाता है। जैसे देह का बन्धन, देह के सम्बन्ध का बन्धन, ऐसे सेवा में स्वार्थ - यह भी बन्धन कर्मातीत बनने में विघ्न डालता है। कर्मातीत बनना अर्थात् इस रॉयल हिसाब-किताब से भी मुक्त।

18.1.87.. .. सेवा अर्थात् औरों को भी मुक्त बनाना। औरों को मुक्त बनाते स्वयं को बन्धन में बांध तो नहीं देते? नष्टोमोहा बनने के बजाए, लौकिक बच्चों आदि सबसे मोह त्याग कर स्टूडेंट से मोह तो नहीं करते? यह बहुत अच्छा है, बहुत अच्छा है, अच्छा-अच्छा समझते मेरे-पन की इच्छा के बन्धन में तो नहीं बंध जाते? सोने की जंजीरें तो अच्छी नहीं लगती हैं ना? तो आज का दिन हृद के मेरे-मेरे से मुक्त होने का अर्थात् कर्मातीत होने का अव्यक्ति दिवस मनाओ। इसी को ही स्नेह का सबूत कहा जाता है। कर्मातीत बनना यह लक्ष्य तो सबका अच्छा है। अब चेक करो - कहाँ तक कर्मों के बन्धन से न्यारे बने हो? पहली बात - लौकिक और अलौकिक, कर्म और सम्बन्ध दोनों में स्वार्थ भाव से मुक्त। दूसरी बात - पिछले जन्मों के कर्मों के हिसाब-किताब वा वर्तमान पुरुषार्थ के कमजोरी के कारण किसी भी व्यर्थ स्वभाव-संस्कार के

वश होने से मुक्त बने हैं? कभी भी कोई कमजोर स्वभाव-संस्कार वा पिछला संस्कार-स्वभाव वशीभूत बनाता है तो बन्धनयुक्त हैं, बन्धनमुक्त नहीं। ऐसे नहीं सोचना कि चाहते नहीं हैं लेकिन स्वभाव या संस्कार करा देते हैं। यह भी निशानी बन्धनमुक्त की नहीं लेकिन बन्धनयुक्त की है। और बात - कोई भी सेवा की, संगठन की, प्रकृति की परिस्थिति स्व-स्थिति को वा श्रेष्ठ स्थिति को डगमग करती है - यह भी बन्धनमुक्त स्थिति नहीं है। इस बन्धन से भी मुक्त। और तीसरी बात - पुरानी दुनिया में पुराने अन्तिम शरीर में किसी भी प्रकार की व्याधि अपनी श्रेष्ठ स्थिति को हलचल में लाये - इससे भी मुक्त। एक है व्याधि आना, एक है व्याधि हिलाना। तो आना - यह भावी है लेकिन स्थिति हिल जाना - यह बन्धनयुक्त की निशानी है। स्व-चिन्तन, ज्ञान-चिन्तन, शुभ-चिन्तक बनने का चिन्तन बदल शरीर की व्याधि का चिन्तन चलना - इससे मुक्त। क्योंकि ज्यादा प्रकृति का चिंतन, चिंता के रूप में बदल जाता है। तो इससे मुक्त होना - इसी को ही कर्मातीत स्थिति कहा जाता है। इन सभी बन्धनों को छोड़ना - यही कर्मातीत स्थिति की निशानी है। ब्रह्मा बाप ने इन सभी बन्धनों से मुक्त हो कर्मातीत स्थिति को प्राप्त किया। तो आज का दिवस ब्रह्मा बाप समान कर्मातीत बनने का दिवस है। आज के दिवस का महत्त्व समझा? अच्छा।

23.1.87... कर्मयोगी आत्मा कभी कर्म के बन्धन में नहीं फँसेंगी। सदा न्यारे और सदा बाप के प्यारे। कर्म के बन्धन से मुक्त - इसको ही 'कर्मातीत' कहते हैं

10.11.87.. .. फरिश्ते अर्थात् सर्व बन्धनों से मुक्त। तो सब बन्धन समाप्त हुए या अभी समाप्त करेंगे? दुनिया वालों को तो कहते हो कि 'अब नहीं तो कब नहीं।' यह पहले अपने को कहते या दूसरों को ही? दूसरों को कहना अर्थात् पहले अपने को कहना। जब किसी से बात करते हो तो पहले कौन सुनता है? पहले अपने कान सुनते हैं ना। तो किसी को भी कहना अर्थात् पहले अपने आप को कहना। तो सदा हर कार्य में 'अब' करने वाले आगे बढ़ेंगे। अगर 'कब' पर छोड़ेंगे तो नम्बर आगे नहीं ले सकेंगे, पीछे नम्बर में आयेंगे।

22.11.87.. ..सदा स्वराज्य अधिकारी अर्थात् सदा ही निरअहंकारी, सदा ही निर्मीन बन सेवाधारी बनने वाले। मोह का बन्धन भी खत्म।

24.2.88.. .. किसी भी शुद्ध कर्म वा व्यर्थ कर्म वा विकर्म वा पिछला कर्म, किसी भी कर्म के बन्धन में बंधकर करना - इसको कर्मातीत अवस्था नहीं कहेंगे।

7.3.88.. .. 'फरिश्ता कर्म के सम्बन्ध में आयेगा लेकिन कर्म के बन्धन में नहीं बंधेगा।' और बाप का सम्बन्ध करावनहार का जुटा हुआ है, इसलिए निमित्त भाव में

कभी 'मैं - पन' का अभिमान नहीं आता है। सदा निर्मान बन निर्माण का कार्य करेंगे। तो कितना भाग्य है आपका!

30.1.88.. .. कुमार अर्थात् शक्तिशाली, जो संकल्प करें वह कर सकते हैं। **कुमार अर्थात् सदा बन्धनमुक्त बनने और बनाने वाले।** ऐसी विशेषतायें हैं ना? जो संकल्प करो वही कर्म में ला सकते हो। स्वयं भी पवित्र रह औरों को भी पवित्र रहने का महत्व बता सकते हो। ऐसी सेवा के निमित्त बन सकते हो।

29.12.89... कर्मयोगी का अर्थ ही है-मैं अशरीरी आत्मा शरीर के बंधन से न्यारी हूँ, कर्म करने के लिए कर्म में आती हूँ और कर्म समाप्त कर कर्म-सम्बन्ध से न्यारी हो जाती हूँ,सम्बन्ध में रहते हैं, बंधन में नहीं रहते।तो यह क्या हुआ?कर्म के लिए 'आना' और फिर न्यारा हो 'जाना'।कर्म के बन्धन-वश कर्म में नहीं आते हो लेकिन कर्मेन्द्रियों को अधीन कर अधिकार से कर्म करने के लिए कर्मयोगी बनते हो।

10.1.90.. .. आत्मा का अनादि स्वरूप ही राजा का है, मालिक का है । यह तो पीछे परतंत्र बन गई है लेकिन आदि और अनादि स्वरूप स्वतंत्र है । तो आदि और अनादि स्वरूप सहज याद आना चाहिए ना। स्वतंत्र हो या थोड़ा-थोड़ा परतंत्रहो? मन का भी बंधन नहीं। अगर मन का बंधन होगा तो यह बंधन और बंधन को ले आयेगा। कितने जन्म बंधन में रहकर देख लिया! अभी भी बंधन अच्छा लगता है क्या? बंधनमुक्त अर्थात् राजा, स्वराज्य-अधिकारी । क्योंकि बंधन प्राप्तियों का अनुभव करने नहीं देता। इसलिए सदा ब्रेक पावरफुल रखो, तब अन्त में पास-विद्-ऑनर होंगे अर्थात् फर्स्ट डिवीजन में आर्येंगे।

7.3.90.. .. टीचर्स माया के नॉलेजफुल हो? सिर्फ नॉलेज नहीं लेकिन नॉलेजफुल हो? बाप को पहचान लिया - सिर्फ यह नहीं सोचो, माया को भी पहचानना है। अभी बंधन में बंध गई हो वा कठिन लगता है? **मीठा बंधन लगता या थोड़ा मुश्किल बंधन लगता?** सोचते हो - यह तो बहुत मरना पड़ेगा, बाप के बन गये अब फिर यह करना है, यह करना है, कहाँ तक करेंगे! अगर यह पता होता तो आते ही नहीं - ऐसा सोच चलता है? जहाँ प्यार है वहाँ कोई मुश्किल नहीं। पतंगा भी शमा पर कुर्बान हो जाता है। तो आप श्रेष्ठ आत्माएं परमात्म-प्यार के पीछे मुश्किल अनुभव कर सकती हो क्या? जब परवाना कुर्बान हो सकता है तो आप क्या नहीं कर सकती? जिस घड़ी मुश्किल अनुभव होता है तो जरूर प्यार की परसेन्टेज में अन्तर आ जाता है, इसलिए कुछ समय मुश्किल लगता है। अगर होवे ही मुश्किल तो सदा मुश्किल लगना चाहिए, कभी-कभी क्यों मुश्किल लगता? परमात्मा और आपके बीच में कोई बात आ

जाती है, इसलिए मुश्किल हो जाता है और परसेन्टेज में फर्क पड़ जाता है। वह बीच से निकाल दो तो फिर सहज हो जाए।

7.3.90... ब्राह्मण जन्म ही खुशी के झूले में हुआ है और जायेंगे भी तो खुशी के झूले में झूलते-झूलते जायेंगे। ऐसे ही जायेंगे या दर्द में जायेंगे? ऐसे तो नहीं समझेंगे - हाय कर्मबंधन, कर्मभोग बहुत कड़ा है! चाहे कितना भी कड़ा हिसाब हो लेकिन आप चुक्त् करने वाले हैं। तो चुक्त् का सदा नशा रहता है। कितना भी पुराना कड़ा हिसाब हो, लेकिन जब चुक्त् होता है तो खुशी होती है। ऐसे हिम्मत है या घबरा जायेंगे? थोड़ा-सा दर्द होगा तो घबरायेंगे तो नहीं? जब परमात्मा के प्यारे बन गये तो उसे खुशी होगी ना। अच्छा!

13.3.90... अपने ही कमजोर संस्कार का बंधन है? व्यर्थ संकल्पों का बोझ है? कोई भी बोझ अगर बहुत समय से चलता रहेगा तो अंत में भी यह बोझ नीचे खींच सकता है। संगमयुग का एक वर्ष कई वर्षों के समान है। तो एक साल में भी अगर बोझ है तो अनेक वर्षों का बहुतकाल हो जाता है। इसलिए बहुतकाल डबल लाइट का अभ्यास करो। तो चेक करो और चेंज करो। क्योंकि कोई भी बंधन, बोझ उड़ती कला में जाने नहीं देगा। कितनी भी मेहनत करो बार-बार नीचे आ जायेंगे। इसलिए सदा डबल लाइट और उड़ती कला। अच्छा!

18.12.91... कितना भी लोहा कड़ा हो लेकिन तेज आग के आगे मोम बन जाता है। कितनी भी कड़ी परीक्षा हो, हिसाब किताब हो, कड़ा बन्धन हो लेकिन योग अग्नि के आगे कोई बात कड़ी नहीं, सब सहज है। कई आत्मायें कहती हैं - मेरे ही शरीर का हिसाब है और किसका नहीं.. मेरे को ही ऐसा परिवार मिला है.. मेरे को ही ऐसा काम मिला है.. ऐसे साथी मिले हैं.. लेकिन जो हो रहा है वह बहुत अच्छा। यह कड़ा हिसाब शक्तिशाली बना देता है। सहन शक्ति को बढ़ा देता है। तेज आग के आगे कोई भी चीज परिवर्तन न हो - यह हो ही नहीं सकता। तो यह कभी नहीं कहना - कड़ा हिसाब है। कमजोरी ही सहज को मुश्किल बना देती है।

24.9.92... घर में रहने वाली, घर की सेवा करने वाली साधारण मातायें हैं-यह याद रहता है या जगत माता हूँ, जगत का कल्याण करने के निमित्त यह कार्य कर रही हूँ-यह याद रहता है? जिसे यह रूहानी नशा होगा उसकी निशानी क्या होगी? वह खुशी में रहेगा, कोई भी कर्म करेगा लेकिन कर्म के बन्धन में नहीं आयेगा, न्यारा और प्यारा होगा। कर्म के बन्धन में आना अर्थात् कर्म में फंसना और जो न्यारा-प्यारा होता है वह कर्म करते भी कर्म के बन्धन में नहीं आता, कर्मयोगी बन कर्म करता है। अगर कर्म के बन्धन में आयेंगे तो खुशी गायब हो जायेगी। क्योंकि कर्म अच्छा नहीं होगा। लेकिन

कर्मयोगी बनकर कर्म करने से दुःख की लहर से मुक्त हो जायेंगे। सदा न्यारा होने के कारण प्यारे रहेंगे। तो समझा, कैसे रहना है? कर्मबन्धन मुक्त। कर्म का बन्धन खींचे नहीं, मालिक होकर कर्म करायें। मालिक न्यारा होता है ना। **मालिक होकर कर्म कराना-इसे कहा जाता है बन्धन-मुक्त।** ऐसी आत्मा सदा स्वयं भी खुश रहेगी और दूसरों को भी खुशी देगी। ऐसे रहते हो? सुनते तो बहुत हो, अभी ज् सुना है वह करना है। करेंगे तो पायेंगे। अभी-अभी करना, अभी-अभी पाना।

31.12.92... .. एक है 'संबंध' और दूसरा है 'बंधन'। एक है कर्म-बन्धन और दूसरा है कर्म-सम्बन्ध। तो संबंध तो रहना ही है। जब तक कर्मेन्द्रियां हैं तो कर्म का संबंध तो रहेगा लेकिन बंधन नहीं हो। बंधन की निशानी है-जिसके बंधन में जो रहता है उसके वश रहता है। जो संबंध में रहता है वह स्वतन्त्र रहता है, वश नहीं होता। कर्मेन्द्रियों से कर्म के संबंध में आना अलग बात है लेकिन कर्मबन्धन में नहीं आना। फरिश्ता अर्थात् कर्म करते भी कर्म के बंधन से मुक्त। ऐसे नहीं कि आज आंख कहे कि यह करना ही है, देखना ही है-तो वश होकर के देख लें। जैसे कोई जेल में बंधन में होता है, तो जेलर जैसे चाहे उसको बिठायेगा, चलायेगा, खिलायेगा। तो बंधन में होगा ना! वो चाहे मैं जेल से चला जाऊं, तो जा सकता है? बंधन है ना। ऐसे पुराने शरीर का बंधन न हो, सिर्फ सेवा प्रति संबंध हो। ऐसी अवस्था है? या कभी बंधन, कभी संबंध? बंधन बार-बार नीचे ले आयेगा। तो फरिश्ता अर्थात् बंधनमुक्त। ऐसे नहीं-कोशिश करेंगे। 'कोशिश' शब्द ही सिद्ध करता है कि पुरानी दुनिया की कशिश है। 'कोशिश' शब्द नहीं। करना ही है, होना ही है। 'है'-'है'..... उड़ा देगा, 'गे'-'गे'..... नीचे ले आयेगा। तो 'कोशिश' शब्द समाप्त करो। फरिश्ता अर्थात् जीवन्मुक्त, जीवन-बंधन नहीं। न देह का बंधन, न देह के संबंध का बंधन, न देह के पदार्थों का बंधन। ऐसे जीवन्मुक्त हो? अव्यक्त वर्ष का अर्थ ही है फरिश्ता स्थिति में स्थित रहना।

31.12.92... .. बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि जब आपकी रचना कमल पुष्प में यह विशेषता है कि न्यारा रह सकता है, जल में रहते जल के बन्धन से मुक्त है। तो मनुष्यात्मा रचता है और वह रचना है। तो रचना में यह विशेषता है और मास्टर रचता में नहीं? है ना। कभी भी बन्धनमुक्त के बजाए अगर बन्धनयुक्त हो जाओ, बन्धन में फंस जाओ तो अपने सामने कमल पुष्प का दृष्टान्त रखो कि जब कमल पुष्प न्यारा-प्यारा बन सकता है तो क्या मास्टर सर्वशक्तवान नहीं बन सकता! तो सदा बन जायेंगे। थोड़ा टाइम बनते हैं, थोड़ा टाइम नहीं बनते हैं-इसमें मजा नहीं है ना। कभी बन्धन, कभी बन्धनमुक्त-यह अच्छा लगता है? तो जो अच्छी चीज नहीं लगती उसे छोड़ दिया जाता है। या थोड़ा-थोड़ा रखा जाता है? तो जीवन्मुक्त बनने की विधि क्या

है? न्यारा और प्यारा बनने की विधि क्या है? तख्तनशीन बनो। सदा तख्तनशीन आत्मा बन जीवन्मुक्ति का अनुभव करते रहो। यह जीवन्मुक्ति की स्थिति बहुत प्यारी है।

9.1.93.. .. ब्राह्मण अर्थात् जीवन-मुक्त। तो चेक करो-कोई भी कर्म मुक्त होकर के करते हैं? क्योंकि कर्म के बिना तो रह नहीं सकते हैं, जब कर्मन्द्रियों का आधार है तो कर्म तो करना ही है, लेकिन कर्म-बन्धन नहीं, कर्म-सम्बन्ध। जीवन-मुक्त अवस्था अर्थात् सफलता भी ज्यादा और कर्म का बोझ भी नहीं। जो मुक्त हैं वो सदा ही सफलतामूर्त हैं। जीवन-मुक्त आत्मा सदा फलक से कहेगी कि सफलता जन्मसिद्ध अधिकार है। जो बन्धन में होगा वो सदा सोचता रहेगा कि सफलता होगी या नहीं, यह करें या नहीं करें, ठीक होगा या नहीं होगा? लेकिन ब्राह्मण आत्माओं की सफलता निश्चित है, विजय निश्चित है। ऐसे नहीं समझना कि भविष्य में जीवन-मुक्त होंगे! अभी जीवन-मुक्त होना है। इस समय ही जीवनबन्ध और जीवन-मुक्त का ज्ञान है! सतयुग में यह ज्ञान नहीं होगा! मजा है तो इस समय का है! जीवनबन्ध का भी अनुभव किया और जीवन-मुक्त का भी अनुभव कर रहे हो! सदा जीवन-मुक्त रहने का सहज साधन है-'में' और 'मेरा बाबा'! क्योंकि मेरे-मेरे का ही बन्धन है। मेरा बाबा हो गया तो सब मेरा खत्म। जब 'एक मेरा' में 'सब मेरा-मेरा' समाप्त हो गया, तो बन्धन-मुक्त हो गये। तो यह सहज साधन आता है ना! कर्म के पहले चेक करो कि बन्धन में फँस के तो कर्म नहीं कर रहे हैं? दुनिया वाले तो बहुत कठिन तप करते हैं मुक्ति प्राप्त करने को। और आपको सहज मिला ना! 'मेरा बाबा' कहा और बन्धन खत्म। तो जो सहज होता है, उसको सदा अपनाया जाता है। जो मुश्किल होता है उसे सदा नहीं कर सकते हैं। तो सदा सहज है या कभी-कभी थोड़ा मुश्किल लगता है? तो यही याद रखना कि हम ब्राह्मण जीवन-मुक्त आत्मा हैं। सहजयोगी अर्थात् सफलतामूर्त। अच्छा!

26.3.93.. .. निराकारी बन, आकारी फरिश्ता बन कार्य किया और फिर निराकारी! कर्म-सम्बन्ध के स्वरूप से सम्बन्ध में आओ, सम्बन्ध को बन्धन में नहीं लाओ। देह-अभिमान में आना अर्थात् कर्म-बन्धन में आना। देह सम्बन्ध में आना अर्थात् कर्म-सम्बन्ध में आना। दोनों में अंतर है। देह का आधार लेना और देह के वश होना-दोनों में अन्तर है। फरिश्ता वा निराकारी आत्मा देह का आधार लेकर देह के बन्धन में नहीं आयेगी, सम्बन्ध रखेगी लेकिन बन्धन में नहीं आयेगी। तो बापदादा फिर इसी वर्ष में रिजल्ट देखेंगे कि निरहंकारी, आकारी फरिश्ते और निराकारी स्थिति में-लक्ष्य और लक्षण कितने समान हुए?

31.12.93.. .. अगर प्रवृत्ति में रहते हो तो सेवा के लिये रहते हो। कभी भी यह नहीं समझो कि हिसाब-किताब है, कर्म बन्धन है .. लेकिन सेवा है। सेवा के बन्धन में बंधने से कर्म-बन्धन खत्म हो जाता है। जब तक सेवा भाव नहीं होता तो कर्मबन्धन खींचता रहता है। बाप ने डायरेक्शन दिया है उसी श्रीमत पर रहे हुए हो, अपने हिसाब किताब से नहीं। कर्मबन्धन है या सेवा का बन्धन है .. उसकी निशानी है अगर कर्म बन्धन होगा तो दुःख की लहर आयेगी और सेवा का बन्धन होगा तो दुःख की लहर नहीं आयेगी, खुशी होगी। तो कभी भी किसी भी समय अगर दुःख की लहर आती है तो समझो कर्मबन्धन है। कर्मबन्धन को बदलकर सेवा का बन्धन नहीं बनाया है। परिवर्तन करना नहीं आया है। विश्व सेवाधारी हैं, तो विश्व में जहाँ भी हो तो विश्व सेवा अर्थ हो। यह पक्का याद रहता है या कभी कर्मबन्धन में फंस भी जाते हो? सेवाधारी कभी फंसेगा नहीं। वो न्यारा और प्यारा रहेगा। समझते तो हो कि न्यारे रहना है लेकिन जब कोई परिस्थिति आती है तो उस समय न्यारे रहो। कोई परिस्थिति नहीं है, उस समय तो लौकिक में भी न्यारे रहते हो। लेकिन अलौकिक जीवन में सदा ही न्यारे। कभी-कभी न्यारे नहीं, सदा ही न्यारे। कभी-कभी वाले तो राज्य भी कभी-कभी करेंगे। सदा राज्य करना है तो सदा न्यारा भी रहना है ना। इसलिए सदा शब्द को अन्डरलाइन करो।

18.1.94.. .. सदा 'एक बाप दूसरा न कोई' इसी अनुभव में रहते हो ना? बस एक है, कि दूसरा-तीसरा भी हो जाता है? एक बाप ही संसार बन गया। कोई आकर्षण नहीं, कोई कर्मबन्धन नहीं। अपने कोई कमज़ोर संस्कार का भी बन्धन नहीं? कोई कमज़ोर संस्कार हैं? कोई पुराना संस्कार अभी तक है? कभी थोड़ा रोब आता है? कभी छोटों के ऊपर रोब आता है? (क्रोध आता है) क्रोध तो रोब से भी बड़ा है। क्रोध आता है तो इसका अर्थ है कर्म का बन्धन है। पाण्डवों में क्रोध आता है और माताओं में मोह आता है। अभिमान भी आता है-मैं पुरुष हूँ, कभी बच्चों पर, कभी माताओं पर अभिमान आता है मैं बड़ा हूँ। अधिकार रखते हो कि ये क्यों किया! मेरी है, ये समझते हो? सेवा के साथी हैं, न कि मेरे का अधिकार है। मेरा समझने से ही क्रोध, अभिमान या मोह आता है। अगर मेरा नहीं तो क्रोध भी नहीं आयेगा। मातायें, बच्चों के ऊपर क्रोध करती हो? जब बहुत चंचलता करते हैं तो क्रोध नहीं करती?

7.3.95.. .. कर्म के सम्बन्ध में आना और कर्म के बन्धन में आना इसमें भी फर्क है। अगर कर्म के बन्धन में आते हैं तो कर्म आपको खींचेगा, फुल स्टॉप नहीं लगाने देगा। और न्यारेप्यारे होकर किसी भी कर्म के सम्बन्ध में हो तो सेकण्ड में फुल स्टॉप लगेगा। क्योंकि बन्धन नहीं है। बन्धन भी खींचता है और सम्बन्ध भी खींचता है

लेकिन न्यारे होकर सम्बन्ध में आना-यह अण्डरलाइन करना। इसी अभ्यास वाले ही पास विद् ऑनर होंगे।

9.1.96... मातायें सेवा में आगे आयें तो सेवा बहुत कर सकती हैं। अभी निमन्त्रण होते हुए भी सेन्टर नहीं खुलते हैं। कारण? अकेली छोटी-छोटी कुमारी समय प्रमाण नहीं रख सकते। और माता हो तो एक मास में आप देखो कितने सेन्टर खुल जाते हैं। तो माताओं में ये हिम्मत नहीं है। किसको पोत्रा, किसको धोत्रा, किसको पति, कोई न कोई बन्धन है। माताओं में जोश आना चाहिये। प्रवृत्ति को सम्भालें लेकिन एक-दो में साथी बन करके, एक-दो के मददगार बनके पहले दो मास, तीन मास निकलो फिर सेवा का रस बैठ जायेगा तो आपको आप ही निर्बन्धन करेगा। तो प्रवृत्ति वाले पाण्डव माताओं के किसी भी ढंग से मददगार बन माताओं को सेवा के लिए स्वतन्त्र करो। लेकिन अभी तक यह आश बाप की प्रवृत्ति वालों ने पूरी नहीं की। डायमण्ड जुबली में करना। समझा प्रवृत्ति वालों ने। अच्छा!

18.1.97... बहुतकाल से जीवनमुक्त स्थिति का अभ्यास, बहुतकाल जीवनमुक्त राज्य भाग्य का अधिकारी बनायेगा। उसके पहले जब आप अभी जीवनमुक्त बनो तो आप जीवनमुक्त स्थिति वालों का प्रभाव जीवनबंध वाली आत्माओं का बंधन समाप्त करेगा। तो यह सेवा नहीं करनी है क्या? करनी है ना! तो आप ब्रह्मा बाप को डेटकान्सेस का जवाब दो। वह डेट कब होगी जब सब जीवनमुक्त हों? कोई बंधन नहीं। बंधनों की लम्बी लिस्ट वर्णन करते हो, क्लासेज कराते हो तो बंधनों की बड़ी लम्बी लिस्ट निकालते हो लेकिन बाप कहते हैं सब बन्धनों में पहला एक बंधन है-देह भान का बंधन। उससे मुक्त बनो। देह नहीं तो दूसरे बंधन स्वतः ही खत्म हो जायेंगे।

21.11.98.. .. आप लोग एक चित्र दिखाते हो ना! साधारण अज्ञानी आत्मा को कितनी रस्सियों से बंधा हुआ दिखाते हो। वह है अज्ञानी आत्मा के लिए लोहे की जंजीर। मोटे-मोटे बंधन हैं। लेकिन ज्ञानी तू आत्मा बच्चों के बहुत महीन और आकर्षण करने वाले धागे हैं। लोहे की जंजीर अभी नहीं है, जो दिखाई दे देवे। बहुत महीन भी है, रॉयल भी है। पर्सनैलिटी फील करने वाले भी हैं, लेकिन वह धागे देखने में नहीं आते, अपनी अच्छाई महसूस होती है। अच्छाई है नहीं लेकिन महसूस ऐसे होती है कि हम बहुत अच्छे हैं। हम बहुत आगे बढ़ रहे हैं। तो बापदादा देख रहे थे - यह जीवनबन्ध के धागे मैजारिटी में हैं। चाहे एक हो, चाहे आधा हो लेकिन जीवनमुक्त बहुत-बहुत थोड़े देखे। तो बापदादा देख रहे थे कि हिसाब के अनुसार यह सेकण्ड स्टेज है जीवनमुक्त, लास्ट स्टेज तो है - देह से न्यारे विदेहीपन की। उस स्टेज और जो स्टेज सुनाई उसके लिए और बहुत-बहुत-बहुत अटेन्शन चाहिए।

18.1.99... .. बापदादा कहते हैं - हर एक सारे वर्ष में सर्व बन्धनों से मुक्त रहे! लिस्ट निकाली थी ना। कितने बंधन निकाले थे? (18) अच्छा तो 18 ही बंधन से स्वप्न तक भी मुक्त, स्वप्न में भी कोई बंधन की रूप-रेखा न आई हो, इसको कहा जाता है - मुक्त।

18.1.2002.. .. जैसे बाप करावनहार है ऐसे में आत्मा भी करावनहार हूँ। इसलिए कर्म के बन्धन में बंधेंगे नहीं, न्यारे रहेंगे क्योंकि कर्म के बन्धन में फंसने से ही समस्यायें आती हैं। सारे दिन में चेक करो - करावनहार आत्मा बन कर्म करा रही हूँ? अच्छा! अभी मुक्ति दिलाने की मशीनरी तीव्र करो।

28.3.2002.. स्वयं सतगुरु अमृतवेले से रात तक हर कर्म की श्रेष्ठ मत दे कर्म बन्धन के परिवर्तन में, कर्म सम्बन्ध में आने की श्रीमत देने के निमित्त बनायेंगे - यह भी स्वप्न में नहीं था। लेकिन अभी अनुभव से कहते हो हमारा हर कर्म श्रीमत पर चल रहा है। ऐसा अनुभव है? ऐसा श्रेष्ठ भाग्य हर बच्चों का बापदादा भी देख-देख हर्षित होते हैं। वाह मेरे श्रेष्ठ भाग्यवान वाह! बच्चे कहते वाह बाबा वाह! और बाप कहते वाह बच्चे वाह!

15.12.2003.. .. एक तो एकता, यह एकता की शक्ति, हाँ जी, हाँ जी, विचार दिया, फिर एकता के बन्धन में बंध गये। तो एकता सफलता का साधन है। आप एक-एक सफलता के सितारे हो।

20.3.2004.. .. मातायें, हाय-हाय तो नहीं करती? नहीं? कभी-कभी करती हैं? पाण्डव करते हैं? मुख से भले नहीं करो लेकिन मन में संकल्प मात्र भी अगर किसी भी बात में हाय है तो फ्लाय नहीं। हाय अर्थात् बंधन और फ्लाय, उड़ती कला अर्थात् जीवन-मुक्त, बंधन-मुक्त। तो चेक करो क्योंकि ब्राह्मण आत्मायें जब तक स्वयं बन्धन मुक्त नहीं हुए हैं, कोई भी सोने की, हीरे की रॉयल बंधन की रस्सी बंधी हुई है तो सर्व आत्माओं के लिए मुक्ति का गेट खुल नहीं सकता। आपके बंधन-मुक्त बनने से सर्व आत्माओं के लिए मुक्ति का गेट खुलेगा। तो गेट खोलने की वा सर्व आत्माओं के दुःख, अशान्ति से मुक्त होने की जिम्मेवारी आपके ऊपर है।

20.3.2004.. .. तो बापदादा की आशायें इस सीजन के समाप्ति की यही हैं कि हर एक बच्चा जो ब्रह्माकुमार, ब्रह्माकुमारी कहलाते हैं, मानते हैं, जानते हैं, वह हर एक ब्राह्मण आत्मा जो भी संकल्प रूप में भी हृद के बन्धन हैं, उस बंधनों से मुक्त हो। ब्रह्मा बाप समान बन्धनमुक्त, जीवन-मुक्त। ब्राह्मण जीवन मुक्त, साधारण जीवन मुक्त नहीं, ब्राह्मण श्रेष्ठ जीवनमुक्त का यह विशेष वर्ष मनायें।

30.11.2005..समान बच्चों की विशेषता है वह सदा निर्विघ्न, निर्विकल्प, निमार्कण और निर्मल होंगे। ऐसी आत्मार्यें सदा स्वतन्त्र होती हैं, किसी भी प्रकार के हृद के बन्धन में बंधायमान नहीं होती। तो अपने आप से पूछो ऐसी बेहद की स्वतन्त्र आत्मा बने हैं!

- स्वतन्त्र आत्मा कोई भी पुराने स्वभाव और संस्कार के बन्धन में नहीं होगी। पुराने स्वभाव और संस्कार से मुक्त होगी।

18.1.2007.. .. आप ब्राह्मण आत्मार्यें स्वयं मुक्त बन अनेकों को मुक्ति दिलाने के निमित्त हो। एक भाषा जो मुक्ति दिलाने के बजाए बंधन में बांधती है, समस्या के अधीन बनाती है, वह है ऐसा नहीं, वैसा। वैसा नहीं ऐसा। जब समस्या आती है तो यही कहते हैं बाबा ऐसा नहीं था, वैसा था ना। ऐसा नहीं होता, ऐसा होता ना। यह है बहाने बाजी करने का खेल।

15.10.2007.. .. ब्राह्मण जीवन में कई बातों से जो पास्ट लाइफ के बन्धन हैं, उससे मुक्त हुए हो। लेकिन सर्व बन्धनों से मुक्त हैं या कोई कोई बंधन अभी भी अपने बन्धन में बांधता है? इस ब्राह्मण जीवन में मुक्ति जीवनमुक्ति का अनुभव करना ही ब्राह्मण जीवन की श्रेष्ठता है क्योंकि सतयुग में जीवनमुक्त, जीवनबंध दोनों का ज्ञान ही नहीं होगा। अभी अनुभव कर सकते हो, जीवनबंध क्या है, जीवनमुक्त क्या है, क्योंकि आप सबका वायदा है, सबका वायदा है, अनेक बार वायदा किया है, क्या करते हो वायदा, याद है? किसी से भी पूछते हैं आपके इस ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य क्या है? क्या जवाब देते हो? बाप समान बनना है। पक्का है ना? बाप समान बनना है ना? कि थोड़ा थोड़ा बनना है? समान बनना है ना! बनना है समान? कि थोड़ा भी बन गये तो चलेगा! चलेगा? उसको समान तो नहीं कहेंगे ना। तो बाप मुक्त है, या बंधन है? अगर किसी भी प्रकार का चाहे देह का, चाहे कोई देह के सम्बन्ध, माता पिता बंधु सखा नहीं, देह के साथ जो कर्मेन्द्रियों का सम्बन्ध है, उस कोई भी कर्मेन्द्रियों के सम्बन्ध का बंधन है, आदत का बंधन है, स्वभाव का बंधन है, पुराने संस्कार का बंधन है, तो बाप समान कैसे हुए? और रोज वायदा करते हो बाप समान बनना ही है। हाथ उठाते हैं तो सभी क्या कहते हैं? लक्ष्मी नारायण बनना है। बापदादा को खुशी होती है, वायदा बहुत अच्छे अच्छे करते हैं लेकिन वायदे का फायदा नहीं उठाते हैं। वायदा और फायदा का बैलेन्स नहीं जानते। वायदों का फाइल बापदादा के पास बहुत बहुत बहुत बड़ा है, सभी का फाइल है। ऐसे ही फायदे का भी फाइल हो, बैलेन्स हो, तो कितना अच्छा लगेगा। यह सेन्टर्स की टीचर्स बैठी है ना। यह भी सेन्टर निवासी बैठे हैं

ना? तो समान बनने वाले हुए ना। सेन्टर निवासी निमित्त बने हुए बच्चे तो समान चाहिए ना! हैं? हैं भी लेकिन कभी-कभी थोड़ा नटखट हो जाते हैं?

बापदादा तो सभी बच्चों का सारे दिन का हाल और चाल दोनों देखते रहते हैं। आपकी दादी भी वतन में थी ना, तो दादी भी देखती थी तो क्या कहती थी? पता है, कहती थी बाबा ऐसा भी है क्या? ऐसा होता है, ऐसे करते हैं, आप देखते रहते हैं? सुना, आपकी दादी ने क्या देखा। अभी बापदादा यही देखने चाहते हैं कि एक-एक बच्चा मुक्ति जीवनमुक्ति के वर्से का अधिकारी बने, क्योंकि वर्सा अभी मिलता है। सतयुग में तो नेचरल लाइफ होगी, अभी के अभ्यास की नेचुरल लाइफ, लेकिन वर्से का अधिकार अभी संगम पर है। इसीलिए बापदादा यही चाहते हैं कि हर एक स्वयं चेक करे अगर कोई भी बंधन खींचता है, तो कारण सोचो। कारण सोचो और कारण के साथ निवारण भी सोचो। निवारण बापदादा ने अनेक बार भिन्न-भिन्न रूप से दे दिये हैं। सर्वशक्तियों का वरदान दिया है, सर्वगुणों का खज़ाना दिया है, खज़ाने को यूज करने से खज़ाना बढ़ता है। खज़ाना है, सबके पास है, बापदादा ने देखा है। हर एक के स्टॉक को भी देखता है। बुद्धि है स्टॉक रूम। तो बापदादा ने सबका देखा है। है, स्टॉक में है लेकिन खज़ाने को समय पर यूज नहीं करते हैं। सिर्फ प्वाइंट के रूप से सोचते हैं, हाँ यह नहीं करना है, यह करना है, प्वाइंट के रूप से यूज करते हैं, सोचते हैं लेकिन प्वाइंट बनके प्वाइंट को यूज नहीं करते हैं। इसीलिए प्वाइंट रह जाती है, प्वाइंट बनके यूज करो तो निवारण हो जाए। बोलते भी हैं, यह नहीं करना है, फिर भूलते भी हो। बोलने के साथ भूलते भी हो। इतना सहज विधि सुनाई है, सिर्फ है ही संगमयुग में बिन्दी की कमाल, बस बिन्दी यूज करो और कोई मात्रा की आवश्यकता नहीं। तीन बिन्दी को यूज करो। आत्मा बिन्दी, बाप बिन्दी और ड्रामा बिन्दी है। तीन बिन्दी यूज करते रहो तो बाप समान बनना कोई मुश्किल नहीं। लगाने चाहते हो बिन्दी लेकिन लगाने के समय हाथ हिल जाता, तो क्वेश्चन मार्क हो जाता या आश्चर्य की रेखा बन जाती है। वहाँ हाथ हिलता, यहाँ बुद्धि हिलती है। नहीं तो तीन बिन्दी को स्मृति में रखना क्या मुश्किल है? है मुश्किल है?

बापदादा ने तो दूसरी भी सहज युक्ति बताई है, वह क्या? दुआ दो और दुआ लो। अच्छा, योग शक्तिशाली नहीं लगता, धारणायें थोड़ी कम होती हैं, भाषण करने की हिम्मत नहीं होती है, लेकिन दुआ दो और दुआ लो, एक ही बात करो और सब छोड़ो, एक बात करो, दुआ लेनी है दुआ देनी है। कुछ भी हो जाए, कोई कुछ भी दे लेकिन मुझे दुआ देनी है, लेनी है। एक बात तो पक्की करो, इसमें सब आ जायेगा। अगर दुआ देंगे और दुआ लेंगे तो क्या इसमें शक्तियां और गुण नहीं

आयेंगे? आटोमेटिकली आ जायेंगे ना! एक ही लक्ष्य रखो, करके देखो, एक दिन अभ्यास करके देखो, फिर सात दिन करके देखो, चलो और बातें बुद्धि में नहीं आती, एक तो आयेगी। कुछ भी हो जाए लेकिन दुआ देनी और लेनी है। यह तो कर सकते हैं या नहीं? कर सकते हैं? अच्छा, तो जब भी जाओ ना तो यह ट्रायल करना। इसमें सब योगयुक्त आपेही हो जायेंगे। क्योंकि वेस्ट कर्म करेंगे नहीं तो योगयुक्त हो ही गये ना। लेकिन लक्ष्य रखो दुआ देना है, दुआ लेनी है। कोई कुछ भी देवे, बददुआ भी मिलेगी, क्रोध की बातें भी आयेंगी क्योंकि वायदा करेंगे ना, तो माया भी सुन रही हैं, कि यह वायदा करेंगे, वह भी अपना काम तो करेगी ना। मायाजीत बन जायेंगे फिर नहीं करेगी, अभी तो मायाजीत बन रहे हैं ना, तो वह अपना काम करेगी लेकिन मुझे दुआ देनी है और दुआ लेनी है। हो सकता है? हो सकता है? हाथ उठाओ जो कहते हैं हो सकता है। अच्छा, शक्तियां हाथ उठाओ। हाँ, हो सकता है! तो सब तरफ की टीचर्स आई हैं ना। सब तरफ की टीचर्स आई हैं ना। तो जब आप अपने देश में जाओ तो पहले पहले सभी को एक सप्ताह यह होमवर्क करना है और रिजल्ट भेजनी है, कितने जने क्लास के मेम्बर कितने हैं, कितने ओ.के. हैं और कितने थोड़े कच्चे और कितने पक्के हैं, तो ओ.के. के बीच में लाइन लगाना बस ऐसे समाचार देना। इतने जने ओ.के., इतने जनों में ओ.के. में लकीर लगी है। इसमें देखो डबल फारेनर्स आये हैं तो डबल काम करेंगे ना। एक सप्ताह की रिजल्ट भेजना फिर बापदादा देखेंगे, सहज है ना, मुश्किल तो नहीं है। माया आयेगी, आप कहेंगे बाबा मेरे को पहले तो कभी नहीं आता था, अभी आ गया, यह होगा, लेकिन दृढ़ निश्चय वाले की निश्चित विजय है। दृढ़ता का फल है सफलता। सफलता न होने का कारण है दृढ़ता की कमी। तो दृढ़ता की सफलता प्राप्त करनी ही है।

20.2.2013.. .. पहला खज़ाना ज्ञान का मिला जिससे सभी बच्चे स्वयं भरपूर हो औरों को भी खज़ाने से भरपूर कर रहे हैं। ज्ञान का खज़ाना, हर एक के बंधन जो फँसाने वाले हैं, उससे मुक्त कर बंधन मुक्त दुःख अशान्ति मुक्त बनाने वाला है।

ओमशांति

2. भारीपन/बोझ

9.6.69.. .. हरेक को अपने आप से पूछना चाहिए-जितनी बुद्धि, जितना तन-मन-धन और जितना समय लौकिक जिम्मेवारियों में देते हो उतना ही इस तरफ देते हो? इस तरफ ज्यादा देना चाहिए। अगर ज्यादा नहीं तो उसका वजन एक जैसा है? अगर दोनों तरफ का एक जितना है तो भी नजदीक गिना जायेगा। इस हिसाब से अपने को परखना है। अभी तक रिजल्ट में लौकिक जिम्मेवारियों का बोझ ज्यादा देखने में आता है। खास मुख्य गोपों को यह बातें जरूर ध्यान में रखनी चाहिए कि आज का दिन जो बीता कितना समय लौकिक जिम्मेवारी तरफ दिया और कितना समय अलौकिक वा पारलौकिक जिम्मेवारी तरफ दिया? कितने मददगार बने? यह चेकिंग करते रहेंगे तो पता पड़ेगा कि कौन सा तरफ खाली है। सभी प्रकार की परिस्थितियों में रहते हुए भी कम से कम दोनों तरफ एक जितना जरूर होना चाहिए। कम नहीं। उस तरफ कम हुआ तो हर्जा नहीं। इस तरफ कम नहीं होना चाहिए। तो फिर लौकिक जिम्मेवारी के कमी को भी ठीक कर सकेंगे। परमार्थ से व्यवहार भी सिद्ध हो जाता है। कोई-कोई कहते हैं पहले व्यवहार को ठीक कर परमार्थ में लगे। यह ठीक नहीं है। तो यह खास ध्यान रखना है।

3.10.69.. .. बापदादा बच्चों को हल्का बनाते हैं और बच्चे जानबूझकर अपने पर बोझ ले लेते हैं। क्योंकि ६३ जन्मों से विकर्मों का बोझ, लोक मर्यादा का बोझ उठाने के आदि बन गये हैं। इसलिए बोझ उतार कर भी फिर रख लेते हैं। जिनकी जो आदत होती है वो आदत से मजबूर हो जाते हैं ना। इसलिए अपनी आदतें होने कारण अपनी जिम्मेदारी फिर अपने पर ही रख देते हैं। एक-एक पाण्डव अगर सम्पूर्ण समर्पण बनकर ही निकले तो बताओ क्या होगा? जब पाण्डव तैयार हो जावेगी तो कौरव और यादव मैदान में आ जायेंगे और फिर क्या होगा? आपका राज्य आपको प्राप्त हो जायेगा।

10.6.69.. अभी तक रिजल्ट में लौकिक जिम्मेवारियों का बोझ ज्यादा देखने में आता है। खास मुख्य गोपों को यह बातें जरूर ध्यान में रखनी चाहिए कि आज का दिन जो बीता कितना समय लौकिक जिम्मेवारी तरफ दिया और कितना समय अलौकिक वा पारलौकिक जिम्मेवारी तरफ दिया? कितने मददगार बने? यह चेकिंग करते रहेंगे तो पता पड़ेगा कि कौन सा तरफ खाली है। सभी प्रकार की परिस्थितियों में रहते हुए भी कम से कम दोनों तरफ एक जितना जरूर होना चाहिए।

17.11.69.....जिसमें भारीपन होता है उनको एक्टिव नहीं कहा जाता। पुरुषार्थ में भारी, अपने संस्कारों में भारी, उनको एक्टिव नहीं कहा जायेगा। एक्टिव जो होगा वह एवररेडी और इजी होगा।

22.1.70.. .. आप लोग कहाँ भी इयूटी पर जाते हो और फिर वापस घर आते हो तो अपने को हल्का समझते हो ना। इयूटी की ड्रेस बदलकर घर की ड्रेस पहन लेते हो वैसे ही सर्विस प्रति यह शरीर रूपी वस्त्र का आधार लिया फिर सर्विस समाप्त हुई और इन वस्त्रों के बोझ से हल्के और न्यारे हो जाने का प्रयत्न करो। एक सेकंड में छोले से अलग कौन हो सकेंगे ? अगर टाइटनेस होगी तो अलग हो नहीं सकेंगे। कोई भी चीज़ अगर चिपकी हुई होती है तो उनको खोलना मुश्किल होता है। हल्के होने से सहज ही अलग हो जाता है। वैसे ही अगर अपने संस्कारों में कोई भी इजीपण नहीं होगा तो फिर अशरीरीपन का अनुभव कर नहीं सकेंगे। सुनाया था ना कि क्या बनना है। इजी और अलर्ट, ऐसे रहनेवाले ही इस अभ्यास में रह सकेंगे।

19.6.70.. .. जैसे सर्च लाइट होती है, बहुत फ़ोर्स से और अच्छी रीति फैलाते हैं - इस रीति से मस्तक के लाइट्स का साक्षात्कार होगा। और माथे पर जो लाइट का क्राउन है वह तो समझते हो। ऐसे त्रिमूर्ति लाइट्स का साक्षात्कार एक-एक से होना है। तब कहेंगे यह तो जैसे फ़रिश्ता है। साकार में नयन, मस्तक और माथे के क्राउन के साक्षात्कार स्पष्ट होंगे। नयनों तरफ देखते-देखते लाइट देखेंगे। तुम्हारी लाइट को देख दूसरे भी जैसे लाइट हो जायेंगे। कितनी भी मन से वा स्थिति में भारीपन हो लेकिन आने से ही हल्का हो जाए। ऐसी स्टेज अब पकडनी है।

15.4.71.. .. त्रिमूर्ति बाप के त्रिमूर्ति बच्चे तीनों ही कर्तव्य साथ-साथ कर रहे हो। विनाश करते हो विकर्मों अथवा व्यर्थ संकल्पों का। यह तो और भी अब तेजी से करना पड़े। सिर्फ अपने व्यर्थ संकल्प वा विकर्म भस्म नहीं करने हैं लेकिन तुम तो विश्व-कल्याणकारी हो। इसलिए सारे विश्व के विकर्मों का बोझ हल्का करना वा अनेक आत्माओं के व्यर्थ संकल्पों को मिटाना-यह शक्तियों का कर्तव्य है। तो वर्तमान समय यही विनाश का कर्तव्य और साथ- साथ नये शुद्ध संकल्पों की स्थापना का कर्तव्य-दोनों ही फुल फ़ोर्स में चलना है। कर्म अर्थात् गुणों का दान करने से उनकी चलन और चेहरा - दोनों ही फ़रिश्ते की तरह दिखाई देंगे। दोनों प्रकार की लाइट होगी अर्थात् प्रकाशमय भी और हल्कापन भी। जो भी कदम उठेगा वह हल्का। बोझ महसूस नहीं करेंगे। जैसे कोई शक्ति चला रही है। हर कर्म में मदद की महसूसता करेंगे। हर कर्म में सर्व द्वारा प्राप्त हुआ वरदान अनुभव करेंगे। दूसरे, हर कर्म द्वारा महादानी बनने वाला

सर्व की आशीर्वाद के पात्र बनने के कारण सर्व वरदान की प्राप्ति अपने जीवन में अनुभव करेंगे।

28.6.73.. .. सारे विश्व की सर्व- आत्माओं को शक्तियों का दान देना पड़ेगा। इतना स्टॉक जमा करना है जो स्वयं भी अपने को शक्ति के आधार पर चला सकें और दूसरों को भी दे सकें। कोई भी वंचित न रहे। एक आत्मा भी यदि वंचित रही तो **बोझ किस पर होगा? जो निमित्त बने हुए हैं - जी-दान देने के लिये।** तो अपनी हर शक्ति के स्टॉक को चेक करो। जिनके पास शक्तियों का स्टॉक जमा है वही लक्की स्टार्स के रूप में विश्व की आत्माओं के बीच चमकते हुये नजर आयेंगे। तो अब ऐसी चेकिंग करनी है।

2.8.73.. .. ऐसे ही योग की शक्ति के द्वारा अपने पिछले संस्कारों का बोझ खत्म होता है। कोई भी संस्कार अपने पुरुषार्थ में विघ्न रूप नहीं बनेगा। जिसको नेचर कहते हो वह भी विघ्न रूप नहीं बनेंगे पुरुषार्थ में। तो जिस सब्जेक्ट को जो ऑब्जेक्ट है वह अनुभव होनी चाहिए। ऑब्जेक्ट है तो इसका परिणाम रिसपेक्ट जरूर मिलेगी। आप मुख से जो भी शब्द रिपीट करेंगे वा जो भी प्लान बनायेंगे वह समर्थ होने के कारण उसे सभी रिसपेक्ट देंगे। अर्थात् जो भी एक दूसरे को राय देते हो तो उस राय को सभी रिसपेक्ट देंगे क्योंकि समर्थ है। इस प्रकार हर सब्जेक्ट को देखो।

20.5.74.. .. अगर वह अपना चित्र भी देखो और ताजतख्तधारी का चित्र भी रखो तो वांया होगा? कौन-सा चित्र पसन्द आयेगा? पसन्द वह ताज-तख्तधारी वाला आता है और करते वह हो? ताज उतार कर व्यर्थ संकल्पों का, व्यर्थ बोलचाल का भरा हुआ **बोझ का टोकरा व बोरी सिर पर रख लेते हो।** बेताज बन जाते हो! जबकि ऐसा चित्र देखना भी पसन्द नहीं करते हो, उनको देखते हुए रहमदिल बनते हो लेकिन अपने ऊपर फिर क्यों रख लेते हो? तो ऐसे अपने को खुशनसीब बन व समझ कर चलो। समझा! अच्छा!

27.5.74.. .. स्वयं द्वारा किये गये कर्म व संकल्प स्वयं वर्णन करेंगे, तो ही महसूसता की सीढ़ी पर पाँव रख सकेंगे। महसूस करना या अफसोस करना या माफी लेना बात एक हो जाती है। इसलिए सुनाने की अर्थात् स्वयं को हल्का बनाने की या परिवर्तन करने की विधि बनाई गई है। इस विधि से पापों की वृद्धि कम हो जाती है। इसलिये अगर शीश महल बनने के बाद, स्वयं को स्पष्ट देख कर के स्पष्ट किया तो रिज़ल्ट क्या होगी, यह जानते हो? बाप-दादा भी ड्रामा प्रमाण उन आत्माओं को स्पष्ट चैलेन्ज देंगे, तो फिर क्या कर सकेंगे? इसलिए जब महसूसता के आधार पर स्पष्ट हो अर्थात्

बोझ से स्वयं को हल्का करो, तब ही डबल लाइट स्वरूप अर्थात् फरिश्ता व आत्मिक स्थिति स्वरूप बन सकेंगे।

4.7.74... यह एक ईश्वरीय नियम व मर्यादा है कि कोई भी एक मर्यादा का पालन नहीं करते, तो वे मर्यादा पुरुषोत्तम नहीं बन सकते, इसलिए कारण का निवारण करो। बाप के आगे छिपाने से एक के ऊपर लाख गुणा बोझ चढ़े हुए होने के कारण जब तक स्वयं को हल्का नहीं किया है तो सोचो कि एक गलती के पीछे अनेक गलतियाँ करने से और एक मर्यादा का उल्लंघन होने से अनेक मर्यादाओं का उल्लंघन हो जाने के कारण व इतना लाख गुणा बोझ चढ़ा हुआ होने से चढ़ती कला में कदम कैसे बढ़ा सकते हो और निशाने के समीप कैसे आ सकते हो? लौकिक दुनिया में भी कोई चीज छिपाने वाले को कौन-सा टाइटल दिया जाता है? छोटी-सी चीज को छिपाने वाले को चोर की लिस्ट में तो गिनेंगे ना? तो जब तक ऐसे संस्कार हैं, बाप-दादा के आगे झूठ बोलना व किसी प्रकार से बात को चला देना तो मालूम है कि इसका कितना पाप होता है? ऐसे अनेक प्रकार के चरित्र बाप के आगे दिखाते हैं; ऐसे चरित्र दिखाने वाले कभी श्रेष्ठ चरित्रवान नहीं बन सकते। बाप को भोलानाथ समझते हैं ना, इसलिए समझते हैं कि छिप जायेगा और चल जायेगा। लेकिन बाप के रूप में भोलानाथ है, साथ-साथ हिसाब-किताब चुक्तु कराने के समय फिर लॉफुल भी तो है, फिर उस समय क्या करेंगे? क्या स्वयं को छिपा सकेंगे व बचा सकेंगे?

अपने अनेक प्रकार के बोझ को चैक करो। अमृतवेले से लेकर जो ईश्वरीय मर्यादायें बनी हुई हैं और जानते भी हो कि सारे दिन में कितनी मर्यादायें उल्लंघन की हैं। एक-एक मर्यादा के ऊपर प्राप्ति के मार्क्स भी हैं और साथ-साथ सिर पर बोझ का भी हिसाब है और जिन मर्यादाओं को साधारण समझते हो उन्हीं में भी उनकी प्राप्ति और उनके बोझ का हिसाब है। संकल्प, बोल, समय और शक्तियों का खज़ाना इन सबको व्यर्थ करने से व्यर्थ का बोझ चढ़ता है। जैसे यज्ञ की स्थूल वस्तु, भोजन व अन्न अगर व्यर्थ गँवाते हो तो बोझ चढ़ता है ना? ऐसे ही जब यह मरजीवा जीवन का समय बाप ने विश्व की सेवा-अर्थ दिया है, तो सर्वशक्तियाँ स्वयं के व विश्व के कल्याण अर्थ दी है, मन शुद्ध संकल्प करने के लिए दिया है और यह तन विश्व-कल्याण की सेवा के लिए दिया है। आप सबने तन, मन और धन जो दे दिया है तो वह आपका है क्या? जो अर्पण किया वह बाप का हो गया ना? बाप ने फिर वह विश्व सेवा के लिये दिया है। श्रेष्ठ संकल्प से वायुमण्डल और वातावरण को शुद्ध करने के लिये मन दिया है, ऐसे ईश्वरीय देन को अर्थात् ईश्वर द्वारा दी गई वस्तु को यदि व्यर्थ में लगाते हो तो बोझा नहीं चढ़ेगा?

आजकल भी जड़ मूर्तियों द्वारा व मन्दिरों में जो थोड़ा-सा प्रसाद भी मिलता है तो उसको कब व्यर्थ नहीं गँवाते हैं। अगर जरा-सा कणा भी पाँव में गिर जाता है, तो पाप समझ मस्तक से लगाकर स्वीकार करते हैं। अनेकों के मुख में डाल प्रसाद को सफल करने का पुरुषार्थ करेंगे और उसे व्यर्थ नहीं गँवायेंगे। यह स्वयं बाप द्वारा मिली हुई जो वस्तु मन व तन परमात्म-प्रसाद हो गया, क्या इसको व्यर्थ करने का बोझ नहीं चढ़ेगा? जैसे समय की गति गहन होती जा रही है तो वैसे ही अब पुरुषार्थ की प्राप्ति और बोझ की गति भी गहन होती जा रही है। इसको ही कहा जाता है कि कर्मों की गति अति गुह्य है। तो आज कर्मों की गुह्य गति सुना रहे हैं कि जिससे ही सद्गति पा सकेंगे। अब समझा, कि निशाने के समीप की निशानियाँ क्या हैं? वा निशाने के समीप जाने की विधि क्या है?

4.2.75.. .. पुराने खाते का कर्ज या तो व्यर्थ संकल्प-विकल्प के रूप में होगा या कोई संस्कार व स्वभाव के रूप में होगा। इन बातों से चेक करो कि संकल्प एक है? याद भी एक को करते हैं, अथवा करना एक को चाहते हैं, होता दूसरा है? अपनी तरफ क्या खींचता है, क्यों खिंचता है? बोझ है कोई, जो अपनी तरफ खींचता है? हल्की चीज कभी भी नीचे नहीं आयेगी, वह चढ़ती कला में ही होगी, किसी भी प्रकार का बोझ, कितना भी ऊपर करना चाहे तो ऊपर नहीं जायेगा, बल्कि नीचे ही आयेगा। ऐसे ही सारे दिन की मन्सा, वाचा, कर्मणा में, सम्पर्क और सेवा में इन बातों को चेक करो।

10.2.75... .. कोई भी आसपास का स्थान सन्देश देने से वंचित रहा तो फिर सन्देश देने की मार्जिन न रहेगी। वंचित रही हुई आत्माओं का बोझ निमित्त बनी हुई आत्माओं पर है। इसलिए चक्रवर्ती बनो। महादानी अर्थात् महादान देते आगे बढ़ते चलना है

18.9.75... .. माया के अनेक प्रकार के चक्कर में आने वाले की निशानी क्या होगी? जैसे उनके सिर पर लाइट का ताज है, वैसे उनके सिर पर अनेक प्रकार के विघ्नों का बोझ होगा। ताज नहीं। सदैव किसी-न-किसी प्रकार का बोझ उनके सिर पर अर्थात् बुद्धि में महसूस होगा। ऐसी आत्मा सदैव कर्जदार और मर्जदार होगी - उनके मस्तक पर, मुख पर, सदैव क्वेश्चन मार्क होंगे। हर बात में क्यों, क्या और कैसे, यह क्वेश्चन्स होंगे। एक सेकेण्ड भी बुद्धि एकाग्र अर्थात् फुलस्टॉप में नहीं होगी। फुलस्टॉप की निशानी बिन्दी (.) होती है। अर्थात् मन्सा में भी बिन्दु स्वरूप की स्थिति नहीं होगी। वाचा और कर्मणा में भी बीती सो बीती, नाथिंग न्यू, जो होता है वह कल्याणकारी है, ऐसा फुलस्टॉप अर्थात् बिन्दी लगानी नहीं आयेगी। क्वेश्चन मार्क की निशानी देखने में भी टेढ़ी आती है फुलस्टॉप लिखना सहज है - फुलस्टॉप लिखने से क्वेश्चन मार्क लिखना

जरा मुश्किल होता है। तो अनेक प्रकार के क्वेश्चन करना, चाहे स्वयं से अथवा दूसरों से या बाप से - यही निशानी है कि यह आत्मा स्वदर्शन चक्रधारी सो छत्रधारी नहीं। ऐसी आत्मा हर संकल्प में सदा स्वयं से भी क्वेश्चन करती रहेगी कि क्या मैं सफलता मूर्त बन सकती हूँ? मैं सर्व के सम्पर्क में सफलता प्राप्त कर समीप आत्मा बनूँगी? मैं सर्व के स्वभाव-संस्कारों में चल सकूँगी? सर्व को सन्तुष्ट कर सकूँगी? ऐसे अनेक प्रकार के क्वेश्चन स्वयं के प्रति भी होंगे और अन्य के प्रति भी होंगे। यह मेरे से ऐसे क्यों चलते, मुझे विशेष सहयोग क्यों नहीं मिलता - मेरा नाम, मेरा मान क्यों नहीं होता? इसी प्रकार के अन्य के प्रति क्वेश्चन होंगे। ऐसे ही बाप के प्रति भी क्वेश्चन होंगे। जब बाप सर्व शक्तिवान् है तो मेरी बुद्धि को क्यों नहीं पलटाते? नजर से निहाल करने वाले मेरी तरफ नजर क्यों नहीं रखते? जबकि बाप है तो जैसी भी हूँ, कैसी भी हूँ, उनकी ही हूँ, उनकी जिम्मेवारी है, मुझे पार कराना - जब दाता है तो मैं जो चाहती हूँ वह क्यों नहीं देता? त्रिकालदर्शी है, मेरे तीनों कालों को जानता है, तो मुझे स्वयं ही अपनी शक्ति से श्रेष्ठ पद क्यों नहीं दिलाता? ऐसी मीठी-मीठी शिकायतें बाप के आगे रखते हैं। एक तरफ जन्म-जन्म का बोझ, दूसरी तरफ बाप के बच्चे होने के नाते, बाप द्वारा प्राप्त हुए सर्व अधिकार का रिटर्न करने का फर्ज पालन न करने के कारण अर्थात् अपना फर्ज न पालन करने के कारण फर्ज के बजाय कर्ज बन जाता है। कर्ज का बोझ आत्मा की सर्व कमजोरियों के मर्ज के रूप ले लेता है। ऐसे डबल बोझ वाले स्वदर्शन चक्रधारी कैसे बन सकेंगे?

एक तो है चक्रधारी, दूसरे हैं बोझदारी। ऐसे बोझ वाली आत्मायें डबल लाइटधारी कैसे बनेंगी? इसलिये उनकी बार-बार एक ही आवाज निकलती है, कि अनुभव नहीं होता। सुनते भी रहते, चलते भी रहते लेकिन प्राप्ति की मंजिल नजर नहीं आती है। बड़ा मुश्किल है - ऐसी आवाज बाप सुने और ऐसे बच्चों को देखे तो बाप क्या करेंगे? मुस्करायेंगे और क्या करेंगे? फिर भी रहमदिल बाप के सम्बन्ध के कारण बार-बार हिम्मत और उल्लास दिलाते रहते हैं कि तुम ही बच्चों ने अनेक बार विजय प्राप्त की है - हिम्मत आपकी, मदद बाप की। फिर भी चलते चलो। रुको नहीं। कल्प पहले मुआफिक फिर से विजयी बन जाओ। सिर्फ एक सेकेण्ड भी सच्चे दिलसे, सर्व सम्बन्धों से याद करो तो उस एक सेकेण्ड में मिलने की अनुभूति व प्राप्ति सारे दिन में बार-बार सब तरफ से दूर कर बाप तरफ आकर्षित करती रहेगी। भले कितने भी निर्बल हो - लेकिन एक सेकेण्ड की याद इतना तो कर सकते हैं? ऐसी निर्बल आत्माओं को एक सेकेण्ड की याद रखने की हिम्मत के रिटर्न (बदले, उत्तर) में बाप हजार गुना मददगार बनेंगे। इससे सहज और क्या करेंगे? या आपकी तरफ से योग भी बाप ही

लगायें? नाजूक बच्चे हैं न? नाजूक बच्चे बाप से भी नाज करते हैं, इसलिए नाज-युक्त नहीं बनो-लेकिन राज-युक्त और युक्ति-युक्त बनो। समझा? अच्छा।

11.10.75.. .. सभी महारथियों का संकल्प है कि अब कुछ नया होना चाहिए तो ऐसी-ऐसी नई रंगत अब होती जायेंगी। लेकिन इसमें एक तो बहुत हल्कापन चाहिये, किसी भी प्रकार का बुद्धि पर बोझ न हो और दूसरी सारी दिनचर्या बाप समान हो, तब ब्रह्मा बाप समान आदि से अन्त के दृश्य का अनुभव कर सकते हो। समझा? अब महारथियों को क्या करना है? सिर्फ योग नहीं, सेवा का रूप परिवर्तन करना है। महारथियों का योग वा याद अब स्वयं प्रति नहीं लेकिन सेवा प्रति हो, तब तो महादानी और महाज्ञानी कहे जायेंगे। अच्छा

4.10.75.. .. एक लाईट अर्थात् सदा ज्योति-स्वरूप। दूसरा लाईट अर्थात् कोई भी पिछले हिसाब-किताब के बोझ से न्यारा अर्थात् हल्का। ऐसे डबल लाईट स्वरूप अपने को अनुभव करते हो?

15.10.75.. .. टीचर को हर संकल्प, हर कदम पीछे, सोचना चाहिए कि मेरे पीछे कितनी जिम्मेवारी है। ऐसे भी नहीं कि यह जिम्मेवारी भारी करेगी-बोझ रहेगा। नहीं, जितनी यह जिम्मेवारी उठायेगे उतना जो अनेकों की आशीर्वाद मिलती है तो वह बोझ खुशी में बदल जाता है। वह बोझ महसूस नहीं होता, हल्के रहते हैं।

20.10.75.. .. गृहस्थी की दुर्दशा का मॉडल आप बनाते हो। कौन-सा मॉडल बनाते हो जो सभी तरफ से खिंचा रहता है, दूसरा गृहस्थी को गधे के रूप में दिखाया है। अनेक प्रकार के बोझ दिखाये गए हैं - ऐसा मॉडल बनाते हो ना? जब गृहस्थी बन जाते हो तो मेरेपन के अनेक प्रकार के बोझ हो जाते हैं। सबसे रॉयल रूप का बोझ है - वह 'मेरी जिम्मेवारी है इसको तो निभाना ही पड़ेगा' और कोई गृहस्थी ही तो अपनी कर्म-इन्द्रियों के वश हो अनेक रस में समय गँवाने के गृहस्थी तो बहुत हैं। आज कन-रस वश समय गँवाया, कल जीभ-रस वश समय गँवाया। ऐसे गृहस्थी में फंसने के कारण ट्रस्टीपन भूल जाते हो। यह तन भी मेरा नहीं, तन का भी ट्रस्टी हूँ। तो ट्रस्टी, मालिक के बिगर किसी भी वस्तु को अपने प्रति यूज नहीं कर सकते हैं। तो कर्म-इन्द्रियों के रस में मस्त हो जाना उसको भी गृहस्थी कहेंगे, न कि ट्रस्टी, क्योंकि श्रेष्ठ से श्रेष्ठ मालिक जिसके आप ट्रस्टी हो उनकी श्रीमत एक के रस में सदा एक-रस स्थिति में रहने की है। इन कर्म-इन्द्रियों द्वारा एक का ही रस लेना है। तो फिर अनेक कर्म-इन्द्रियों द्वारा भिन्न-भिन्न रस क्यों लेते हो? तो लौकिक व अलौकिक प्रवृत्ति में गृहस्थी बन जाते हो। इसलिये अनेक प्रकार के बोझ-जिसके लिये बाप डायरेक्शन देते हैं कि सब मेरे को दे दो-वह बोझ कार्य ही अपने ऊपर उठाये, बोझ धारण करते हुए उड़ना चाहते हो। लेकिन

कर नहीं पाते हैं। तो इस परहेज़ की कमी के कारण युक्ति चलाते हो लेकिन मुक्ति नहीं पाते हो। बापदादा को भी ऐसे बच्चों पर तरस पड़ता है। मास्टर सागर और एक अन्चली के प्यासे हैं। अर्थात् योग और ज्ञान द्वारा जो अनुभव की प्राप्ति होती है उस अनुभव की अन्चली के प्यासे हैं। इसलिये अब परहेज़ को अपनाओ तो सर्व-प्राप्तियाँ सदा अनुभव हों।

26.10.75.. .. अब तक मैजॉरिटी पहले पाठ अर्थात् पहली बात - 'पवित्र दृष्टि और भाई-भाई की वृत्ति' में फेल हैं। अब तक इस पहले फरमान पर चलने वाले फरमाँबरदार बहुत थोड़े हैं। बार-बार इस फरमान का उल्लंघन करने के कारण अपने ऊपर बोझ उठाते रहते हैं। इसका कारण यह है कि पवित्रता की मुख्य सब्जेक्ट का महत्व नहीं जानते हैं, उसके नुकसान की नॉलेज को नहीं जानते। जैसे योग-अग्नि पिछले पापों को भस्म करती है वैसे यह विकारी भोग भोगने की अग्नि पिछले पुण्य को भस्म कर देती है। इसको साधारण बात नहीं समझना। यह पाँचवीं मंज़िल से गिरने की बात है। कई बच्चे अब तक अलबेलेपन के संस्कार-वश इस बात को कड़ी भूल व पाप कर्म नहीं समझते हैं। वर्णन भी ऐसा साधारण रूप में करते हैं कि मेरे से चार पाँच बार यह हो गया, आगे नहीं करूँगा। वर्णन करते समय भी पश्चाताप का रूप नहीं होता, जैसे साधारण समाचार सुना रहे हैं। अन्दर में लक्ष्य रहता है कि यह तो होता ही है मंज़िल तो बहुत ऊँची है, अभी यह कैसे होगा?

लेकिन फिर भी आज ऐसे पाप आत्मा, ज्ञान की ग्लानि कराने वालों को बापदादा वार्निंग देते हैं कि आज से भी इस गलती को कड़ी भूल समझकर यदि मिटाया नहीं तो बहुत कड़ी सज़ा के अधिकारी बनेंगे। बार-बार अवज्ञा के बोझ से ऊँची स्थिति तक पहुँच नहीं सकेंगे। प्राप्ति करने वालों की लाइन के बजाय पश्चाताप करने वालों की लाइन में खड़े होंगे। प्राप्ति करने वालों की जयजयकार होगी और अवज्ञा करने वालों के नैन और मुख 'हाय हाय' का आवाज निकालेंगे और सर्व प्राप्ति करने वाले ब्राह्मण ऐसी आत्माओं को कुलकलंकित की लाइन में देखेंगे। अपने किये विकर्मों का कालापन चेहरे से स्पष्ट दिखाई देगा। इसलिये अब से यह विकराल भूल अर्थात् बड़ी-से-बड़ी भूल समझकर के अभी ही अपनी पिछली भूलों का पश्चाताप दिल से करके बाप से स्पष्ट कर अपना बोझ मिटाओ। अपने आप को कड़ी सज़ा दो ताकि आगे की सज़ाओं से भी छूट जायें।

अगर अब भी बाप से छुपावेंगे व अपने को सच्चा सिद्ध करके चलाने की कोशिश करेंगे तो अभी चलाना अर्थात् अन्त में और अब भी अपने मन में चिल्लाते रहेंगे - क्या करूँ, खुशी नहीं होती, सफलता नहीं होती, सर्व-प्राप्तियों की अनुभूति नहीं होती। ऐसे

अब भी चिल्लायेंगे और अन्त में 'हाय मेरा भाग्य' कह चिल्लायेंगे। तो अब का चलाना अर्थात् बार-बार चिल्लाना। अगर अभी बात को चलाते हो तो अपने जन्म-जन्मान्तर के श्रेष्ठ तकदीर को जलाते हो। इसलिये इस विशेष बात पर विशेष अटेन्शन रखो। संकल्प में भी इस विष-भरे साँप को टच नहीं करना। संकल्प में भी टच करना अर्थात् अपने को मूर्छित करना है। तो रजिस्टर में विशेष अलबेलापन देखा।

23.1.76.. .. बार-बार कर्म करते हुए चेक करो कि कर्म में लाइट और हल्कापन है? कर्म का बोझ तो नहीं है? कर्म का बोझ अपने तरफ खींचेगा। अगर कर्म में बोझ नहीं तो अपने तरफ खिंचाव नहीं करेंगे बल्कि कर्मयोग में परिवर्तन हो जायेंगे।

24.1.76.. .. टीचर्स को अनेकों की आशीर्वाद की लिफ्ट भी मिलती है और किसी को कमजोर बनाने के निमित्त बनती है, तो पाप भी चढ़ता है। जिस बोझ के कारण जो चाहते हैं वह कर नहीं पाते। बोझ वाला ऊपर उठ नहीं सकेगा। इसलिए चाहते हुए भी चेन्ज नहीं होते तो जरूर बोझ है। उस बोझ को भस्म करो - विशेष योग से, मर्यादाओं से और लगन से। नहीं तो बोझ में समय बीत जावेगा, आगे बढ़ न सकोगे। अमृतवेले उठ कर अपनी सीट को सेट करो। जैसी सीट है, उसी प्रमाण सेट हैं? - यह चेक करो। अपने पोज (Pose) को ठीक करो। अगर पोज ठीक न भी होगा तो चेक करने से ठीक हो जावेगा। अच्छा!

11.1.77.. अगर फरिश्ते नहीं तो खुद भी नीचे रहेंगे और दूसरों को भी नीचे लायेंगे। अपने को फरिश्ता अनुभव करती हो? बिल्कुल हल्का। देह का भी बोझ नहीं। मिट्टी बोझ वाली होती है ना। देहभान भी मिट्टी है। जब इसका भान है तो भारी रहेंगे। इससे परे हल्का अर्थात् फरिश्ता होंगे। तो देह के भान से भी हल्कापन। देह के भान से परे तो और सभी बातों से स्वतः ही परे हो जायेंगे। जब बाप को जिम्मेवारी दे दी, तो स्वयं नहीं उठानी चाहिए। जिसके निमित्त बनते, उनकी जिम्मेवारी अपनी समझते हो। तो मुश्किल हो जाती है। जिम्मेवार बाप है न कि आप। अपने-आप के ऊपर बोझ तो नहीं रख लेते? कड़ियों को बोझ उठाने की आदत होती है। कितना भी कहो फिर भी उठा लेते हैं। यह न हो जाय, ऐसा न हो जाय यह व्यर्थ का बोझ है, बोझ बाप के ऊपर छोड़ दो। बाप का बन बाप के ऊपर छोड़ने से सफलता भी ज्यादा, उन्नति भी ज्यादा और सहज हो जाएगा।

23.1.77.. ..जैसे आजकल स्थूल ड्रिल करने के लिए भी हल्कापन चाहिए, मोटापन नहीं चाहिए, मोटापन भी बोझ होता है। वैसे रूहानी ड्रिल में भी भिन्न-भिन्न प्रकार के बोझ वाले अर्थात् मोटी बुद्धि - ऐसे बहुत प्रकार के थे। जैसे मोटे शरीर की भी वैरायटी (Variety) होती है, वैसे ही आत्माओं के भारीपन के पोज भी वैरायटी थे। अगर

अलौकिक कैमरा (Camera) से फोटो निकालो वा शीश महल में यह वैरायटी पोज देखो तो बड़ी हँसी आए। जैसे आपकी दुनिया में वैरायटी पोज का खूब हँसी का खेल दिखाते हैं ना, वैसे यहाँ भी खूब हँसते हैं। देखेंगे हँसी का खेल? बहुत ऐसे भी थे जो मोटेपन के कारण अपने को मोड़ना चाहते भी मोड़ नहीं सकते। ऊपर जाने के बदले बार-बार नीचे आ जाते थे। बीज रूप स्टेज को अनुभव करने के बदले, विस्तार रूपी वृक्ष में अर्थात् अनेक संकल्पों के वृक्ष में उलझ जाते हैं। यह मोटी बुद्धि वालों के पोज सुना रहे हैं। रूह-रूहान करने बैठते हैं लेकिन रूह-रूहान के बदले स्वयं की वा अन्य आत्माओं की शिकायतों की पूरी फाइल खोल कर बैठते हैं। बैठते हैं चढ़ती कला का अनुभव करने के लिए हैं, लेकिन बाप-दादा को बहाने-बाज़ी की कलायें बहुत दिखाते हैं। **बाप-दादा के आगे बोझ उतारने आते हैं, लेकिन बोझ उतारने की बजाय बाप की श्रीमत के प्रमाण न चलने के कारण अनेक प्रकार की अवज्ञाओं का बोझ अपने ऊपर चढ़ाते रहते हैं। ऐसे अनेक प्रकार के बोझ वाली भारी आत्माओं के दृश्य देखे।**

संयम निभाने वाली आत्माओं का दृश्य भी बहुत हँसी वाला होता है। वह क्या होता है, मालूम है? बाप के आगे गुणगान करने के बजाय, बाप द्वारा सर्व शक्तियों की प्राप्ति करने के बजाय, निन्द्रा के नशे की प्राप्ति ज्यादा आकर्षण करती है। सेमी (Semi) नशा भी होता है। समय की समाप्ति का इन्तजार होता है। बाप से लगन के बजाय सेमी निन्द्रा के नशे की लगन ज्यादा होती है। इन सभी का कारण? आत्मा का भारीपन अर्थात् मोटापन। जैसे आजकल के डाक्टर्स (Doctors) मोटेपन को कम कराते हैं, वजन कम कराते हैं, हल्का बनाते हैं, वैसे ब्राह्मणों की भी आत्मा के ऊपर जो वजन अथवा बोझ है अर्थात् मोटी बुद्धि है, उस बोझ को हटाकर 'महीन बुद्धि' बनो। वर्तमान समय यही विशेष परिवर्तन चाहिए। तब ही इन्द्रप्रस्थ की परियां बनेंगे। मोटेपन को मिटाने के लिए श्रेष्ठ साधन कौन-सा है? खान-पान का परहेज और एक्सरसाइज (Exercise)। परहेज में भी अन्दाज फिक्स (Fix) होता है। वैसे यहाँ भी बुद्धि द्वारा बार-बार अशरीरीपन की एक्सरसाइज करो और बुद्धि का भोजन संकल्प है उनकी परहेज रखो। जिस समय जो संकल्प रूपी भोजन स्वीकार करना हो उस समय वही स्वीकार करो। व्यर्थ संकल्प रूपी एक्सट्रा (Extra) भोजन न हो। तो व्यर्थ संकल्पों के भोजन की परहेज हो। परहेज के लिए सेल्फ कंट्रोल (Self Control; स्वयं पर नियन्त्रण) चाहिए। नहीं तो परहेज पूर्ण रीति नहीं कर सकते। तो सेल्फ कंट्रोल अर्थात् जिस समय जैसे चाहे, वहाँ बुद्धि लगा सके तब ही महीन बुद्धि बन जायेंगे। 'महीनता ही महानता है।' जैसे शरीर की रीति से हल्कापन परसनैलिटी (Personality) है; वैसे बुद्धि की महीनता व आत्माओं का हल्कापन ब्राह्मण जीवन की परसनैलिटी है। तो अब क्या

करना है? अनेक प्रकार के मोटेपन को मिटाओ। मोटेपन का विस्तार फिर सुनायेंगे कि किस प्रकार का मोटापन है। **बोझ के अनेक प्रकार हैं उसका विस्तार फिर सुनायेंगे। तो आज के ड्रिल का समाचार क्या हुआ? बोझ का मोटापन।** इसको मिटाने का ही लक्ष्य रख स्वयं को फरिश्ता अर्थात् हल्का बनाओ।

जो भारी होता है वो फास्ट नहीं जा सकता है। **कोई भी प्रकार का भारीपन वा बोझ नहीं हो। निरन्तर योग नहीं लगता इसका मतलब भारीपन है, बोझ है। बोझ नीचे ले आता है। नीचे ले आना ही सिद्ध करता है कि बोझ है।** बॉडी- कोन्सेस(Body-Conscious;देह-अभिमान) नीचे ले आता है। जैसे बाप ऊँचे से ऊँचा है, उनका निवास स्थान ऊँचे से ऊँचा है, उनका कर्तव्य व गुण ऊँचे से ऊँचा है, तो आप सबके भी निवास स्थान, गुण और कर्तव्य ऊँचे से ऊँचा है ना? बाप समान हो ना? ऊँचे निवास स्थान वाले, ऊँचे गुण व कर्तव्य वाले, नीचे कैसे आ सकते हैं?आना नहीं चाहिए लेकिनआजाते हैं।उसको क्या कहेंगे-फर्स्ट पुरुषार्थी या सेकेण्ड?

23.1.77... फर्स्ट (First) अर्थात् फास्ट (Fast;तीव्र) पुरुषार्थी। अगर फास्ट पुरुषार्थी नहीं तो फर्स्ट नहीं; सेकेण्ड ग्रुप हो गया। जो भारी होता है वो फास्ट नहीं जा सकता है। **कोई भी प्रकार का भारीपन वा बोझ नहीं हो। निरन्तर योग नहीं लगता इसका मतलब भारीपन है, बोझ है। बोझ नीचे ले आता है। नीचे ले आना ही सिद्ध करता है कि बोझ है।** बॉडी- कोन्सेस(Body-Conscious;देह-अभिमान) नीचे ले आता है। जैसे बाप ऊँचे से ऊँचा है, उनका निवास स्थान ऊँचे से ऊँचा है, उनका कर्तव्य व गुण ऊँचे से ऊँचा है, तो आप सबके भी निवास स्थान, गुण और कर्तव्य ऊँचे से ऊँचा है ना? बाप समान हो ना? ऊँचे निवास स्थान वाले, ऊँचे गुण व कर्तव्य वाले, नीचे कैसे आ सकते हैं? आना नहीं चाहिए लेकिन आ जाते हैं। उसको क्या कहेंगे - फर्स्ट पुरुषार्थी या सेकेण्ड?

3.5.77.. .. दिन प्रतिदिन बहुत कुछ आगे बढ़ने और बढ़ाने के दृश्य देखेंगे। छोटी सी गलती मुश्किल बना देती है। वह कौन सी गलती ? सुनाया ना। मैं कैसे करूँ, मैं कर नहीं सकती, मैं चल नहीं सकती, किसने कहा आप चलो? बाप ने तो कहा नहीं कि अपने आप चलो। साथी का साथ पकड़ कर चलो। साथ छोड़ अपने ऊपर क्यों बोझ उठा कर चलते, जो कहना पड़े - मैं नहीं चल सकती, मैं नहीं कर सकती। गलती अपनी और फिर उलहाने देंगे बाप को। **अंगुली खुद छोड़ते, बोझ खुद उठाते, फिर कहते बोझ उठाया नहीं जाता।** किसने कहा तुम उठाओ? आदत है ना बोझ उठाने की। जिसकी आदत होती है बोझ उठाने की, उनको बैठने का सहज काम करने कहो तो कर नहीं सकेगा। तो यह भी पिछली आदत के वश हो जाते हैं। यह भी नहीं कह सकते, मेरे

पिछले संस्कार हैं। पिछले संस्कार हैं अर्थात् मरजीवा नहीं बने हैं। जब मरजीवा बन गए तो नया जन्म, नए संस्कार होने चाहिए। पिछले संस्कार पिछले जन्म के हैं। इस जन्म के नहीं। वह कुल ही दूसरा, यह कुल ही दूसरा। वह शुद्र कुल, यह ब्राह्मण कुल। जब कुल बदलता है तो उसी कुल की मर्यादा को पालन करना है। जैसे लौकिक रीति में भी अगर कन्या का कुल शादी के बाद बदल जाता है तो उसी कुल की मर्यादा प्रमाण अपने को चलाना होता है। यह भी कुल बदल गया ना। तो यह सोचकर भी कमज़ोर न होना कि पिछली आदत है ना। इसलिए यह तो होगा ही। लेकिन अब के कुल की मर्यादा क्या है, उस मर्यादा के प्रमाण यह है ही नहीं।

21.5.77... .. बड़े से बड़ा संग 'सर्वशक्तिवान' का है। सत्संग की महिमा है तो सदा बुद्धि द्वारा सत् बाप, सत् शिक्षक, सत् गुरु का संग करना - यही 'सत्संग' है। इस सत्संग में रहने से सदा हर्षित और हल्के रहेंगे। **किसी भी प्रकार का बोझ अनुभव नहीं होगा। निश्चय बुद्धि हो - यह तो ठीक है। लेकिन निश्चय का रिटर्न है- बाप को सदा का साथी बनाकर रखना। पल-पल बाप का साथ हो। सदा साथ के अनुभव से सम्पन्न का अनुभव करेंगे। ऐसे लगेगा जैसे भरपूर हैं। जब बाप को अपना बनाया तो बाप का जो भी हैं, सब अपना हो गया।**

29.5.77... .. शूद्रों की चीज़ अगर ब्राह्मण चोरी करते, अर्थात् मेरा कहते, तो यह महापाप हुआ। और बाबा! यह सब कुछ आपका है, ऐसे कहकर फिर मेरा कहना, यह ठगी है। **और इसी प्रकार के पाप होने से, पापों का बोझ बढ़तजानेसे, बुद्धि ऊँची स्टेज पर टिक नहीं सकती।** इस कारण व्यर्थ संकल्पों के नीचे की स्टेज पर बार-बार आना पड़ता है। और फिर चिल्लाते हैं कि क्या करें?

5.6.77... .. किसी भी लौकिक व्यवहार को निमित्त-मात्र करते हुए, अपने लौकिक कार्य का आकर्षण वा बोझ अपने तरफ खींचेगा नहीं। ऐसे अनुभव करेंगे जैसे लौकिक कार्य होते हुए अलौकिक कार्य के कारण डबल कमाई का अनुभव होगा। अलौकिक स्वरूप है ही ट्रस्टी, ट्रस्टी बनकर कार्य करने से, क्या होगा? कैसे होगा? यह बोझ समाप्त हो जाता है।

5.6.77... .. ट्रस्टी का विशेष लक्षण क्या दिखाई देगा? जो ट्रस्टी होगा उसका विशेष लक्षण, सदैव स्वयं को हर बात में हल्का अनुभव करेगा। डबल लाइट अनुभव करेगा। **शरीर के भान का भी बोझ न हो - इसको कहा जाता है - 'ट्रस्टी।' अगर देह के भान का बोझ है तो एक बोझ के साथ अनेक प्रकार के बोझ से परे रहने का यह साधन है।** तो चैक करो बॉडी कान्सेसे (Body Conscious; देहभान) में कितना समय रहते? जब बाप के बने, तो तन-मन-धन सहित बाप के बने ना? सब बाप को दिया ना? जब दे

दिया तो अपना कहाँ से रहा? जब अपना नहीं तो मान किस चीज़ का? अगर मान आता, तो सिद्ध है, देकर के फिर लेते हो। अभी-अभी दिया, अभी-अभी लिया, यह खेल करते हो। 'ट्रस्टी अर्थात् मेरापन नहीं।' जब मेरापन समाप्त हो जाता, तो लगाव भी समाप्त हो गया। ट्रस्टी बन्धन वाला नहीं होता, स्वतंत्र आत्मा होता, किसी भी आकर्षण में परतंत्र होना भी ट्रस्टीपन नहीं। 'ट्रस्टी माना ही स्वतंत्र।'

25.6.77. .. ऑनेस्ट अर्थात् जैसे बाप - जो है, जैसा है बाप बच्चों के आगे प्रत्यक्ष हैं; वैसे बच्चे जो हैं, जैसे हैं वैसे ही बाप के आगे स्वयं को प्रत्यक्ष करें। ऐसे नहीं कि बाप तो सब कुछ जानता है, लेकिन बाप के आगे स्वयं को प्रत्यक्ष करना सबसे बड़े ते बड़ा 'सहज चढ़ती कला' का साधन है। **अनेक प्रकार के बुद्धि के ऊपर बोझ समाप्त करने की सरल युक्ति है। वा स्वयं को स्पष्ट करना अर्थात् पुरुषार्थ का मार्ग स्पष्ट होना है।** स्वयं को स्पष्टता से श्रेष्ठ बनाना है। लेकिन करते क्या हो? कुछ बताते कुछ छिपाते हैं। और बताते भी हैं तो कोई सैलवेशन (Salvation;सहूलियत) के प्राप्ति के स्वार्थ के आधार पर। चतुराई से अपना केस सज-धज कर मनमत और परमत के प्लान अच्छी तरह से बनाकर, बाप के आगे वा निमित्त बनी हुई आत्माओं के आगे पेश करते हैं। भोलानाथ बाप समझ और निमित्त बनी हुई आत्माओं को भी भोला समझ चतुराई से अपने आपको सच्चा सिद्ध करने से रिजल्ट क्या होती है? बाप-दादा वा निमित्त बनी हुई आत्माएं जानते हुए भी खुश करने के अर्थ अल्पकाल के लिए, 'हाँ जी' का पाठ तो पढ़ लेंगे। क्योंकि जानते हैं कि हर आत्मा की सहन शक्ति, सामना करने की शक्ति कहां तक हैं। इस राज को जानते हुए नाराज़ नहीं होंगे। उनको और ही आगे बढ़ाने की युक्ति देंगे। राजी भी करेंगे, लेकिन राज से राजी करना और दिल से राजी करना - फर्क होता है। बनने चतुर चाहते हैं, लेकिन भोले बन जाते हैं। कैसे जो थोड़े में राजी हो जाते हैं। हार को जीत समझ लेते हैं। है जन्म-जन्म की हार, लेकिन अल्पकाल की प्राप्ति में राजी हो अपने आपको सयाना, होशियार समझ विजयी मान बैठते हैं। बाप को ऐसे बच्चों के ऊपर रहम भी पड़ता है कि समझदारी के पर्दे के अन्दर अपने ऊपर सदा काल के अकल्याण के निमित्त बन रहे हैं। फिर भी बाप-दादा क्या कहेंगे? श्रेष्ठ पुरुषार्थ की भावी नहीं है।

28.6.77.. .. वह लोग तो शरीर की वेट कम करने के लिए कहते हैं, लेकिन बाप-दादा आत्मा के ऊपर जो बोझ है, जिस बोझ के कारण ऊँची स्टेज का अनुभव नहीं कर पाती, तो इस वेट को कम करो। एक वेस्ट मत करो और दूसरा वेट कम करो। इन दो बातों के ऊपर विशेष अटेंशन चाहिए।

एक तो पिछले जन्मों का रहा हुआ हिसाब-किताब का बोझ समाप्त करने में लगे हो, लेकिन वह बोझ कोई बड़ी बात नहीं है। ब्राह्मण बनकर वा ब्रह्माकुमार/ब्रह्माकुमारी कहलाकर विश्व-कल्याणकारी वा विश्व-सेवाधारी कहलाकर फिर भी अगर ऐसा कोई विकल्प वा विकर्म करते हैं तो वह बोझ उस बोझ से सौगुणा है। ऐसे कितने प्रकार के बोझ अपने संस्कारों के वश, स्वभाव के वश, ज्ञान, बुद्धि के अभिमान वश, नाम और शान के स्वार्थ वश, स्वयं के सैलवेशन प्राप्त करने के वश, वा अलबेलेपन वा आलस्य के वश, अब तक कितने बोझ उठाए हैं? सदैव यह ध्यान पर रखना है कि ज्ञानी तू आत्मा कहलाते अथवा सर्विसएबुल कहलाते ऐसा कोई कर्म वा वातावरण फैलाने के वायब्रेशन उत्पन्न होने के निमित्त न बने जिससे सर्विस के बजाए डिस सर्विस हो। क्योंकि सर्विस भी हो लेकिन एक बार की डिस-सर्विस दस बार की सर्विस को समाप्त कर देती है। जैसे रबड़ मिट जाता है वैसे एक बार की डिस-सर्विस दस बार के सर्विस के खाते को खत्म कर देती है। और वह समझता रहता कि मैं बहुत सर्विस करता हूँ। लेकिन खाता खाली होने के कारण निशानी दिखाई भी देती हैं लेकिन अभिमान के वश बाहर से मियामिडे बन जाते हैं। निशानी क्या होती है? एक तो याद में शक्ति वा प्राप्ति का अनुभव नहीं होता। अन्दर की सन्तुष्टता नहीं होगी। हर समय कोई न कोई परिस्थिति वा व्यक्ति वा प्रकृति का वैभव, स्थिति को हलचल में लाने के वा खुशी, शक्ति खत्म करने के निमित्त बनेंगे। बाहर का दिखावा इतना सुन्दर होगा जो अनेक आत्माएं उन्हें न परखने कारण सबसे अच्छा खुश मिजाज और पुरुषार्थी समझेंगे। लेकिन अन्दर बिल्कुल उलझन में खोखलापन होता है। नाम, शान का खाता फुल होता है - लेकिन खजानों का खाता, अनुभूतियों का खाता खाली के बराबर होता है अर्थात् नाम मात्र होता है। और निशानी क्या होगी? ऐसी आत्मा स्वयं विघ्नों के वश होने के कारण सेवा के कार्य में विघ्न रूप बन जाती है। नाम विघ्न विनाशक है लेकिन बनते विघ्न रूप हैं। ऐसे आत्माओं के ऊपर समय प्रति समय के बोझ से वेट बढ़ने के कारण अनेक प्रकार के मानसिक व्यर्थ चिन्तन वा मानसिक अशान्ति, ऐसे अनेक रोग पैदा कर लेते हैं। दूसरी बात वेट होने के कारण पुरुषार्थ की रफ्तार तीव्र नहीं हो सकती। हाई जम्प (ऊँची कूद) तो छोड़ो लेकिन दौड़ भी नहीं लगा सकते। प्लान बनायेंगे कि यह करेंगे, यह करेंगे लेकिन सफल नहीं हो सकते। तीसरी गुह्य बात ऐसी वेट वाली आत्माएं, जो विघ्न रूप वा डिस-सर्विस के निमित्त बनती है, बाप को अर्पण किया हुआ अपना तन-मन वा ईश्वरीय सेवा अर्थ मिला हुआ धन, अपने विघ्नों के कारण वेस्ट करती है अर्थात् सफलता नहीं पाती, उसके वेस्ट करने का भी बोझ चढ़ता है। इसलिए पापों की गहन गति को भी अच्छी रीति जानो। अब क्या करना है? वेस्ट मत करो और

वेट कम करो। धर्मराज पुरी में जाने के पहले अपना धर्मराज बनो। अपना पूरा चोपडा खोलो और चेक करो पाप और पुण्य का खाता क्या रहा हुआ है, क्या जमा करना है; और विशेष स्वयं प्रति प्लान बनाओ। पाप के खाते को भस्म करो। पुण्य के खाते को बढ़ाओ। बाप-दादा बच्चों के खाते को देखते हुए समझते हैं मालामाल हो जाए। (बरसात पड़ रही है) प्रकृति भी पाठ पढ़ा रही है। जैसे प्रकृति अपने मौसम वा समय प्रमाण अपने तीव्र गति से कार्य कर रही है ऐसे ब्राह्मणों की कमाई जमा करने की मौसम है। तो मौसम प्रमाण तीव्र रफ्तार से जमा करो। अच्छा।

13.1.78.. जो जितना हल्का होता उतना अथक होता। किसी भी प्रकार का बोझ थकाता है। जैसे शरीर के बोझ वाला भी थक जाता, हल्का थकता नहीं। ऐसे किसी भी प्रकार का बोझ चाहे मनसा का हो, चाहे सम्पर्क, सम्बन्ध का हो, लेकिन बोझ थकावट में लायेगा।

14.11.78.. .. बाप का तख्त होने के कारण तखतनशीन होने में बोझ अनुभव नहीं होता, क्योंकि बाप का तख्त है ना। और बाप ने स्वयं तखतनशीन बनाया। इस निमित्त बनने का तख्त कितना सहज है। तख्त की विशेषता है, इस तख्त में ही विशेष जादू भरा हुआ है, जो मुश्किल, सेकेण्ड में सहज हो जाती है। इस निमित्त बनने का तख्त समय प्रमाण, ड्रामा प्रमाण सर्व श्रेष्ठ तख्त और अति सफलता सम्पन्न तख्त गाया हुआ है। जो भी तख्त पर बैठे सफलता मूर्त। यह अनादि आदि वरदान है तख्त को। इस तख्त के तखतनशीन भी बड़े गुह्य रहस्य और राजयुक्त आत्माएँ ही बनती हैं। बाप-दादा महारथियों को वर्तमान समय भी डबल तखतनशीन देखते हैं। दिलतख्त तो है ही लेकिन यह निमित्त बनने का तख्त बहुत थोड़ों को प्राप्त होता है। यह भी राज बड़े गुह्य हैं।

3.12.78.. .. इतना बड़ा कार्य जिसके लिए निमित्त बने हुए हो उसको स्मृति में रखो। इतने श्रेष्ठ कार्य के आगे स्वयं के पुरुषार्थ में हलचल वा स्वयं की कमज़ोरियाँ क्या अनुभव होती हैं? अपनी कमज़ोरियाँ, इतने विशाल कार्य के आगे क्या अनुभव करते हो, अच्छी लगती हैं वा स्वयं से ही शर्म आता है? चैलेन्ज और प्रैक्टिकल समान होना चाहिए। नहीं तो चैलेन्ज और प्रैक्टिकल में महान अन्तर होने से सेवाधारी के बजाए क्या टाइटल मिल जावेगा? ऐसे करने वाली आत्मार्यं अनेक आत्माओं को वन्चित करने के निमित्त बन जातीं, पुण्य आत्मा के बजाए बोझ वाली आत्माएँ बन जाती हैं - इस पाप और पुण्य की गहन गति को जानो।

03.12.78.. बाप के बनने के बाद प्राप्ति अनगिनत है लेकिन पुण्य आत्मा के साथ पाप का बोझ भी सौ गुना के हिसाब से है। इसलिए इतने अलबेले भी मत बनना।

मुश्किल तब लगता है जब बाप के साथ को भूल जाते हो - बाप को साथी बनाकर मुश्किल को सहज कर सकते हो। अकेले होने से बोझ अनुभव करते हो। तो ऐसे साथी बनाकर मुश्किल को सहज बनाओ।

21.12.78.. .. गृहस्थी है ही बोझ की स्थिति और अवतार बिल्कुल हल्का। वह फँसा हुआ है वह बिल्कुल न्यारा। कभी अवतार कभी गृहस्थी यह चक्कर अगर चलता रहता तो संगमयुगी श्रेष्ठ जीवन का, सुहावने सुख के जीवन का कभी-कभी अनुभव होगा, सदा नहीं।

ट्रस्टी अर्थात् सदा हल्का, गृहस्थी अर्थात् सदा बोझ वाला। गृहस्थी होंगे तो उतरती कला में जायेंगे, ट्रस्टी होंगे तो चढ़ती कला में जायेंगे

1.1.79.. .. डबल लाइट वाले सदा हाई जम्प देंगे। अगर किसी भी प्रकार का बोझ है तो हाई जम्प नहीं दे सकते।

10.1.79.. .. जैसे आजकल के जमाने में शारीरिक रोगों का कारण वेट जास्ती हैं, सर्व बीमारियों का निवारण वेट कम करना है जैसे पुरुषार्थ की गति के लास्ट और फर्स्ट कारण भी वेट कम न करना **जैसे शरीर में भारीपन होने के कारण आटोमेटिकली बीमारियाँ उत्पन्न हो जाती हैं** जैसे आत्मा के बोझ से आत्मिक रोग भी स्वतः पैदा हो जाता है - सबसे ज्यादा वेट बढ़ने का कारण जैसे शारीरिक हिसाब से ज्यादा वेट बढ़ने का कारण सड़ी हुई चीजें कहते हैं जैसे यहाँ भी सड़ी हुई वस्तु अर्थात् बीती हुई बातें जो न सोचने की हैं अर्थात् न खाने की हैं ऐसे सड़ी हुई बातों को बुद्धि द्वारा स्वीकार कर लेते हैं अथवा हर आत्माओं की कमियों वा अवगुणों का स्वयं में धारण करना इसको भी सड़ी हुई वस्तु कहेंगे। तली हुई वस्तु खाने में बड़ी अच्छी लगती है - अपने तरफ आकर्षण भी बहुत करती हैं - न दिल होते भी थोड़ा सा खा लेते हैं - जितना ही आकर्षण वाली होती हैं उतना ही नुकसान वाली भी होती हैं जैसे यहाँ फिर आकर्षण की चीजें हैं एक दो द्वारा व्यर्थ समाचार सुनना और सुनाना। रूप रूहरूहान का होता, लेन-देन करने का होता लेकिन उसका रिजल्ट एक दो के प्रति घृणा दृष्टि होती है। समझते हैं मनोरंजन है लेकिन अनकों के मन को रन्ज करते हैं। तो बाहर का रूप आकर्षण का है लेकिन रिजल्ट गिराना है ऐसी बातों का बुद्धि द्वारा धारण करना अर्थात् सेवन करना इस कारण वेट बढ़ जाता है। जैसे शारीरिक वेट बढ़ने के कारण दौड़ नहीं लगा सकेंगे, चढ़ाई नहीं चढ़ सकेंगे जैसे यहाँ भी पुरुषार्थ में तीव्र गति नहीं प्राप्त कर सकते। हर कदम में चढ़ती कला का अनुभव नहीं कर सकते। वजन भारी वाला हर स्थान पर सेट नहीं हो पाते। वजन भारी वाले को चलते-चलते एक तो रूकना पड़ता है दूसरा किसका सहारा लेना पड़ता है, इसी रीति पुरुषार्थ में चलते-चलते थक जाते हैं अर्थात्

विघ्नों के वश हो जाते हैं पार नहीं कर पाते हैं। साथ-साथ कोई न कोई आत्मा को सहारा बनाकर चल सकते। एक बाप का सहारा तो सभी को मिला हुआ है लेकिन यह आत्माओं को सहारा बनाकर चलते। अगर थोड़ा भी आत्माओं का सहारा अर्थात् सहयोग नहीं मिलता तो चल नहीं पाते।

बार-बार कहेंगे सहयोग मिले तो आगे बढ़ें चान्स मिले कोई बढ़ावे तो आगे बढ़े। क्योंकि स्वयं भारी होने कारण दूसरे के सहारे द्वारा अपना बोझ हल्का करना चाहते हैं। इसलिए बापदादा भी कहते हैं वेट कम करो। इसका साधन है - जैसे शारीरिक हल्केपन का साधन है एक्सरसाइज़। वैसे आत्मिक एक्सरसाइज़ योग अभ्यास द्वारा अभी-अभी कर्मयोगी अर्थात् साकारी स्वरूपधारी बन साकार सृष्टि का पार्ट बजाना, अभी-अभी आकारी फरिश्ता बन आकारी वतनवासी अव्यक्त रूप का अनुभव करना - अभी-अभी निराकारी बन मूल वतनवासी का अनुभव करना, अभी-अभी अपने राज्य स्वर्ग अर्थात् वैकुण्ठवासी बन देवता रूप का अनुभव करना। ऐसे बुद्धि की एक्सरसाइज़ करो तो सदा हल्के हो जावेंगे। भारीपन खत्म हो जावेगा। पुरुषार्थ की गति तीव्र हो जावेगी। सहारा लेने की आवश्यकता नहीं होगी। सदा बाप के सहारे अर्थात् छत्रछाया के नीचे अनुभव करेंगे। दौड़ लगाने के बजाए हाईजम्प वाले हो जावेंगे। तो साधन है एक एक्सरसाइज़ - दूसरा है खान-पान की परहेज करो। जो बुद्धि द्वारा कोई भी अशुभ वस्तु का सेवन करना अर्थात् धारण करना इसकी परहेज करो - जो सुनाया सड़ी हुई और तली हुई वस्तु का सेवन नहीं करो - दूसरा वेस्ट न करो। क्यों वेस्ट करते हो? जो वस्तु जैसी मूल्यवान है उसको वैसे यूज़ न करना इसको भी वेस्ट कहा जाता। बाप द्वारा यह समय संगमयुग का खज़ाना मिला है - संगमयुग का सेकेण्ड अनेक पदमों की वैल्यू का है - सेकेण्ड का भी स्वयं के प्रति वा सर्व के प्रति पदमों के मूल्य समान यूज़ नहीं किया यह भी वेस्ट किया अर्थात् जैसा मूल्य है वैसे जमा नहीं किया। हर सेकेण्ड में पदमों की कमाई का वरदान ड्रामा में संगम के समय को ही मिला हुआ है - ऐसे वरदान को स्वयं प्रति भी जमा नहीं किया, औरों के प्रति भी दान न किया तो इसको भी व्यर्थ कहा जावेगा। ऐसे नहीं समझो कि कोई पाप तो किया नहीं वा कोई भूल तो की नहीं, लेकिन समय का लाभ न लेना भी व्यर्थ है। मिले हुए वरदान को न स्वयं प्राप्त किया न कराया तो इसको भी वेस्ट अर्थात् व्यर्थ कहेंगे। इसी प्रकार संकल्प भी एक खज़ाना है, ज्ञान भी खज़ाना है, स्थूल धन भी ईश्वर अर्थ समर्पण करने से एक नया पैसा एक रतन समान वैल्यू का हो जाता है, इन सब खज़ानों को स्वयं के प्रति वा सेवा के प्रति कार्य में नहीं लगाते तो भी व्यर्थ कहेंगे। हर सेकेण्ड स्व कल्याण वा विश्व कल्याण के प्रति हों। ऐसे सर्व खजाने इसी प्रति ही बाप ने दिये हैं - इसी कार्य में

लगाते हो! कई बच्चे कहते हैं न अच्छा किया न बुरा किया - तो किस खाते में गया! वैल्यू न रखना इसको भी व्यर्थ कहेंगे। इस कारण पुरुषार्थ की रफ्तार तीव्र नहीं हो पाती और इसी के कारण नम्बरवार बढ़ जाते हैं। तो अब समझा नम्बरवार बनने का कारण क्या हुआ। वेट और वेस्ट। इन दोनों बातों को अब समाप्त करो तो फर्स्ट डिवीजन में आ जावेंगे। नहीं तो जास्ती वेट वाले को फिर वेट (इन्तजार) भी करना पड़ेगा। फर्स्ट राज्य के बजाए सेकेण्ड राज्य में आना पड़ेगा। वेट करना पसन्द है वा सीट लेना पसन्द है। अब क्या करेंगे - डबल लाइट बन जाओ।

12.1.79.. .. आलमाइटी अथॉरिटी आपका साथी अर्थात् फ्रेंड बनकर हर समय साथ निभाते हैं। ऐसा फ्रेंड फिर कभी मिल नहीं सकता। कभी फ्रेंडशिप निभाते हैं - कभी कम्बाइन्ड युगल रूप निभाते हैं - ऐसा कम्बाइन्ड स्वरूप विचित्र युगल रूप जो सदा आपको कहते हैं - सारा बोझ हमें दे दो - और तुम सदा हल्के रहो - जहाँ भी कोई मुश्किल कार्य आये तो वह मुझे अर्पण कर दो तो मुश्किल सहज हो जावेगा। ऐसे कर्मयोग के पार्ट में सदा साथी पन के खजाने को वा सदा साथ के खुशी को यूज करो - और आगे चलो

16.1.79.. .. एक बात याद रखो - सर्व सम्बन्धों से हर कार्य में बापदादा सदा साथ है। साथ छोड़ने के कारण ही यह विचित्र खेल खेलने पड़ते हैं। विश्व की जिम्मेवारी उठाने वाले बाप का साथ होते भी अपने हद की जिम्मेवारी के बोझ की टोकरी क्यों उठाते हो? क्या विश्व का बोझ उठाने वाले आपका यह छोटा सा बोझ नहीं उठा सकते हैं क्या? फिर भी पुराने संस्कार के वश बार-बार बोझ भी उठाते और फिर थक कर चिल्लाते भी हैं कि अब हमको छोड़ाओ। एक तरफ पकड़ते हैं दूसरे तरफ पुकारते हैं - छोड़ो तो छूटे - यह एक सेकेण्ड की हिम्मत अनेक जन्मों के लिए अनेक प्रकार के बोझ से छोड़ा देगी। पहलापहला वायदा बाप से क्या किया - याद है? मेरा तो एक दूसरा न कोई। जब मेरापन ही समाप्त हो गया, एक मेरा रह गया तो फिर हद की जिम्मेवारियों का मेरापन कहाँ से आया! देह का मेरापन कहाँ से आया। कमजोरियों के संस्कारों का मेरापन कहाँ से आया - स्वयं को ज्ञानी तू आत्मा कहलाते हो - ज्ञान स्वरूप अर्थात् कहना, सोचना और करना समान हो। सदा समर्थ हों - ज्ञानी तू आत्मा का हर कर्म समर्थ बाप समान, संस्कार गुण और कर्तव्य समर्थ बाप के समान हों - तो समर्थ स्टेज पर स्थित होने वाले यह व्यर्थ के विचित्र खेल नहीं खेल सकते।

23.1.79.. .. सदा स्वस्थ अर्थात् सदा स्व में स्थित रहने से तन का कर्मभोग भी कर्मयोग से सूली से काँटा हो जाता है। कर्मभोग को भी बेहद के ड्रामा के अन्दर खेल समझ कर खेलते हैं। तो तन का रोग योग में परिवर्तन हो गया। इसलिए सदा स्वस्थ

हो। बीमारी को बीमारी नहीं समझते लेकिन अनेक जन्मों का बोझ हल्का हो रहा है, हिसाब चुकतू हो रहा है - ऐसे समझने से सदा स्वस्थ समझते हो - साथ-साथ मन की खुशी तो सदा प्राप्त है ही।

30.1.79.. .. किसी भी प्रकार का बोझ अनुभव न हो यह है डबल लाइट। डबल लाइट अर्थात् बिन्दी स्वरूप आत्मा में भी कोई बोझ नहीं और जब फरिश्ते बन जाते तो उसमें भी कोई बोझ नहीं। तो या तो अपना बिन्दु रूप याद रहे या कर्म में फरिश्ता स्वरूप - ऐसी स्टेज पर स्थित होने से कितना भी बड़ा कार्य ऐसे अनुभव करेंगे जैसे करन करावनहार करा रहे हैं। निमित्त समझेंगे तो डबल लाइट रहेंगे। ट्रस्टी अर्थात् डबल लाइट, गृहस्थी अर्थात् बोझ वाला। ट्रस्टी होकर चलने से बोझ भी नहीं और सफलता भी ज्यादा। गृहस्थी समझने से मेहनत भी ज्यादा और सफलता भी कम। तो सदा डबल लाइट के स्वरूप की स्मृति की समर्थी में रहो तो कोई भी पहाड़ जैसा कार्य भी राई नहीं लेकिन रूई जैसा हो जायेगा। राई फिर भी सख्त होती है, रूई उससे भी हल्की, तो रूई के समान अर्थात् असम्भव भी सम्भव हो जायेगा। अच्छा -

3.2.79.. .. टीचर्स को विशेष लिफ्ट की गिफ्ट है? क्यों? टीचर्स को सिवाए ईश्वरीय सेवा के और कोई भी बोझ नहीं। एक की ही याद, एक के ही प्रति सेवा। जब एक काम है तो एक काम में अच्छी तरह से आगे बढ़ सकते हैं ना! प्रवृत्ति वालों को तो दो कार्य निभाने पड़ते, टीचर्स सहज ही एक रस रह सकती हैं। बातें करनी हैं तो भी बाप का परिचय देना है, कर्मणा सेवा करनी है तो भी बाप ने जिसके निमित्त बनाया। तो टीचर्स को नैचुरल गिफ्ट मिली हुई है। इस गिफ्ट का लाभ उठाते रहो।

30.11.79.. .. कुमारियाँ हैं ही सदा डबल लाइट, न कर्मों के बन्धन का बोझ और न आत्मा के ऊपर पिछले संस्कारों का बोझ। सभी बोझों से हल्के। ऐसे हो ना?

7.12.79.. .. यह फरिश्ता जीवन सदा हल्का होने के कारण ऊंची स्थिति पर ही रहेंगे। क्योंकि हल्की चीज़ कभी नीचे नहीं आती। अगर नीचे की स्थिति पर आते तो जरूर बोझ है। फरिश्ता अर्थात् निर्बन्धन, कोई भी रिश्ता नहीं देह से रिश्ता नहीं। निमित्त मात्र कार्य के लिए आधार लिया फिर उपराम।

15.12.79.. .. सब चिल्ला रहे हैं, कोई भूख से चिल्ला रहे हैं, कोई मँहगाई से चिल्ला रहे हैं, कोई तन के रोग से चिल्ला रहे हैं, कोई मन की अशान्ति से चिल्ला रहे हैं, कोई टैक्स से चिल्ला रहे हैं, कोई परिवार की समस्याओं से चिल्ला रहे हैं, कोई अपनी कुर्सी की हलचल के कारण चिल्ला रहे हैं, बड़े-बड़े राज्य-अधिकारी एक-दूसरे से भयभीत होकर चिल्ला रहे हैं, छोटे-छोटे बच्चे पढ़ाई के बोझ से चिल्ला रहे हैं। छोटे से बड़े, सब चिल्ला रहे हैं। चारों ओर का चिल्लाना आप सबके कानों तक पहुँचता है? ऐसे समय पर बाप

के साथ-साथ आप सब भी टॉवर ऑफ पीस हो। सबकी नज़र टॉवर ऑफ पीस की तरफ जा रही है। सब देख रहे हैं - हा-हाकार के बाद जय-जयकार कब होती है। तो सब टॉवर ऑफ पीस बताओ, कब जय-जयकार कर रहे हो? क्योंकि बाप-दादा ने साकार रूप में निमित्त आप बच्चों को ही रखा है। तो हे साकारी फरिश्ते, कब अपने फरिश्ते रूप से विश्व के दुःख दूर कर सुखधाम बनायेंगे। तैयार हो?

19.12.79... आप सभी पत्ते बाप की श्रीमत पर ही हिल रहे हो अर्थात् चल रहे हो ना। ऐसे ही चल रहे हो ना? चलाने का काम भी बाप का, फिर भी इतना मुश्किल क्यों लगता है? **बोझ सारा बाप ने ले लिया फिर भी सदा उड़ते क्यों नहीं हो? हल्की चीज़ तो सदा ऊपर उड़ती है।** इतने हल्के जो हर संकल्प भी बाप चलायेंगे तो चलाना है। जैसे चलायेंगे वैसे चलेंगे यह सभी का वायदा है और बाप की गारन्टी है कि चलायेंगे। बाप ने कहा और किया। अपना बोझ अपने ऊपर न रखो। कैसे करूँ, कैसे चलूँ, इस बोझ से हल्के होकर के उंची स्थिति पर जा नहीं सकते हो। इसलिए श्रीमत से संकल्प तक भी चलते चलो तो मेहनत से बच जाओगे।

29.12.79... जैसे आजकल स्थूल ड्रिल करने के लिए भी हल्कापन चाहिए, मोटापन नहीं चाहिए, **मोटापन भी बोझ होता है। वैसे रूहानी ड्रिल में भी भिन्न-भिन्न प्रकार के बोझ वाले अर्थात् मोटी बुद्धि - ऐसे बहुत प्रकार के थे।** जैसे मोटे शरीर की भी वैरायटी (Variety) होती है, वैसे ही आत्माओं के भारीपन के पोज भी वैरायटी थे। अगर अलौकिक कैमरा (Camera) से फोटो निकालो वा शीश महल में यह वैरायटी पोज देखो तो बड़ी हंसी आए। जैसे आपकी दुनिया में वैरायटी पोज का खूब हँसी का खेल दिखाते हैं ना, वैसे यहाँ भी खूब हँसते हैं। देखेंगे हँसी का खेल? बहुत ऐसे भी थे जो मोटेपन के कारण अपने को मोड़ना चाहते भी मोड़ नहीं सकते। ऊपर जाने के बदले बार-बार नीचे आ जाते थे। बीज रूप स्टेज को अनुभव करने के बदले, विस्तार रूपी वृक्ष में अर्थात् अनेक संकल्पों के वृक्ष में उलझ जाते हैं। यह मोटी बुद्धि वालों के पोज सुना रहे हैं। रूह-रूहान करने बैठते हैं लेकिन रूह-रूहान के बदले स्वयं की वा अन्य आत्माओं की शिकायतों की पूरी फाइल खोल कर बैठते हैं। बैठते हैं चढ़ती कला का अनुभव करने के लिए हैं, लेकिन बाप-दादा को बहाने-बाज़ी की कलायें बहुत दिखाते हैं। बाप-दादा के आगे बोझ उतारने आते हैं, लेकिन बोझ उतारने की बजाय बाप की श्रीमत के प्रमाण न चलने के कारण अनेक प्रकार की अवज्ञाओं का बोझ अपने ऊपर चढ़ाते रहते हैं। ऐसे अनेक प्रकार के बोझ वाली भारी आत्माओं के दृश्य देखे।

21.1.80... 'लेना' स्मृति में रखना अर्थात् बाप के सम्मुख होना। छोड़ने के गुण ज्यादा गाते हो। यह भी किया, यह भी करना है वा करना पड़ेगा। इसको ज्यादा सोचते

हो। क्या मिल रहा है वा प्रालब्ध क्या बन रही है, उसको कम सोचते हो। इसलिए व्यर्थ का वजन भारी हो जाता है। शुद्ध संकल्पों का वजन हल्का हो जाता है। तो **चढ़ती कला के बजाए बोझ स्वतः ही नीचे ले आता है।** अर्थात् गिरती कला की ओर चले जाते हो। "पाना था सो पा लिया" यह गीत गाना भूल जाते हो। यह एक गीत भूलने से अनेक प्रकार के घुटके खाते हो। गीत गाओ तो घुटके भी खत्म तो झुटके भी खत्म हो जाएँ।

6.2.80.. .. बाप-दादा को कभी-कभी हँसी आती है। जैसे किसी को बोझ उठाने का अभ्यास होता है उसको आराम से बिठाओ तो वह बैठ नहीं सकता। बार-बार बोझ की तरफ भागता है और फिर साँस भी फूलता है, तो पुकारते हैं - 'छुड़ाओ!' तो सदा प्रीत और मीत में रहो तो मेहनत समाप्त हो जायेगी। मीत से किनारा नहीं करो। सदा के साथी बन करके चलो।

18.1.81.. जहाँ कोई भी मुश्किल अनुभव होता है वहाँ उसी स्थान पर बाबा को रख दो। बोझ अपने ऊपर रखते हो तो मेहनत लगती। बाप पर रख दो तो बाप बोझ को खत्म कर देंगे। जैसे सागर में किचड़ा डालते हैं तो वह अपने में नहीं रखता किनारे कर देता, ऐसे बाप भी बोझ को खत्म कर देते। जब पण्डे को भूल जाते हो तब मेहनत का रास्ता अनुभव होता। मेहनत में टाइम वेस्ट होता। अब मंसा सेवा करो, शुभाचिंतन करो, मनन शक्ति को बढ़ाओ। मेहनत मजदूर करते आप तो अधिकारी हैं। शक्ति को बढ़ाओ। मेहनत मजदूर करते आप तो अधिकारी हैं।

7.3.81.. .. कोई भी समस्या सामने आयेगी तो अपने को कम्बाइन्ड अनुभव करेंगे, इसलिए घबरायेंगे नहीं। कम्बाइन्ड रूप की स्मृति से कोई भी मुश्किल कार्य सहज हो जायेगा। कभी भी कोई ऐसी बात सामने आवे तो बापदादा की स्मृति रखते अपना बोझ बाप के ऊपर रख दो तो हल्के हो जायेंगे। **क्योंकि बाप बड़ा है और आप छोटे बच्चे हो। बड़ों पर ही बोझ रखते हैं। बोझ बाप पर रख दिया तो सदा अपने को खुश अनुभव करेंगे।** फरिश्ते के समान नाचते रहेंगे। दिन रात 24 ही घंटे मन से डाँस करते रहेंगे। देह अभिमान में आना अर्थात् मानव बनना। देही अभिमानी बनना अर्थात् फरिश्ता बनना। सदैव सवेरे उठते ही अपने फरिश्ते स्वरूप की स्मृति में रहो और खुशी में नाचते रहो तो कोई भी बात सामने आयेगी उसे खुशी-खुशी से क्रास कर लेंगे। जैसे दिखाते हैं देवियों ने असुरों पर डाँस किया। तो फरिश्ते स्वरूप की स्थिति में रहने से आसुरी बातों पर खुशी की डाँस करते रहेंगे। फरिश्ते बन फरिश्तों की दुनिया में चले जायेंगे। फरिश्तों की दुनिया सदा स्मृति में रहेगी।

23.3.81... नालेज है कि पिछले जन्म का बोझ आत्मा पर है लेकिन चौरासिवें जन्म के पास्ट का ड्रामा अनुसार अपवित्रता के संकल्प का अनुभव नहीं। इसलिए यह भी लिफ्ट की गिफ्ट मिली हुई है। इसलिए निजी संस्कार के रूप में सहज महान आत्मा हैं। जैसे सहज योगी जैसे सहज पवित्र आत्मा।

13.4.81... ट्रस्टी बनकर चलने से सारा ही बोझ बाप पर पड़ जाता है, आप सदा डबल लाइट बन जाते। डबल लाइट होने के कारण हाई जम्प दे सकते हो। अगर गृहस्थी समझते तो दुम्ब लग जाता। सारा बोझ अपने पर आ जाता। बोझ वाला हाई जम्प दे नहीं सकता। और ही साँस फूलता रहेगा। ट्रस्टी समझने से स्थिति सदा ऊंची रहेगी। तो सदा ट्रस्टी होकर रहने की श्रेष्ठ मत को स्मृति में रखो।

14.10.81... कर्म करते याद में रहने वाले सदा न्यारे और प्यारे होंगे, हल्के होंगे, किसी भी कर्म में बोझ अनुभव नहीं करेंगे।

17.10.81... आत्मा उड़ता पंछी है, चलता हुआ पंछी नहीं। तो अनादि संस्कार जो बोझ के कारण भूल गये हैं, फरिश्ते के बजाए कर्मबन्धनी, उड़ते पंछी के बजाए पिंजड़े के पंछी बन गये हैं। अब फिर से अनादि संस्कार उड़ते पंछी के इमर्ज करो। अर्थात् फरिश्ते रूप में स्थित रहो। ततत्त्वम् के वरदानी बनो। इसी को ही सहज पुरुषार्थ कहा जाता है।

24.10.81... अभी-अभी निराकारी, अभी-अभी अव्यक्त फरिश्ता, अभी-अभी साकारी कर्मयोगी। अभी-अभी विश्व सेवाधारी। सेकेण्ड में स्वरूप बन जाना, यह है रूहानी एक्सरसाइज। और कौन-सा बोझ अपने ऊपर रखते हैं? वेस्ट की वेट बहुत है इसलिए हल्के नहीं हो सकते। कोई समय के वेस्ट के वेट में है, कोई संकल्पों के और कोई शक्तियों को वेस्ट करते हैं। कोई सम्बन्ध और सम्पर्क वेस्ट अर्थात् व्यर्थ बना लेते हैं। ऐसे भिन्न-भिन्न प्रकार के वेट बढ़ने के कारण माशूक समान डबल लाइट बन नहीं सकते।

11.11.81... जो जितने हल्के रहते हैं, उतना सहज और स्वतः कार्य हो जाता है। जो ज्यादा कार्य का बोझ उठाते हैं तो बोझ के कारण निर्णय शक्ति काम नहीं कर सकती है इसलिए सफलता में फर्क पड़ जाता है। कार्य करने के पहले सदा स्वयं डबल लाइट, वायुमण्डल भी लाइट, स्वयं भी लाइट, साथी भी सब लाइट-तो लाइट हाउस का कार्य हो ही जाता है।

18.11.81... कुमार हैं डबल लाइट। किसी भी प्रकार का बोझ नहीं। न संकल्पों का बोझ, न संबंध सम्पर्क का बोझ। कुमार हैं ही निर्बन्धन, क्योंकि नालेजफुल हो गये। नालेजफुल व्यर्थ की तरफ कभी भी जा नहीं सकते। व्यर्थ संकल्प भी नालेजफुल के

आगे आ नहीं सकता। संकल्प में भी शक्तिवान, कर्म में भी शक्तिवान। मास्टर सर्वशक्तिवान हो।

23.11.81.. .. पहला नम्बर एकनामी और एकानामी वाले, दूसरा नम्बर कमाया और खाया। और तीसरा नम्बर कमाई कम और खाना ज्यादा। औरों की भी कमाई को खाने वाले। वह हैं- लाओ और खाओ। श्रेष्ठ आत्माओं के भाग्य का हिस्सा, त्यागवान बच्चों के प्रत्यक्ष- फल, सर्व प्राप्तियों को त्यागवान त्याग करते लेकिन तीसरे नम्बर वाले उन्हीं के हिस्से का भी स्वयं स्वीकार कर लेते हैं। कमाने वाले नहीं सिर्फ खाने वाले। इस कारण नम्बरवन बच्चे बोझ उतारने वाले और वह बोझ चढ़ाने वाले क्योंकि अपनी मेहनत की कमाई नहीं खाते। ऐसी खाती-पीती आत्मायें भी देखीं।

2.1.80... भक्ति का महत्व भी अमृतवेले का है। जागेंगे सवेरे ही, लेकिन सदा ही जैसे जागती ज्योति हैं। कोई हार्ड वर्क हैं नहीं। न हार्ड वर्क है न बुद्धि का वर्क है, न कोई बोझ है। इसलिए जागना और सोना समान है।

14.1.80... लौकिक जिम्मेवारियाँ निभानी ही हैं, ऐसे समझते हैं और ईश्वरीय जिम्मेवारियाँ निभानी तो हैं, ऐसे कहते हैं। वह निभानी ही हैं और वह निभानी तो है। इसलिए एक तरफ का वजन ज्यादा हो जाता है और रिजल्ट क्या होती है? **बोझ उनको ही नीचे ले आता है। ऊपर नहीं उठ सकते। बोझ वाला साइड सदा नीचे धरती पर लग जाता है और हल्का ऊपर उठ जाता है।** और समान वाला भी ऊँचा उठता, नीचे धरती पर नहीं लगेगा। धरती पर लगने के कारण धरती के आकर्षण वश हो जाते हैं। बोझ के कारण ईश्वरीय सेवा के मैदान पर हल्के होकर सदा सफलता मूर्त नहीं बन सकते। **कर्म बन्धन के, लोकलाज के बोझ नीचे ले आते हैं।** जिस लोक को छोड़ चुके उस लोक की लाज रखते हैं और जिस संगमयुग वा संगम लोक के बन चुके, उस लोक की लाज रखना भूल जाते हैं। जो लोक भस्म होने वाला है उस लोक की लाज सदा स्मृति में रखते और जो लोक अविनाशी है और इसी लोक से भविष्य लोक बनना है उस लोक की स्मृति दिलाते भी कभी-कभी स्मृति स्वरूप बनते हैं। गृहस्थ व्यवहार और ईश्वरीय व्यवहार दोनों में समानता रखना अर्थात् सदा दोनों में हल्के और सफल होना।

20.1.1980.... व्यर्थ का वजन भारी हो जाता है। शुद्ध संकल्पों का वजन हल्का हो जाता है। तो **चढ़ती कला के बजाए बोझ स्वतः ही नीचे ले आता है।** अर्थात् गिरती कला की ओर चले जाते हो। "पाना था सो पा लिया" यह गीत गाना भूल जाते हो। यह एक गीत भूलने से अनेक प्रकार के घुटके खाते हो। गीत गाओ तो घुटके भी खत्म तो झुटके भी खत्म हो जाएँ। जैसे स्थूल गीत भी आपको जगाता है ना। यह अविनाशी

गीत गाते रहो। "पाना था सो पा लिया" और प्राप्ति की खुशी में नाचते रहो। गाते रहो, नाचते रहो तो घुटके और झुटके खत्म हो जायेंगे।

6.2.80... जैसे किसी को बोझ उठाने का अभ्यास होता है उसको आराम से बिठाओ तो वह बैठ नहीं सकता। बार-बार बोझ की तरफ भागता है और फिर साँस भी फूलता है, तो पुकारते हैं - 'छुड़ाओ!' तो सदा प्रीत और मीत में रहो तो मेहनत समाप्त हो जायेगी। मीत से किनारा नहीं करो। सदा के साथी बन करके चलो।

18.1.81...जहाँ कोई भी मुश्किल अनुभव होता है वहाँ उसी स्थान पर बाबा को रख दो। बोझ अपने ऊपर रखते हो तो मेहनत लगती। बाप पर रख दो तो बाप बोझ को खत्म कर देंगे। जैसे सागर में किचड़ा डालते हैं तो वह अपने में नहीं रखता किनारे कर देता, ऐसे बाप भी बोझ को खत्म कर देते। जब पण्डे को भूल जाते हो तब मेहनत का रास्ता अनुभव होता। मेहनत में टाइम वेस्ट होता। अब मंसा सेवा करो, शुभाचिंतन करो, मनन शक्ति को बढ़ाओ। मेहनत मजदूर करते आप तो अधिकारी हैं। शक्ति को बढ़ाओ। मेहनत मजदूर करते आप तो अधिकारी हैं।

7.3.81... कभी भी कोई ऐसी बात सामने आवे तो बापदादा की स्मृति रखते अपना बोझ बाप के ऊपर रख दो तो हल्के हो जायेंगे। क्योंकि बाप बड़ा है और आप छोटे बच्चे हो। बड़ों पर ही बोझ रखते हैं। बोझ बाप पर रख दिया तो सदा अपने को खुश अनुभव करेंगे। फरिश्ते के समान नाचते रहेंगे। दिन रात 24 ही घंटे मन से डाँस करते रहेंगे। देह अभिमान में आना अर्थात् मानव बनना। देही अभिमानी बनना अर्थात् फरिश्ता बनना। सदैव सवेरे उठते ही अपने फरिश्ते स्वरूप की स्मृति में रहो और खुशी में नाचते रहो तो कोई भी बात सामने आयेगी उसे खुशी-खुशी से क्रास कर लेंगे। जैसे दिखाते हैं देवियों ने असुरों पर डाँस किया। तो फरिश्ते स्वरूप की स्थिति में रहने से आसुरी बातों पर खुशी की डाँस करते रहेंगे। फरिश्ते बन फरिश्तों की दुनिया में चले जायेंगे। फरिश्तों की दुनिया सदा स्मृति में रहेगी।

23.3.81... नालेज है कि पिछले जन्म का बोझ आत्मा पर है लेकिन चौरासिवें जन्म के पास्ट का ड्रामा अनुसार अपवित्रता के संकल्प का अनुभव नहीं। इसलिए यह भी लिफ्ट की गिफ्ट मिली हुई है। इसलिए निजी संस्कार के रूप में सहज महान आत्मा हैं। जैसे सहज योगी जैसे सहज पवित्र आत्मा। बी होली नहीं, वह हैं ही होली। उन्हीं के लिए यह स्लोगन नहीं है कि "बी होली"। वह बने बनाये हैं। फर्स्ट प्राइज में भी नम्बरवन। समझो

27.3.81... जो भी कोई बोझ अनुभव हो, बोझ अपने सिर पर नहीं रखो। जब मैं-पन आता है तो बोझ सिर पर आ जाता है। मैं क्या करूँ, कैसे करूँ, करना पड़ता है। क्या

आप करते हो?वा सिर्फ नाम आपका है काम बाप का रहता है। उस दिन खिलौना देखा - वह खुद चल रहा था या कोई चला रहा था? साइन्स चला सकती है, बाप नहीं चला सकता? यह तो बाप बच्चों का नाम बाला करने के लिए निमित्त बना देते हैं। क्योंकि बाप इस नाम रूप से न्यारा है। जब बाप आपको आफर कर रहे हैं कि बोझ बाप को दे दो आप सिर्फ नाचो, उड़ो फिर बोझ क्यों उठाते हो? कैसे सर्विस होगी, कैसे भाषण करेंगे यह तो क्वेश्चन ही नहीं। सिर्फ निमित्त समझ कनेक्शन पावर हाउस से जोड़कर बैठ जाओ। फिर देखो भाषण होता है वा नहीं! वह खिलौना चल सकता है, आपका मुख नहीं चल सकता? आपकी बुद्धि में प्लैन नहीं चल सकते?

7.4.81... **गृहस्थी समझने से अगला पिछला बोझ सिर पर आ जाता।** ट्रस्टी अर्थात् डबल लाइट। जब आत्मिक स्वरूप है तो ट्रस्टी, देह की स्मृति है तो ग्रहस्थी। गृहस्थी माना मोजमाया के जाल में फँसा हुआ, ट्रस्टी माना सदा हल्का बन खुशी में उड़ने वाला। ट्रस्टी अर्थात् माया का जाल खत्म।

13.4.81... अगर गृहस्थी समझते तो दुम्ब लग जाता। **सारा बोझ अपने पर आ जाता। बोझ वाला हाई जम्प दे नहीं सकता।** और ही साँस फूलता रहेगा। ट्रस्टी समझने से स्थिति सदा ऊंची रहेगी। तो सदा ट्रस्टी होकर रहने की श्रेष्ठ मत को स्मृति में रखो।

17.10.81... **अनादि संस्कार जो बोझ के कारण भूल गये हैं, फरिश्ते के बजाए कर्मबन्धनी, उड़ते पंछी के बजाए पिंजड़े के पंछी बन गये हैं।** अब फिर से अनादि संस्कार उड़ते पंछी के इमर्ज करो। अर्थात् फरिश्ते रूप में स्थित रहो। ततत्त्वम् के वरदानी बनो। इसी को ही सहज पुरुषार्थ कहा जाता है।

11.11.81... निर्मलशान्ता दादी से :- महान आत्मा अर्थात् सफलता मूर्त्त। तो सदा सफलतामूर्त्त हो ना? जो जितने हल्के रहते हैं, उतना सहज और स्वतः कार्य हो जाता है। **जो ज्यादा कार्य का बोझ उठाते हैं तो बोझ के कारण निर्णय शक्ति काम नहीं कर सकती है इसलिए सफलता में फर्क पड़ जाता है।** कार्य करने के पहले सदा स्वयं डबल लाइट, वायुमण्डल भी लाइट, स्वयं भी लाइट, साथी भी सब लाइट-तो लाइट हाउस का कार्य हो ही जाता है।

18.11.81... **कुमार हैं डबल लाइट। किसी भी प्रकार का बोझ नहीं।** न संकल्पों का बोझ, न संबंध सम्पर्क का बोझ। कुमार हैं ही निर्बन्धन, क्योंकि नालेजफुल हो गये। नालेजफुल व्यर्थ की तरफ कभी भी जा नहीं सकते। व्यर्थ संकल्प भी नालेजफुल के आगे आ नहीं सकता। संकल्प में भी शक्तिवान, कर्म में भी शक्तिवान। मास्टर सर्वशक्तिवान हो। तो सदा ऐसे अनुभव करते हो कि हम मास्टर सर्वशक्तिवान हैं? क्योंकि कुमारों के पीछे माया चक्र बहुत लगाती है। माया को भी कुमार-कुमारियाँ

अच्छे लगते हैं। जैसे बाप को बहुत प्रिय हो, ऐसे माया को भी प्रिय हो। इसलिए माया से सावधान रहना। सदा अपने को कम्बाइन्ड समझना, अकेला नहीं, युगल साथ है। सदा कम्बाइन्ड समझेंगे तो माया आ नहीं सकती।

23.11.83... सेवाधारी का अर्थ ही है - बन्धनमुक्त, जीवनमुक्त। कितने हृद की जिम्मेवारियों से छूटे हुए हो। और अलौकिक जिम्मेवारी भी बाप की है, इससे भी छूटे हुए हो। सिर्फ सेवा किया-आगे चलो। जिम्मेवारी का बोझ नहीं है। क्या किसी के ऊपर कोई बोझ है? सेन्टर का बोझ है क्या? सेन्टर को चलाने का बोझ नहीं है, यह फिकर नहीं रहता है कि जिज्ञासू कैसे आवें (रहता है) तो बोझ हुआ ना!

सफलता भी तब होगी जब यह समझो कि मैं बढ़ाने वाली नहीं हूँ लेकिन बाप की याद से स्वतः बढ़ेगी। मैं बढ़ाने वाली हूँ, तो बढ़ नहीं सकती। बाप को बोझ दे देंगे तो बढ़ती रहेगी। इसलिए इससे भी निश्चुरने रहना। जितना स्वयं हल्के होंगे उतना सेवा और स्वयं सदा ऊपर चढ़ती रहेंगी अर्थात् उन्नति को पाती रहेंगी। जब मै-पन आता है तो बोझ हो जाता है और नीचे आ जाते हो। इसलिए इस बोझ से भी निश्चिन्त। सिर्फ याद के नशे में सदा रहो। बाप के साथ कम्बाइन्ड सदा रहो तो जहाँ बाप कम्बाइन्ड हो गया वहाँ सेवा क्या है? स्वतः हुई पड़ी है। अनुभवी हो सेवाधारी का अर्थ ही है - बन्धनमुक्त, जीवनमुक्त। कितने हृद की जिम्मेवारियों से छूटे हुए हो। और अलौकिक जिम्मेवारी भी बाप की है, इससे भी छूटे हुए हो। सिर्फ सेवा किया-आगे चलो। जिम्मेवारी का बोझ नहीं है। क्या किसी के ऊपर कोई बोझ है? सेन्टर का बोझ है क्या? सेन्टर को चलाने का बोझ नहीं है, यह फिकर नहीं रहता है कि जिज्ञासू कैसे आवें (रहता है) तो बोझ हुआ ना!

23.1.83.....सफलता भी तब होगी जब यह समझो कि मैं बढ़ाने वाली नहीं हूँ लेकिन बाप की याद से स्वतः बढ़ेगी। मैं बढ़ाने वाली हूँ, तो बढ़ नहीं सकती। बाप को बोझ दे देंगे तो बढ़ती रहेगी। इसलिए इससे भी निश्चुरने रहना। जितना स्वयं हल्के होंगे उतना सेवा और स्वयं सदा ऊपर चढ़ती रहेंगी अर्थात् उन्नति को पाती रहेंगी। जब मै-पन आता है तो बोझ हो जाता है और नीचे आ जाते हो। इसलिए इस बोझ से भी निश्चिन्त। सिर्फ याद के नशे में सदा रहो। बाप के साथ कम्बाइन्ड सदा रहो तो जहाँ बाप कम्बाइन्ड हो गया वहाँ सेवा क्या है? स्वतः हुई पड़ी है। अनुभवी होना?

* सफलता भी तब होगी जब यह समझो कि मैं बढ़ाने वाली नहीं हूँ लेकिन बाप की याद से स्वतः बढ़ेगी। मैं बढ़ाने वाली हूँ, तो बढ़ नहीं सकती। बाप को बोझ दे देंगे तो बढ़ती रहेगी। इसलिए इससे भी निश्चुरने रहना। जितना स्वयं हल्के होंगे उतना सेवा और स्वयं सदा ऊपर चढ़ती रहेंगी अर्थात् उन्नति को पाती रहेंगी। जब मै-पन आता है

तो बोझ हो जाता है और नीचे आ जाते हो। इसलिए इस बोझ से भी निश्चिन्त। सिर्फ याद के नशे में सदा रहो। बाप के साथ कम्बाइन्ड सदा रहो तो जहाँ बाप कम्बाइन्ड हो गया वहाँ सेवा क्या है? स्वतः हुई पड़ी है। अनुभवी होना?

***अभी सब प्रकार के बोझ समाप्त हो गये हैं ना!** अभी पिंजड़े की मैना से उड़ते पंछी हो गये। कण्ठी वाले उड़ने वाले तोते बन गये। पिंजड़े वाले नहीं, बापदादा के गीत गाने वाले। लण्डन निवासी, हिन्दी जानने वालों को पहला चांस मिला है। फिर भी डायरेक्ट मुरली सुनने वाले लकी हो। ट्रान्सलेशन तो नहीं करनी पड़ती। इसको कहेंगे- 'तवा टू माउथ'। ट्रान्सलेशन होने में फिर भी थोड़ी तो रोटी सूखेगी ना! तो आपका भाग्य अपना है, उन्होंका भाग्य अपना है। तो सभी ऐसे नहीं समझना कि विदेश में विदेशियों की ही महिमा है। आप लोगों का संगठन देखकर यह आत्मार्थ भी प्रभावित हुई। आप लोग निमित्त हो। फिर भी भारतवासियों को अपने बर्थप्लेस का नशा है। अच्छा।

6.1.86... कोई भी परिस्थिति आवे, याद रखो - हम डबल लाइट हैं। बच्चे बन गये अर्थात् हल्के बन गये। **कोई भी बोझ नहीं उठा सकते।**

1.3.86...अपने व्यर्थ को, रांग को राइट समझ लेते हैं तब ही ज्यादा व्यर्थ समय जाता है। है व्यर्थ लेकिन समझते हैं कि मैं समर्थ, राइट सोच रही हूँ। जो मैंने कहा वही राइट है। इसी में परखने की शक्ति न होने के कारण मन की शक्ति, समय की शक्ति, वाणी की शक्ति सब चली जाती है। और दूसरे से मेहनत लेने का बोझ भी चढ़ता है। कारण? क्योंकि होली हंस बुद्धि नहीं बने हैं। तो बापदादा सभी होली हंसों को फिर से यही इशारा दे रहे हैं कि उल्टे को उल्टा नहीं करो। यह है ही उल्टा यह नहीं सोचो लेकिन उल्टे को सुल्टा कैसे करूँ, यह सोचो। इसको कहा जाता है - कल्याण की भावना। श्रेष्ठ भाव, शुभ भावना से अपने व्यर्थ भाव-स्वभाव और दूसरे के भाव स्वभाव को परिवर्तन करने की विजय प्राप्त करेंगे! समझा

10.3.86.... जिम्मेवारी बाप की है और मैं निमित्त सेवाधारी हूँ। मैं निमित्त कर्मयोगी हूँ। करावनहार बाप है, निमित्त करनहार मैं हूँ। अगर यह स्मृति हर समय स्वतः ही रहती है तो सदा ही बेफिकर बादशाह है। अगर गलती से भी किसी भी व्यर्थ भाव का अपने ऊपर बोझ उठा लेते हो तो ताज के बजाए फिकर के अनेक टोकरे सिर पर आ जाते हैं। नहीं तो सदा लाइट के ताजधारी बेफिकर बादशाह हो। बस बाप और मैं, तीसरा न कोई। यह अनुभूति सहज बेफिकर बादशाह बना देती है।

27.3.86... कोई अपनी देह के लगाव के संस्कार या कोई भी विशेष पुराना संस्कार वा किसी व्यक्ति वा वस्तु के संस्कार वा व्यर्थ संकल्पों के संस्कार वश कन्ट्रोलिंग पावर न होने के कारण व्यर्थ संकल्पों का बोझ है।

29.3.86..... सदा बाप को कम्बाइन्ड रूप में अनुभव कर दिलशिकस्त से शक्तिशाली बन आगे उड़ते रहो। हिसाब किताब चुक्तु हुआ अर्थात् बोझ उतरा। खुशी-खुशी से पिछले बोझ को भस्म करते जाओ। बापदादा सदा बच्चों के सहयोगी हैं। ज्यादा सोचो भी नहीं। व्यर्थ सोच भी कमज़ोर कर देता है। जिसके व्यर्थ संकल्प ज्यादा चलते हैं तो दो चार बार मुरली पढ़ो। मनन करो। पढ़ते जाओ। कोई न कोई प्वाइंट बुद्धि में बैठ जायेगी। शुद्ध संकल्पों की शक्ति जमा करते जाओ तो व्यर्थ खत्म हो जायेगा। समझा।

9.4.86.. जहाँ सन्तुष्टता नहीं, चाहे स्वयं से चाहे सम्पर्क वालों से, वह सेवा - न स्वयं को फल की प्राप्ति करायेगी, न दूसरों को। इससे स्वयं अपने को पहले 'सन्तुष्टमणी' बनाए फिर सेवा में आवे वह अच्छा है। नहीं तो सूक्ष्म बोझ जरूर है। वह अनेक प्रकार का बोझ उड़ती कला में विघ्न रूप बन जाता है। बोझ चढ़ाना नहीं है, बोझ उतारना है। जब ऐसे समझते हो तो इससे एकान्तवासी बनना अच्छा है क्योंकि एकान्तवासी बनने से स्व परिवर्तन का अटेन्शन जायेगा।

11.4.86... सदा अपने को डबल लाइट अनुभव करते हो? जो डबल लाइट रहता है वह सदा उड़ती कला का अनुभव करता है। क्योंकि जो हल्का होता है वह सदा ऊँचा उड़ता है, बोझ वाला नीचे जाता है। तो डबल लाइट आत्मार्थे अर्थात् सर्व बोझ से न्यारे बन गये। बाप का बनने से 63 जन्मों का बोझ समाप्त हो गया। सिर्फ अपने पुराने संकल्प वा व्यर्थ संकल्प का बोझ न हो। क्योंकि कोई भी बोझ होगा तो ऊँची स्थिति में उड़ने नहीं देगा। तो डबल लाइट अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थित होने से हल्का-पन स्वतः हो जाता है। ऐसे डबल लाइट को ही 'फरिश्ता' कहा जाता है।

18.3.87.... अब बापदादा मन की भी थकावट, तन की भी थकावट और धन के उलझन के कारण भी जो थकावट थी, वह उतार रहे हैं। सभी थक गये थे ना! बच्चे जो अति प्यारे होते हैं, उन्हीं के लिए कहावत है - नयनों पर बिठाकर ले जाते हैं। तो इतने हल्के बने हो जो नयनों पर बिठाकर बाप ले जाये? लाइट (हल्के) हो ना? जब बाप बोझ उठाने के लिए तैयार है तो आप बोझ क्यों उठाते हो? बाप से स्नेह की निशानी है - सदा हल्के बन बाप की नजरों में समा जाओ। इतने लाइट जो नजरों में समा जाएँ! इस समय लाइट बनो तो 21 जन्म की गैरन्टी है - कभी-भी किसी भी प्रकार का बोझ आ नहीं सकता। अच्छा।

5.1057.... सदा स्वदर्शन-चक्रधारी बन, मायाजीत बन आगे बढ़ते चलो। इससे सदा हल्के रहेंगे, किसी भी प्रकार का बोझ अनुभव नहीं होगा। बोझ ही नीचे ले आता है और हल्का होने से ऊँचे उड़ते रहेंगे। तो उड़ने वाले हो ना? कमज़ोर तो नहीं? अगर एक भी

पंख कमज़ोर होगा तो नीचे ले आयेगा, उड़ने नहीं देगा। इसलिए, दोनों ही पंख मजबूत हों तो स्वतः उड़ते रहेंगे। स्वदर्शन-चक्रधारी बनना अर्थात् उड़ती कला में जाना।

10.11.87.... हिम्मत बच्चे मददे बाप। बच्चों की हिम्मत पर सदा बाप की मदद पद्मगुणा प्राप्त होती है। **बोझ तो बाप के ऊपर है।** लेकिन ट्रस्टी बन सदा बाप की याद से आगे बढ़ते रहो। बाप की याद ही छत्रछाया है। पिछला हिसाब सूली है लेकिन बाप की मदद से काँटा बन जाता है। परिस्थितियाँ आनी जरूर हैं क्योंकि सब कुछ यहाँ ही चुक्तु करना है। लेकिन बाप की मदद काँटा बना देती है, बड़ी बात को छोटा बना देती है क्योंकि बड़ा बाप साथ है। सदा निश्चय से आगे बढ़ते रहो। हर कदम में ट्रस्टी। ट्रस्टी अर्थात् सब कुछ तेरा, मेरा-पन समाप्त। गृहस्थी अर्थात् मेरा। तेरा होगा तो बड़ी बात, छोटी हो जायेगी और मेरा होगा तो छोटी बात, बड़ी हो जायेगी। तेरा-पन हल्का बनाता है और मेरा-पन भारी बनाता है। तो जब भी भारी अनुभव करो तो चेक करो कि कहाँ मेरा-पन तो नहीं? **मेरे को तेरे में बदली कर दो तो उसी घड़ी हल्के हो जायेंगे, सारा बोझ एक सेकण्ड में समाप्त हो जायेगा।**

22.11.87.... जब बाप के बन गये तो सारा बोझ बाप को दे दिया ना? जब बोझ हल्का हो गया तो फरिश्ते हो गये। **बाप आये ही हैं बोझ समाप्त करने के लिए। तो जब बाप बोझ समाप्त करने वाले हैं तो आप सबने बोझ समाप्त किया है ना? कोई छोटी-सी गठरी छिपाकर तो नहीं रखी है?** सब कुछ दे दिया या थोड़ा-थोड़ा समय के लिए रखा है? थोड़े-थोड़े पुराने संस्कार हैं या वह भी खत्म हो गये? पुराना स्वभाव या पुराना संस्कार, यह भी तो खज़ाना है ना। यह भी दे दिया है? अगर थोड़ा भी रहा हुआ होगा तो ऊपर से नीचे ले आयेगा, फरिश्ता बन उड़ती कला का अनुभव करने नहीं देगा। कभी ऊँचे तो कभी नीचे आ जायेंगे। इसलिए बापदादा कहते हैं सब दे दो। यह रावण की प्रापटी है ना। रावण की प्रापटी अपने पास रखेंगे तो दुःख ही पायेंगे। फरिश्ता अर्थात् जरा भी रावण की प्रापटी न हो, पुराना स्वभाव या संस्कार आता हैं ना? कहते हो ना - चाहते तो नहीं थे लेकिन हो गया, कर लिया या हो जाता है। तो इससे सिद्ध है कि छोटी-सी पुरानी गठरी अपने पास रख ली है। किचड़- पट्टी की गठरी है। तो सदा के लिए फरिश्ता बनना - यही ब्राह्मण जीवन है। पास्ट खत्म हो गया। पुराने खाते भस्म कर दिये। अभी नई बातें, नये खाते हैं। अगर थोड़ा भी पुराना कर्जा रहा होगा तो सदा ही माया का मर्ज लगता रहेगा क्योंकि कर्ज को मर्ज कहा जाता है। इसलिए सारा ही खाता समाप्त करो। नया जीवन मिल गया तो पुराना सब समाप्त।

6.12.87..... सहजयोगी कुमार हो ना? निरन्तर योगी कुमार, कर्मयोगी कुमार। क्योंकि कुमार जितना अपने को आगे बढ़ाने चाहें उतना बढ़ा सकते हैं। क्यों? निर्बन्धन है, नहीं

हैं और जिम्मेवारी नहीं है इसलिए हल्के हैं। हल्के होने के कारण जितना ऊँचा जाना चाहे जा सकते हैं। निरन्तर योगी, सहज योगी - यह है ऊँची स्थिति, यह है ऊंचा जाना। ऐसे ऊँच स्थिति वाले को कहते हैं - 'विजयी कुमार'। विजयी हो या कभी हार, कभी जीत - यह खेल तो नहीं खेलते हो? अगर कभी हार कभी जीत के संस्कार होंगे तो एकरस स्थिति का अनुभव नहीं होगा। एक की लग्न में मग्न रहने का अनुभव नहीं करेंगे।

14.12.87.....इस समय में बाप स्वयं आफर करते हैं कि सर्व प्रकार का बोझ बाप को दे दो। बोझ उठाने की आफर करते हैं। भाग्यविधाता बन नॉलेजफुल बनाए, श्रेष्ठ कर्मों का ज्ञान स्पष्ट समझाए भाग्य की लकीर खींचने चाहो उतना खींच लो। सर्व खुले खज़ानों की चाबी आपके हाथ में दी है। और चाबी भी कितनी सहज है। अगर माया के तूफान आते भी हैं तो छत्रछाया बन सदा सेफ भी रखते हैं। जहाँ छत्रछाया है वहाँ तूफान क्या करेगा।

14.1.88.... नम्बरवन आज्ञाकारी आत्मा का कभी मन नहीं खाता, आज्ञा प्रमाण चलने के कारण सदा हल्के रहते। क्योंकि कर्म के बंधन का बोझ नहीं। पहले भी सुनाया था कि एक है कर्म के संबंध में आना, दूसरा है कर्म के बंधन वश कर्म करना। तो नम्बरवन आत्मा कर्म के सम्बन्ध में आने वाली है, इसलिए सदा हल्की है। नम्बर वन आत्मा हर कर्म में बापदादा द्वारा विशेष आशीर्वाद की प्राप्ति के कारण हर कर्म करते आशीर्वाद के फलस्वरूप सदा ही आंतरिक विल पावर अनुभव करेगी। सदा अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करेगी, सदा अपने को भरपूर अर्थात् सम्पन्न अनुभव करेगी।

14.1.88.... कई बार उस समय कोई उल्टा कार्य या कोई छोटी - मोटी भूल नहीं होती है लेकिन चलते - चलते अन्जान वा अलबेलेपन में समय प्रति समय आज्ञा के प्रमाण काम नहीं करते हैं। पहले समय की अवज्ञा का बोझ किसी समय अपने तरफ खींचता है। जैसे पिछले जन्मों के कड़े संस्कार, स्वभाव कभी - कभी न चाहते भी अपने तरफ खींच लेते हैं, ऐसे समय प्रति समय की की हुई अवज्ञाओं का बोझ कभी - कभी अपने तरफ खींच लेता है। वह है पिछला हिसाब - किताब, यह है वर्तमान जीवन का हिसाब। क्योंकि कोई भी हिसाब - चाहे इस जन्म का, चाहे पिछले जन्म का, लग्न की अग्नि - स्वरूप स्थिति के बिना भस्म नहीं होता। सदा अग्नि - स्वरूप स्थिति अर्थात् शक्तिशाली याद की स्थिति, बीजरूप, लाइट हाउस, माइट हाउस स्थिति सदा न होने के कारण हिसाब - किताब को भस्म नहीं कर सकते हैं। इसलिए रहा हुआ हिसाब अपने तरफ खींचता है। उस समय कोई गलती नहीं करते हो कि पता नहीं क्या हुआ! कभी मन नहीं लगेगा - याद में, सेवा में वा कभी उदासी की लहर होगी। एक होता है ज्ञान

द्वारा शान्ति का अनुभव, दूसरा होता है बिना खुशी, बिना आनन्द के सन्नाटे की शान्ति। वह बिना रस के शान्ति होती है। सिर्फ दिल करेगा - कहाँ अकेले में चले जाएँ, बैठ जाएँ। यह सब निशानियाँ हैं कोई न कोई अवज्ञा की। कर्म का बोझ खींचता है।

14.1.88.... एक होता है ज्ञान द्वारा शान्ति का अनुभव, दूसरा होता है बिना खुशी, बिना आनन्द के सन्नाटे की शान्ति। वह बिना रस के शान्ति होती है। सिर्फ दिल करेगा - कहाँ अकेले में चले जाएँ, बैठ जाएँ। यह सब निशानियाँ हैं कोई न कोई अवज्ञा की। कर्म का बोझ खींचता है।

14.1.88.... इतने इशारे मिलते, नॉलेजफुल होते फिर भी जितना होना चाहिए उतना नहीं होता, कारण? पिछला वा वर्तमान बोझ डबल लाइट बनने नहीं देता है। कभी डबल लाइट बन जाते, कभी बोझ नीचे ले आता। सदा अतीन्द्रिय सुख वा खुशी सम्पन्न शांत स्थिति अनुभव नहीं करते हैं। बापदादा के आज्ञाकारी बनने की विशेष आशीर्वाद की लिफ्ट के प्राप्ति की अनुभूति नहीं होती है। इसीलिए किस समय सहज होता, किस समय मेहनत लगती है। नम्बरवन आज्ञाकारी की विशेषताएं स्पष्ट सुनी! बाकी नम्बर टू कौन हुआ? जिसमें इन विशेषताओं की कमी है, वह नम्बर टू और दूसरे नम्बर माला के हो गए। तो पहली माला में आना है ना? मुश्किल कुछ भी नहीं है। हर कदम की आज्ञा स्पष्ट है, उसी प्रमाण चलना सहज हुआ या मुश्किल हुआ? आज्ञा ही बाप के कदम हैं। तो कदम पर कदम रखना तो सहज हुआ ना। वैसे भी सभी सच्ची सीताएं हो, सजनियाँ हो। तो सजनियाँ कदम पर कदम रखती हैं ना? यह विधि है ना। तो मुश्किल क्या हुआ! बच्चे के नाते से भी देखो - बच्चे अर्थात् जो बाप के फुटस्टैप पर चले। जैसे बाप ने कहा ऐसे किया। बाप का कहना और बच्चों का करना - इसको कहते हैं नम्बरवन आज्ञाकारी। तो चेक करो और चेन्ज करो। अच्छा!

22.1.88.... एक बल एक भरोसा - इसी आधार से निश्चयबुद्धि नम्बरवन विजयी बन गये। इसी समर्पणता के कारण बुद्धि सदा हल्की रही, बुद्धि पर बोझ नहीं रहा। मन निश्चिन्त रहा। चेहरे पर सदा ही बेफिकर बादशाह के चिन्ह स्पष्ट देखे।

* क्वेश्चन मार्क अर्थात् टेढ़ा रास्ता न ले सदा कल्याण की बिन्दी लगाओ। फुलस्टाप। इसी विधि से ही सहज भी होगा और सिद्धि भी प्राप्त होगी। तो यह भी ब्रह्मा की कमाल। आज पहला एक कदम सुनाया है। फिकर के बोझ से भी बेफिकर बन जाओ। इसको की कहा जाता है स्नेह का रिटर्न करना।

10.4.91.... ब्राह्मण जीवन में कभी किसका माथा भारी हो नहीं सकता। हॉस्पिटल बनाने वालों का माथा भारी हुआ? ट्रस्टी सामने बैठे हैं ना! माथा भारी है, जब करनकरावनहार

बाप है तो आपको क्या बोझ है? यह तो निमित्त बनाकर भाग्य बनाने का साधन बना रहे हो। आपकी जिम्मेवारी क्या है? बाप के बजाए अपनी जिम्मेवारी समझ लेते हैं तो माथा भारी होता है। बाप सर्व शक्तिवान मेरा साथी है तो क्या भारीपन होगा। **छोटी सी गलती कर देते हो, मेरी जिम्मेवारी समझते हो तो माथा भारी होता है।** तो ब्राह्मण जीवन ही नाचो गाओ और मौज करो। सेवा चाहे वाचा है चाहे कर्मणा। यह सेवा भी एक खेल है। सेवा कोई और चीज नहीं है। कोई दिमाग के खेल होते हैं, कोई हल्के खेल होते हैं। लेकिन हैं तो खेल ना। दिमाग के खेल में दिमाग भारी होता है क्या। तो यह सब खेल करते हो। तो चाहे कितना भी बड़ा सोचने का काम हो, अटेन्शन देने का काम हो लेकिन मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मा के लिए सब खेल है, ऐसे है? वा थोड़ा थोड़ा करते करते थक जाते हो? मेजोरिटी अथक बनते हो लेकिन कभी कभी थोड़ा थक जाते हो। यही योग का प्रयोग सर्व खजानों को, चाहे समय, चाहे संकल्प, चाहे ज्ञान का खजानावा स्थूल तन भी अगर योग के प्रयोग की रीति से प्रयोग करो तो हर खजाना बढ़ता रहेगा

10.4.91... जितना ही बाहर का वातावरण भारी होगा उतना ही अनन्य बच्चों के संकल्प, कर्म, सम्बन्ध लाइट (हल्के) होते जायेंगे और इस लाइटनेस के कारण सारा कार्य लाइट चलता रहेगा। **वायुमण्डल तो तमोप्रधान होने के कारण और भिन्न-भिन्न प्रकार से भारीपन का अनुभव करेंगे। प्रकृति का भी भारीपन होगा। मनुष्यात्माओं की वृत्तियों का भी भारीपन होगा। इसके लिए भी बहुत हल्कापन भी औरों को भी हल्का करेगा।** अच्छा, सब ठीक चल रहा है ना। कारोबार का प्रभाव आप लोग के ऊपर नहीं पड़ता। लेकिन आपका प्रभाव कारोबार पर पड़ता है। जो कुछ भी करते हो, सुनते हो तो आपके हल्केपन की स्थिति का प्रभाव कार्य पर पड़ता है। कार्य की हलचल का प्रभाव आप लोगों के ऊपर नहीं आता। अचल स्थिति कार्य को भी अचल बना देती है। सब रीति से असम्भव कार्य सम्भव और सहज हो रहे हैं और होते रहेंगे। अच्छा।

10.4.91... बाप के बजाए अपनी जिम्मेवारी समझ लेते हैं तो माथा भारी होता है। **बाप सर्व शक्तिवान मेरा साथी है तो क्या भारीपन होगा। छोटी सी गलती कर देते हो, मेरी जिम्मेवारी समझते हो तो माथा भारी होता है।** तो ब्राह्मण जीवन ही नाचो गाओ और मौज करो। सेवा चाहे वाचा है चाहे कर्मणा। यह सेवा भी एक खेल है। सेवा कोई और चीज नहीं है। कोई दिमाग के खेल होते हैं, कोई हल्के खेल होते हैं। लेकिन हैं तो खेल ना। दिमाग के खेल में दिमाग भारी होता है क्या। तो यह सब खेल करते हो। तो चाहे कितना भी बड़ा सोचने का काम हो, अटेन्शन देने का काम हो लेकिन मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मा के लिए सब खेल है, ऐसे है?

31.12.91.... चाहे सम्पर्क में आते हो, चाहे स्व के प्रति कर्म करते हो, दोनों में सहज हो। भारीपन न हो। जो मुश्किल काम होता है वह भारी होता है। भारी के कारण ही मुश्किल होता है और जहाँ सहज होगा वहाँ हल्कापन होगा। तो डबल लाइट हो या ासिंगल लाइट? चाहे व्यवहार हो, चाहे परमार्थ हो, व्यवहार में भी सहज, परमार्थ माना अपना पुरुषार्थ उसमें भी सहज। लौकिक में भी सहज, अलौकिक में भी सहज, बोझ नहीं। ऐसे हो या प्रवृत्ति का थोड़ा बोझ है? अगर मेरी प्रवृत्ति समझते हो तो बोझ है। मेरा-मेरा माना बोझ और तेरा-तेरा अर्थात् हल्का। संगमयुग है ही खुशियों का युग। तो जब खुशी में कोई भी होता है तो मन हल्का होता है।

4.12.91... क्या करें, मेरी जिम्मेवारी है ना, निभाना पड़ता है ना, करना पड़ता है ना, कहते हो कभी? या तेरा तेरे अर्पण, मेरा कहाँ से आया? तो यह बोल भी नहीं बोल सकते हो? मुझे ही देखना पड़ता है, मुझे ही करना पड़ता है, मेरा ही है, निभाना ही पड़ेगा...। मेरा कहा और बोझ हुआ। बाप का है, बाप करेगा, मैं निमित्त हूँ तो हल्के। बोझ उठाने की आदत तो नहीं है? 63 जन्म बोझ उठाया ना। कड़ियों की आदत होती है बोझ उठाने की। बोझ उठाने बिना रह नहीं सकते। आदत से मजबूर हो जाते हैं। मेरा मानना माना बोझ उठाना। समझा। थोड़ा सा किनारा करके रखा है, समय पर काम में आयेगा?। पाण्डवों ने थोड़ा बैंक बैलेन्स, थोड़ा जेब खर्च रखा है? जरा भी मेरापन नहीं। मेरा माना मैला। जहाँ मेरापन होगा ना वहाँ विकारों का मैलापन जरूर होगा। तेरा है तो क्या होगा? तैरते रहेंगे, डूबेंगे नहीं। तैरने में तो मजा आता है ना! तो तपस्या अर्थात् तेरा, मेरा नहीं।

11.12.91... सदा उड़ेगा कौन? जो हल्का होगा। तो हल्के हो ना? या तन का, मन का, सम्बन्ध का बोझ है? अगर बोझ नहीं है तो रुकते क्यों हैं? जो बोझ वाली चीज है वो नीचे आती है और जो हल्की होती है वह सदा ऊपर रहती है। आप सब तो डबल लाइट हो ना?

10.4.91.. जितना ही बाहर का वातावरण भारी होगा उतना ही अनन्य बच्चों के संकल्प, कर्म, सम्बन्ध लाइट (हल्के) होते जायेंगे और इस लाइटनेस के कारण सारा कार्य लाइट चलता रहेगा। वायुमण्डल तो तमोप्रधान होने के कारण और भिन्न-भिन्न प्रकार से भारीपन का अनुभव करेंगे। प्रकृति का भी भारीपन होगा। मनुष्यात्माओं की वृत्तियों का भी भारीपन होगा। इसके लिए भी बहुत हल्कापन भी औरों को भी हल्का करेगा। अच्छा, सब ठीक चल रहा है ना। कारोबार का प्रभाव आप लोग के ऊपर नहीं पड़ता। लेकिन आपका प्रभाव कारोबार पर पड़ता है। जो कुछ भी करते हो, सुनते हो तो आपके हल्केपन की स्थिति का प्रभाव कार्य पर पड़ता है। कार्य की हलचल का प्रभाव

आप लोगों के ऊपर नहीं आता। अचल स्थिति कार्य को भी अचल बना देती है। सब रीति से असम्भव कार्य सम्भव और सहज हो रहे हैं और होते रहेंगे। अच्छा।

* कोई अल्पकाल की खुशी में भी होंगे तो उस समय हल्कापन होगा। अगर भारीपन होगा तो खुशी में नहीं रहेगा। आर्टिफिशल खुशी की और बात है। तो सदा खुशी में रहने वाले हो ना। यह स्मृति रखो कि हमारे जैसा महान न कोई बना है, न बनेगा! वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य!

30.11.92... जिम्मेवारियाँ माथा भारी करती हैं। जब भी खुशी कम होती है तो कहते या सोचते हो कि-क्या करें, यह भी सम्भालना पड़ता है ना, करना पड़ता है ना, जिम्मेवारी है ना। उस समय सोचते हो ना। लेकिन जिम्मेवार बाप है, मैं निमित्त-मात्र हूँ। मेरी जिम्मेवारी है-तो भारीपन होता है। बाप की जिम्मेवारी है, मैं निमित्त हूँ-तो हल्के हो जायेंगे। हल्का उड़ेगा। भारी चीज उड़ेगी नहीं, बार-बार नीचे आ जायेगी। थोड़ा भी संकल्प आया-मुझे करना पड़ता है, मुझे ही करना है-तो भारीपन हुआ। तो डबल लाइट हो ना। या थोड़ा-थोड़ा बोझ है? सदा उड़ते रहो। उड़ती कला अर्थात् तीव्र गति।

31.12.91.... चाहे सम्पर्क में आते हो, चाहे स्व के प्रति कर्म करते हो, दोनों में सहज हो। भारीपन न हो। जो मुश्किल काम होता है वह भारी होता है। भारी के कारण ही मुश्किल होता है और जहाँ सहज होगा वहाँ हल्कापन होगा। तो डबल लाइट हो या ासिंगल लाइट? चाहे व्यवहार हो, चाहे परमार्थ हो, व्यवहार में भी सहज, परमार्थ माना अपना पुरुषार्थ उसमें भी सहज। लौकिक में भी सहज, अलौकिक में भी सहज, बोझ नहीं। ऐसे हो या प्रवृत्ति का थोड़ा बोझ है? अगर मेरी प्रवृत्ति समझते हो तो बोझ है। मेरा-मेरा माना बोझ और तेरा-तेरा अर्थात् हल्का। संगमयुग है ही खुशियों का युग। तो जब खुशी में कोई भी होता है तो मन हल्का होता है।

कोई अल्पकाल की खुशी में भी होंगे तो उस समय हल्कापन होगा। अगर भारीपन होगा तो खुशी में नहीं रहेगा। आर्टिफिशल खुशी की और बात है। तो सदा खुशी में रहने वाले हो ना। यह स्मृति रखो कि हमारे जैसा महान न कोई बना है, न बनेगा! वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य!

31.12.91..... आप सबने अपनी बुद्धि की तार बापदादा को दे दी है या कभी-कभी अपने हाथ में ले लेते हो? चलाने वाला चला रहा है, कराने वाला करा रहा है और आप निमित्त कर्म क्या करते हो? डांस कर रहे हो। कितना भी बड़ा कार्य हो लेकिन ऐसे समझो जैसे नचाने वाला नचा रहा है और हम नाच रहे हैं तो थकेंगे नहीं। कन्फ्यूज़ नहीं होंगे। एवरहैप्पी रहेंगे। इसलिए बापदादा सदा कहते हैं कि सदा नाचो और गाओ। क्योंकि ब्राह्मण जीवन में कोई बोझ नहीं है। ब्राह्मण जीवन अति श्रेष्ठ है। लौकिक

जाँब भी करते हो तो डायरेक्शन प्रमाण करते हो, बोझ नहीं है। क्योंकि बाप डायरे-क्शन के साथ-साथ एक्स्ट्रा मदद भी देते हैं।

8.4.92....सेवा के प्लैन के साथ-साथ प्लेन बुद्धि का अटेन्शन पहले रखो। अगर प्लेन बुद्धि है और सेवा का प्लैन इतना बड़ा नहीं भी है, फिर भी प्लेन बुद्धि वाले को नुकसान नहीं है, बोझ नहीं है। सेवा का फायदा कम है लेकिन नुकसान तो नहीं कहेंगे ना। मिक्सचर बुद्धि में तो नुकसान है। इसलिए यह वर्ष भी तपस्या का करेंगे? सेवा में तो कहते हो कि नीचे आ जाते हैं, तो क्या करेंगे? सिर्फ तपस्या करेंगे। जब स्वयं सम्पन्न बनो तब विश्व परिवर्तन का कार्य भी सम्पन्न होगा। आप सबके सम्पन्नता की कमी के कारण विश्व परिवर्तन कार्य सम्पन्न होने में रुका हुआ है। प्रकृति दासी बन आपके सेवा के लिए इन्तज़ार कर रही है कि ब्राह्मण आत्माएँ ब्राह्मण सो फरिश्ता और फिर फरिश्ता सो देवता बनें तो हमदिल व जान, सिक व प्रेम से सेवा करें। क्योंकि सिवाए फरिश्ता बने देवता नहीं बन सकते।

15.4.92.... व्यर्थ बातों का फैलाव करना यह भी पाप का अंश है। यह छोटे-छोटे पाप जो होते हैं वह अपनी उड़ती कला के अनुभव को समाप्त कर देते हैं। क्योंकि सबसे भारी ते भारी है पाप। अगर पाप का अंश भी है तो उड़ेगा कैसे? **बोझ वाला उड़ेगा?** आजकल बहुत रॉयल भाषा में फैलाव करते हैं। कहते हैं यह नया समाचार लाया हूँ। आप तो बहुत बुद्ध हो आपको कोई समाचार का पता नहीं पड़ता। हम देखो नॉलेजफुल हैं कितने समाचार का पता है। ऐसे समाचार सुनने वालों के ऊपर भी पाप और सुनाने वाले के ऊपर और ज्यादा पाप। इसीलिए तपस्या वर्ष में यह **सूक्ष्म पापों का बोझ समाप्त तो तब समान बन सकेंगे।** नहीं तो सोचते हैं कि हमने तो कोई गलती की नहीं लेकिन यह रॉयल गलती बहुत करते हैं। इसको रॉयल समझते हैं। मैंने सुना तो ऐसे ही सुना दिया। भाव कोई नहीं था मेरा। लेकिन रिजल्ट क्या है। **फैलाना अर्थात् बोझ के अधिकारी बनना।** तो आजकल यह भी एक रिवाज हो गया है। आपस में मिलेंगे ना तो पहले तो समाचार सुनायेंगे, नये नये समाचार। कहेंगे किसको सुनाना नहीं सिर्फ आपको ही सुना रहे हैं। लेकिन बाप ने तो सुना। रजिस्टर में दाग तो हुआ या नहीं? इसलिए इस बात का भी अटेन्शन अन्डरलाइन करो। ऐसे नहीं समझो कि बापदादा को पता ही नहीं पड़ता। दादियाँ तो कोने में बैठी हैं उनको क्या पता। दादियों को नहीं पता लेकिन आपके रजिस्टर में आटोमेटिक नोट हो जाता है। जब आजकल के कम्प्यूटर में सारा रिकार्ड भर जाता है तो क्या आपके रजिस्टर में आटोमेटिक यह रिकार्ड भर नहीं जायेगा। दादियाँ नहीं देखती, और नहीं देखते लेकिन रजिस्टर देख रहा है। तो ऐसा परिवर्तन करो। क्योंकि बापदादा ने रिजल्ट में देखा कि तपस्या पाँवरफुल न होने का

कारण क्या है? सदा विजयी बनने में विघ्न रूप क्या है? इन विघ्नों को स्वयं से समाप्त करो। दूसरा बदले तो मैं बदलूँ, इनको चेंज करो तो हम चेंज होंगे, यह भाषा यथार्थ है? बड़ों के आगे बात रखना इसके लिए सबको हक है लेकिन सत्यता और सभ्यता पूर्वक अब कितने होम वर्क मिले। इस वर्ष में ऐसे कोई रजिस्टर में सूक्ष्म दाग भी नहीं आने चाहिए। तब बाप कहेगा कि हाँ बाप से प्यार है, नहीं तो समझते हैं कि यह बाप को भी खुश करते हैं, अपने को भी खुश करते हैं। व्यर्थ समाचार बिल्कुल समाप्त होने चाहिए।

24.9.92..... ब्राह्मण जीवन अर्थात् मेरे को तेरे में बदलना। तो बार-बार यह चेक करो कि तेरा, मेरा तो नहीं बन गया। अगर मेरापन नहीं होगा, तेरा ही है तो डबल लाइट होंगे। अगर थोड़ा भी बोझ अनुभव करते हो तो समझो-मेरापन मिक्स हो गया है। भक्ति में कहते हैं कि सब-कुछ तेरा। ब्राह्मण जीवन में कहना नहीं है, करना है। यह करना सहज है ना। बोझ देना सहज होता है या लेना सहज होता है? तेरा कहना माना बोझ देना और मेरा कहना माना बोझ लेना। तो अभी एक बल एक भरोसा। बस, एक ही एक। एक लिखना सहज है ना। तो यह तेरा-तेरा कहने वाला ग्रुप है। अच्छा!

3.10.92.... जितना मेरा-मेरा कहा, उतना ही मेरा कोई नहीं रहा। तो ट्रस्टी जीवन कितनी प्यारी है! सम्भा-लते हुए भी कोई बोझ नहीं, सदा हल्के। देखो, गृहस्थी बन चलने से बोझ उठाते-उठाते क्या हाल हुआ-तन भी गंवाया, मन भी अशान्त किया और सच्चा धन भी गंवा दिया। तन को रोगी बना दिया, मन को अशान्त बना लिया और धन में कोई शक्ति नहीं रही। आज का एक हजार पहले के एक रूपये के बराबर है। तो धन की ताकत चली गई ना। अभी जब बोझ उठाने का भी अनुभव कर लिया और हल्के रहने का भी अनुभव कर लिया, तो अनुभवी कभी धोखा नहीं खाता। कभी भी, किसी भी बात में अगर माया से धोखा खाते तो धोखा खाने की निशानी क्या है? दुःख की लहर। जरा भी दुःख की लहर संकल्प में भी आती है तो जरूर कहाँ धोखा खाया है। तो चेक करो कि किस बात में धोखा मिला, क्यों दुःख की लहर आई? सुखदाता के बच्चे हो। तो सुखदाता के बच्चे को दुःख की लहर आ सकती है? स्वप्न भी बदल गये। सुख के स्वप्न आयें, खुशी के स्वप्न आयें, सेवा के स्वप्न आयें, मिलन मनाने के स्वप्न आयें। संस्कार भी बदल गये तो स्वप्न भी बदल गये। अच्छा!

3.10.92.... जितना मेरा-मेरा कहा, उतना ही मेरा कोई नहीं रहा। तो ट्रस्टी जीवन कितनी प्यारी है! सम्भा-लते हुए भी कोई बोझ नहीं, सदा हल्के। देखो, गृहस्थी बन चलने से बोझ उठाते-उठाते क्या हाल हुआ-तन भी गंवाया, मन भी अशान्त किया और

सच्चा धन भी गंवा दिया। तन को रोगी बना दिया, मन को अशान्त बना लिया और धन में कोई शक्ति नहीं रही। आज का एक हजार पहले के एक रुपये के बराबर है। तो धन की ताकत चली गई ना। अभी जब बोझ उठाने का भी अनुभव कर लिया और हल्के रहने का भी अनुभव कर लिया, तो अनुभवी कभी धोखा नहीं खाता। कभी भी, किसी भी बात में अगर माया से धोखा खाते तो धोखा खाने की निशानी क्या है? दुःख की लहर। जरा भी दुःख की लहर संकल्प में भी आती है तो जरूर कहाँ धोखा खाया है। तो चेक करो कि किस बात में धोखा मिला, क्यों दुःख की लहर आई? सुखदाता के बच्चे हो। तो सुखदाता के बच्चे को दुःख की लहर आ सकती है? स्वप्न भी बदल गये। सुख के स्वप्न आयें, खुशी के स्वप्न आयें, सेवा के स्वप्न आयें, मिलन मनाने के स्वप्न आयें। संस्कार भी बदल गये तो स्वप्न भी बदल गये। अच्छा!

22.11.92... सारा दिन सिर्फ एक शब्द याद रखो, वो है-"मेरा बाबा"। तो 'मेरा' कहने से अधिकार हो जायेगा। तो आशीर्वाद का अधिकार स्वतः ही प्राप्त होगा। यह तो सहज है ना। कोई भी कार्य करो लेकिन यह याद रखो कि 'मेरा बाबा' और बाबा का यह कार्य कर रही हूँ। ट्रस्टी होकर कार्य करो। तो ट्रस्टी को कभी कोई बोझ नहीं होता है। न बोझ होगा, न भूलेंगे। फिर भी भक्ति में याद तो किया है ना। याद का रिटर्न है-मौज में रहना। (कृष्ण की भक्त है) तो कृष्ण के राज्य में चलना है ना।

7.11.95...बापदादा इन दोनों (चन्द्रमणी दादी, रतनमोहनी दादी) के ऊपर भी खुश हैं। जान सरोवर की जिम्मेवारी सभांली है। जिम्मेवारी तो क्या, खेल है। भारीपन है क्या? खेल हल्का होता है ना? तो जिम्मेवारी क्या है? खेल है। तो बापदादा खुश है कि समय पर सहयोगी बने हैं और आदि से सहयोगी रहे हैं। आदि से हाँ जी करने वाले हैं - यही साकार बाप का आप सबको विशेष वरदान है। ब्रह्मा बाबा को 'ना' शब्द कभी अच्छा नहीं लगता। ये तो मालूम है, अनुभवी हैं।

25.11.95... जिस व्यक्ति का समाचार सुना उसके प्रति दृष्टि में वा संकल्प में भी घृणा भाव बिल्कुल नहीं हो। इतनी पाँवर आपमें है तो यह सुनना नहीं हुआ, उसका कल्याण करना हुआ। लेकिन रिज़ल्ट में देखा जाता है मैजारिटी थोड़ा-थोड़ा किचड़ा इकट्ठा होते-होते ये घृणा भाव या चाल-चलन में अन्तर आ जाता है। और कुछ भी नहीं होगा तो भी उस आत्मा के प्रति सेवा करने की भावना नहीं होगी, भारीपन होगा। इसको कहा जाता है-श्रीमत में परमत मिलाना। समाचार तो बापदादा भी सुनते हैं, लेकिन होता क्या है? मैजारिटी का भाव बदल जाता है। सुनाने में भी भाव बदल जाता है। एक आकर कहता है मैंने देखा कि ये दो बात कर रहे थे और एक का सुना

हुआ दूसरा फिर कहते हैं नहीं-नहीं खड़े भी थे और बहुत अच्छी तरह से नहीं खड़े थे, दूसरा एडीशन हुआ। फिर तीसरा कहेगा इन्हीं का तो होता ही है। कितना भाव बदल गया। उन्हीं की भावना क्या और बातों में भाव कितना बदल जाता है। तो ये परमत वायुमण्डल को खराब कर देता है। तो जो टाइम वेस्ट जाता है उसका एक कारण परमत और दूसरा कारण है परचिन्तन। एक से बात सुनी तो आठ-दस को नहीं सुनावे, यह नहीं हो सकता। अगर कोई दूरदेश में भी होगा ना तो भी उसको पत्र में भी लिख देंगे-यहाँ बहुत नई बात हुई है, आप आयेंगे ना तो जरूर सुनायेंगे। तो ये क्या हो गया? परचिन्तन। समझो आपने चार को सुनाया, उन चार की भावना उस आत्मा के प्रति आपने खराब तो की ना और परचिन्तन शुरू हुआ तो इसकी गति बड़ी फास्ट और लम्बी होती है।

30.11.95..... आपको भी यह नशा रहना चाहिये कि हम उड़ती कला के समय पर आये हैं। समय भी, देखो, आपका सहयोग बन गया। तो अच्छी तरह से उड़ो। अपने पास छोटे-मोटे बोझ नहीं रखो-न पुरुषार्थ का बोझ, न सेवा का बोझ, न सम्बन्ध-सम्पर्क निभाने का बोझ। कोई बोझ नहीं। या थोड़ा-थोड़ा बोझ रखना अच्छा है? आदत पड़ी हुई है ना। 63 जन्म से बोझ उठाते आये, बीच-बीच में वह आदत अभी भी काम कर लेती है। लेकिन बोझ उठाने से क्या मिला? भारी रहे और भारी रहने से नीचे गिरते गये। अभी तो चढ़ना है ना। अच्छा! गुजरात वाले कभी भी ऐसे नहीं कहेंगे कि क्या करें, कैसे करें, माया आ गई। माया से डरने वाले हो। या विजय प्राप्त करने वाले हो? लड़ते रहेंगे तो चन्द्रवंशी में चले जायेंगे। इसलिये सदा विजयी। हार खाने वाले नहीं। हार खाना कमजोरों का काम है, ब्राह्मण तो सदा बहादुर हैं।

10.12.92..... पुरुषार्थ के तीव्र गति की निशानी है कि वह सदा डबल लाइट होगा, किसी भी प्रकार का बोझ नहीं अनुभव करेगा। चाहे प्रकृति द्वारा कोई परिस्थिति आये, चाहे व्यक्तियों द्वारा कोई परिस्थिति आये लेकिन हर परिस्थिति, स्व-स्थिति के आगे कुछ भी अनुभव नहीं होगी। स्व-स्थिति की शक्ति पर-स्थिति से बहुत ऊंची है, क्यों? यह स्व है, वह पर है। अपनी शक्ति भूल जाते हो तब ही पर-स्थिति बड़ी लगती है। सदा डबल लाइट का अर्थ ही है कि लाइट अर्थात् ऊंचे रहने वाले। हल्का सदा ऊंचा जाता है, बोझ वाला सदा नीचे जाता है। आधा कल्प तो नीचे ही आते रहे ना। लेकिन अभी समय है ऊंचा जाने का। तो क्या करना है? सदा ऊपर।

31.12.92... जो भी विशेषता है वह 'मेरी' है या 'बाप' की देन है? तो बाप की देन में मेरापन नहीं आ सकता। इसलिए सदा ही न्यारे और प्यारे रहने वाले। तो यह भी एक सीढ़ी है बालक और मालिक बनने की। यह सीढ़ी है-कभी चढ़ो, कभी उतरों। कभी

बालक बन जाओ, कभी मालिक बन जाओ। इससे सदा ही हल्के रहेंगे, किसी प्रकार का बोझ नहीं।

सब प्रकार का बोझ बाप को दे दिया ना। बोझ उठाने की आदत तो नहीं है ना। बोझ उठाने की आदत होती है तो कितना भी कहो, बोझ उठायेंगे जरूर। बोझ उठाने वाले नहीं, हल्के रहने वाले। जितना हल्का उतना ऊंची स्थिति में उड़ता रहेगा। बोझ वाले की निशानी है-वह नीचे स्वतः ही आ जाता है और हल्के की निशानी है-वह स्वतः सहज ऊंचा उड़ता रहेगा। तो कौन हो? उड़ने वाले ना। जब समय ही है उड़ती कला का, तो उड़ती कला के समय उड़ने में ही प्राप्ति है।

18.1.93... जब बाप का साथ छोड़ देते हो, अकेले करते हो तो बोझ भी लगेगा, मेहनत भी लगेगी, मुश्किल और असम्भव भी लगेगा और बाप को साथ रखा तो पहाड़ भी राई बन जायेगी। इसको कहा जाता है-एक बल, एक भरोसे में रहने वाले। 'एक बल, एक भरोसे' में जो रहता वो कभी भी संकल्प-मात्र भी नहीं सोच सकता कि क्या होगा, कैसे होगा? क्योंकि अगर क्वेश्चन-मार्क है तो बुद्धि ठीक निर्णय नहीं करेगी। क्लीयर नहीं है! अगर कोई भी काम करते क्वेश्चन आता है-"पता नहीं क्या होगा?" कैसे होगा? तो इसको कहा जाता है युद्ध की स्थिति। तो ब्राह्मण हो या क्षत्रिय? क्योंकि अभी तक समय अनुसार अगर युद्ध के संस्कार हैं तो सूर्यवंशी में पहुँचेंगे या चन्द्रवंशी में? चन्द्रवंशी में तो नहीं जाना है ना! योग में भी बैठते हो तो कुछ समय योग लगता है और कुछ समय युद्ध करते रहते हो! उसी समय अगर शरीर छूट जाए तो कहाँ जायेंगे? 'अन्त मती सो गति'क्या होगी? इसलिए सदा विजयीपन के संस्कार धारण करो। जब सर्वशक्तिवान बाप साथ है, तो जहाँ भगवान है वहाँ युद्ध है या विजय है? तो ऐसे विजयी रत्न बनो। इसको कहते हैं एक बल एक भरोसा। अच्छा!

18.2.93...उड़ती कला का क्या साधन है? बिन्दु रूप में रहना। डबल लाइट। बिन्दु तो है लेकिन कर्म में भी लाइट। डबल लाइट हो तो जरूर उड़ेंगे। आधा कल्प बोझ उठाने की आदत होने कारण बाप को बोझ देते हुए भी कभी-कभी उठा लेते हैं। तंग भी होते हो लेकिन आदत से मजबूर हो जाते हो। कहते हो 'तेरा' लेकिन बना देते हो 'मेरा'। स्व उन्नति के लिए वा विश्व-सेवा के लिए कितना भी कार्य हो वह बोझ नहीं लगेगा। लेकिन मेरा मानना अर्थात् बोझ होना। तो सदैव क्या याद रखेंगे? मेरा नहीं, तेरा। मन से, मुख से नहीं। मुख से तेरा-तेरा भी कहते रहते हैं और मन से मेरा भी मानते रहते हैं। ऐसी गलती नहीं वर्ना।

31.12.93... परमात्म प्यार अर्थात् सदा परमात्म साथ हो। कभी अपने को अकेले तो नहीं समझते हो? बाप साथ है ना। जब बाप साथ है तो बोझ अपने ऊपर नहीं उठाओ।

बोझ बाप को देकर हल्के हो जाओ। बोझ रखते हो तो परेशान होते हो। हल्के रहो तो उड़ते रहेंगे। सब-कुछ बाप के हवाले कर दो। जब कुछ है ही नहीं तो बोझ काहे का? कुछ रखा है तभी बोझ है, तभी परेशानी है। बाप के हवाले नहीं किया है, थोड़ा छिपाकर, जेबखर्च रख लिया है क्या? जेब खर्च होता है तो कभी-कभी काम में आ जाता है। तो माताओं ने जेबखर्च रखा है? वैसे भी माताओं की आदत होती है-साड़ी में गठरी बांध कर रख लेती हैं। साड़ी के कोने में भी बांधलेती हैं। तो अच्छी तरह से देखो कहाँ छिपाकर रखा तो नहीं है? बाप के हवाले कर लिया अर्थात् नष्टोमोहा हो गये?

23.2.97.... बापदादा विदेश की सेवा के समाचार सुनते रहते हैं, देखते भी रहते हैं, रिजल्ट में सेवा का उमंग-उत्साह बहुत अच्छा है। सिर्फ कभी-कभी अपने ऊपर सेवा का थोड़ा सा बोझ उठा लेते हो। बोझ नहीं उठाओ। बोझ बाप को दे दो। बाप के लिए वह बोझ कुछ भी नहीं है लेकिन आप सेवा का बोझ उठा लेते हो तो थक जाते हो। सेवा बहुत अच्छी करते हो, सेवा के समय नहीं थकते हो। उस समय बहुत अच्छे चेहरों का फोटो निकालने वाला होता है लेकिन कोई-कोई (सभी नहीं) सेवा के बाद थोड़ा सा थकावट के चेहरे में दिखाई देते हैं। बाप कहते हैं बोझ उठाते क्यों हो? क्या बोझ उठाना अच्छा लगता है या आदत पड़ी हुई है? बोझ नहीं उठाओ। बोझ तब लगता है जब बाप साथ नहीं है। मैंने किया, मैं करती हूँ, मैं करता हूँ तो बोझ हो जाता है। बाप साथ है, बाप का कार्य है, बाप करा रहा है तो बोझ नहीं होगा। हल्के हो नाचते रहेंगे।

13.3.98.... जो परमात्मा के प्यारे बनते हैं वह विश्व के प्यारे बनते हैं। सिर्फ भविष्य प्राप्ति नहीं है, वर्तमान भी है। एक सेकण्ड में अनुभव किया भी है और करके देखो। कोई भी बात आ जाए तेरा कह दो, मान जाओ और तेरा समझकर करो तो देखो बोझ हल्का होता है या नहीं होता है। अनुभव है ना? सभी अनुभवी बैठे हो ना! सिर्फ क्या होता है, मेरा मेरा कहने की बहुत आदत है ना, 63 जन्मों की आदत है तो तेरा तेरा कहकर फिर मेरा कह देते हो और मेरा माना गये, फिर वह बात तो एक घण्टे में, दो घण्टे में, एक दिन में खत्म हो जाती है लेकिन जो तेरे से मेरा किया उसका फल लम्बा चलता है। बात आधे घण्टे की होगी लेकिन चाहे पश्चाताप के रूप में, चाहे परिवर्तन करने के लक्ष्य से, वह बात बार-बार स्मृति में आती रहती है। इसलिए बाप सभी बच्चों को कहते हैं अगर "मेरा शब्द" से प्यार है, आदत है, संस्कार है, कहना ही है तो मेरा बाबा कहो। आदत से मजबूर होते हैं ना। तो जब भी मेरा-मेरा आवे तो मेरा बाबा कहकर खत्म कर दो। अनेक मेरे को एक मेरा बाबा में समा दो।

30.3.98... आप बच्चों के लिए रोज़ बाप शिक्षक बन आपके पास पढ़ाने आते हैं और कितना सहज पढ़ाते हैं। दो शब्दों की पढ़ाई है - आप और बाप, इन्हीं दो शब्दों में

चक्कर कहो, ड्रामा कहो, कल्प वृक्ष कहो सारी नॉलेज समाई हुई है। और पढ़ाई में तो कितना दिमाग पर बोझ पड़ता है और बाप की पढ़ाई से दिमाग हल्का बन जाता है। हल्के की निशानी है ऊंचा उड़ना। हल्की चीज़ स्वतः ही ऊंची होती है। तो इस पढ़ाई से मन-बुद्धि उड़ती कला का अनुभव करती है। तो दिमाग हल्का हुआ ना! तीनों लोकों की नॉलेज मिल जाती है। तो ऐसी पढ़ाई सारे कल्प में कोई ने पढ़ी है। कोई पढ़ाने वाला ऐसा मिला। तो भाग्य है ना! फिर सतगुरु द्वारा श्रीमत ऐसी मिलती है जो सदा के लिए क्या करूं, कैसे चलूं, ऐसे करूं या नहीं करूं, क्या होगा..... यह सब क्वेश्चन्स समाप्त हो जाते हैं। क्या करूं, कैसे करूं, ऐसे करूं या वैसे करूं... इन सब क्वेश्चन्स का एक शब्द में जवाब है - फॉलो फादर। साकार कर्म में ब्रह्मा बाप को फॉलो करो, निराकारी स्थिति में अशरीरी बनने में शिव बाप को फॉलो करो। दोनों बाप और दादा को फॉलो करना अर्थात् क्वेश्चन मार्क समाप्त होना वा श्रीमत पर चलना। यह मुश्किल है? पूछने की आवश्यकता पड़ती है क्या? कॉपी करना है, अपना दिमाग नहीं चलाना है। बाप समान बनना अर्थात् फॉलो फादर करना।

30.3.99... अभी शक्ति सेना को रहम आना चाहिए। अभी रहम कम है, सेवा है। लेकिन रहमदिल, वह अभी ज्यादा इमर्ज चाहिए। पाप कर्म का बिचारे बोझ उठाते जाते हैं। बोझ से झुकते जा रहे हैं। तो रहम आना चाहिए, तरस आना चाहिए।

15.11.99...आज्ञाकारी बनना यही बाप समान बनना है। बस, श्रीमत पर चलना, न मनमत, न परमत। एडीशन नहीं हो। कभी मनमत पर, कभी परमत पर चलेंगे तो मेहनत करनी पड़ेगी। सहज नहीं होगा क्योंकि मनमत, परमत उड़ने नहीं देगी। मनमत, परमत बोझ वाली है और बोझ उड़ने नहीं देगा। श्रीमत डबल लाइट बनाती है। श्रीमत पर चलना अर्थात् सहज बाप समान बनना। श्रीमत पर चलने वाले को कोई भी परिस्थिति नीचे नहीं ले आ सकती। तो श्रीमत पर चलना आता है?

30.11.99... ब्राह्मण जीवन है मजे की। संगमयुग है मजे का युग। बोझ उठाने का युग नहीं है। बोझ उतारने का युग है। तो चेक करो, अपने तकदीर की तस्वीर नॉलेज के आइने में अच्छी तरह से देखो। आइना तो है ना? या नहीं है? टूट तो नहीं गया है ना? सभी को आइना मिला है? मातायें, आइना मिला है या चोरी हो गया है? पाण्डव तो सम्भालने में होशियार हैं ना? आइना है? हाथ तो अच्छा उठाया। अच्छा है। तकदीर की तस्वीर देखो और सदा अपने तकदीर की तस्वीर देख वाह-वाह का गीत गाओ। वाह मेरी तकदीर! वाह मेरा बाबा! वाह मेरा परिवार! परिवार भी वाह-वाह है! ऐसे नहीं यह तो बहुत वाह-वाह है, यह थोड़ा ऐसा है! नहीं। वाह मेरा परिवार! वाह मेरा भाग्य! और वाह मेरा बाबा! ब्राह्मण जीवन अर्थात् वाह-वाह! हाय-हाय नहीं। शारीरिक व्याधि में भी

हाय-हाय नहीं, वाह! यह भी बोझ उतरता है। अगर 10 मण से आपका 3-4 मण बोझ उतर जाए तो अच्छा है या हाय-हाय? क्या है? वाह बोझ उतरा! हाय मेरा पार्ट ही ऐसा है! हाय मेरे को व्याधि छोड़ती ही नहीं है! आप छोड़ो या व्याधि छोड़ेगी? वाह-वाह करते जाओ तो वाह-वाह करने से व्याधि भी खुश हो जायेगी। देखो, यहाँ भी ऐसे होता है ना, किसकी महिमा करते हो तो वाह-वाह करते हैं। तो व्याधि को भी वाह-वाह कहो। हाय यह मेरे पास ही क्यों आई, मेरा ही हिसाब है! प्राप्ति के आगे हिसाब तो कुछ भी नहीं है। प्राप्तियां सामने रखो और हिसाब-किताब सामने रखो, तो वह क्या लगेगा? बहुत छोटी सी चीज़ लगेगी। मतलब तो ब्राह्मण जीवन में कुछ भी हो जाए, पॉजिटिव रूप में देखो। निगेटिव से पॉजिटिव करना तो आता है ना। निगेटिव-पॉजिटिव का कोर्स भी तो कराते हो ना! तो उस समय अपने आपको कोर्स कराओ तो मुश्किल सहज हो जायेगा। मुश्किल शब्द ब्राह्मणों की डिक्शनरी में नहीं होना चाहिए।
अच्छा -

30.3.2000... तो जो मन की भिन्न-भिन्न कम्पलेन है ना! क्या करें मन नहीं टिकता! मन को मण बना देते हो। वज़न करते हैं ना! पहले जमाने में पाव, सेर और मण होता था, आजकल बदल गया है। तो मन को मण बना देते हैं बोझ वाला और यह एक्सरसाइज़ करते रहेंगे तो बिल्कुल लाइट हो जायेंगे। अभ्यास हो जायेगा। ब्राह्मण शब्द याद आये तो ब्राह्मण जीवन के अनुभव में आ जाओ। फरिश्ता शब्द कहो तो फरिश्ता बन जाओ। मुश्किल है? नहीं है? कुमार बोलो थोड़ा मुश्किल है? आप फरिश्ते हो या नहीं? आप ही हो या दूसरे हैं? कितने बार फरिश्ता बने हो? अनगिनत बार बने हो। आप ही बने हो? अच्छा। अनगिनत बार की हुई बात को रिपीट करना क्या मुश्किल होता है? कभी-कभी होता है? अभी यह अभ्यास करना। कहाँ भी हो 5 सेकण्ड मन को घुमाओ, चक्कर लगाओ। चक्कर लगाना तो अच्छा लगता है ना! टीचर्स ठीक है ना! राउण्ड लगाना आयेगा ना? बस राउण्ड लगाओ फिर कर्म में लग जाओ। हर घण्टे में राउण्ड लगाया फिर काम में लग जाओ क्योंकि काम को तो छोड़ नहीं सकते हैं ना! ड्युटी तो बजानी है। लेकिन 5 सेकण्ड, मिनट भी नहीं, सेकण्ड। नहीं निकल सकता है? निकल सकता है? यू. एन. की आफिस में निकल सकता है? मास्टर सर्वशक्तित्वान हो। तो मास्टर सर्वशक्तित्वान क्या नहीं कर सकता!

3.2.2002.... अगर सेवा से दुआयें मिलती हैं तो दुआयें मिलने का अनुभव यही होगा जो स्वयं भी सम्बन्ध में आते, कार्य करते डबल लाइट (हल्का) होगा, बोझ नहीं महसूस करेगा और जिनकी सेवा की, सम्बन्ध-सम्पर्क में आये वह भी डबल लाइट फील करेगा। अनुभव करेगा कि यह सम्बन्ध में सदा हल्का अर्थात् इज़ी है, भारी नहीं रहेगा।

सम्बन्ध में आऊं, नहीं आऊं... लेकिन दुआयें मिलने के कारण दोनों तरफ नियम प्रमाण, ऐसा इज़ी भी नहीं - जैसे कहावत है, ज्यादा मीठे पर चींटियाँ बहुत आती हैं। तो इतना इज़ी भी नहीं, लेकिन डबल लाइट रहेगा। तो बापदादा कहते हैं - अपने खज़ाने चेक करो। समय दे रहे हैं। अभी समाप्ति का बोर्ड नहीं लगा है। इसलिए चेक करो और बढ़ते चलो।

14.11.2002.... कार्य करते फरिश्ता बनकर कर्म करो, फरिश्ता अर्थात् डबल लाइट। कार्य का बोझ नहीं हो। कार्य का बोझ अव्यक्त फरिश्ता बनने नहीं देगा। तो बीच-बीच में निराकारी और फरिश्ता स्वरूप की मन की एक्सरसाइज करो तो थकावट नहीं होगी। जैसे ब्रह्मा बाप को साकार रूप में देखा - डबल लाइट। सेवा का भी बोझ नहीं। अव्यक्त फरिश्ता रूप। तो सहज ही बाप समान बन जायेंगे।

30.11.2002.... अपने मन में, स्थूल बोझ तो सिर पर होता है लेकिन सूक्ष्म बोझ मन में होता है। तो मन में कोई बोझ नहीं होगा। फिकर है बोझ, बेफिकर है डबल लाइट। अगर किसी भी प्रकार का चाहे सेवा का, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क का, चाहे स्थूल सेवा का, रूहानी सेवा का भी बोझ नहीं, क्या होगा, कैसा होगा....सफलता होगी या नहीं होगी! सोचना, प्लैन बनाना अलग चीज़ है, बोझ अलग चीज़ है। बोझ वाले की निशानी सदा चेहरे में बहुत या थोड़ा थकावट के चिन्ह होंगे, थकावट होना अलग चीज़ है, थकावट के चिन्ह थोड़ा भी यह भी बोझ की निशानी है।

13.2.2003.... योग से विकर्म विनाश होंगे, पाप कर्म का बोझ भस्म होगा, सेवा से पुण्य का खाता जमा होगा। तो पुण्य का खाता जमा कर रहे हैं लेकिन पिछले जो कुछ संस्कार का बोझ है, वह भस्म योग ज्वाला से होगा। साधारण योग से नहीं। अभी क्या है, योग तो लगाते हैं लेकिन पाप भस्म होने का ज्वाला रूप नहीं है इसलिए थोड़ा टाइम खत्म होता है फिर निकल आता है। इसलिए रावण को देखो, मारते हैं, जलाते हैं फिर यहाँ भी पानी में डाल देते हैं। बिल्कुल भस्म हो जाए, पिछले संस्कार, कमज़ोर संस्कार बिल्कुल भस्म हो जाएं, भस्म नहीं हुए हैं। मरते हैं लेकिन भस्म नहीं होते हैं, मरने के बाद फिर जिंदा हो जाते हैं।

18.1.2004....:- सभी जो भी सेवायें कर रहे हो, वह अपनी समझकर बहुत अच्छी कर रहे हो। इसकी मुबारक हो। सिर्फ सेवा करते डबल लाइट रहना। कोई भी बोझ अपने ऊपर नहीं रखना। जैसे ब्रह्मा बाप के पास कितनी जिम्मेवारियां थी, फिर भी डबल लाइट रहा, ऐसे फालो फादर। कोई भी बोझ हो, बाप को देकर हल्के हो जाना, बाप आये ही हैं बोझ लेने के लिए, तो बोझ देना आता है ना। तो बोझ देकर डबल लाइट बन उड़ते रहना।

17.2.2004.... मैं जो करता, मैं जो कहता वही ठीक है, वही होना चाहिए, यह रॉयल में-पन उड़ती कला में जाने के लिए बोझ बन जाता है। तो बाप कहते इस में-पन का भी समर्पण, प्रभु देन में मैं-पन नहीं होता, न मैं न मेरा। प्रभु देन, प्रभु वरदान, प्रभु विशेषता है। तो आप सबकी समर्पणता कितनी महीन है। तो चेक किया है? साधारण में-पन वा रॉयल में-पन दोनों का समर्पण किया है? किया है या कर रहे हैं? करना तो पड़ेगा ही। आप लोग आपस में हंसी में कहते हो ना, मरना तो पड़ेगा ही। लेकिन यह मरना भगवान की गोदी में जीना है। यह मरना, मरना नहीं है। 21 जन्म देव आत्माओं के गोदी में जन्मना है। इसीलिए खुशी-खुशी से समर्पित होते हो ना! चिल्ला के तो नहीं होते? नहीं। भक्ति में भी चिल्लाया हुआ बलि स्वीकार नहीं होती है। तो जो खुशी से समर्पित होते हैं, हृद के मैं और मेरे मैं, वह जन्म-जन्म वर्से के अधिकारी बन जाते हैं।

15.10.2004...बापदादा ने देखा मैजारिटी का वेस्ट संकल्प सारे दिन में बीच-बीच में चलता है। क्या होता है, यह वेस्ट संकल्प का वजन भारी होता है और बेस्ट थॉट्स का वजन कम होता है। तो यह जो बीच-बीच में वेस्ट थॉट्स चलते हैं वह दिमाग को भारी कर देते हैं। पुरुषार्थ को भारी कर देते हैं, बोझ है ना तो वह अपने तरफ खींच लेता है। इसलिए शुभ संकल्प जो स्व-उन्नति की लिफ्ट है, सीढ़ी भी नहीं है लिफ्ट है वह कम होने के कारण, मेहनत की सीढ़ी चढनी पडती है। बस दो शब्द याद करो - वेस्ट को खत्म करने के लिए अमृतवेले से लेके रात तक दो शब्द संकल्प में, बोल में और कर्म में, कार्य में लगाओ। प्रैक्टिकल में लाओ। वह दो शब्द हैं-स्वमान और सम्मान। स्वमान में रहना है और सम्मान देना है। कोई कैसा भी है, हमें सम्मान देना है। सम्मान देना, स्वमान में स्थित होना है। दोनों का बैलेन्स चाहिए। कभी स्वमान में ज्यादा रहते, कभी सम्मान देने में कमी पड जाती है। ऐसे नहीं कि कोई सम्मान दे तो मैं सम्मान दूँ नहीं। मुझे दाता बनना है।

2.11.2004... बापदादा के पास जो भी बच्चा जैसा भी आया, कमज़ोर आया, संस्कार के वश आया, पापों का बोझ लेके आया, कड़े संस्कार लेकर आया, बापदादा ने हर बच्चे को किस नजर से देखा! मेरा सिकीलधा लाडला बच्चा है, ईश्वरीय परिवार का बच्चा है। तो सम्मान दिया और आप स्वमानधारी बन गये। तो फॉलो फादर। अगर सहज सर्वगुण सम्पन्न बनना चाहते हो तो सम्मान दाता बनो। समझा!

15.12.2004.... कोई फिक्र है? है कोई फिक्र? क्योंकि अपने सारे फिक्र बाप को दे दिये हैं। तो बोझ उतर गया ना। फिक्र खत्म और बेफिक्र बादशाह बन अमूल्य जीवन अनुभव कर रहे हो। सबके सिर पर पवित्रता के लाइट का ताज स्वतः ही चमकता है। बेफिक्र के ऊपर लाइट का ताज है, अगर कोई फिक्र करते हो, कोई बोझ अपने ऊपर उठा लेते हो

तो मालूम है सिर पर क्या आ जाता है? बोझ के टोकरे आ जाते हैं। तो सोचो ताज और टोकरे दोनों सामने लाओ, क्या अच्छा लगता? टोकरे अच्छे लगते या लाइट का ताज अच्छा लगता? बोलो, टीचर्स क्या अच्छा लगता है? ताज अच्छा लगता है ना! सभी कर्मेन्द्रियों के ऊपर राज्य करने वाले बादशाह हो। पवित्रता लाइट का ताजधारी बनाती है इसलिए आपके यादगार जड़चित्रों में डबल ताज दिखाया है। द्वापर से लेकर बादशाह तो बहुत बने हैं, राजे तो बहुत बने हैं लेकिन डबल ताजधारी कोई नहीं बना। बेफिक्र बादशाह स्वराज्य अधिकारी भी कोई नहीं बना क्योंकि पवित्रता की शक्ति मायाजीत, कर्मेन्द्रियजीत विजयी बना देती है। बेफिक्र बादशाह की निशानी है - सदा स्वयं भी सन्तुष्ट और औरों को भी सन्तुष्ट करने वाले। कभी भी कोई अप्राप्ति है ही नहीं जो असन्तुष्ट हो। जहाँ अप्राप्ति है वहाँ असन्तुष्टता है। जहाँ प्राप्ति है वहाँ सन्तुष्टता है। ऐसे बने हो? चेक करो - सदा सर्वप्राप्ति स्वरूप, सन्तुष्ट हैं? गायन भी है- अप्राप्त नहीं कोई वस्तु देवताओं के नहीं लेकिन ब्राह्मणों के खजाने में। सन्तुष्टता जीवन का श्रेष्ठ श्रृंगार है, श्रेष्ठ वैल्यू है। तो सन्तुष्ट आत्मायें हो ना!

15.12.2004.... जब बाप कहते हैं बोझ मेरे को दे दो, आप लाइट हो जाओ, डबल लाइट। डबल लाइट अच्छा या बोझ अच्छा? तो अच्छी तरह से चेक करना। अमृतवेले जब उठो तो चेक करना कि विशेष वर्तमान समय सबकॉनशस में भी कोई बोझ तो नहीं है? सबकॉनशस तो क्या स्वप्न मात्र भी बोझ का अनुभव नहीं हो। पसन्द तो डबल लाइट है ना! तो विशेष यह होम वर्क दे रहे हैं, अमृतवेले चेक करना। चेक करना तो आता है ना, लेकिन चेक के साथ, सिर्फ चेक नहीं करना चेंज भी करना। मेरे को तेरे में चेंज कर देना। मेरा, तेरा। तो चेक करो और चेंज करो क्योंकि बापदादा बार-बार सुना रहे हैं - समय और स्वयं दोनों को देखो। समय की रफ्तार भी देखो और स्वयं की रफ्तार भी देखो। फिर यह नहीं कहना कि हमको तो पता ही नहीं था, समय इतना तेज चला गया। कई बच्चे समझते हैं कि अभी थोड़ा ढीला पुरुषार्थ अगर है भी तो अन्त में तेज कर लेंगे। लेकिन बहुतकाल का अभ्यास अन्त में सहयोगी बनेगा। बादशाह बनके तो देखो।

21.10.05... जैसे बाप के लिए सभी अनुभव करते हैं, मेरा है। अनुभव करते हैं ना? ऐसे फरिश्ता अर्थात् हर एक अनुभव करे यह मेरा है। अपनापन का अनुभव हो क्योंकि हल्का होगा ना तो हल्कापन प्रिय बना देता है सबका। सारा ब्राह्मण परिवार अनुभव करे कि यह मेरा है। भारीपन नहीं हो क्योंकि फरिश्ते का अर्थ ही है डबल लाइट। फरिश्ता अर्थात् संकल्प, बोल, कर्म, संबंध, सम्पर्क में बेहद हो। हद नहीं हो। सब अपने हैं और मैं सबका हूँ। जहाँ ज्यादा अपनापन होता है ना वहाँ हल्कापन होता है। संस्कार

में भी हल्कापन, तो चेक करो कितना परसेन्ट फरिश्ता स्टेज तक पहुंचे हैं? चेक करना आता है? चेकर भी बन गये हो, मेकर भी बन गये हो। मुबारक हो।

ओमशांति

3. चिंता

23.3.70..... आपके शुभ चिन्तक बन्ने से सभी की चिंताएं मिटती हैं। आप सभी की चिंताओं को मिटानेवाली शुभ चिन्तक हो।

7.2.76.....निश्चयबुद्धि की निशानी यह है कि वह हर बात व हर दृश्य को निश्चित जानकर सदा निश्चिन्त होगा, “क्यों, क्या और कैसे” की चिन्ता नहीं होगी। फरिश्तेपन की लास्ट स्टेज की निशानी है - सदा शुभचिन्तक और सदा निश्चिन्त। ऐसे बने हो?

14.12.78... .. निश्चयबुद्धि अर्थात् सदा निश्चिन्त। जब बाप ने आपकी सब चिंतार्यें अपने ऊपर ले लीं फिर आप क्यों चिंता करते। विनाश हो न हो वा कब होगा यह चिंता ब्राह्मण जीवन में क्यों? क्या ब्राह्मण जीवन हीरे तुल्य जीवन, बाप से मिलन मनाने की जीवन, चढ़ती कला की जीवन, सर्व खजानों से सम्पन्न होने वाली जीवन, सर्व अनुभूति सम्पन्न जीवन अच्छी नहीं लगती है? जल्दी समाप्त करने चाहते हो? कोई कष्ट वा तकलीफ है क्या? भक्तिमार्ग में यही पुकारा कि यह अतीन्द्रिय सुख की जीवन के दिन एक से चौगुने हो जायें-और अब थक गये हो। ऐसा संकल्प करने वालों के ऊपर बाप-दादा को हंसी आती है। अप्राप्ति क्या है जो ऐसे संकल्प उठाते हो-जब कल्याणकारी बाप कहते हो, कल्याणकारी जीवन कहते हो तो जो भी भगवानुवाच है उसमें अनेक प्रकार के कल्याण समाये हुए हैं। क्यों और कैसे कहा, इस संकल्प से निश्चयबुद्धि का फाउण्डेशन हिलाते क्यों हो? अगर ऐसे छोटे-छोटे तूफानों में फाउण्डेशन हिल जाता है तो महाविनाश के महान तूफान में कैसे ठहर सकेंगे। यह तो सिर्फ एक अपने व्यर्थ संकल्पों का तूफान है लेकिन महाविनाश में अनेक प्रकार के चारों ओर के तूफान होंगे फिर क्या करेंगे? इतनी छोटी सी बात में जिसमें और ही आगे के लिए समय मिला है, साथ मिला है, अनेक प्रकार के खजाने मिल रहे हैं, प्राप्ति होते हुए समाप्ति की उत्कण्ठा क्यों करते हो? सुख के दिनों में धीरज धरो। कब और क्यों के अधीर्य में मत आओ। अपने ही व्यर्थ संकल्पों के तूफान समाप्त करो, सम्पत्तिवान बनो, समर्थीवान बनो। सदा निश्चयबुद्धि।

12.1.79... ..संगमयुग को यही वरदान मिला हुआ है, हर कदम में पदम जमा। तो एक सेकेण्ड भी वा एक कदम भी जमा नहीं किया तो कितना नुकसान हो गया, लौकिक में भी अगर कोई दिन कमाई नहीं होती है तो चिंता लग जाती है, वह तो हद की कमाई है यह बेहद की कमाई है, अभी का एक कदम पदमों की कमाई जमा करने वाला है तो यहाँ कितना अटेन्शन चाहिए।

22.1.82... सदा अपने में बाप द्वारा मिली हुई विशेषता को देखो। मेरी विशेषता नहीं, बाप द्वारा मिली हुई विशेषता है। मेरी विशेषता सोचेंगे फिर अहंकार का अंश आ जायेगा। मेरी विशेषता से काम क्यों नहीं लिया जाता, मेरी विशेषता को जानते ही नहीं है! "मेरी" कहाँ से आई? विशेष जन्म की गिफ्ट है विशेषता पाना। तो जन्म दाता ने गिफ्ट दी, "मेरी" कहाँ से आई? मेरी विशेषता, मेरी नेचर, मेरी दिल यह कहती है, वा मेरी दिल यह करती है, यह मेरी नहीं है लेकिन वरी (चिंता) है। आप लोग कहते हो ना - वरी, हरी, करी। समझा - यही अंश समाप्त करो और सदा बाप द्वारा मिली हुई स्वयं की विशेषता और सर्व की विशेषता देखो अर्थात् सदा स्वयं को और सर्व को बधाई दो

19.4.83... निश्चय की निशानी है निश्चिन्त। चिन्तायें सारी मिट गई। बाप ने चिंताओं की चिंता से बचा लिया ना! चिंताओं की चिंता से उठाकर दिलतख्त पर बिठा दिया। बाप से लगन लगी और लगन के आधार पर लगन की अग्नि में चिन्तायें सब ऐसे समाप्त हो गई जैसे थी ही नहीं। एक सेकण्ड में समाप्त हो गई ना! ऐसे अपने को शुभचिन्तक आत्मायें अनुभव करते हो! कभी चिंता तो नहीं रहती! न तन की चिंता, न मन में कोई व्यर्थ चिंता और न धन की चिंता। क्योंकि दाल रोटी तो खाना है और बाप के गुण गाना है। दाल रोटी तो मिलनी ही है। तो न धन की चिंता, न मन की परेशानी और न तन के कर्मभोग की भी चिंता। क्योंकि जानते हैं यह अन्तिम जन्म और अन्त का समय है इसमें सब चुक्तु होना है इसलिए सदा - 'शुभचिन्तक'। क्या होगा! कोई चिंता नहीं। ज्ञान की शक्ति से सब जान गये। जब सब कुछ जान गये तो क्या होगा, यह कवेशन खत्म। क्योंकि ज्ञान है जो होगा वह अच्छे ते अच्छा होगा। तो सदा शुभचिन्तक, सदा चिन्ताओं से परे निश्चय बुद्धि, निश्चिन्त आत्मायें, यही तो जीवन है। अगर जीवन में निश्चिन्त नहीं तो वह जीवन ही क्या है! ऐसी श्रेष्ठ जीवन अनुभव कर रहे हो? परिवार की भी चिन्ता तो नहीं है? हरेक आत्मा अपना हिसाब किताब चुक्तु भी कर रही है और बना भी रही है इसमें हम क्या चिंता करें! कोई चिंता नहीं। पहले चिंता पर जल रहे थे अभी बाप ने अमृत डाल जलती चिंता से मरजीवा बना दिया। जिन्दा कर दिया। जैसे कहते हैं मरे हुए को जिन्दा कर दिया। तो बाप ने अमृत पिलाया और अमर बना दिया। मरे हुए मुर्दे के समान थे और अब देखो क्या बन गये। मुर्दे से महान बन गये। पहले कोई जान नहीं थी तो मुर्दे समान ही कहेंगे ना। भाषा भी क्या बोलते थे, अज्ञानी लोग भाषा में बोलते हैं - मर जाओ ना। या कहेंगे हम मर जाए तो बहुत अच्छा। अब तो मरजीवा हो गये, विशेष आत्मायें बन गये। यही खुशी है ना। जलती हुई चिंता से अमर हो गये, यह कोई कम बात है! पहले सुनते थे भगवान मुर्दे को भी

जिन्दा करता है, लेकिन कैसे करता यह नहीं समझते थे। अभी समझते हो हम ही जिन्दा हो गये तो सदा नशे और खुशी में रहो।

20.1.84..... सभी को याद है - जब ब्रह्मा बाप अव्यक्त हुए तो वह 4 दिन कैसे बिताये? मकान बड़ा था? खाना बनाया था? फिर 4 दिन कैसे बीता था! विनाश के दिन भी ऐसे ही बीत जायेंगे। उस समय लवलीन थे ना। ऐसे ही लवलीन स्थिति में समाप्ति होगी। फिर यहाँ की पहाड़ियों पर रहकर तपस्या करेंगे। तीसरी आँख से सारा विनाश देखेंगे। ऐसे निश्चिंत हो ना। कोई चिंता नहीं। न मकान की, न परिवार की, न काम की। सदा निश्चिंत क्या होगा यह क्वेश्चन नहीं। जो होगा अच्छा होगा। इसको कहा जाता है - 'निश्चिंत'। सेन्टर का मकान याद आ जाए, बैंक बैलन्स याद आ जाए... कुछ भी याद न आये। क्योंकि आपका सच्चा धन है ना। चाहे मकान में लगा है, चाहे बैंक में रहा हुआ है। लेकिन आपका तो पद्मगुणा होकर आपको मिलेगा। आपने तो इन्शयोर कर लिया ना। मिट्टी, मिट्टी हो जायेगी और आपका हक आपको पद्मगुणा होकर मिल जायेगा और क्या चाहिए! सच्चा धन कभी भी वेस्ट नहीं जा सकता! समझा! ऐसे सदा निश्चिंत रहो। पता नहीं पीछे सेन्टर का क्या होगा? घर का क्या होगा? यह क्वेश्चन नहीं। सफल हुआ ही पड़ा है। सफल होगा या नहीं यह क्वेश्चन नहीं। पहले से ही विल कर दिया है ना। जैसे कोई विल करके जाता है पहले से ही निश्चिन्त होता है ना। तो आप सबने अपना हर श्वास, संकल्प, सेकण्ड, सम्पत्ति शरीर सब विल कर दिया है ना। विल की हुई चीज़ कभी भी स्व के प्रति यूज नहीं कर सकते।

10.12.84..... वर्तमान समय विश्व में मैजारिटी आत्माओं में भय और चिन्ता यह दोनों ही विशेष सभी में प्रवेश हैं। लेकिन जितने ही वह फिकर में हैं, चिंता में हैं उतने ही आप शुभ चिन्तक हो। चिन्ता बदल शुभ चिन्तक के भावना स्वरूप बन गये हो। भयभीत के बजाए सुख के गीत गा रहे हो। इतना परिवर्तन अनुभव करते हो ना!

26.12.84.... सत्यता की शक्ति वाला सदा बेफिकर निश्चिन्त होने के कारण, निर्भय होने के कारण खुशी में नाचता रहेगा। जहाँ भय है, चिंता है वहाँ खुशी में नाचना नहीं। अपनी कमज़ोरियों की भी चिंता होती है। अपने संस्कार वा संकल्प कमज़ोर हैं तो सत्य मार्ग होने के कारण मन में अपनी कमज़ोरी का चिंतन चलता जरूर है। कमज़ोरी मन की स्थिति को हलचल में जरूर लाती है। चाहे कितना भी अपने को छिपावे वा आर्टिफीशियल अल्पकाल के समय प्रमाण, परिस्थिति प्रमाण बाहर से मुस्कराहट भी दिखावे लेकिन सत्यता की शक्ति स्वयं को महसूसता अवश्य कराती है।

6.3.85..... दुनिया के साहूकार से साहूकार हो वा दुनिया में नामीग्रामी कोई व्यक्ति हो, बहुत ही शास्त्रवादी हो, वेदों के पाठ पढ़ने वाले हो, नौधा भक्त हो, नम्बरवन

साइन्सदान हो, कोई भी आक्यूपेशन वाले हो लेकिन ऐसी मौज की जीवन नहीं हो सकती। जिसमें मेहनत नहीं। **मुहब्बत ही मुहब्बत है। चिंता नहीं। लेकिन शुभचिन्तक है, शुभचिन्तन है।** ऐसी मौज की जीवन सारे विश्व में चक्कर लगाओ, अगर कोई मिले तो ले आओ।

13.1.86.... अगर जरा भी कोई चिंता है तो निश्चय की कमी है। कभी किसी बात की थोड़ी सी भी चिंता हो जाती है - उसका कारण क्या होता, जरूर किसी न किसी बात के निश्चय में कमी है। चाहे ड्रामा में निश्चय की कमी हो, चाहे अपने आप में निश्चय की कमी हो, चाहे बाप में निश्चय की कमी हो। तीनों ही प्रकार के निश्चय में जरा भी कमी है तो निश्चिन्त नहीं रह सकते। सबसे बड़ी बीमारी है - 'चिंता'। चिंता में बीमारी की दवाई डाक्टर्स के पास भी नहीं है। टैम्पेरी सुलाने की दवाई दे देंगे लेकिन सदा के लिए चिंता नहीं मिटा सकेंगे। चिंता वाले जितना ही प्राप्ति के पीछे दौड़ते हैं उतना प्राप्ति आगे दौड़ लगाती है। इसलिए सदा निश्चय के पाँव अचल रहें। सदा एकबल एक भरोसा - यही पाँव है। निश्चय कहो, भरोसा कहो एक ही बात है। ऐसे निश्चयबुद्धि बच्चों की विजय निश्चित है।

18.1.86..... अभी तो बहुत काम पड़ा है। आप समझ रहे हो कि पूरा हो रहा है। अभी तो वाणी द्वारा बदलने का कार्य चल रहा है। अभी वृत्ति द्वारा वृत्तियाँ बदलें, संकल्प द्वारा संकल्प बदल जाएं। अभी यह रिसर्च तो शुरू भी नहीं की है। थोड़ा-थोड़ा किया तो क्या हुआ? यह सूक्ष्म सेवा स्वतः ही कई कमज़ोरियों से पार कर देगी। जो समझते हैं कि यह कैसे होगा। वह जब इस सेवा में बिजी रहेंगे तो स्वतः ही वायुमण्डल ऐसा बनेगा जो अपनी कमज़ोरियाँ स्वयं को ही स्पष्ट अनुभव होंगी और वायुमण्डल के कारण स्वयं ही शर्मशार हो परिवर्तित हो जायेंगे। कहना नहीं पड़ेगा। कहने से तो देख लिया। इसलिए अभी ऐसा प्लैन बनाओ। जिज्ञासु और ज्यादा बढ़ेंगे इसकी चिंता नहीं करो। मदोगरी भी बहुत बढ़ेगी। इसकी भी चिंता नहीं करो। मकान भी मिल जायेंगे इसकी भी चिंता नहीं करो। सब सिद्धि हो जायेगी। यह विधि ऐसी है जो सिद्धि स्वरूप बन जायेंगे। अच्छा -

22.3.86.... जहाँ चिंता है वहाँ चैन नहीं हो सकता। जहाँ भय है वहाँ शान्ति नहीं हो सकती। तो सुख के साथ यह दुःख-अशान्ति के कारण है ही है। और आप सबको दुख का कारण और निवारण मिल गया। अभी आप समस्याओं को समाधान करने वाले समाधान स्वरूप बन गये हो ना। समस्याएँ आप लोगों से खेलने के लिए खिलौने बन कर आती हैं। खेल करने के लिए आती हैं, न कि डराने के लिए। घबराने वाले तो नहीं

हो ना? जहाँ सर्व शक्तियों का खज़ाना जन्म-सिद्ध अधिकार हो गया तो बाकी कमी क्या रही, भरपूर हो ना! मास्टर सर्वशक्तित्वान के आगे समस्या कोई नहीं।

18.1.87.... स्व-चिन्तन, ज्ञान-चिन्तन, शुभ-चिन्तक बनने का चिन्तन बदल शरीर की व्याधि का चिन्तन चलना - इससे मुक्त। क्योंकि ज्यादा प्रकृति का चिंतन, चिंता के रूप में बदल जाता है। तो इससे मुक्त होना - इसी को ही कर्मातीत स्थिति कहा जाता है। इन सभी बन्धनों को छोड़ना - यही कर्मातीत स्थिति की निशानी है।

16.2.88.... अगर धन भी अशुद्ध आता है तो अशुद्ध धन खुशी को गायब कर देता है, चिंता को लाता है। जितना अशुद्ध धन आता, माना धन आयेगा एक लाख लेकिन चिंता आयेगी पद्मगुणा और चिंता को सदैव चिंता कहा जाता है। तो चिंता पर बैठने वाले को कभी खुशी कैसी होगी! और अशुद्ध धन भी अशुद्ध मन से आता है, पहले मन में अशुद्ध संकल्प आता है। लेकिन शुद्ध अन्न मन को शुद्ध बना देता है इसलिए धन भी शुद्ध हो जाता है। याद के अन्न का महत्त्व है, इसलिए ब्रह्मा भोजन की महिमा है। अगर याद में नहीं बनाते और खाते तो यह अन्न स्थिति को ऊपर नीचे कर सकता है। याद में बनाया हुआ और याद में स्वीकार करने वाला अन्न दवाई का भी काम करता और दुवा का भी काम करता। याद का अन्न कभी नुकसान नहीं कर सकता।

12.3.88.... सदा बेफिकर रहना है और दूसरों को बेफिकर बनने की, अनुभव से विधि बतानी है। बहुत आशीर्वाद मिलेगी! किसका बोझ वा फिकर ले लो तो दिल से दुआयें देंगे। तो स्वयं भी बेफिकर बादशाह और दूसरों की भी शुभ - भावना की दुआयें मिलेंगी। तो बादशाह हो, अविनाशी धन के बादशाह हो! **बादशाह को क्या परवाह! विनाशी बादशाहों को तो चिंता रहती है लेकिन यह अविनाशी है।**

1.12.89.... चलाने वाला चला रहा है, कराने वाला करा रहा है - ऐसे निमित्त बन कर करने वाले बेपरवाह बादशाह होते हैं। "मैं कर रहा हूँ" - यह भान आया तो बेपरवाह नहीं रह सकते। लेकिन "बाप द्वारा निमित्त बना हुआ हूँ" - यह स्मृति रहे तो बेफिकर वा निश्चिंत जीवन अनुभव करेंगे। कोई चिंता नहीं। कल क्या होगा - उसकी भी चिंता नहीं। कभी यह थोड़ी-सी चिंता रहती है कि कल क्या होगा, कैसे होगा? पता नहीं विनाश कब होगा, क्या होगा? बच्चों का क्या होगा? पोत्रों-धोत्रों का क्या होगा - यह चिंता रहती है? बेपरवाह बादशाह को सदा ही यह निश्चय रहता है कि - जो हो रहा है वह अच्छा, और जो होने वाला है वह और भी बहुत अच्छा होगा। क्योंकि कराने वाला अच्छे-ते-अच्छा है ना! इसको कहते हैं - निश्चयबुद्धि विजयी।

5.12.89.... माया के दास हो या मालिक हो? माया को अपनी अथार्टी से भगाने वाले हो, ऐसी आत्मा कभी उदास नहीं हो सकती। कोई फिक्र ही नहीं है ना। कोई फिक्र या

चिंता होती है तो उदास होते हैं। आपको कौन-सी चिंता है? पांडवों को चिंता है? कमाने की, परिवार को पालने के लिए पैसे की चिंता है? लेकिन चिंता से पैसा कभी नहीं आयेगा। मेहनत करो, कमाई करो। लेकिन चिंता से कभी कमाई में सफल नहीं होंगे। चिंता को छोड़कर कर्मयोगी बनकर काम करो, तो जहाँ योग है वहाँ कार्य कुशल होगा और सफलता होगी। चिंता से कभी पैसा नहीं आयेगा। अगर चिंता से कमाया हुआ पैसा आयेगा भी तो चिंता ही पैदा करेगा। जैसा बीज होगा वैसा ही फल निकलेगा और खुशी-खुशी से काम करके कमाई करेंगे तो वह पैसा भी खुशी दिलायेगा। वह दो रूपया भी दो हजार का काम करेगा और वह दो लाख दो रूपये का काम करेगा। इतना फर्क है, इसलिए चिंता क्या करेंगे! सच्ची दिल वालों को सच की कमाई मिलती है। बाप भी दाल-रोटी जरूर देते हैं। सुस्त रहने वाले को नहीं देंगे। काम तो करना ही पड़ेगा क्योंकि पिछले हिसाब भी तो चुक्तू करने हैं। लेकिन चिंता से नहीं, खुशी से। कोई भी काम करो - योगयुक्त होकर करो। योगी का कार्य सहज और सफल होता है, ऐसा अनुभव है ना! याद में कोई भी काम करते तो थकावट नहीं होती। खुशी-खुशी से करते तो थकते नहीं। मजबूर होकर करते तो थक जाते हैं। बाप ने डॉयरेक्शन दिया है - योग से हिसाब-किताब चुक्तू करो। तो बाप के डॉयरेक्शन पर खुशी-खुशी से वह काम भी करो, मजबूरी से नहीं। यह तो मालूम है कि वह बंधन है लेकिन घड़ी-घड़ी कहने से और भी बड़ा कड़ा बंधन हो जायेगा।

25.12. 89 बाबा और हम - कम्बाइण्ड हैं, करावनहार और करने के निमित्त में आत्मा। इसको कहते हैं - 'असोच अर्थात् एक की याद।' शुभाचिंतन में रहने वाले को कभी चिंता नहीं होती। जहाँ चिंता है वहाँ शुभाचिंतन नहीं और जहाँ शुभाचिंतन है वहाँ चिंता नहीं। अच्छा!

2.1.90..... यह बेफिक्र रहने की बादशाही सब बादशाहियों से श्रेष्ठ है । अगर ताज पहनकर बैठ गये और फिक्र करते रहे तो तख्त हुआ या चिंता हुई? तो भाग्य विधाता भगवान ने आपके मस्तक श्रेष्ठ भाग्य की लकीर खिंच दी है। बेफिक्र बादशाह हो गये हो! वह टोपी या कुर्सी वाले बादशाह नहीं । बेफिक्र बादशाह । कोई फिक्र है ' पोत्रो-धोत्रो का फिक्र है? आपका कल्याण हो गया तो उन लोगों का जरूर होगा। तो सदा अपने मस्तक पर श्रेष्ठ भाग्य की लकीर देखते रहो - वाह मेरा श्रेष्ठ ईश्वरीय भाग्य! धन-दौलत का भाग्य नहीं, ईश्वरीय भाग्य। इस भाग्य के आगे धन तो कुछ नहीं है, वह तो पीछे-पीछे आयेगा। जैसे परछाई होती है वह आपेही पीछे-पीछे आती है या आप कहते हो पीछे आओ । तो यह सब परछाई हैं लेकिन भाग्य है - 'ईश्वरीय भाग्य' । सदा इसी

नशे में रहो - अगर पाना है तो सदा का पाना है। जब बाबा और आत्मा अविनाशी है तो प्राप्ति विनाशी क्यों? प्राप्ति भी अविनाशी चाहिए ।

20.12.92..... जब निश्चिंत होते हैं तो बुद्धि जजमेन्ट यथार्थ करती है। अगर कोई चिंता होगी, फिक्र होगा, हलचल होगी तो कभी जजमेन्ट ठीक नहीं होगी। तराजू देखा है ना। तराजू की यथार्थ तौल तब होती है जब तराजू में हलचल नहीं हो। अगर हलचल होगी तो यथार्थ नहीं कहा जायेगा। ऐसे ही, बुद्धि में अगर हलचल है, फिक्र है, चिन्ता है तो हलचल जरूर होगी।

इसीलिए यथार्थ निर्णय का आधार है-निश्चयबुद्धि, निश्चिंत। सोचने की भी आवश्यकता नहीं। क्योंकि फॉलो फादर है ना। यह करूँ, वह करूँ.....-ये तब सोचे जब अपना कुछ करना हो। फॉलो करना है ना। तो फॉलो करने के लिए सोचने की आवश्यकता नहीं। कदम पर कदम रखना। कदम है श्रीमत। जो श्रीमत मिली है उसी प्रमाण चलना अर्थात् कदम पर कदम रखना। तो सोचने की आवश्यकता है क्या? नहीं है ना। निश्चिंत हैं तो सदा ही निर्णय यथार्थ देंगे। जब निर्णय यथार्थ होगा तो विजयी होंगे।

31.12.92..... जो महावीर विजयी आत्मा होते हैं वो सदा हर कदम में तन से, मन से खुश रहते हैं। उदास नहीं रहते, चिंता में नहीं आते। सदा खुश और बेफिक्र होंगे। महावीर आत्मा के पास दुःख की लहर स्वप्न में भी नहीं आ सकती। क्योंकि सुख के सागर के बच्चे बन गये। तो कहाँ सुख का सागर और कहाँ दुःख की लहर! स्वप्न भी परिवर्तन हो जाते हैं। नया जन्म हुआ तो स्वप्न भी नये आर्येंगे ना! संकल्प भी नये, जीवन भी नई।

9.1.93..... जब अपने को जिम्मेवार समझते हो तब चिंता होती है और बाप को जिम्मेवार समझते हो तो निश्चिंत हो जाते हो। कई बार कहते हैं ना-क्या करें, जिम्मेवारी है ना, निभाना पड़ता है। लेकिन ट्रस्टी बन निभाओ। गृहस्थी बनकर निभा नहीं सकेंगे। ट्रस्टी बनकर के निभाने से सहज भी होगा और सफल भी होंगे। तो सब चिंता छोड़कर जाना। जिनके पास थोड़ी-बहुत हो, तो छोड़कर जाना, साथ नहीं ले जाना। वैसे तीर्थ पर कुछ छोड़कर आते हैं ना। तो यह भी महान तीर्थ है ना! तो सदा के लिए निश्चिंत, निश्चयबुद्धि। समझा? किचड़ा साथ में नहीं रखा जाता है। माताओं को आदत होती है-पुरानी चीज़ भी होगी तो गांठ बांधकर रख देंगी! तो यह भी गांठ बाँधकर नहीं जाना। मातायें गठरी बांधती हैं, पाण्डव जेब में रखते हैं। तो इसे छोड़कर निश्चिंत अर्थात् सदा अचल-अडोल स्थिति में रहना।

18.1.93..... अगर कोई कार्य भी करते हैं, खुश नहीं, चिंता वा फिक्र में हैं तो मुश्किल लगेगा ना! 'एक बल, एक भरोसा'-इसकी निशानी है कि खुश रहेंगे, मेहनत नहीं

लगेगी। 'एक भरोसा, एक बल' द्वारा कितना भी असम्भव काम होगा तो वो सम्भव दिखाई देगा।

9.12.93..... चिंताओं से फ्री सदा निश्चिंत वा बेफ़िक्र बादशाह रहने के लिए निश्चयबुद्धि बनो

सदा अपने को कल्प-कल्प की अधिकारी आत्मा अनुभव करते हो? अनेक बार यह अधिकार प्राप्त किया है और आगे के लिये भी निश्चित है कि कल्प-कल्प करते ही रहेंगे। यह पक्का निश्चय है ना। क्योंकि निश्चय है इस ब्राह्मण जीवन का फाउन्डेशन। अगर निश्चय का फाउन्डेशन पक्का है तो कभी भी हिलेंगे नहीं। चाहे कितने भी तूफान आ जाये, चाहे कितने भी भूकम्प हो जायें लेकिन हिलेंगे नहीं। क्योंकि फाउन्डेशन पक्का है।

30.11.99..... आजकल सर्व बिज़नेसमैन टेन्शन में बहुत हैं। बिज़नेस समय अनुसार नीचे जा रहा है। इसलिए जितना भी पैसा है, पैसे के साथ चिंता है - क्या होगा! तो उन्हीं को चिंता से हटाए अविनाशी खज़ाने का महत्व सुनाओ। तो जितने भी बिज़नेसमैन आये हैं चाहे छोटा बिज़नेस है, चाहे बड़ा है। लेकिन अपने हमजिन्स कार्य करने वालों को खुशी का रास्ता बताओ। जो भी आप बिज़नेसमैन आये हैं उन्हीं को चिंता है? क्या होगा, कैसे होगा, चिंता है? चिंता नहीं है तो हाथ उठाओ। कल कुछ हो जाये तो? बेफिक्र बादशाह हैं? बिज़नेसमैन बेफिक्र बादशाह हैं? थोड़ों ने हाथ उठाया? जिसको थोड़ा-थोड़ा फिक्र है वह हाथ उठा सकते हो या शर्म आयेगा? बापदादा ने टाइटल ही दिया है - बेफिक्र बादशाह, बेगमपुर के बादशाह। तो जब भी कोई ऐसी बात आये, आयेगी तो ज़रूर लेकिन आप बेगमपुर में चले जाना। बेगमपुर में बैठ जाना तो बादशाह भी हो जायेंगे और बेगमपुर में भी हो जायेंगे। आपने ही आह्वान किया है कि पुरानी दुनिया जाये और नई दुनिया आये, तो जायेगी कैसे? नीचे ऊपर होगी तब तो जायेगी। कुछ भी हो जाए आपको बेफिक्र बनना ही है। आपने ही आह्वान किया है, पुरानी दुनिया खत्म हो। तो पुरानी दुनिया में पुराने मकान में क्या होता है? कभी क्या टूटता है, कभी क्या गिरता है, तो यह तो होगा ही। नथिंगन्यु। ब्रह्मा बाप का यही हर बात में शब्द था - "नथिंगन्यु।" होना ही है, हो रहा है और हम बेफिक्र बादशाह। ऐसे बेफिक्र हो? बेफिक्र होंगे तो देवाला भी बच जायेगा और फिक्र में होंगे, निर्णय ठीक नहीं होगा तो एक दिन में क्या से क्या बन जाते हैं। यह तो जानते ही हो। बेफिक्र होंगे, निर्णय अच्छा होगा तो बच जायेंगे। टचिंग होगी - अभी समय अनुसार यह करें या नहीं करें! इसीलिए फिक्र माना बिज़नेस भी गिरना और अपनी स्थिति भी गिरना। तो सदैव यह याद रखो - बेफिक्र बादशाह हैं। फिक्र की बात भी बदल जायेगी। हिम्मत

नहीं हारो, दिलशिकस्त कभी नहीं हो। हिम्मत से बाप की मदद मिलती रहेगी। बाप मदद के लिए बंधा हुआ है लेकिन हिम्मतहीन का मददगार नहीं है। आप सोचेंगे कि बाप की मदद तो मिली नहीं, लेकिन पहले यह सोचो हिम्मत है? हिम्मत बच्चे की मदद बाप की। आधा शब्द नहीं पकड़ो, बाप की मदद तो चाहिए ना! लेकिन हिम्मत रखी? दिलशिकस्त न होकर हिम्मत रखते चलो तो मदद गुप्त मिलती रहेगी। तो बोलो कौन हो? बिज़नेसमैन सभी बोलो कौन हो? बेफिक्र बादशाह हो? यह याद रखना। हिम्मत कभी नहीं छोड़ना, कुछ भी हो जाए मदद मिलेगी। लेकिन आधा नहीं याद करना। पूरा याद रखना। अच्छा।

30.11.99..... चिंता है तो उदासी है। उदासी माना दासी बनना। इसलिए बादशाह बनना। अच्छा।

30.11.2004..... जो बेफिकर है वह हाथ उठाओ। बेफिकर, थोडा भी फिकर नहीं है? देखना, जब कोई पपेट शो सामने आता है फिर फिकर होता है? माया का पपेट शो सामने आता है या नहीं? फिर थोडा-थोडा फिकर होता है? नहीं होता? थोडा चिंता, चिंतन चलता है या नहीं चलता है? वैसे श्रेष्ठ भाग्य अभी से बेफिकर बादशाह बनाता है। यह थोडी बहुत जो बाते आती है वह और ही आगे के लिए अनुभवी, परिपक्व बनाने वाली हैं।

अभी तो सभी इन भिन्न-भिन्न बातों के अनुभवी हो गये हो ना। घबराते तो नहीं हैं ना? आराम से साक्षी की सीट पर बैठ यह पपेट शो देखो, कार्टून शो देखो। है कुछ भी नहीं, कार्टून है। अभी तो मजबूत हो गये हो ना! अभी मजबूत हैं ? या कभी-कभी घबराते हो? यह कागज का शेर बनकर आते हैं। है कागज का लेकिन शेर बनके आते हैं। अभी समय प्रमाण अनुभवीमूर्त बन समय को, प्रकृति को, माया को चैलेन्ज करो - आओ, हम विजयी हैं। विजयी की चैलेन्ज करो। (बीच-बीच में खासी आ रही है) आज बाजा थोडा खराब है, मिलना तो है ना!

20.2.2005..... संगम के बाद क्या होना है, आप सबके आगे स्पष्ट है ना! नव युग आना ही है। दुनिया वाले कहेंगे, आयेगा? क्वेश्चन है आयेगा? और आप क्या कहते हैं? आया ही पडा है। इसलिए क्या होगा, क्वेश्चन नहीं है। पता है - स्वर्ण युग आना ही है। रात के बाद अब संगम प्रभात है, अमृतवेला है, अमृतवेले के बाद दिन आना ही है। निश्चय जिसको भी होगा वह निश्चिन्त, कोई चिंता नहीं होगी, बेफिकर। विश्व रचता द्वारा रचना की स्पष्ट नॉलेज मिल गई है।

5.2.2009.... कई बच्चों की छोटी सी बात भी होगी ना, तो अवस्था नीचे ऊपर हो जाती है। दिलखुश, चेहरा खुश उसके बजाए या चिंतन वाला चेहरा या चिंता वाला चेहरा, और

चलते चलते दिलशिकस्त भी हो जाते। दिलखुश के बजाए दिलशिकस्त। तो समझा, अब अपने संगमयुग की लास्ट स्टेज फरिश्तेपन के संस्कार इमर्ज करो। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा, फॉलो फादर करना है ना। बात करते करते लास्ट में कई बच्चों को अनुभव है, सुनाने आये समाचार लेकिन समाचार से परे, आवाज से परे स्थिति का अनुभव किया हुआ देखा है। बातों का समाचार सुनाने, बहुत प्लैन बनाकर आते यह बताऊंगा, यह बताऊंगा, यह पूछूंगा लेकिन सामने आते क्या बोलना था वही भूल जाता। तो यह है फरिश्ता अवस्था। तो क्या आज पाठ पक्का किया? मैं कौन? फरिश्ता। किसी बातों से, किसी विशेषताओं से, अपनी विशेषता से, देह अभिमान से परे डबल लाइट फरिश्ता क्योंकि फरिश्ता बनने के बिना देवता का ऊंचा पद नहीं मिलेगा। सतयुग में तो आ जायेंगे, क्योंकि बच्चे बने हैं, वर्सा तो मिलेगा लेकिन श्रेष्ठ पद नहीं।

22.2.2009..... बापदादा को कोई भी बच्चे का चेहरा बोल या कर्म थोड़ा भी चिंतन वाला चिंता वाला व्यर्थ संकल्प वाला दुविधा वाला चेहरा देखते हैं ना तो अच्छा नहीं लगता। भगवान के बच्चे अगर सदा खुश नहीं रहेंगे तो कौन रहेंगे! आप ही हो ना। चेहरा कभी भी चिंता वाला नहीं शुभचिंतन। जब चिंता आवे ना किसी भी प्रकार की तो बाप मेरे कम्बाइण्ड है चिंता बाप को दे दो शुभचिंतक आप बन जाओ। क्योंकि बापदादा सदा हर्षित रहते हैं ना तो बच्चे मुरझाये हुए हों किसके बच्चे हैं? भगवान के। चेहरा कभी भी चाहे पहाड़ आ जाए लेकिन पहाड़ को भी आप रूई बना सकते हो। बाप के साथ अपने को जोड़ लो तो क्या हो जायेगा? जो पहाड़ है वह रूई हो जायेगा क्योंकि सर्वशक्तित्वान को साथ कर दिया ना। आप भले कमजोर हो लेकिन सर्वशक्तित्वान आपके साथ कम्बाइण्ड है तो समय पर काम में लगाओ। कहने तक नहीं काम में लगाओ। तो सदा खुशनुमा चेहरा और दिल सदा खुशनसीब। बापदादा चैलेन्ज करे कि अगर खुशनसीब खुशनुमा चेहरा देखना हो तो भगवान के सेन्टरों पर देखो करें चैलेन्ज। करें चैलेन्ज? कभी मुरझाना नहीं पड़ेगा।

15.11.2009..... रोज़ चार्ट चेक करो और चेंज करो क्योंकि समय का इशारा बापदादा ने काफी समय से दिया है। समय को देख भी रहे हो, मनुष्यों के मन में चिंता बढ़ रही है और आपके मन में चिंता नहीं लेकिन प्रभु चिंतन है। प्रभु चिंतन होने के कारण आप सदा जानते हो कि हम निमित्त हैं, निर्मान हैं क्योंकि करावनहार बाप है। इसके कारण आपके मन में चिंता नहीं है, करावनहार करा रहा है, यह स्मृति सदा आगे बढ़ा रही है।

15.12.2009.....। समय नाजुक आ रहा है और बढ़ता रहेगा। अभी मन्सा सेवा इतनी फोर्स से नहीं हो रही है। हो रही है, कोई कोई का मन्सा सेवा का प्रभाव भी पड़ रहा है लेकिन बहुत कम। और लास्ट के समय मन्सा सेवा के सिवाए वाचा नहीं चलेगी।

जिन्हों को निमित्त बनायेंगे उन्हीं को भी अभी चांस है, जब नाजुक समय आयेगा तो उन्हीं को भी चांस नहीं मिलेगा इसलिए अभी उन्हीं को चांस दे दो, नजदीक आयेंगे, वारिस भी बन सकते हैं क्योंकि अभी हालातें आपके हर ग्रुप के कार्य को मदद कर रही हैं। अभी सभी समझते हैं कुछ होना चाहिए, होना चाहिए। बिचारों को पता तो है नहीं लेकिन चाहना है कुछ परिवर्तन होना चाहिए। आप तो जानते हो ना कि परिवर्तन होना है और क्या होना है। वह चिंता में है, क्या होगा, क्या होगा! आप जानते हो कि हमारा राज्य आना ही है, खुशी है। अति में जा रहा है और अन्त होके आदि आनी है इसलिए आप सर्विस करने वालों को अभी जल्दी-जल्दी छांटों और उन्हीं को आगे बढ़ाओ। अच्छा-अच्छा तो कहते हैं अभी उन्हीं को अच्छा बनाने की सेवा दो। आप साक्षी दृष्टा बनके उनको शक्ति दो। अच्छा।

18.1.2010.....बापदादा ने देखा कि समय प्रमाण डाक्टर्स की सेवा और आगे बढ़ेगी क्योंकि आजकल के समय में चिंता और भय फैला हुआ है। तो डाक्टर्स यह तो डबल डाक्टर्स होंगे ही। डाक्टर्स जो डबल डाक्टर हैं वह हाथ उठाओ। मन के भी तन के भी। क्योंकि आजकल मन का रोग और बढ़ता जायेगा इसलिए डबल डाक्टर्स की सेवा और बढ़ती जायेगी। प्रकृति की हलचल के कारण नये-नये रोग निकलते हैं तो ऐसे समय पर डबल डाक्टर्स की आवश्यकता है। तो आप सभी एवररेडी हो, कहाँ भी बुलावा हो तो सेवा दे सकते हो? जो सेवा दे सकते हैं वह हाथ उठाओ। बहुत अच्छा

30.1.2010..... नेचर की भी आजकल सभी को चिंता है। तो आप विशेष सन्देश दो, मन की नेचर द्वारा प्रकृति की नेचर को कैसे सुधार सकते हैं।

ओमशांति

4. चोरी

18.6.69.. .. जब कोई मर जाता है तो पिछले संस्कार भी खत्म हो जाते हैं। तो यहाँ भी पिछले संस्कार क्यों याद आना चाहिए। जबकि जन्म ही दूसरा तो पिछली बातें भी खत्म होनी चाहिए। यह पहला पाठ है मरजीवा बनने का। वह पक्का करना है। पिछले पुराने संस्कार ऐसे लगने चाहिए जैसे और कोई के थे। हमारे नहीं। पहले शूद्रों के थे अभी ब्राह्मणों के हैं। तो पुराने शूद्रों के संस्कार नहीं होने चाहिए। पराये संस्कार अपने क्यों बनाते हो। जो पराई चीज को अपना बनाते हैं उनको क्या कहेंगे? चोर। तो यह भी चोरी क्यों करते हो? यह तो - शूद्रों के संस्कार हैं, ब्राह्मणों के नहीं। शूद्र की चीज को ब्राह्मण स्वीकार क्यों करते हैं। अछूत के साथ कपड़ा भी लग जाये तो नहाते हैं। तो शूद्रपने का संस्कार ब्राह्मणों को लग जाये तो क्या करना चाहिए? उसके लिए पुरुषार्थ करना चाहिए। जैसे गन्दी चीज को नहीं छूते हैं वैसे पुराने संस्कारों से बचना है। छूना नहीं है। इतना जब ध्यान रखेंगे तो औरों को भी ध्यान दिला सकेंगे।

31.5.72.. .. अगर सदा साथ का अनुभव करो तो पाप कर्म से भी सदा सहज बच जाओ; क्योंकि पाप कर्म अकेलेपन में होता है। कोई चोरी करता है, झूठ बोलता है वा कोई भी विकार वश होता है जिसको अपवित्रता के संकल्प वा कर्म कहा जाता है, वह अकेलेपन में ही होता है। अगर सदा अपने को बाप के साथ-साथ अनुभव करो तो फिर यह कर्म होंगे ही नहीं।

6.6.73.. .. सत्यनारायण की कथा है जिसको अमूल्य चीज़ समझ कर छिपाया वह कखपन हो गई। यहाँ भी सत्य बाप जो सत्यनारायण बनाने वाला है उनसे अगर जरा भी दिल का टुकड़ा छिपा कर रखा तो इस जीवन की नैया का क्या हाल होगा। कखपन हो जायेगा अर्थात् कुछ भी प्राप्ति नहीं होगी। हाथ खाली रह जायेगा। एक पैसे की चोरी करने वाले को भी चोर ही कहेंगे ना? अगर कोई हजार की चोरी करे और कोई एक पैसे की चोरी करे, कहेंगे तो दोनों को चोर ना? हल्का चोर बार-बार चोरी करता है, बड़ा चोर एक ही बार करता है। तो इसलिये दिल को दिया तो दिया। ऐसे दिल देने वाले सदा मस्तक मणि के समान लाइट

15.10.75... झूठ बोलना, चोरी करना, ठगी करना व धोखा देना इसको भी हिंसा व महापाप कहा जाता है। तो तुम ब्राह्मण चोरी कौनसी करते हो? शूद्रपन के संस्कार स्वभाव व बोल व किसी के प्रति भावना, ब्राह्मण बनने के बाद कार्य में लगाते हो व अपनाते हो तो गोया शूद्रों की वस्तु चोरी करते हो। जबकि यह ब्राह्मणों की वस्तु ही नहीं है। तो दूसरों की वस्तु यूज़ करना अर्थात् ब्राह्मण बनने के बाद आसुरी व शूद्रपन

के संस्कार व स्वभाव धारण करना अर्थात् हिंसा करना है। हाउस, माइट हाउस होते हैं। यहाँ सिर्फ लाइट हाउस नहीं बनना है, लेकिन साथ-साथ माइट हाउस भी बनना है। ऐसे को ही मस्तक मणि कहा जाता है।

29.5.77.... जैसे मेरी रचना, रचता को खेंचती है, वैसे मेरा स्वभाव संस्कार रूपी रचना आत्मा रचता को अपनी तरफ खींचेंगे। मेरा नहीं, यह शूद्रपन का संस्कार है, शूद्रपन के संस्कार को मेरा कहना, यह महापाप है, चोरी भी है और ठगी भी है। शूद्रों की चीज़ अगर ब्राह्मण चोरी करते, अर्थात् मेरा कहते, तो यह महापाप हुआ। और बाबा! यह सब कुछ आपका है, ऐसे कहकर फिर मेरा कहना, यह ठगी है। और इसी प्रकार के पाप होने से, पापों का बोझ बढ़ते जाने से, बुद्धि ऊँची स्टेज पर टिक नहीं सकती। इस कारण व्यर्थ संकल्पों के नीचे की स्टेज पर बार-बार आना पड़ता है। और फिर चिल्लाते हैं कि क्या करें?

29.11.78..... महावीर अर्थात् सदा विजयी। जब अविनाशी बाप है तो वरदान भी अविनाशी है। अल्पकाल के लिए नहीं। सिर्फ सम्भालना आपका काम है, देना बाप का काम है। सम्भालने आता है ना, कि चोरी हो जाती है। सिर्फ एक बात याद रखो कि लेता नहीं हूँ लेकिन दाता हूँ, अभी लेने के दिन समाप्त हो गए - अभी दाता बन देने का समय है। माँगना तो बचपन में होता - वानप्रस्थी कहें छोटा-सा खिलौना दे दो - यह अच्छा लगेगा? थोड़ी शक्ति दे दो - थोड़ी मदद करो - यह खिलौना माँगते हो। अब स्वयं तृप्त आत्मा बनो - दाता के बच्चे और माँगता हो तो देखने वाले क्या कहेंगे। सफलता का साधन है स्वयं सदा सफलता मूर्त बनो। स्वयं की वृत्ति वायब्रेशन फैलाती है और वायब्रेशन के आधार पर सर्व को अनुभूति होगी। इसलिए कार्य करने के पहले विशेष स्वयं की वृत्ति के अटेन्शन की भट्टी चाहिए। इससे ही वायब्रेशन द्वारा अनेकों की वृत्ति को परिवर्तन कर सकेंगे। पहले यह अटेन्शन रखना - सदा खुशी के झूले में झूलते रहो - हर्षित मुख अनेकों को अपने तरफ आकर्षित करता है।

31.12.82.... एक तो बापदादा ने सब बच्चों को डायमण्ड की चाबी दी है जिससे एक ही बोल "बाबा"। इससे बढ़िया चाबी कोई मिलेगी-क्या? सतयुग में भी ऐसी चाबी नहीं मिलेगी। सब के पास यह "डायमण्ड की" सम्भाली हुई है ना! चोरी तो नहीं हो गई है ना! चाबी को खोया तो सब खजाने खोये। इसलिए चाबी सदा साथ रखना। 'की-चेन है? वा अकेली चाबी है? "की"की चेन है - सदा सर्व सम्बन्धों से स्मृति स्वरूप होते रहो। तो 'की-चेन' की गिफ्ट मिली ना। सबसे बढ़िया गिफ्ट तो है यह 'चाबी'।

9.5.83... तो बाप के वारिस अर्थात् सर्वशक्तियों के, सर्वगुणों के अधिकारी। अधिकारी से अधिकार जा कैसे सकते? अगर अलबेले बने तो माया चोरी कर लेगी। माया को भी

सबसे अच्छे ग्राहक ब्राह्मण आत्मार्यें लगती हैं। इसलिए वह भी अपना चांस लेती है। आधा कल्प उसके साथी रहे, तो अपने साथियों को ऐसे कैसे छोड़ेगी। माया का काम है आना, आपका काम है जीत प्राप्त करना, घबराना नहीं। शिकारी के आगे शिकार आता है तो घबरायेंगे क्या? माया आती है तो जीत प्राप्त करो, घबराओ नहीं। अच्छा!

16.1.84... डबल विदेशियों को डबल नशा होगा ना। अविनाशी नशा है ना। इस नशे को कोई कम कर सकता है क्या, आलमाइटी अथार्टी के आगे और कौन-सी अथार्टी है! **सिर्फ अलबेलेपन की गहरी नींद में सो जाते हो तो आपके अथार्टी की चाबी अर्थात् 'स्मृति', माया चोरी कर लेती है।** कई ऐसे नींद में सोते हैं जो पता ही नहीं पड़ता है। यह अलबेलेपन की नींद कभी-कभी धोखा भी दे देती है। और फिर अनुभव ऐसे करते कि मैं सोया हुआ ही नहीं हूँ! जाग रहा हूँ। लेकिन चोरी हो जाती है वह पता नहीं पड़ता है। वैसे जागती ज्योति आलमाइटी अथार्टी के आगे कोई अथार्टी है नहीं। स्वप्न में भी कोई अथार्टी हिला नहीं सकती। ऐसे राज्य अधिकारी हो। समझा। अच्छा -

24.2.84.... प्रश्न:- आजकल किसी-किसी स्थान पर चोरी और भय का वातावरण बहुत हैं - उनसे कैसे बचे?

उत्तर:- इसमें योग की शक्ति बहुत चाहिए। मान लो कोई आपको डराने के ख्याल से आता है तो उस समय योग की शक्ति दो। अगर थोड़ा कुछ बोलेंगे तो नुकसान हो जायेगा। इसलिए ऐसे समय पर शान्ति की शक्ति दो। उस समय पर अगर थोड़े भी कुछ कहा तो उन्हीं में जैसे अग्नि में तेल डाला। आप ऐसे रीति से रहो जैसे बेपरवाह हैं, हमको कोई परवाह नहीं है। जो करता है उसको साक्षी होकर अन्दर शान्ति की शक्ति दो तो फिर उसके हाथ नहीं चलेंगे। वह समझेंगे इनको तो कोई परवाह नहीं है। नहीं तो डराते हैं, डर गये या हलचल में आये तो वह और ही हलचल में लाते हैं। भय भी उन्हीं को हिम्मत दिलाता है इसलिए भय में नहीं आना चाहिए। ऐसे टाइम पर साक्षीदृष्टा की स्थिति यून करनी है। अभ्यास चाहिए ऐसे टाइम।

14.1.85.... माताओं के ग्रुप से - 1. मातार्यें सदा अपना श्रेष्ठ भाग्य देख हर्षित रहती हो ना। चरणों की दासी से सिर के ताज बन गई यह खुशी सदा रहती है? **कभी खुशी का खजाना चोरी तो नहीं हो जाता? माया चोरी करने में होशियार है।** अगर सदा बहादुर हैं, होशियार हैं तो माया कुछ नहीं कर सकती और ही दासी बन जायेगी, दुश्मन सेवाधारी बन जायेगी। तो ऐसे मायाजीत हो? बाप की याद है अर्थात् सदा संग में रहने वाले हैं। रूहानी रंग लगा हुआ है। बाप का संग नहीं तो रूहानी रंग नहीं। तो सभी बाप के संग के रंग में रंगे हुए नष्टोमोहा हो? या थोड़ा-थोड़ा मोह है? बच्चों में नहीं होगा लेकिन पोत्रों-धोत्रों में होगा। बच्चों की सेवा पूरी हुई दूसरों की सेवा शुरू हुई। कम नहीं

होती। एक के पीछे एक लाइन लग जाती है। तो इससे बन्धन मुक्त हो! माताओं की कितनी श्रेष्ठ प्राप्ति हो गई। जो बिल्कुल हाथ खाली बन गई थीं वह अभी मालामाल हो गई। सब कुछ गँवाया अभी फिर से बाप द्वारा सर्व खजाने प्राप्त कर लिए तो मातायें क्या से क्या बन गईं? चार दीवारों में रहने वाली विश्व का मालिक बन गईं। यह नशा रहता है ना कि बाप ने हमको अपना बनाया तो कितना भाग्य है। भगवान आकर अपना बनाये ऐसा श्रेष्ठ भाग्य तो कभी नहीं हो सकता। **तो अपने भाग्य को देख सदा खुश रहती हो ना। कभी यह खजाना माया चोरी न करे।**

25.3.90... संगमयुग खुशी का युग है। खज़ाने ही खज़ाने हैं, जितने खज़ाने चाहो उतना भर सकते हो। धनवान भव का, सर्व खज़ाने भव का वरदान मिला हुआ है। सर्व खज़ानों का वरदान प्राप्त है। ब्राह्मण-जीवन में तो खुशियाँ-ही-खुशियाँ हैं। यह खुशी कभी गायब तो नहीं हो जाती है? माया चोरी तो नहीं करती है खज़ानों की? जो सावधान, होशियार होता है उकसा खज़ाना कभी कोई लूट नहीं सकता। जो थोड़ा-सा अलबेला होता है उसका खज़ाना लूट लेते हैं। आप तो सावधान हो ना या कभी-कभी सो जाते हो? **कोई सो जाते हैं तो चोरी हो जाती है ना। अलबेले हो गये। सदा होशियार, सदा जागती ज्योति रहे तो माया की हिम्मत नहीं जो खज़ाना लूट कर ले जाये।**

13.10.92... सबसे बड़े ते बड़ा खज़ाना खुशी का अभी मिलता है। सम्भालना आता है ना। सम्भाल करने की विधि है-सदा बाप को साथ रखना। अगर बाप सदा साथ है तो बाप का साथ ही बड़े ते बड़ा सेफ्टी का साधन है। तो खज़ाना सेफ रखना आता है या माया चोरी करके जाती है? छिप-छिप कर आती तो नहीं है? वो भी चतुर है। आने में वो भी कम नहीं है। लेकिन बाप का साथ माया को भगाने वाला है। तो आप कौनसी आत्माए हो? निश्चयबुद्धि विजयी आत्माए हो! सदा विजय का तिलक मस्तक पर लगा हुआ है, जिस तिलक को कोई मिटा नहीं सकता। अविनाशी तिलक है ना! या माया का हाथ आ जाता है तो मिट जाता है? अच्छा!

3.11.92.... अविनाशी प्राप्ति कराने वाला भाग्यविधाता है। जो भाग्य मिला है उसकी अगर लिस्ट निकालो तो कितनी लम्बी लिस्ट हो जायेगी! लम्बी लिस्ट है ना। इसलिए कहा ही जाता है-कितना मिला, क्या मिला? तो कहते हैं-अप्राप्त कोई वस्तु नहीं रही। इससे सिद्ध है कि सब-कुछ मिल गया। **जो मिला है उसको सम्भालना आता है? या कभी-कभी कोई चोरी करके चला जाता है? माया चोरी तो करके नहीं जाती?**

26.3.93... दाता भी बेहद का है और मिलता भी बेहद का है। तो मालिक किसके हो-हद के या बेहद के? तीनों लोक अपने बना दिये हैं। मूलवतन, सूक्ष्मवतन हमारा घर है और

स्थूल वतन में तो हमारा राज्य आने वाला ही है। तीनों लोकों के अधिकारी बन गये! तो क्या कहेंगे- अधिकारी आत्मायें। कोई अप्राप्ति है? तो क्या गीत गाते हो? (पाना था वह पा लिया) पाना था वह पा लिया, अभी कुछ पाने को नहीं रहा। तो ये गीत गाते हो? या कोई अप्राप्ति है-पैसा चाहिए, मकान चाहिए! नेता की कुर्सी चाहिए? कुछ नहीं चाहिए। क्योंकि कुर्सी होगी तो भी एक जन्म का भी भरोसा नहीं और आपको कितनी गारन्टी है? 21 जन्म की गारन्टी है। गारन्टी-कार्ड माया तो चोरी नहीं कर लेती है? जैसे यहाँ पासपोर्ट खो लेते हैं तो कितनी मुश्किल हो जाती है! तो गारन्टी-कार्ड माया तो नहीं ले लेती है? छुपा-छुपी करती है। फिर आप क्या करते हो? लेकिन ऐसे शक्तिशाली बनो जो माया की हिम्मत नहीं।

19.1.95... बापदादा ऐसे सपूत और सबूत देने वाले बच्चों को विशेष दिव्य गुणों की ज्वेलरी गिफ्ट में दे रहे हैं। तो ये गिफ्ट सम्भाल के रखना। कानों में भी पहनना और मस्तक पर भी पहनना, सिर पर ताज पहनना, उतारना नहीं। माया को चोरी करने नहीं देना। माया को भी पता पड़ रहा है कि इन्हों को गिफ्ट मिल रही है। तो डबल लॉक है ना? याद और सेवा दोनों के बैलेन्स में सदा रहना अर्थात् डबल लॉक लगाना। तो सभी के पास डबल लॉक है या एक लॉक है एक ढीला है? देखना चाबी तो नहीं खो गई है। आप समझो चाबी बहुत सम्भाल के रखी है लेकिन जब आवश्यकता हो तो दिखाई न दे, ऐसे तो नहीं?

30.11.99... संगमयुग है मजे का युग। बोझ उठाने का युग नहीं है। बोझ उतारने का युग है। तो चेक करो, अपने तकदीर की तस्वीर नॉलेज के आइने में अच्छी तरह से देखो। आइना तो है ना? या नहीं है? टूट तो नहीं गया है ना? सभी को आइना मिला है? मातायें, आइना मिला है या चोरी हो गया है? पाण्डव तो सम्भालने में होशियार हैं ना? आइना है? हाथ तो अच्छा उठाया। अच्छा है। तकदीर की तस्वीर देखो और सदा अपने तकदीर की तस्वीर देख वाह-वाह का गीत गाओ। वाह मेरी तकदीर! वाह मेरा बाबा! वाह मेरा परिवार! परिवार भी वाह-वाह है! ऐसे नहीं यह तो बहुत वाह-वाह है, यह थोड़ा ऐसा है! नहीं। वाह मेरा परिवार! वाह मेरा भाग्य! और वाह मेरा बाबा! ब्राह्मण जीवन अर्थात् वाह-वाह! हाय-हाय नहीं।

25.3.2005... प्रतिज्ञा और दृढ़ता, दृढ़ता से प्रतिज्ञा करो - सुख देना है और सुख लेना है। दुआ देनी है, लेनी है। है प्रतिज्ञा, हिम्मत है? जिसमें हिम्मत है आज से दृढ़ता का संकल्प लेते हैं दुआ लेंगे, दुआ देंगे, वह हाथ उठाओ। पक्का? पक्का? कच्चा नहीं होना। कच्चे बनेंगे ना - तो कच्चे फल को चिड़िया बहुत खाती है। दृढ़ता सफलता की चाबी है। सभी के पास चाबी है? है चाबी? चाबी कायम है, माया चोरी तो नहीं कर

लेती? उसको भी चाबी से प्यार है। सदैव संकल्प करते हुए यह संकल्प इमर्ज करो, मर्ज नहीं, इमर्ज। इमर्ज करो मुझे करना ही है। बनना ही है। होना ही है। हुआ ही पड़ा है। इसको कहा जाता है निश्चयबुद्धि, विजयन्ती। ड्रामा विजय का बना ही पड़ा है। सिर्फ रिपीट करना है। बना बनाया ड्रामा है। बना हुआ है, रिपीट कर बनाना है। मुश्किल है? कभी-कभी मुश्किल हो जाता है! मुश्किल क्यों होता है? अपने आप ही सहज को मुश्किल कर देते हो। छोटी सी गलती कर लेते हो - पता है कौन सी गलती करते हो? बापदादा को उस समय बच्चों पर बहुत रहम क्या कहें, प्यार आता है। क्या प्यार आता है? एक तरफ तो कहते कि बाप हमारे कम्बाइन्ड है, है कम्बाइन्ड? कम्बाइन्ड है? साथ नहीं कम्बाइन्ड। कम्बाइन्ड है? डबल फारेनर्स कम्बाइन्ड है? पीछे वाले कम्बाइन्ड है? गैलरी वाले कम्बाइन्ड है?

जब कम्बाइन्ड है, सर्व शक्तिवान बापदादा कम्बाइन्ड है फिर अकेले क्यों बन जाते? अगर आप कमज़ोर भी हो तो बापदादा तो सर्वशक्तिवान है ना! अकेले बन जाते हो तब ही कमज़ोर बन जाते हो। कम्बाइन्ड रूप में रहो। बापदादा हर एक बच्चे के हर समय सहयोगी हैं।

16.11.2006... अभी अपने आपको चेक करो - बेहद का बाप, हद का बाप नहीं है, बेहद का बाप है, बेहद खज़ाना है। तो आपके पास भी बेहद है? सदा है कि कभी-कभी कुछ चोरी हो जाता है? गुम हो जाता है? बाबा क्यों अटेन्शन दिला रहे हैं? परेशान न हो, स्वमान की सीट पर सेट रहो, अपसेट नहीं। 63 जन्म तो अपसेट का अनुभव कर लिया ना! अभी और करने चाहते हो? थक नहीं गये हो? अभी स्वमान में रहना अर्थात् अपने ऊंचे ते ऊंचे शान में रहना। क्यों? कितना समय बीत गया। 70 साल मना रहे हो ना! तो स्वयं की पहचान अर्थात् स्वमान की पहचान, स्वमान में स्थित रहना। समय अनुसार अभी सदा शब्द को प्रैक्टिकल लाइफ में लाना, शब्द को अण्डरलाइन नहीं करना लेकिन प्रैक्टिकल लाइफ में अण्डरलाइन करो। रहना है, रहेंगे, कर तो रहे हैं.. कर लेंगे। यह बेहद के बालक और मालिक का बोल नहीं है। अभी तो हर एक के दिल से यह अनहद शब्द निकले, पाना था वह पा लिया। पा रहे हैं, यह बेहद खज़ाने के बेहद बाप के बच्चे नहीं बोल सकते। पा लिया, जब बापदादा को पा लिया, मेरा बाबा कह दिया, मान लिया, जान भी लिया, मान भी लिया, तो यह अनहद शब्द पा लिया... क्योंकि बापदादा जानते हैं कि बच्चे स्वमान कभी-कभी होने के कारण समय के महत्व को भी स्मृति में कम रखते हैं। एक स्वयं का स्वमान, दूसरा है समय का महत्व। आप साधारण नहीं हो, पूर्वज हो, आप एक-एक के पीछे विश्व की आत्माओं का आधार है। सोचो, अगर आप हलचल में आर्येंगे तो विश्व की आत्माओं का क्या हाल होगा!

17.3.2007..... आप एक-एक मास्टर सर्वशक्तिवान के संकल्प में इतनी ताकत है जो चाहो वह हो सकता है । सिर्फ दृढता चाहिए । दृढता की चाबी कभी-कभी माया चोरी कर देती है । इस चाबी को सदा यूज करो, ऐसे नही सम्भाल के रखो, दिमाग में है, चाबी है लेकिन समय पर यूज करो । समय बीत जाता है ना, फिर क्या कहते हैं, करना तो ऐसे था, था, था करते है । तो था, था नही करना । समय पर करना ।

ओमशांति

5. कम्प्लेट्स

16.10.69.. .. अगर मणी बनना है तो देखो भी मणी को। फिर जो यह कम्प्लेन है वह बदल कर कम्पलीट हो जायेगी। सिर्फ बुद्धि की परख से कहाँ कम्प्लेन कहाँ कम्पलीट। रात-दिन का फर्क है। लेकिन सिन्धी भाषा में लिखेंगे तो सिर्फ दो बिन्दियों का फर्क है। यहाँ भी ऐसे है। **दो बिन्दी एक स्वयं की, एक बापदादा की। यह दो बिन्दी ही याद रहे तो कम्प्लेन की बजाय कम्पलीट हो जाये।** इसलिए आज से यह प्रतिज्ञा अपने आप से करो। बापदादा के सामने तो बहुत प्रतिज्ञाएं की हैं लेकिन आज अपने आपसे प्रतिज्ञा करो कि अब से लेकर सिवाए मणी के और कुछ नहीं देखेंगे और खुद ही माला के मणी बन करके सारे सृष्टि के बीच चमकेंगे।

16.10.69.... जैसे बापदादा लोन लेकर आते हैं ना। अभी तो दोनों ही लोन लेते हैं। थोड़े समय के लिये आते हैं किसलिए? मिलने के लिये। वैसे ही आप सभी भी समझो कि हम लोन लेकर सर्विस के निमित्त आये हैं - थोड़े समय के लिये। जब ऐसी स्थिति होगी तब बाप का प्रभाव दुनिया के सामने आयेगा। दोनों ही हिसाब ठीक किया है। या लेने का किया है, देने का नहीं? 6 मास तक एकरस रहेंगे ना कि । फिर तो दीदी का काम हल्का हो जायेगा। आप खुद भारी होंगे तो सारा कार्य भारी हो जायेगा। बापदादा की आशा कहे वा शुद्ध संकल्प कहे यही रहता है और रहेगा ही की एक-एक नम्बरवन हो। लेकिन सारे कल्प के अन्दर जो अब की स्थिति बनायेंगे वह तो अब के हिसाब से नम्बरवन है ना। जो वास्तविक सम्पूर्ण स्टेज है।

6.11.70... आजकल कम्पलीट अर्थात् सम्पूर्ण कर्मातीत बनने के लिए पुरुषार्थ करते-करते मुख्य एक कम्प्लेन समय प्रति समय सभी की निकलती है। चाहते हैं कम्पलीट होना लेकिन वह कम्पलीट होने नहीं देती। वह कौन सी कम्प्लेन है? व्यर्थ संकल्पों की। कम्पलीट बनने में व्यर्थ संकल्पों के तूफान विघ्न डालते हैं। यह मैजारिटी की कम्प्लेन है। अब इसको मिटाने लिए आज युक्ति बताते हैं। मन की व्यर्थ संकल्पों की कम्प्लेन कैसे पूरी होगी? याद की यात्रा तो मुख्य बात है लेकिन इसके लिए भिन्न-भिन्न युक्तियाँ हैं। वह कौन-सी? जो बड़े आदमी होते हैं उन्हीं के पास अपने हर समय की अपॉइन्टमेंट की डायरी बनी हुई होती है। एक-एक घंटा उन्हीं का फिक्स होता है। ऐसे आप भी बड़े ते बड़े हो ना। तो रोज़ अमृतवेले सारे दिन की अपनी अपॉइन्टमेंट की डायरी बनाओ। अगर अपने मन को हर समय अपॉइन्टमेंट में बिज़ी रखेंगे तो बीच में व्यर्थ संकल्प समय नहीं ले सकेंगे। अपॉइन्टमेंट से फ्री रहते हो तब व्यर्थ संकल्प समय ले लेते हैं। तो समय की बुकिंग करने का तरीका सीखो। अपने आप की अपॉइन्टमेंट

खुद ही बनाओ कि आज सारे दिन में क्या-क्या करना है। फिर समय सफल हो जायेगा। मन को किसमें अपाइन्ट करना है। इसके लिए 4 बातें बताई हैं। 1-मिलन, 2-वर्णन, 3- मगन, 4- लगन। लगन लगाने में भी समय बहुत जाता है ना। तो मगन की अवस्था में कम रहते हैं। इसलिए लगन, मगन, मिलन और वर्णन। वर्णन है सर्विस, मिलन है रूह-रूहान करना। बापदादा से मिलते हैं ना। तो इन चार बातों में अपने समय को फिक्स करो। अगर रोज़ की अपनी दिनचर्या फिक्स करने के लिए अपॉइन्टमेंट सारे समय की फिक्स होगी तो बीच में व्यर्थ संकल्पों को डिस्टर्ब करने का समय ही नहीं मिलेगा। जैसे कोई बड़े आदमी होते हैं तो बिज़ी होने के कारण और व्यर्थ बातों तरफ ध्यान और समय नहीं दे सकते हैं। ऐसे अपनी दिनचर्या में समय को फिक्स करो। इतना समय इस बात में, इस समय इस बात में लगाना है। ऐसी अपॉइन्टमेंट अपनी निश्चित करो तब यह कम्पलेन खत्म होगी और कम्पलीट बन जाएगी।

30.11.70... अगर बुद्धि इधर-उधर जाती है तो सिद्ध होता है कि सर्व सम्बन्ध एक के साथ नहीं जोड़े हैं । जोड़ने की निशानी है अनेकों से टूट जाना । कोई ठिकाना ही नहीं तो बुद्धि कहाँ जाएगी । और सभी ठिकाने टूट जाते हैं । एक से जुट जाता है । फिर यह जो कम्पलेन है कि बुद्धि यहाँ-वहाँ दौड़ती है वह बन्द हो जाएगी । अच्छा

3.12.70... अभी बलिहार वा बलि चढ़ने की तैयारी करने वाले हो। समाप्ति में बलि चढ़ना है वा चढ़ चुके हो? जो बलिहार हो गए हैं। उन्हीं का पेपर लेंगे। इतने सभी को आज से कोई कम्पलेन नहीं आयेगी। जब हार नहीं खायेंगे तो कम्पलेन फिर काहे की। आप लोगों का पेपर वतन में तैयार हो रहा है।

9.4.71... अब ऐसे शब्द मुख से तो क्या मन में संकल्प रूप में भी न आए कि - क्या करें, मजबूर हूँ। चाहे कोई व्यक्ति ने वा वायुमण्डल ने मजबूर किया, लेकिन नहीं। मजबूर नहीं होना है परन्तु मजबूत होना है। समझा? फिर यह कम्पलेन न आये। अपने पुरुषार्थ की कम्पलेन भट्टी के पहले कोई निकाली थी? वह क्या थी? निर्बलता के कारण संगदोष में आना। इस कम्पलेन को कम्पलीट करके जा रही हो? कोई भी ऐसे संग में नहीं आ सकेगी। कोई ईश्वरीय रूप से माया अपना साथी बनाने की कोशिश करे तो? देखना, अपने वायदों को याद रखना। नारे जो गाये हैं -"एक हैं, एक के रहेंगे, एक की ही मत पर चलेंगे"- यह सदैव पक्का रखना। ईश्वरीय रूप से माया ऐसा सामने आयेगी जो उनको परखने की बहुत आवश्यकता पड़ेगी। परखने की शक्ति धारण कर जा रही हो? सदैव यह अविनाशी रखना।

25.6.71... .. बहुताँ की कम्पलेन्ट रहती है कि शक्ति नहीं । नॉलेज है,लेकिन नॉलेज को जो लाइट और माइट कहा जाता है, तो नॉलेज द्वारा अपने में शक्ति कैसे भरें, वह तरीका नहीं आता है। जैसे अपने पास माचिस हो लेकिन माचिस से आग निकालने का तरीका न आने के कारण कार्य सिद्ध नहीं कर सकते हैं। तो नॉलेज सभी को है, लेकिन नॉलेज से कोई तो लाइट और माइट का अनुभव करते हैं और कोई सिर्फ नॉलेज को समझ वर्णन करते हैं। नॉलेज द्वारा अपने में माइट कैसे लायें - वह भिन्न-भिन्न युक्तियों द्वारा बल भरना है, जिससे जम्प खायें। अच्छा।

28.7.71... .. जैसे अनेक जन्म अपनी देह के स्वरूप की स्मृति नेचरल रही है, वैसे ही अपने असली स्वरूप की स्मृति का अनुभव भी थोड़ा समय भी नहीं करेंगे क्या? यह होना चाहिए?

यह पहला पाठ कम्पलीट हो ही जायेगा। इस आत्म-अभिमानी की स्थिति में ही सर्व आत्माओं को साक्षात्कार कराने के निमित्त बनेंगे। तो यह अटेन्शन रखना पड़े।

25.8.71... .. आत्मा समझना, वह तो हुई फर्स्ट स्टेज। लेकिन कर्म में आते, सम्पर्क में आते, सम्बन्ध में आते यही स्मृति रखो कि यह सभी जड़ चित्रों की चैतन्य देवी वा देवताओं के रूप हैं। तो देवी का रूप स्मृति में आने से जैसे जड़ चित्रों में कभी संकल्प मात्र भी अपवित्रता वा देह का अट्रेक्शन नहीं होता है, ऐसे ही चैतन्य रूप में भी यह स्मृति रखने से संकल्प में भी यह कम्पलेन नहीं रहेगी और कम्पलीट हो जायेंगे। समझा? यह हैं वर्तमान पुरुषार्थियों की कम्पलेन के ऊपर कम्पलीट बनने की युक्तियाँ।

24.10.71... .. वर्तमान समय कम्पलेन क्या करते हो? बाप की याद भूल जाती है। बहुत जन्मों से साथ रही हुई वस्तु देह वा देह के सम्बन्धी नहीं भूलते तो जिससे सर्व खज़ानों की प्रिप्त होती है और सदा पास है वह क्यों भूलना चाहिए? चढ़ाने वाला याद आना चाहिए वा गिराने वाला? अगर ठोकर लगाने वाला भूल से भी याद आयेगा तो उनको हटा देंगे ना। तो चढ़ाने वाला क्यों भूलता है? जब ब्राह्मण अपने स्वस्थिति में, स्व-स्मृति में वा श्रेष्ठ स्मृति में स्थित रहें तो अन्य आत्माओं को स्थित करा सकेंगे।

26.10.71... .. अपनी वृत्ति को श्रेष्ठ बनाओ तो यही प्रवृत्ति प्रगति का कारण बन जायेगी और प्रगति से गति-सद्गति को सहज ही पा सकेंगे, फिर यह प्रवृत्ति गिरने का कारण नहीं होगी, तो प्रवृत्ति मार्ग में रहने वालों को प्रगति के लिए वृत्ति को ठीक करना है। फिर यह वृत्ति के चंचलता की कम्पलेन कम्पलीट हो जायेगी। स्मृति वा वृत्ति में सदा अपना निर्वाण धाम और निर्वाण स्थिति रहनी चाहिए और चरित्र में निर्मान।

26.10.71.. .. यहाँ बैटरी को चार्ज करने आये हो, तो बैटरी को चार्ज करने के लिए सदा अपने को विश्व-निर्माण करने के इन्चार्ज समझो। अगर सदा अपने को इस सृष्टि के कर्तव्य के इन्चार्ज समझेंगे तो सदा बैटरी चार्ज रहेगी। इस चार्ज से अपने को विस्मृत करते हो तभी बैटरी डिस्चार्ज होती है। इसलिए सदा अपने इस कर्तव्य में अपने को इन्चार्ज समझो और फिर अपनी बैटरी चार्ज का बार-बार चार्ट चेक करो, तो कभी भी संकल्प वा कर्म में वा आत्मा की स्थिति में डिस्चार्ज नहीं होंगे। फिर यह कम्पलेन कम्पलीट हो जायेगी। यह भी कम्पलेन है ना। सभी में ज्यादा यह कम्पलेन है। इसका कारण यह है - अपने को सदा ऐसे श्रेष्ठ कर्म के इन्चार्ज नहीं समझते हो। “जो कर्म मैं करूंगा मुझे देख अन्य करेंगे”, - यह तो है ही लेकिन यह सलोगन और गुह्य रूप से कैसे धारण करना है, वह समझते हो? इस पाण्डवों की भट्टी के लिए यह गुह्य सलोगन आवश्यक है। वह कौनसा? जैसे यह सलोगन सुनाया कि “जो कर्म मैं करूंगा मुझे देख और करेंगे।” वैसे ही जो मुझ निमित्त बने हुए आत्मा की वृत्ति होगी वैसा वायुमण्डल बनेगा। जैसी मेरी वृत्ति वैसा वायुमण्डल। तो वायुमण्डल को परिवर्तन में लाने वाली वृत्ति है। कर्म से वृत्ति सूक्ष्म है। अभी सिर्फ कर्म के ऊपर ध्यान नहीं देना है लेकिन वृत्ति से वायुमण्डल को बनाने का इन्चार्ज भी मैं हूँ। वायुमण्डल को सतोप्रधान कौन बनायेगा? आप सभी निमित्त हो ना। अगर यह सलोगन सदा स्मृति में रहे तो बताओ फिर वृत्ति चंचल होगी?

26.10.71... अगर कोई अति चंचल बच्चा बिज़ी होते भी चंचलता नहीं छोड़ता है तो उसका और क्या साधन होता है? यही कम्पलेन अभी तक भी है कि वृत्ति को याद में वा ज्ञान में बिज़ी रखने की कोशिश भी करते हैं, फिर भी चंचल हो जाती है। तो ऐसे को क्या करना है? उसके लिए जैसे चंचल बच्चे को किसी न किसी प्रकार से कोई न कोई बन्धन में बाँधने का प्रयत्न किया जाता है - चाहे स्थूल बन्धन, चाहे वाणी द्वारा कोई न कोई प्राप्ति का आधार देकर उनको अपने स्नेह में बाँधा जाता है। ऐसे बुद्धि को वा संकल्प को भी कोई न कोई बन्धनों में बाँधना पड़ेगा। वह बन्धन कौनसा? जहाँ भी बुद्धि जाती है उसको पहले चेक करो। चेक करने के बाद जहाँ संकल्प वा वृत्ति जाती है उसी लौकिक वा देहधारी वस्तु को परिवर्तन करते हुए, इन देहधारी वा लौकिक वस्तु की तुलना में अलौकिक, अविनाशी वस्तु स्मृति में लाओ। जैसे कोई देहधारी में वृत्ति चंचल होती है, जिस सम्बन्ध में चंचल होती है वही सम्बन्ध का प्रैक्टिकल अनुभव अविनाशी बाप द्वारा करो। मानो प्रवृत्ति के सम्बन्ध में वृत्ति चंचल होती है, इसी सम्बन्ध का अलौकिक अनुभव सर्व सम्बन्ध निभाने वाले बाप से प्राप्त करो, तो जब प्राप्ति की पूर्ति हो जायेगी तो फिर चंचलता की निवृत्ति हो जायेगी। समझा? अगर सर्व सम्बन्ध और

सर्व प्राप्ति एक बाप द्वारा हो जाएं तो अन्य तरफ बुद्धि चंचल होगी? तो सर्व सम्बन्धों से एक ही बड़े ते बड़ा बन्धन यही है कि अपनी चंचल वृत्ति को सर्व सम्बन्धों के बन्धन में एक बाप के साथ बांधो, तो सर्व चंचलता सहज ही समाप्त हो जायेंगी। और कोई सम्बन्ध वा प्राप्ति के साधन दिखाई नहीं देंगे तो वृत्ति जायेगी कहाँ? अपने आप को ऐसे बांधो जैसे दृष्टान्त प्रसिद्ध है कि सीता को लकीर के अन्दर बैठने का फरमान था। ऐसे अपने को हर कदम उठाते हुए, हर संकल्प करते हुए बाप के फरमान की लकीर के अन्दर समझो। अगर संकल्प में भी फ़रमों के लकीर से निकलते हो तब व्यर्थ बातें वार करती हैं। तो सदैव फ़रमों की लकीर के अन्दर रहो तो सदा सेफ रहेंगे। कोई भी प्रकार के रावण के संस्कार वार नहीं करेंगे और न ही समय-प्रति-समय अपना समय इन्हीं बातों में मिटाने के लिए व्यर्थ गंवायेंगे। न वार होगा, न बार-बार व्यर्थ समय जायेगा। इसलिए अब फ़रमों को सदा याद रखो। ऐसे फरमांबरदार बनने के लिए ही भट्टी में आये हो ना। तो ऐसा ही अभ्यास करके जाना जो एक संकल्प भी फ़रमों के बिना न हो। ऐसे फरमांबरदारी का तिलक सदा स्मृति में लगा रहे। यह तिलक लगाना, फिर देखेंगे -- फर्स्ट नम्बर कौन आता है, इस तिलक को धारण करने में फर्स्ट प्राइज लेने वाला कौन होता है? अच्छा।

26.10.71... अपनी वृत्ति को श्रेष्ठ बनाओ तो यही प्रवृत्ति प्रगति का कारण बन जायेगी और प्रगति से गति-सद्गति को सहज ही पा सकेंगे, फिर यह प्रवृत्ति गिरने का कारण नहीं होगी, तो प्रवृत्ति मार्ग में रहने वालों को प्रगति के लिए वृत्ति को ठीक करना है। फिर यह वृत्ति के चंचलता की कम्पलेन कम्पलीट हो जायेगी। स्मृति वा वृत्ति में सदा अपना निर्वाण धाम और निर्वाण स्थिति रहनी चाहिए और चरित्र में निर्माण।

तो निर्माण, निर्माण और निर्वाण -- यह तीनों ही स्मृति रहने से चरित्र, कर्तव्य और स्थिति - तीनों ही इस स्मृति से समर्थवान हो जाती हैं अर्थात् स्मृति में समर्थी आ जाती है। जहाँ समर्थी है वहाँ तीनों में विस्मृति नहीं आ सकती। तो विस्मृति को मिटाने के लिए यह समर्थ स्मृति रखो। यह तो बहुत सहज है ना। अगर चरित्र में निर्माणता है तो कर्तव्य भी विश्व-निर्माण का आटोमेटिकली चलेगा।

26.10.71... यहाँ बैटरी को चार्ज करने आये हो, तो बैटरी को चार्ज करने के लिए सदा अपने को विश्व-निर्माण करने के इन्चार्ज समझो। अगर सदा अपने को इस सृष्टि के कर्तव्य के इन्चार्ज समझेंगे तो सदा बैटरी चार्ज रहेगी। इस चार्ज से अपने को विस्मृत करते हो तभी बैटरी डिस्चार्ज होती है। इसलिए सदा अपने इस कर्तव्य में अपने को इन्चार्ज समझो और फिर अपनी बैटरी चार्ज का बार-बार चार्ट चेक करो, तो कभी भी

संकल्प वा कर्म में वा आत्मा की स्थिति में डिस्चार्ज नहीं होंगे। फिर यह कम्पलेन कम्पलीट हो जायेगी। यह भी कम्पलेन है ना। सभी में ज्यादा यह कम्पलेन है। इसका कारण यह है - अपने को सदा ऐसे श्रेष्ठ कर्म के इन्चार्ज नहीं समझते हो। “जो कर्म में करूंगा मुझे देख अन्य करेंगे”, - यह तो है ही लेकिन यह सलोगन और गुह्य रूप से कैसे धारण करना है, वह समझते हो? इस पाण्डवों की भट्टी के लिए यह गुह्य सलोगन आवश्यक है। वह कौनसा? जैसे यह सलोगन सुनाया कि “जो कर्म में करूंगा मुझे देख और करेंगे।” वैसे ही जो मुझ निमित्त बने हुए आत्मा की वृत्ति होगी वैसा वायुमण्डल बनेगा। जैसी मेरी वृत्ति वैसा वायुमण्डल। तो वायुमण्डल को परिवर्तन में लाने वाली वृत्ति है। कर्म से वृत्ति सूक्ष्म है। अभी सिर्फ कर्म के ऊपर ध्यान नहीं देना है लेकिन वृत्ति से वायुमण्डल को बनाने का इन्चार्ज भी मैं हूँ। वायुमण्डल को सतोप्रधान कौन बनायेगा? आप सभी निमित्त हो ना। अगर यह सलोगन सदा स्मृति में रहे तो बताओ फिर वृत्ति चंचल होगी? बच्चा भी चंचलता कब करता है? जब फ्री होगा। तो वृत्ति भी चंचल तब होती है जब वृत्ति में इतने बड़े कार्य की स्मृति कम है। अगर कोई अति चंचल बच्चा बिज़ी होते भी चंचलता नहीं छोड़ता है तो उसका और क्या साधन होता है? यही कम्पलेन अभी तक भी है कि वृत्ति को याद में वा ज्ञान में बिज़ी रखने की कोशिश भी करते हैं, फिर भी चंचल हो जाती है। तो ऐसे को क्या करना है? उसके लिए जैसे चंचल बच्चे को किसी न किसी प्रकार से कोई न कोई बन्धन में बाँधने का प्रयत्न किया जाता है - चाहे स्थूल बन्धन, चाहे वाणी द्वारा कोई न कोई प्राप्ति का आधार देकर उनको अपने स्नेह में बाँधा जाता है। ऐसे बुद्धि को वा संकल्प को भी कोई न कोई बन्धनों में बाँधना पड़ेगा। वह बन्धन कौनसा? जहाँ भी बुद्धि जाती है उसको पहले चेक करो। चेक करने के बाद जहाँ संकल्प वा वृत्ति जाती है उसी लौकिक वा देहधारी वस्तु को परिवर्तन करते हुए, इन देहधारी वा लौकिक वस्तु की तुलना में अलौकिक, अविनाशी वस्तु स्मृति में लाओ। जैसे कोई देहधारी में वृत्ति चंचल होती है, जिस सम्बन्ध में चंचल होती है वही सम्बन्ध का प्रैक्टिकल अनुभव अविनाशी बाप द्वारा करो। मानो प्रवृत्ति के सम्बन्ध में वृत्ति चंचल होती है, इसी सम्बन्ध का अलौकिक अनुभव सर्व सम्बन्ध निभाने वाले बाप से प्राप्त करो, तो जब प्राप्ति की पूर्ति हो जायेगी तो फिर चंचलता की निवृत्ति हो जायेगी। समझा? अगर सर्व सम्बन्ध और सर्व प्राप्ति एक बाप द्वारा हो जाएं तो अन्य तरफ बुद्धि चंचल होगी? तो सर्व सम्बन्धों से एक ही बड़े ते बड़ा बन्धन यही है कि अपनी चंचल वृत्ति को सर्व सम्बन्धों के बन्धन में एक बाप के साथ बाँधो, तो सर्व चंचलता सहज ही समाप्त हो जायेगी। और कोई सम्बन्ध वा प्राप्ति के साधन दिखाई नहीं देंगे तो वृत्ति जायेगी कहाँ? अपने आप

को ऐसे बांधो जैसे दृष्टान्त प्रसिद्ध है कि सीता को लकीर के अन्दर बैठने का फरमान था। ऐसे अपने को हर कदम उठाते हुए, हर संकल्प करते हुए बाप के फरमान की लकीर के अन्दर समझो। अगर संकल्प में भी फ़रमों के लकीर से निकलते हो तब व्यर्थ बातें वार करती हैं। तो सदैव फ़रमों की लकीर के अन्दर रहो तो सदा सेफ रहेंगे। कोई भी प्रकार के रावण के संस्कार वार नहीं करेंगे और न ही समय-प्रति-समय अपना समय इन्हीं बातों में मिटाने के लिए व्यर्थ गंवायेंगे। न वार होगा, न बार-बार व्यर्थ समय जायेगा। इसलिए अब फ़रमों को सदा याद रखो। ऐसे फरमांबरदार बनने के लिए ही भट्टी में आये हो ना। तो ऐसा ही अभ्यास करके जाना जो एक संकल्प भी फ़रमों के बिना न हो। ऐसे फरमांबरदारी का तिलक सदा स्मृति में लगा रहे। यह तिलक लगाना, फिर देखेंगे -- फर्स्ट नम्बर कौन आता है, इस तिलक को धारण करने में फर्स्ट प्राइज लेने वाला कौन होता है?

2.4.72... मैजारिटी कहते हैं - जितना होना चाहिए उतना नहीं है। उस मध्यम रिजल्ट का मुख्य कारण यह है कि मध्यकाल के संस्कारों को अभी तक पूरी रीति भस्म नहीं किया है। तो यह मध्यकाल के संस्कार अर्थात् द्वापर काल से लेकर जो देह-अभिमान वा कमजोरी के संस्कार भरते गये हैं उनके वश होने कारण मध्यम रिजल्ट दिखाई देती है। **कम्पलेन भी यही करते हैं कि चाहते नहीं हैं लेकिन संस्कार बहुत काल के होने कारण फिर हो जाता।** तो इन मध्यकाल के संस्कारों को पूरी रीति भस्म नहीं किया है। डाक्टर लोग भी बीमारी के जर्मस (कीटाणु) को पूरी रीति खत्म करने की कोशिश करते हैं। अगर एक अंश भी रह जाता है तो अंश से वंश पैदा हो जाता। तो इसी प्रकार मध्यकाल के संस्कार अंश रूप में भी होने कारण आज अंश है, कल वंश हो जाता है। इसी के वशीभूत होने कारण जो श्रेष्ठ रिजल्ट निकलनी चाहिए वह नहीं निकलती।

27.5.77....। **अब तक मैजारिटी व्यर्थ संकल्पों की कम्पलेन (Complain;शिकायत) बहुत करते हैं।** व्यर्थ संकल्प के कारण तन और मन दोनों कमज़ोर हो जाते हैं। व्यर्थ संकल्प का कारण क्या? सुनाया था, अपनी दिनचर्या को सेट करना नहीं आता।

अमृतवेले रोज़ की दिनचर्या, तन की और मन को सेट करो। जैसे तन की दिनचर्या बनाते हो कि सारे दिन में यह-यह कर्म करना है, वैसे अपने स्थूल कार्य के हिसाब से, मन की स्थिति को भी सेट करो। जैसे अमृतवेले याद की यात्रा का समय सेट है, तो ऐसे सुहावने समय पर, जबकि समय का भी सहयोग है, सतोप्रधान बुद्धि का सहयोग है, ऐसे समय पर मन की स्थिति भी सबसे पाँवरफुल स्टेज (Powerful Stage;शक्तिशाली स्थिति) की चाहिए। पाँवरफुल स्टेज अर्थात् बाप समान बीजरूप स्थिति। तो यह अमृतवेले का जैसा श्रेष्ठ समय है, वैसी श्रेष्ठ स्थिति होनी चाहिए।

साधारण स्थिति में तो, कर्म करते भी रह सकते हो, लेकिन यह विशेष वरदान का समय है। इस समय को यथार्थ रीति यूज़ (USE;प्रयोग) न करने का कारण, सारे दिन की याद की स्थिति पर प्रभाव पड़ता है। तो पहला अटेंशन - 'अमृतवेले की पाँवरफुल स्थिति की सैटिंग करो।'

दूसरी बात, जब ज्ञान की गुह्य बातें सुनते हो, अर्थात् रेग्युलर स्टडी (नियमित अध्ययन) करते हो, उस समय जो प्वाइन्ट्स निकलती हैं, उस हर प्वाइन्ट को सुनते हुए, अनुभवी मूर्त होकर नहीं सुनते। ज्ञानी तू आत्मा हर बात के स्वरूप का अनुभव करती हैं। सुनना अर्थात् उस स्वरूप के अनुभवी बनकर सुनना। लेकिन अनुभवी मूर्त बनना बहुत कम आता है। सुनना अच्छा लगता है, गुह्य भी लगता है, खुश भी होते हैं, बहुत अच्छा खजाना मिल रहा है, लेकिन समाना अर्थात् स्वरूप बनना - इसका अभ्यास होना चाहिए। मैं आत्मा निराकार हूँ - यह बार-बार सुनते हो, लेकिन निराकार स्थिति के अनुभवी बनकर सुनो। जैसी पाइंट, वैसा अनुभव। परमधाम की बातें सुनो तो परमधाम निवासी होकर परमधाम की बातें सुनो। स्वर्गवासी देवताई स्थिति के अनुभवी बन, स्वर्ग की बातें सुनो। इसको कहा जाता है सुनना अर्थात् समाना। समाना अर्थात् स्वरूप बनना। अगर इसी रीति से मुरली सुनो तो शुद्ध संकल्प का खजाना जमा हो जाएगा। और इसी खजाने के अनुभव को बार-बार सुमिरण करने, सारा समय बुद्धि इसी में ही बिजी रहेगी। व्यर्थ संकल्पों से सहज किनारा हो जाएगा। अगर अनुभवी होकर नहीं सुनते, तो बाप के खजाने को अपना खजाना नहीं बनाते। इसीलिए खाली रहते हो। अर्थात् व्यर्थ संकल्पों को स्वयं ही जगह देते। और आगे बढ़कर सारी दिनचर्या में क्या-क्या कमी करते हो, वह फिर दूसरे दिन सुनायेंगे। पहले इन दो बातों को ठीक करो। ज्यादा डोज (Dose;खुराक) नहीं देते हैं। अच्छा।

13.1.78....। स्वयं सेवा का चान्स ले चान्सलर बनो। अब सुना समय क्यों मिला है। अब कोई कम्प्लेन नहीं करना। समय के हिसाब से हरेक को कम्पलीट (Complete) होना है। कम्पलीट आत्मा कभी कम्प्लेन (Complaint) नहीं करती है। हो ही जाता, होता ही है, यह भाषा नहीं बोलती। नया वर्ष, नई भाषा, नया अनुभव। पुरानी चीज़ संभालना अच्छा लगता है लेकिन यूज़ (Use) करना अच्छा नहीं होता। तो आप यूज़ क्यों करते हो? 5000 वर्ष के लिए सम्भाल कर रख दो। पुराने से प्रीत नहीं रखो। सदैव भक्त आत्माओं, भिखारी आत्माओं और प्यासी आत्माओं के सामने अपने को साक्षात् बाप और साक्षात्कार मूर्त समझकर चलो। तीनों ही लाइन लम्बी हैं। इस क्यू (पंक्ति) को समाप्त करने में लग जाओ। प्यासी आत्माओं की प्यास बुझाओ, भिखारियों को दान दो। भक्तों को भक्ति का फल बाप के मिलन का मार्ग बताओ। इस क्यू को

सम्पन्न करने में बिज़ी रहेंगे तो स्वयं के प्रति क्यों की क्यू समाप्त हो जावेगी। समय की इन्तज़ार में नहीं रहो लेकिन तीनों प्रकार की आत्माओं को सम्पन्न बनाने के इन्तज़ाम में रहो। अब तो नहीं पूछेंगे कि विनाश कब होगा। क्यू को समाप्त करो तो परिवर्तन का समय भी समाप्त हो जाएगा। संगम का समय सतयुग से श्रेष्ठ नहीं लगता है? थक गये हो क्या? जब पूछते हो विनाश कब होगा तो थके हुए हो तब तो पूछते हो। बाप का बच्चों से अति स्नेह है। बाप को यह मेला अच्छा लगता है। और बच्चों को स्वर्ग अच्छा लगता है। स्वर्ग तो 21 जन्म मिलेगा ही लेकिन यह संगम नहीं मिलेगा। तो थक मत जाओ। सेवा में लग जाओ तो प्रत्यक्ष फल अनुभव करेंगे। भविष्य फल तो आपका निश्चित है ही लेकिन प्रत्यक्ष फल का अनुभव सुख सारे कल्प में नहीं मिलेगा। इसलिए भक्तों की पुकार सुनो। रहमदिल बनो, महादानी बन महान पुण्यआत्मा का पार्ट बजाओ।

1.12.78..... **कुमारों की यही कम्पलेन है कि हम अकेले हैं।** यह साथ तो दुःख सुख का साथी है। वह साथ तो माथा खराब कर देता। तो युगल हो ना! प्रवृत्ति वाले नहीं हो, सुख की प्रवृत्ति मिल जाए और क्या चाहिए। हमारे जैसा साथी किसी को मिल नहीं सकता। साथी को साथ रखना - साथ रखेंगे तो मन सदा मनोरंजन में रहेगा।

12.1.79..... हरेक विघ्न विनाशक हो या लगन और विघ्न दोनों साथ-साथ चलते हैं? विघ्नों के आने से रूकने वाले तो नहीं हो, हर कल्प विघ्न आये हैं और हर कल्प विघ्न विनाशक बने हो। जो हर कल्प के अनुभवी हैं उनको रिपीट करने में क्या मुश्किल! सदा यह स्मृति रहे कि हम कल्प-कल्प के विजयी हैं। अनेक बार कर चुके हैं अब सिर्फ रिपीट कर रहे हैं, तो **सहज योगी होना चाहिए ना - क्या करें कैसे करें, इन सब कम्पलेन (Complaint) से कम्पलीट (Complete) कम्पलीट आत्माओं की सब कम्पलेन खत्म हो जाती हैं।** सम्पन्न होना अर्थात् सन्तुष्ट, असन्तुष्ट होने का कारण है अप्राप्ति, अप्राप्ति ही असन्तुष्टता को जन्म देती है। अप्राप्त नहीं कोई वस्तु...यह देवताओं का गायन नहीं, आप ब्राह्मणों का गायन है, मास्टर सर्वशक्तवान का अर्थ ही है सम्पन्न स्वरूप।

5.2.79.... अच्छा - स्नेह मिलन से स्नेह की झोली भरकर जावेंगे और फिर सबको स्नेह बाँट देंगे। बाप का स्नेह - ऐसा स्नेह स्वरूप हो जावेंगे जो सबको आपके चित्र, चलन से बाप का स्नेह नज़र आये। ऐसा मिलन मना रहे हो ना। स्नेह मिलन अर्थात् दृढ़ संकल्प द्वारा स्वपरिवर्तन और सब के परिवर्तन सहयोगी बनना। यह है स्नेह मिलन की विशेषता। स्नेह मिलन अर्थात् प्रैक्टिकल संस्कार मिलन - जैसे मिलन में हाथ मिलते हैं ना - यह मिलन है संस्कार मिलन - अगर सबके संस्कार मिलकर

बाप समान हो जाएं - एक ही सबके संस्कार हो जाएं तो क्या होगा? एक राज्य, एक धर्म वाली दुनिया आ जावेगी। यहाँ एक होना ही एक धर्म एक राज्य की दुनिया को लाने का आधार बनेगी। स्नेह मिलन अर्थात् कम्पलेन खत्म और कम्पलीट होकर जाएं।
उल्हने खत्म उल्लास में आ जायें - यह है स्नेह मिलन।

29.10.81.... सभी स्वराज्य अधिकारी बने हो? कोई भी कर्मेन्द्रिय अपने तरफ आकर्षित न करे, सदा बाप की तरफ आकर्षित रहें। किसी भी व्यक्ति व वस्तु की तरफ आकर्षण न जाये। ऐसे राज्य अधिकारी तपस्वी कुमार हो? बिल्कुल विजयी। क्योंकि वायुमण्डल तो कलियुगी है ना और साथ भी हंस और बगुलों का है। ऐसे वातावरण में रहते हुए स्वराज्यधारी होंगे तब सेफ रहेंगे। जरा भी दुनिया के वायब्रेशन की आकर्षण न हो।
कोई कम्पलेन नहीं, सदा कम्पलीट।

17.3.82... कई बच्चों की कम्पलेन है कि याद में तो रहते हैं लेकिन बाप का प्यार नहीं मिलता है। अगर प्यार नहीं मिलता है तो जरूर प्यार पाने की विधि में कमी है। प्यार का सागर बाप, उससे योग लगाने वाले प्यार से वंचित रह जाएं, यह हो नहीं सकता। लेकिन प्यार पाने का साधन है - 'न्यारा बनो'। जब तक देह से वा देह के सम्बन्धियों से न्यारे नहीं बने हो तब तक प्यार नहीं मिलता। इसलिए कहाँ भी लगाव न हो। लगाव हो तो एक सर्व सम्बन्धी बाप से। एक बाप दूसरा न कोई... यह सिर्फ कहना नहीं लेकिन अनुभव करना है। खाओ, पियो, सोओ... बाप-प्यारे अर्थात् न्यारे बनकर। देहधारियों से लगाव रखने से दुख अशान्ति की ही प्राप्ति हुई। जब सब सुन, चखकर देख लिया तो फिर उस जहर को दुबारा कैसे खा सकते? इसलिए सदा न्यारे और बाप के प्यारे बनो।

23.1.85... बापदादा बच्चों के कमजोरी की कभी-कभी कम्पलेन सुन यही कहते, दिव्य बुद्धि मिली, दिव्य नेत्र मिला, इसको विधिपूर्वक सदा यूज़ करते रहो तो न सोचने की फुर्सत, न देखने की फुर्सत रहेगी। न और सोचेंगे न देखेंगे। तो कोई भी कम्पलेन रह नहीं सकती। सोचना और देखना यह दोनों विशेष आधार हैं कम्पलीट होने के वा कम्पलेन करने के। देखते हुए, सुनते हुए सदा सोचो जैसा सोचना वैसा करना हाेता है। इसलिए इन दोनों दिव्य प्राप्तियों को सदा साथ रखो। सहज है ना। हो समर्थ लेकिन बन क्या जाते हो? जब स्थापना हुई तो छोटे-छोटे बच्चे डायलाग करते थे, भोला भाई का। तो हैं समर्थ लेकिन भोला भाई बन जाते हैं। तो भोला भाई नहीं बनो। सदा समर्थ बनो। और औरों को भी समर्थ बनाओ।

6.1.88... जो बाप की याद को हलचल में लावे अर्थात् अपनी तरफ आकर्षित करे, झुकाव करे तो योगी बनके प्रयोग करने वाले नहीं कहेंगे। क्योंकि बाप के बनने

कारण समय प्रति समय प्रकृति दासी अर्थात् वैभवों के साधनों की प्राप्ति बढ़ती जा रही है। अभी - अभी 18 - 19 वर्ष के अन्दर कितनी प्राप्ति हो रही है! सब आराम के साधन बढ़ते जा रहे हैं। लेकिन यह प्राप्ति बाप के बनने का फल मिल रहा है। तो फल को खाते बीज को नहीं भूल जाना। यह साधन बढ़ते जायेंगे थोड़ा समय। लेकिन आराम में आते 'राम' को नहीं भूल जाना। सच्ची सीता रहना। मर्यादा की लकीर से संकल्प रूपी अंगूठा भी नहीं निकालना। क्योंकि यह साधन बिना साधना के यूज करेंगे तो स्वर्ण - हिरण का काम कर लेगा। इसलिए व्यक्ति और वैभव के लगाव और झुकाव से सदा अपने को सेफ रखना, नहीं तो बाप के स्नेही बनने के बजाए, सहजयोगी बनने के बजाए कभी सहयोगी, कभी सहजयोगी, कभी वियोगी - दोनों अनुभव करते रहेंगे। **कभी याद, कभी फरियाद - ऐसी अनुभूति में रहेंगे और कम्पलेन भी कभी पूरी नहीं होगी।**

17.12.89.... टीचर्स कभी कम्पलेन नहीं कर सकती। औरों को कम्पलीट करने वाली हो, कम्पलेन करने वाली नहीं। कभी ऐसे पत्र तो नहीं लिखती हो ना - क्या करें, हो गया, होना तो नहीं चाहिए। वह तो समाप्त हो गया ना। सुनाया था - पत्र लिखो जरूर, मधुबन में पत्र जरूर भेजो परंतु "मैं सदा ओ.के. हूँ" - बस, यह दो लाइन लिखो। पढ़ने वालों को भी टाइम नहीं। फिर कम्पलेन करते कि पत्र का उत्तर नहीं आया। वास्तव में आप सबके पत्रों का उत्तर बापदादा रोज की मुरली में देता ही है। आप लिखेंगे ओ.के. और बापदादा ओ.के. के रिटर्न में कहते - 'यादप्यार और नमस्ते।' तो यह रेसपान्ड हुआ ना। समय को भी बचाना है ना। सेवा समाचार भी शार्ट में लिखो। तो समय की भी एकाँनामी, कागज की भी एकाँनामी, पोस्ट की भी एकाँनामी। हो। एकाँनामी क्या हो सकती है। पत्र 3 पेज में भी लिखा जा सकता है। कोई को विस्तार से लिखने का डायरेक्शन मिलता है तो भल लिखो लेकिन दो लाइन में अपनी गलती की क्षमा ले सकते हो। छिपाओ नहीं, लेकिन शार्ट में लिखो। कितने पत्र लिखते हैं, जिनका कोई सार नहीं होता। बाप को कहो - मेरा यह काम कर ले, मेरे को ठीक कर दे, मेरा धंधा ठीक कर दे, मेरी पत्नी को ठीक कर दे ऐसे पत्र एक बार नहीं 10 बार भेजते हैं। तो अब एकाँनामी के अवतार बनो और बनाओ। अच्छा!

7.3.93... डबल विदेशियों को अकेला रहना, अकेलापन महसूस करना जल्दी आता है? कभी-कभी कम्पलेन आती है ना कि मैं अपने को एलोन (अकेला) महसूस करती हूँ। क्यों अकेले रहते हो? क्यों अकेलापन महसूस करते हो? आदत है, इसलिए? ब्राह्मण आत्माएँ एक सेकेण्ड भी अकेले नहीं हो सकतीं। हो सकती हैं? (नहीं) होना नहीं है लेकिन हो जाते हो! बापदादा ने स्वयं अपना साथी बनाया, फिर अकेले कैसे हो सकते

हो! कई बच्चे कहते हैं कि बाप को 'कम्पेनियन' (साथी) तो बनाया है लेकिन सदा कम्पनी (साथ) नहीं रहती। क्यों? कम्पेनियन बनाया है, इसमें तो ठीक हैं। सभी से पूछेंगे-आपका कम्पेनियन कौन है? तो बाबा ही कहेंगे ना।

बापदादा ने देखा कि जब कम्पेनियन बनाने से भी काम नहीं चलता, कभी-कभी फिर भी अकेले हो जाते हो। अभी और क्या युक्ति अपनायें? कम्पेनियन बनाया है लेकिन कम्बाइन्ड नहीं बने हो। कम्बाइन्ड-स्वरूप कभी अलग नहीं होता। कम्पेनियन से कभी-कभी फ्रेंडली क्वरल (Quarrel-झगड़ा) भी हो जाता है तो अलग हो जाते हो। कभी-कभी कोई ऐसी बात हो जाती है ना, तो बाप से अकेले बन जाते हो। तो कम्पेनियन तो बनाया है लेकिन कम्पेनियन को कम्बाइन्ड रूप में अनुभव करो। अलग हो ही नहीं सकते, किसकी ताकत नहीं जो मुझ कम्बाइन्ड रूप को अलग कर सके-ऐसा अनुभव बार-बार स्मृति में लाते-लाते स्मृतिस्वरूप बन जाओ। बार-बार चेक करो कि कम्बाइन्ड हूँ, किनारा तो नहीं कर लिया? जितना कम्बाइन्ड-रूप का अनुभव बढ़ाते जायेंगे उतना ब्राह्मण जीवन बहुत प्यारी, मनोरंजक जीवन अनुभव होगी।

9.3.94... बापदादा सभी बच्चों को सम्पन्न देखना चाहते हैं। बाप का प्यार है इसलिए बच्चों की कमी अच्छी नहीं लगती। तो क्या याद रखेंगे कि सदा सम्पन्न, सम्पूर्ण रहना ही है कि थोड़ी-थोड़ी कम्पलेन करते रहेंगे? **कम्पलीट! कम्पलेन खत्म। सम्पन्न बनना ही मनाना है।**

* बाप के खज़ानों के मालिक हो तो जो मालिक होता है वो सदा भरपूर, सम्पन्न होता है। तो ऐसे कम्पलीट हो या कम्पलेन और कम्पलीट-दोनों ही चलता है। तो यही सदा स्मृति में रखो कि अधिकारी हैं और अनेक जन्म अधिकारी रहेंगे। गैरन्टी है ना? यह सुख-शान्ति-पवित्रता का अधिकार जन्म-जन्म रहेगा। तो फलक से कहो एक जन्म तो क्या, अनेक जन्म के अधिकारी हैं। अच्छा!

31.12.94.... पहले विदेशियों की ये कम्पलेन आती थी, कि विदेशियों का कल्चर और है, भारत का कल्चर और है। अभी परिवर्तन हो गया है। अभी ऐसी कम्पलेन कोई बिरले की आती है। अभी बदल गये हैं, अभी संस्कार इमर्ज हो गये हैं, कि मुश्किल लगता है भारत का कल्चर? मुश्किल तो नहीं लगता? तो भारत वालों की विशेषता है सदा डबल विदेशियों की मेहमान निवाजी करना। आने और जाने वाले को भी मेहमान कहा जाता है। ऐसे तो मालिक हो लेकिन आते हो और जाते हो तो उस हिसाब से मेहमान भी हो। बापदादा भी मेहमान होकर आता है। तो बापदादा भी भारत का मेहमान हो गया ना! विदेश का मेहमान बना? नहीं बना। भारत के ही मेहमान बने। तो भारत की विशेषता है कि भगवान भी भारत में ही मेहमान होकर आते हैं और आप

सभी को राज्यभाग्य भी भारत वाले देंगे ना। भारत में महल बनायेंगे या विदेश में? कहाँ महल बनायेंगे? भारत में बनायेंगे ना? तो देखो, भारत कितना बड़े दिल वाला है। जो भगवान को भी मेहमान बना सकते हैं वो कितने बड़े हो गये। तो भारत की विशेषता है एक तो सभी की बड़े दिल से मेहमान निवाजी करते हैं और दूसरा भारत स्थापना के निमित्त है। अगर भारत की बहनें विदेश सेवा में नहीं जातीं तो आप लोग कैसे आते? विदेश सेवा के अर्थ भारत की बहनें निमित्त बनी ना। तो भारत स्थापना के निमित्त है। और भारत ही आप सबको राज्य के साथी बनाने के निमित्त है। पहले आपको महल देंगे, पहले आपको रखेंगे। भारत फ्रीखदिल है, 'पहले आप' करने वाले हैं। 'मैंमैं' करने वाले नहीं हैं। भारत सदा ही दानपुण्य करने में होशियार है। तो औरों को आगे बढ़ाना ये पुण्य है। अच्छा-

15.2.2000... मधुबन वालों को खाली नहीं रहना है। खाली रहने चाहते हैं? बिज़ी रहने चाहते हैं ना! या थक जाते हैं? बीच-बीच में 15 दिन छुट्टी भी होती है और होनी भी चाहिए। परन्तु प्रोग्राम के पीछे प्रोग्राम लिस्ट में होना चाहिए तो उमंग-उत्साह रहता है, नहीं तो जब सेवा नहीं होती है तो दादी एक कम्पलेन करती है। कम्पलेन बतायें? कहती है सभी कहते हैं - अपने-अपने गाँव में जायें। चक्कर लगाने जायें, सेवा के लिए भी चक्कर लगाने जायें। इसीलिए बिजी रखना अच्छा है। बिजी होंगे तो खिट-खिट भी नहीं होगी।

30.3.2000.... जैसे स्थूल एक्सरसाइज़ से तन भी दुरुस्त रहता है ना! तो चलते-फिरते यह मन की एक्सरसाइज़ करते रहो। इसके लिए टाइम नहीं चाहिए। 5 सेकण्ड कभी भी निकाल सकते हो या नहीं! ऐसा कोई बिजी है, जो 5 सेकण्ड भी नहीं निकाल सके! है कोई, तो हाथ उठाओ। फिर तो नहीं कहेंगे - क्या करें टाइम नहीं मिलता? यह तो नहीं कहेंगे ना! टाइम मिलता है? तो यह एक्सरसाइज़ बीच-बीच में करो। किसी भी कार्य में हो 5 सेकण्ड की यह मन की एक्सरसाइज़ करो। तो मन सदा ही दुरुस्त रहेगा, ठीक रहेगा। बापदादा तो कहते हैं - हर घण्टे में यह 5 सेकण्ड की एक्सरसाइज़ करो। हो सकती है? देखो, सभी कह रहे हैं - हो सकती है। याद रखना। ओमशान्ति भवन याद रखना, भूलना नहीं। तो जो मन की भिन्न-भिन्न कम्पलेन है ना! क्या करें मन नहीं टिकता! मन को मण बना देते हो। वज़न करते हैं ना! पहले जमाने में पाव, सेर और मण होता था, आजकल बदल गया है। तो मन को मण बना देते हैं बोझ वाला और यह एक्सरसाइज़ करते रहेंगे तो बिल्कुल लाइट हो जायेंगे। अभ्यास हो जायेगा। ब्राह्मण शब्द याद आये तो ब्राह्मण जीवन के अनुभव में आ जाओ। फरिश्ता शब्द कहो तो फरिश्ता बन जाओ। अभी यह अभ्यास करना। कहाँ भी हो 5 सेकण्ड मन को

घुमाओ, चक्कर लगाओ। चक्कर लगाना तो अच्छा लगता है ना! टीचर्स ठीक है ना! राउण्ड लगाना आयेगा ना? बस राउण्ड लगाओ फिर कर्म में लग जाओ। हर घण्टे में राउण्ड लगाया फिर काम में लग जाओ क्योंकि काम को तो छोड़ नहीं सकते हैं ना! ड्युटी तो बजानी है। लेकिन 5 सेकण्ड, मिनट भी नहीं, सेकण्ड। नहीं निकल सकता है? निकल सकता है? यू. एन. की आफिस में निकल सकता है? मास्टर सर्वशक्तित्वान हो। तो मास्टर सर्वशक्तित्वान क्या नहीं कर सकता!

31.12.2001....। बापदादा मधुबन निवासियों को सदा नम्बरवन दृष्टि से देखते हैं। नम्बरवार नहीं, नम्बरवन। है ना नम्बरवन! दादी के पास कोई कम्पलेन नहीं। सब कम्पलीट हो रहे हैं इसलिए कम्पलेन नहीं है। अच्छे हैं, फिर भी अथक तो हैं। मधुबन के सेवाधारी सब मांगते हैं। महामण्डलेश्वर भी कहकर जाते हैं मधुबन के सेवाधारी हमको भेजो। तो नम्बरवन तो हुए ना! अच्छे हैं। पक्के भी हैं, अच्छे भी हैं। ऐसे है ना! ऐसे तो नहीं बापदादा ऐसे ही कह रहा है। बापदादा को तो अच्छे लगते हैं। बाकी कभी-कभी ज्यादा काम हो जाता है, बापदादा देखते हैं कभी-कभी ज्यादा बोझ भी पड़ जाता है। लेकिन फिर भी अमर हैं। अमर भव का वरदान मिला हुआ है। ठीक है ना! अमर हैं? अच्छा। मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।

15.11.2005.... आज बापदादा सभी को चाहे सम्मुख बैठे हैं, चाहे दूर बैठे भी बाप के दिल में बैठे हैं, सभी को आज का दिन मेहनत मुक्त बनाने चाहते हैं। बनेंगे? ताली तो बजा दी, बनेंगे? कल से कोई दादियों के पास नहीं आयेगा। मेहनत नहीं करार्येंगे? मौज से मिलेंगे। जोनहेड के पास नहीं जायेंगे, कम्पलेन नहीं करेंगे, कम्पलीट। ठीक है? अभी हाथ उठाओ। देखो सोच के हाथ उठाना, ऐसे नहीं उठा लेना। पहली लाइन नहीं उठा रही है। आप लोगों ने उठाया। कोई कम्पलेन नहीं। कोई मेरा मेरा नहीं, कोई मेरा नहीं। मैं भी नहीं, मेरा भी नहीं, खत्म। देखो वायदा तो किया है, अच्छा है मुबारक हो लेकिन क्या है, वायदे का फायदा नहीं उठाते हो। वायदा बहुत जल्दी कर लेते हो लेकिन फायदा उठाने के लिए रोज एक तो रियलाइजेशन दूसरा रिवाइज करो, वायदे को रोज रिवाइज करो क्या वायदा किया? अमृतवेले मिलने के बाद वायदा और फायदा दोनों के बैलेन्स का चार्ट बनाओ। वायदा क्या किया? और फायदा क्या उठा रहे हैं? रियलाइज करो, रिवाइज करो, बैलेन्स हो जायेगा तो ठीक हो जायेगा।

15.11.2005.... इस 70वें वर्ष का थीम है - सफल करो, सफल कराओ। सफलतामूर्त बनो। सब सफल करो। डबल लाइट बनना है नातो सफल कर लो। संस्कार को भी सफल करो। जो ओरीजनल आपके आदि संस्कार, देवताई संस्कार, अनादिसंस्कार आत्मा के उसको इमर्ज करो। उल्टे संस्कारों का संस्कार करो। आदि अनादि संस्कार इमर्ज

करो। अभीसभी की कम्पलेन विशेष एक ही रह गई है, संस्कार नहीं बदलते, संस्कार नहीं बदलते। तो 70वें वर्ष में कुछ तोकमाल करेंगे ना। तो यह परिवर्तन की विशेषता दिखाओ। ठीक है ना। 70वें वर्ष में करना है ना? करना है, करेंगे? करेंगे या हुआ ही पड़ा है? सिर्फ निमित्त बनना है। अच्छा। बापदादा सभी बच्चों को देख गीत गाते हैं - वाह! बच्चे वाह!

3.3.2007.....अभी डबल विदेशियों में पुरुषार्थ की रफ्तार भी अच्छी चल रही है लेकिन अभी भी थोड़ी थोड़ी कम्पलेन है, पुरुषार्थ की तरफ अटेन्शन अच्छा है, अटेन्शन दिलाते भी अच्छा है और अटेन्शन देते भी अच्छा है सिर्फ उसको अविनाशी बनाने के लिए कोई ऐसा प्लैन बनाओ जो रिफेशमेंट वहाँ जाने के बाद भी बढ़ती रहे।

31.12.2007..... सबका एक आवाज निकले दिल से, यह बापदादा चाहता है, वह क्या? नो प्राब्लम, कम्पलीट। प्राब्लम नहीं लेकिन कम्पलीट बनना ही है। दृढ़ निश्चयबुद्धि, विजयमाला के नजदीक मणका बनना ही है। ठीक है ना! बनना है ना! मधुबन वाले बनना है। नो कम्पलेन? नो कम्पलेन। हाथ उठाओ हिम्मत रखने वाले। नो प्राब्लम। वाह! मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।

देखो, निश्चय का प्रत्यक्ष प्रमाण है रूहानी नशा। अगर रूहानी नशा नहीं तो निश्चय भी नहीं है। फुल निश्चय नहीं है, थोड़ा बहुत है। तो नशा रखो क्या बड़ी बात है! कितने कल्प आप ही बाप समान बने हैं, याद है? अनगिनत बार बने हो। तो यह नशा रखो हम ही बने हैं, हम ही हैं और हम ही बार-बार बनते रहेंगे। यह नशा सदा ही कर्म में दिखाई दे। संकल्प में नहीं, बोल में नहीं, लेकिन कर्म में, कर्म का अर्थ है चलन में, चेहरे में दिखाई दे। तो होमवर्क मिल गया। मिला ना? अब देखेंगे नम्बरवार में आते हो या नम्बरवन में आते हो। अच्छा।

ओमशांति

6. डिफेक्ट और इफेक्ट

24.7.70....(ईविल स्पिरिट्स का रूप कौन सा है?) उनका स्पष्ट रूप है किन्हीं आत्माओं में प्रवेश होना । लेकिन ईविल स्पिरिट्स का कुछ गुप्त रूप भी होता है । चलते-चलते कोई में विशेष कोई न कोई बुरा संस्कार बिल्कुल प्रभावशाली रूप में देखने में आएगा । जिसका इफेक्ट क्या होगा कि उनका दिमाग अभी-अभी एक बात, अभी अभी दूसरी बात । वह भी फ़ोर्स से कहेंगे । उनकी स्थिति भी एक ठिकाने टिकी हुई नहीं होगी । वह अपने को भी परेशान करते हैं, दूसरों को भी परेशान करेंगे । स्पष्ट रूप में जो ईविल स्पिरिट्स आती हैं उसको परख कर और उससे किनारा करना सहज है । लेकिन आप लोगों के सामने स्पष्ट रूप में कम आएगी । गुप्त रूप में बहुत आएगी । जिसको आप लोग साधारण शब्दों में कहते हो कि पता नहीं उनका दिमाग कुछ पागल सा लगता है । लेकिन उस समय उसमें यह ईविल अर्थात् बुरे संस्कारों का फ़ोर्स इतना हो जाता है जो वह ईविल स्पिरिट्स के समान ही होती है । जैसे वह बहुत तंग करते हैं वैसे यह भी बहुत तंग करते हैं । यह बहुत होने वाला है । इसलिए सुना कि अभी समय की बचत, संकल्पों की बचत, अपनी शक्ति की बचत यह योजना बनाकर बीच-बीच में उस बिंदी रूप की स्थिति को बढ़ाओ । जितना बिन्दि रूप की स्थिति होगी उतना कोई भी ईविल स्पिरिट्स वा ईविल संस्कार का फ़ोर्स आप लोगों पर वार नहीं करेगा । और आप लोगों का शक्तिरूप ही उन्हीं को मुक्त करेगा । यह भी सर्विस करनी है । ईविल स्पिरिट्स को भी मुक्त करना है क्योंकि अभी अंत के समय का भी अन्त है तो ईविल स्पिरिट्स वा ईविल संस्कारों को भी अति में जाकर फिर उन्हीं का अंत होगा । किचड़ा सारा बाहर निकल कर भस्म हो जायेगा । इसलिए उन्हीं का सामना करने के लिए अगर अपनी समस्याओं से ही मुक्त नहीं हुए होंगे तो इन समस्याओं से कैसे सामना कर सकेंगे । इसलिए कहते हैं बचत स्कीम बनाओ और प्रैक्टिकल में लाओ तब अपना और सर्व आत्माओं का बचाव कर सकेंगे ।

26.6.72.... आप सभी का लक्ष्य परफेक्ट बनने का है ना। परफेक्ट अर्थात् कोई भी डिफेक्ट नहीं। अगर डिफेक्ट होगा तो उसकी निशानी क्या होगी? कोई- न-कोई प्रकार का - चाहे मन्सा संकल्प में, चाहे सम्पर्क वा सम्बन्ध में किसी भी प्रकार से माया का ज़रा भी इफेक्ट होने कारण डिफेक्ट होता है। जैसे शरीर को भी कोई बात का इफेक्ट होता है तब बीमारी अर्थात् डिफेक्ट होता है। जैसे शरीर को मौसम का इफेक्ट हो जाता है वा खान-पान का इफेक्ट होता है तब बीमारी आती है। तो कोई भी डिफेक्ट न रहे -- इसके लिये माया के इफेक्ट से बचना है। कोई-न-कोई प्रकार से इफेक्ट आ

जाता है इसलिये परफेक्ट नहीं हो सकते। तो कोशिश यह करनी है - कोई भी प्रकार का इफेक्ट न हो, इफेक्ट-प्रूफ हो जायें। इसके लिये साधन भी समय-प्रति-समय मिलते रहते हैं। मन्सा को इफेक्ट से दूर कैसे रखो, वाचा को कोई भी इफेक्ट से दूर कैसे रखो वा कर्मणा में भी इफेक्ट से दूर कैसे रहो - एक एक बात में अनेक प्रकार की युक्तियाँ बताई हुई हैं। लेकिन इफेक्ट हो जाता है, बाद में वह साधन करने की कोशिश करते हो। समझदार जो होते हैं वह पहले से ही अटेन्शन रखते हैं। जैसे गर्मा की सीजन में गर्मा का इफेक्ट न हो, इसका साधन पहले से ही कर लेते; उनको कहेंगे सेन्सीबूल। अगर समझ कम है तो गर्मा का इफेक्ट हो जाता है। तो कमल फूल समान सदा इफेक्ट से न्यारा और बाप का प्यारा बनना है। हरेक को अपने पुरुषार्थ प्रमाण वा अपनी स्थिति प्रमाण भी मालूम होता है कि हमारी आत्मा में विशेष किस बात का इफेक्ट समय-प्रति- समय होता है। मालूम होते हुये उन साधनों को अपना नहीं सकते। चाहते हुये भी उस समय जैसे अनजान बन जाते हैं। जैसे कोई इफेक्ट होता है तो मनुष्य की बुद्धि को डिफेक्ट कर देता है, फिर उस समय बुद्धि काम नहीं करती। वैसे माया का भी भिन्न-भिन्न रूप से इफेक्ट होने से बेसमझ बन जाते हैं। इसलिये परफेक्ट बनने में डिफेक्ट रह जाता है। जैसे अपने शरीर की सम्भाल रखना ज़रूरी है, वैसे आत्मा के प्रति भी पूरी समझ रख चलना चाहिए, तब ही बहुत जल्दी इफेक्ट से परे परफेक्ट हो जावेंगे। जानते हुये भी कहाँ संग में आकर भी गलती कर देते हैं। समझते भी हैं लेकिन उस समय वातावरण वा कोई भी समस्या के कारण, संस्कारों के कारण वा सम्पर्क में आने का शक्ति कम होने कारण फिर फिर उस इफेक्ट में आ जाते हैं। सदैव अपने को चेक करना चाहिए कि मुख्य किस बात के निमित्त इफेक्ट होता है। उस इफेक्ट से सदा अपना बचाव रखना है, तब ही सहज परफेक्ट बन जावेंगे। मुख्य पुरुषार्थ यह है। आप लोग हरेक अपने मुख्य इफेक्ट के कारण को जानते तो हो। जानते हुये भी माया वा समस्या इफेक्ट में थोड़ा बहुत ला देती है ना। तो इफेक्ट से अपने को बचाना है। इफेक्ट-प्रूफ बने हो? संगदोष, अन्नदोष न हो, उसके तरीके जानते हो तो अपन को इफेक्ट-प्रूफ भी कर सकते हो। माया सेन्सीबूल से अनजान बना देती है। अगर सदा ज्ञान अर्थात् सेन्स में रहे तो सेन्सीबूल कभी किसके इफेक्ट में नहीं आता है। कोई इफेक्ट से बच कर आता है तो कहा जाता है - यह तो बड़ा सेन्सीबूल है। तो माया पहले सेन्स को कमजोर करती है। जैसे सामना करने वाले दुश्मन पहले कमजोर करने की कोशिश करते हैं, फिर वार करते हैं तब विजयी बनते हैं। पहले कमजोर करने का कोई तरीका ढूँढते हैं। माया दुश्मन भी पहले से सेन्स को कमजोर कर देती है। समझ नहीं सकते कि यह राइट है वा रॉग है। फिर इफेक्ट हो

जाता है। इफेक्ट ही डिफेक्ट का रूप धारण कर लेता है। डिफेक्ट परफेक्ट बनने नहीं देता है। लक्ष्य क्या रखा है? परफेक्ट अर्थात् 16 कला सम्पन्न। थोड़ा-बहुत डिफेक्ट है तो 14 कला। तो क्या लक्ष्य रखा है? जो सेन्सीबल होगा वह सक्सेसफुल जरूर होगा। अच्छा!..

2.8.72.. .. हर संकल्प में ऑब्जेक्ट और रेस्पेक्ट दोनों की प्राप्ति का अनुभव करते हैं तो परफेक्ट कहेंगे। परफेक्ट अर्थात् कोई भी इफेक्ट से दूर परफेक्ट। इफेक्ट से परे है तो परफेक्ट है। चाहे शरीर का, चाहे संकल्पों का, चाहे कोई भी सम्पर्क में आने से किसके भी वायब्रेशन वा वायुमण्डल - सभी प्रकार के इफेक्ट से परे हो जावेंगे। तो समझो सब्जेक्ट में पास अर्थात् परफेक्ट हैं। ऐसे बन रहे हो ना। लक्ष्य तो यही है ना। अब अपनी चेकिंग ज्यादा होनी चाहिए। जैसे दूसरों को कहते हो कि समय के साथ स्वयं को भी परिवर्तन में लाओ, वैसे ही सदैव अपने को भी यह स्मृति में रहे कि समय के साथ-साथ स्वयं को भी परिवर्तन लाना है। अपने को परिवर्तन में लाते-लाते सृष्टि परिवर्तन हो जावेगी।

***लेक्चर्स तो करते हैं लेकिन लेक्चर के साथ-साथ फीचर्स भी अट्रैक्ट करें तक लेक्चर का इफेक्ट हो।** तो अपने को हर सब्जेक्ट में चेक करो। आजकल लेक्चर में आपका कम्पीटीशन करें तो इसमें कई और भी जीत लेंगे। लेकिन जो प्रैक्टिकल में है उसमें सभी आपसे हार लेंगे। मुख्य विशेषता प्रैक्टिकल लाइफ की है। प्रैक्टिकल कोई भी बात आप बताओ तो एकदम चुप हो जावेंगे। तो लेक्चर्स से फिर प्रैक्टिकल का भाव प्रकट हो जावेगा। तब वह लेक्चर देने से न्यारा दिखाई दे। जो शब्द बोलते हो वह नैनों से दिखाई दें।

यह जो बोलते हैं वह प्रैक्टिकल है, यह अनुभवीमूर्त हैं। तब उसका प्रभाव पड़ सकता है। बाकी सुन-सुन कर तो सभी थक गये हैं। बहुत सुना है। अनेक सुनाने वाले होने कारण सुनने से सभी थके हुये हैं। कहते हैं -- सुना तो बहुत है, अब अनुभव करना चाहते हैं, कोई 'प्राप्ति' कराओ। तो लेक्चर में ऐसी पावर होनी चाहिए जो वह एक-एक शब्द अनुभव कराने वाला हो। जैसे आप समझाते हो न कि अपने को आत्मा समझो, ना कि शरीर। तो ये शब्द बोलने में भी इतनी पावर होनी चाहिए जो सुनने वालों को आपके शब्दों की पावर से अनुभव हो। एक सेकेण्ड के लिये भी अगर उनको अनुभव हो जाता है; तो अनुभव को वह कब छोड़ नहीं सकते, आकर्षित हुआ आपके पास पहुँचेगा। जैसे बीच-बीच में आप भाषण करते-करते उनको साइलेंस में ले जाने का अनुभव कराते हो, तो इस प्रैक्टिस को बढ़ाते जाओ। उन्हीं को अनुभव में ले जाते जाओ इस पुरानी दुनिया से बेहद का वैराग दिलाना चाहते हो तो भाषण में जो प्वाइंट्स देते हो वह देते हुये

वैराग्य-वृत्ति के अनुभव में ले आओ। वह फील करें कि सचमुच यह सृष्टि जाने वाली है, इससे तो दिल लगाना व्यर्थ है। तो जरूर प्रैक्टिकल करेंगे। उन पंडितों आदि के बोलने में भी पावर होती है। एक सेकेण्ड में खुशी दिला देते, एक सेकेण्ड में रूला देते। तब कहते हैं इनका भाषण इफेक्ट करने वाला है। सारी सभा को हंसाते भी हैं, सभी को श्मशानी वैराग्य में लाते भी हैं ना। जब उन्हीं के भाषण में इतनी पावर होती है; तो क्या आप लोगों के भाषण में वह पावर नहीं हो सकती है? अशरीरी बनाना चाहो तो वह अनुभव करा सकते हैं? वह लहर छा जावे। सारी सभा के बीज बाप के स्नेह की लहर छा जावे। उसको कहा जाता है प्रैक्टिकल अनुभव कराना। अब ऐसे भाषण होने चाहिए, तब कुछ चेंज होगी। वह समझें कि इन्हीं के भाषण तो दुनिया से न्यारे हैं।

18.1.73.. .. परसेन्टेज वाला कभी भी परफेक्ट नहीं बन सकता। परसेन्टेज अर्थात् डिफेक्ट (DEFECT) वाला कभी परफेक्ट नहीं बन सकता, इसलिये इस वर्ष में परसेन्टेज को मिटा कर परफेक्ट बनो। तब यह वर्ष विनाश की वर्षा लायेगा। एक वर्ष का समय दे रहे हैं जो कि फिर यह उलहना न दें कि “हमको क्या पता”? एक वर्ष अनेक वर्षों की श्रेष्ठ प्रारब्ध बनाने के निमित्त है। अपने आप ही चेकर (Checker) बन अपने आप को चेक करना। अगर मुख्य इस बात में अपने को परफेक्ट बनाया तो अनेक प्रकार के डिफेक्ट स्वतः ही समाप्त हो जायेंगे। यह तो सहज पुरुषार्थ है ना? अगर स्वयं बाप के साथ लव में लवलीन रहेंगे तो औरों को भी सहज ही आप-समान व बाप-समान बना सकेंगे।

18.7.74.... दिव्य-बुद्धि के बजाय, जब साधारण लौकिक बुद्धि वाले बन जाते हैं, तब माया को परख नहीं सकते व माया के वार से बच नहीं सकते व अपनी चैकिंग नहीं कर सकते। पहले यह देखो कि क्या अपना दिव्य बुद्धि-रूपी नेत्र अपने पास कायम है? कहीं दिव्य बुद्धि-रूपी नेत्र पर, माया के संगदोष व वातावरण का प्रभावशाली जंग तो नहीं लग रहा है व **कोई डिफेक्ट तो नहीं कर रहा है?**

अपनी ऐसी श्रेष्ठ तस्वीर बनाने के लिये मुख्य तीन विशेषताओं को भरने के लिये तीन शब्द याद रखो-(1) निर्वाण स्थिति में होना है (2) निर्माण बनना है और (3) निर्माण करना है। निर्वाण, निर्माण और निर्माण अर्थात् मान से परे-यह तीन शब्द स्मृति में रखो तो तकदीर की तस्वीर आकर्षणमय बन जायेगी।

1.11.71.... हैं ही सदा सहयोगी अर्थात् योगी। इसी एक बात को नेचर और नैचरल करने से भी सब्जेक्ट परफेक्ट हो जायेंगे। **परफेक्ट अर्थात् इफेक्ट से परे, डिफेक्ट से भी परे हो जायेंगे।** तो आज से सभी निरन्तर सहज योगी बने वा अभी बनेंगे?

26.6.72.... आप सभी का लक्ष्य परफेक्ट बनने का है ना। परफेक्ट अर्थात् कोई भी डिफेक्ट नहीं। अगर डिफेक्ट होगा तो उसकी निशानी क्या होगी? कोई- न-कोई प्रकार का - चाहे मन्सा संकल्प में, चाहे सम्पर्क वा सम्बन्ध में किसी भी प्रकार से माया का ज़रा भी इफेक्ट होने कारण डिफेक्ट होता है। **जैसे शरीर को भी कोई बात का इफेक्ट होता है तब बीमारी अर्थात् डिफेक्ट होता है।** जैसे शरीर को मौसम का इफेक्ट हो जाता है वा खान-पान का इफेक्ट होता है तब बीमारी आती है। तो कोई भी डिफेक्ट न रहे -- इसके लिये माया के इफेक्ट से बचना है। कोई-न-कोई प्रकार से इफेक्ट आ जाता है इसलिये परफेक्ट नहीं हो सकते। तो कोशिश यह करनी है - कोई भी प्रकार का इफेक्ट न हो, इफेक्ट-प्रूफ हो जायें। इसके लिये साधन भी समय-प्रति-समय मिलते रहते हैं। मन्सा को इफेक्ट से दूर कैसे रखो, वाचा को कोई भी इफेक्ट से दूर कैसे रखो वा कर्मणा में भी इफेक्ट से दूर कैसे रहो - एक एक बात में अनेक प्रकार की युक्तियाँ बताई हुई हैं। लेकिन इफेक्ट हो जाता है, बाद में वह साधन करने की कोशिश करते हो। समझदार जो होते हैं वह पहले से ही अटेन्शन रखते हैं। जैसे गर्मा की सीजन में गर्मा का इफेक्ट न हो, इसका साधन पहले से ही कर लेते; उनको कहेंगे सेन्सीबल। अगर समझ कम है तो गर्मा का इफेक्ट हो जाता है। तो कमल फूल समान सदा इफेक्ट से न्यारा और बाप का प्यारा बनना है। हरेक को अपने पुरुषार्थ प्रमाण वा अपनी स्थिति प्रमाण भी मालूम होता है कि हमारी आत्मा में विशेष किस बात का इफेक्ट समय-प्रति- समय होता है। मालूम होते हुये उन साधनों को अपना नहीं सकते। चाहते हुये भी उस समय जैसे अनजान बन जाते हैं। जैसे कोई इफेक्ट होता है तो मनुष्य की बुद्धि को डिफेक्ट कर देता है, फिर उस समय बुद्धि काम नहीं करती। **वैसे माया का भी भिन्न-भिन्न रूप से इफेक्ट होने से बेसमझ बन जाते हैं। इसलिये परफेक्ट बनने में डिफेक्ट रह जाता है।** जैसे अपने शरीर की सम्भाल रखना ज़रूरी है, वैसे आत्मा के प्रति भी पूरी समझ रख चलना चाहिए, तब ही बहुत जल्दी इफेक्ट से परे परफेक्ट हो जावेंगे। जानते हुये भी कहाँ संग में आकर भी गलती कर देते हैं। समझते भी हैं लेकिन उस समय वातावरण वा कोई भी समस्या के कारण, संस्कारों के कारण वा सम्पर्क में आने का शक्ति कम होने कारण फिर फिर उस इफेक्ट में आ जाते हैं। सदैव अपने को चेक करना चाहिए कि मुख्य किस बात के निमित्त इफेक्ट होता है। उस इफेक्ट से सदा अपना बचाव रखना है, तब ही सहज परफेक्ट बन जावेंगे। मुख्य पुरुषार्थ यह है। आप लोग हरेक अपने मुख्य इफेक्ट के कारण को जानते तो हो। जानते हुये भी माया वा समस्या इफेक्ट में थोड़ा बहुत ला देती है ना। तो इफेक्ट से अपने को बचाना है। इफेक्ट-प्रूफ बने हो? संगदोष, अन्नदोष न हो, उसके

तरीके जानते हो तो अपन को इफेक्ट-प्रूफ भी कर सकते हो। माया सेन्सीबूल से अनजान बना देती है। अगर सदा ज्ञान अर्थात् सेन्स में रहे तो सेन्सीबूल कभी किसके इफेक्ट में नहीं आता है। कोई इफेक्ट से बच कर आता है तो कहा जाता है - यह तो बड़ा सेन्सीबूल है। तो माया पहले सेन्स को कमजोर करती है। जैसे सामना करने वाले दुश्मन पहले कमजोर करने की कोशिश करते हैं, फिर वार करते हैं तब विजयी बनते हैं। पहले कमजोर करने का कोई तरीका ढूँढते हैं। माया दुश्मन भी पहले से सेन्स को कमजोर कर देती है। समझ नहीं सकते कि यह राइट है वा रॉग है। फिर इफेक्ट हो जाता है। इफेक्ट ही डिफेक्ट का रूप धारण कर लेता है। डिफेक्ट परफेक्ट बनने नहीं देता है। लक्ष्य क्या रखा है? परफेक्ट अर्थात् 16 कला सम्पन्न। **थोड़ा-बहुत डिफेक्ट है तो 14 कला।** तो क्या लक्ष्य रखा है? जो सेन्सीबूल होगा वह सक्सेसफुल जरूर होगा। अच्छा!

18.1.73.... यदि कोई भी वस्तु में लव है तो बाप से लव परसेन्टेज में हो जाता है। अपनी देह में, अपनी कोई भी वस्तु में यदि अपनापन है तो समझो कि लव में परसेन्टेज है। अपनेपन को मिटाना ही बाप की समानता को लाना है। जहाँ अपनापन है, वहाँ बापदादा सदा साथ नहीं हैं।

परसेन्टेज वाला कभी भी परफेक्ट नहीं बन सकता। परसेन्टेज अर्थात् डिफेक्ट (DEFECT) वाला कभी परफेक्ट नहीं बन सकता, इसलिये इस वर्ष में परसेन्टेज को मिटा कर परफेक्ट बनो। तब यह वर्ष विनाश की वर्षा लायेगा।

9.5.83... सेवाधारी आत्माओं के सेवा के मुख्य लक्षण - 'त्याग और तपस्या' हैं, इसी लक्षण के आधार पर सदा त्यागी और तपस्वी की दृष्टि से देखो, न कि दैहिक दृष्टि से। श्रेष्ठ परिवार है तो सदा श्रेष्ठ दृष्टि रखो। क्योंकि यह महापाप कभी प्राप्ति स्वरूप का अनुभव करा नहीं सकता। सदा ही कोई न कोई कर्म में, संकल्प में, सम्बन्ध-सम्पर्क में डिफेक्ट वा इफेक्ट इसी उतराई और चढ़ाई में चलता रहेगा। कभी भी परफेक्ट स्थिति का अनुभव नहीं कर सकेगा। इसलिए सदा याद रखो पूज्य आत्मा के बदले पाप आत्मा तो नहीं बन गये!

21.12.92.... समझदार अगर समझता है कि यह बुरी चीज है, तो क्या बुरी समझते हुए अपने पास जमा करेगा? अपने पास अच्छी रीति सम्भाल कर रखेगा? छोड़ देगा ना। या जमा करना ही समझदारी है? यह समझदारी है? और सोचो, अगर बुरी बात वा बुरी चलन को स्वयं में धारण कर लिया, तो क्या आपकी बुद्धि, वृत्ति, वाणी सदा सम्पूर्ण स्वच्छ मानी जायेगी? अगर जरा भी कोई डिफेक्ट वा दाग रह जाता है, किचड़ा रह जाता है तो डिफेक्ट वाला कभी परफेक्ट नहीं कहला सकता-, प्रसन्नचित्त नहीं रह

सकता। अगर कोई की बुराई चित्त पर है, तो उसका चित्त सदा प्रसन्नचित्त नहीं रह सकता और चित्त पर धारण की हुई बातें वाणी में जरूर आयेंगीचाहे एक के आगे - वर्णन करे, चाहे अनेक के आगे वर्णन करे।

लेकिन कर्मों की गति का गुह्य रहस्य सदा सामने रखो। अगर किसी की भी बुराई वा गलत बात चित्त के साथ वर्णन करते होयह व्यर्थ वर्णन ऐसा ही है जैसे कोई गुम्बज़ - अपना ही आवाज़ और ही बड़े रूप में बदल अपने पास ही में आवाज़ करता है तो वह आता है। गुम्बज़ में आवाज करके देखा है ? तो अगर किसी की बुराई करने के, गलत को गलत फैलाने के संस्कार हैं, जिसको आप लोग आदत कहते हो, तो आज आप किसकी ग्लानि करते हो और अपने को बड़ा समझदार, गलती से दूर समझकर वर्णन करते हो, लेकिन यह पक्का नियम है अथवा कर्मों की फिलॉसफी है कि आज आपने किसकी ग्लानि की और कल आपकी कोई दुगुनी ग्लानि करेगा। क्योंकि यह गलत बातें इतनी फास्ट गति से फैलती हैं जैसे कोई विशेष बीमारी के जर्म्स बहुत जल्दी (जीवाणु) ग्लानि की वहाँ तक पहुँचते जरूर हैं। आपने फैलते हैं और फैलते हुए जर्म्स जिसकी एक ग्लानि की होगी और वह आपको गलत सिद्ध करने के लिए आपकी दस ग्लानि

करेंगे। तो रिजल्ट क्याहुई? कर्मों की गति क्या हुई? लौट कर कहाँ आई? अगर आपको शुभ भावना है उस आत्मा को ठीक करने की, तो गलत बात शुभ भावना के स्वरूप में विशेष निमित्त स्थान पर दे सकते हो, फैलाना रांग है। कई कहते हैंहमने - किसको कहा नहीं, लेकिन वो कह रहे थे तो मैंने भी हाँ में हाँ कर दिया, बोला नहीं। आपके भक्तिमार्ग के शास्त्रों में भी वर्णन है कि बुरा काम किया नहीं लेकिन देखा - भी, साथ भी दिया तो वह पाप है। 'हाँ' में 'हाँ' मिलानायह भी कर्मों की गति के प्रमाण - पाप में भागी बनना है।

वर्तमान समय कर्मों की गति के ज्ञान में बहुत इज़ी हो गये हैं। लेकिन यह छोटेछोटे - सूक्ष्म पाप श्रेष्ठ सम्पूर्ण स्थिति में विघ्न रूप बनते हैं। इज़ी बनने की निशानियां क्या हैं ? वह सदा ऐसा ही सोचतेसमझते कि यह तो और भी करते हैं-, यह तो आजकल चलता ही है। या तो अपने आपको हल्का करने के लिए यही कहेंगे किमैंने हंसी में - कहा, मेरा भाव नहीं था, ऐसे ही बोल दिया। यह विधि सम्पूर्ण सिद्धि को प्राप्त होने में सूक्ष्म विघ्न बन जाता है। इसलिए ज्ञान तो बहुत मिल गया है, रचता और रचना के ज्ञान को सुनना, वर्णन करना बहुत स्पष्ट हो गया है। लेकिन कर्मों की गुह्य गति का ज्ञान बुद्धि में सदा स्पष्ट नहीं रहता, इसलिए इज़ी हो जाते हैं। कई बच्चों की रूहरिहान करते अपने प्रति भी कम्प्लेन होती है कि जैसे बाप कहते हैं, बाप बच्चों में जो श्रेष्ठ आशाए रखते हैं, जो चाहते हैं, जितना चाहते हैंउतना नहीं है। इसका कारण क्या -

है? ये अति सूक्ष्म व्यर्थ कर्म बुद्धि को, मन को उंचा अनुभव करने नहीं देते। योग लगाने बैठते हैं लेकिन काफी समय युद्ध में चला जाता, व्यर्थ को मिटाए समर्थ बनने में समय चला जाता है। इसलिए क्या करना चाहिए? जितना उंचा बनते हैं, तो उंचाई में अटेन्शन भी उंचा रखना पड़ता है।

7.3.95.. .. दूसरे की राय, दूसरे की बात को भी इतना ही रिगार्ड दो जितना अपनी बात को रिगार्ड देते हो। विचार देना अलग चीज़ है, आपको उनके विचार अगर ठीक नहीं भी लगते हैं तो उसके इफेक्ट में आना, अवस्था नीचेऊपर हो जाये तो ये सेवा, सेवा नहीं होती। एडजस्ट करना, दूसरों के विचार को भी अपने विचारों के माफिक सोचनायह है दूसरे के विचारों को रिगार्ड देना।-समझना

13.2.99.. .. दुनिया के लिए कुछ भी हो जाए आपको निर्भय और हर्षितमुख हो खेल देखना है। खेल में खून भी दिखाते हैं तो प्यार भी दिखाते हैं। लड़ाई भी दिखाते हैं तो अच्छी बातें भी दिखाते हैं। फिर खेल में भय होता है क्या? क्या होगा, क्या हुआ, क्या हुआ? यह सोचते हैं क्या? मजे से बैठकर देखते हैं। तो यह भी बेहद का खेल है। अगर जरा भी भय वा घबराहट होगी क्या हो गया -, क्या हो गयाऐसा तो होना नहीं ... चाहिए, क्यों हो गया तो ऐसी स्थिति वाले को इफेक्ट आयेगा। अच्छे में अच्छी स्थिति और गड़बड़ की स्थिति में खुद भी गड़बड़ में आ जायेंगे, हलचल में आ जायेंगे। इसलिए 99 हो या 2 हजार हो, आपको क्या है? होने दो खेल। मजे से देखो। घबराना नहीं। हाय यह क्या हो गयासंकल्प में भी नहीं आये। सब पूछते हैं ! 99 में क्या होगा? कुछ होगा, नहीं होगा। बापदादा कहते हैं आप लोगों ने ही प्रकृति को सेवा दी है कि खूब सफाई करो, उसको लम्बालम्बा झाड़ू दिया है-, सफा करो। तो घबराते क्यों हो? आपके आर्डर से वह सफाई करायेगी तो आप क्यों हलचल में आते हो? आपने ही तो आर्डर दिया है। तो अचल अडोल बन मन और बुद्धि-को बिल्कुल शक्तिशाली बनाए अचलअडोल स्थिति में स्थित हो जाओ। प्रकृति का खेल देखते चलो। घबराना नहीं। - आप अलौकिक हो, साधारण नहीं हो। साधारण लोग हलचल में आयेंगे, घबरायेंगे। अलौकिक, मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मार्ये खेल देखते अपने विश्वकल्याण के कार्य में - बिजीरहेंगे। अगर मन और बुद्धि को फ्री रखा तो घबरायेंगे। मन और बुद्धि से लाइट हाउस हो, लाइट फैलायेंगे, इस कार्य में बिजी रहेंगे तो बिजी आत्मा को भय नहीं होगा, साक्षीपन होगा; और कोई भी हलचल हो अपने बुद्धि को सदा ही क्लीयर रखना, क्योंकिया में बुद्धि को बिजी वा भर-ा हुआ नहीं रखना, खाली रखना। एक बाप और मैंतब समय अनुसार चाहे पत्र .., टेलीफोन, टीवा आपके जो भी साधन निकले .वी. हैं, वह नहीं भी पहुँचे तो बापदादा का डायरेक्शन क्लीयर कैच होगा। यह साइंस के

साधन कभी भी आधार नहीं बनाना। यूज़ करो लेकिन साधनों के आधार पर अपनी जीवन को नहीं बनाओ। कभीकभी साइंस के साधन होते हुए भी यूज़ नहीं कर सकेंगे। - जहाँ भी होंगे - इसलिए साइलेन्स का साधन, जैसी भी परिस्थिति होगी बहुत स्पष्ट और बहुत जल्दी काम में आयेगा। लेकिन अपने बुद्धि की लाइन क्लीयर रखना। समझा। आप ही तो आह्वान कर रहे हैं कि जल्दीजल्दी गोल्डन एज़ आ जावे। तो गोल्डन एज़ में यह सफाई चाहिए ना। तो प्रकृति अच्छी सफाई करेगी।

15.12.2004.... दुआयें लेते जाओ दुआयें देते जाओ, सम्पन्न हो जायेंगे। कोई बददुआ देवे तो क्या करेंगे? लेंगे? बददुआ आपको देता है तो आप क्या करेंगे? लेंगे? अगर बद-दुआ मानो ले लिया तो आपके अन्दर स्वच्छता रही? बद-दुआ तो खराब चीज़ है ना! आपने ले ली, अपने अन्दर स्वीकार कर ली तो आपका अन्दर स्वच्छ तो नहीं रहा ना! **अगर जरा भी डिफेक्ट रहा तो परफेक्ट नहीं बन सकते।** अगर खराब चीज़ कोई देवे तो क्या आप ले लेंगे? कोई बहुत सुन्दर फल हो लेकिन आपको खराब हुआ दे देवे, फल तो बढ़िया है फिर ले लेंगे? नहीं लेंगे ना कि कहेंगे अच्छा तो है, चलो दिया है तो ले ले। कभी भी कोई बद-दुआ दे तो आप मन में अन्दर धारण नहीं करो। समझ में आता है यह बद-दुआ है लेकिन बद-दुआ अन्दर धारण नहीं करो, नहीं तो डिफेक्ट हो जायेगा। तो अभी यह वर्ष, अभी थोड़े दिन पड़े हैं पुराने वर्ष में लेकिन अपने दिल में दृढ़ संकल्प करो, अभी भी किसकी बद-दुआ मन में हो तो निकाल दो और कल से दुआ देंगे, दुआ लेंगे। मंजूर है? पसन्द है? पसन्द है या करना ही है? पसन्द तो है लेकिन जो समझते हैं करना ही है, कुछ भी हो जाये, लेकिन करना ही है, वह हाथ उठाओ। करना ही है।

17.2.11.. .. मोहिनी बहन और उनके डाक्टर से:- बापदादा ने सुना। सोचो कम। हंसती हैं लेकिन सोचती भी है। चेहरा तो लाल है लेकिन **सोचना थोड़ा-थोड़ा यह तबियत को इफेक्ट करता है।** सिर्फ सोचो बाबा अच्छा कर लेगा।

ओम शांति

७. देहअभिमान

25.1.69 . सर्व समर्पण किसको कहा जाता है? सर्व में यह देह का भान भी आता है । देह ले लेंगे तो देनी भी पड़ेगी । लेकिन देह का भान तोड़कर समर्पण बनना है । आप क्या समझते हो? देह के अभिमान से भी सम्पूर्ण समर्पण बने हो? मर गये हो वा मरते रहते हो? देह के सम्बन्ध और मन के संकल्पों से भी तुम देही हो । **यह देह का अभिमान बिल्कुल ही टूट जाए तब कहा जाए सर्व समर्पणमय जीवन ।**

2.2.69.. .. सर्विस करते-करते यह ध्यान रखना कि मैंने यह किया, मैं ही यह कर सकता हूँ यह मैं पन आना इसको ही कहा जाता है **ज्ञान का अभिमान, बुद्धि का अभिमान, सर्विस का अभिमान।** इन रूपों में आगे चलकर विघ्न आयेंगे। लेकिन पहले से ही इस मुख्य विघ्न को आने नहीं देना। इसके लिए सदा एक शब्द याद रखना कि मैं निमित्त हूँ। निमित्त बनने से ही निरा- कारी, निरहंकारी और नम्रचित, निःसंकल्प अवस्था में रह सकते हैं।

6.2.69.. .. एक बात सभी को ध्यान में रखनी है कि सामना करने के लिए बीच में रूकावट भी आयेगी। सामना करने में रूकावट कौन सी आयेगी? मालूम है? **(देह अभिमान) देह अभिमान तो एक मूल बात है लेकिन सामना करने के लिए बीच में कामना विघ्न डालेगी। कौन सी कामना? मेरा नाम हो, मैं ऐसा हूँ, मेरे से राय क्यों नहीं ली, मेरा मूल्य क्यों नहीं रखा?** यह अनेक प्रकार की कामनायें सामना करने में विघ्न रूप में आयेगी। यह याद रखना है हमको कोई कामना नहीं करनी है। सामना करना है। अगर कोई कामना की तो सामना नहीं कर सकेंगे, और अव्यक्त स्थिति में महान बनने के लिए एक बात जो कहते रहते हैं - वह धारण कर ली तो बहुत जल्दी और सहज अव्यक्त स्थिति में स्थित हो जायेंगे। वह कौन-सी बात? हम अभी मेहमान है।

15.2.69.. .. बाप सदा है तो बच्चे भी सदा है। परन्तु **देह अभिमान अपने स्वधर्म को भुला देता है।** भूलने से कार्य कैसे चलेगा। आगे कैसे बढ़ेंगे?

27.8.69.. .. लक्ष्मी नारायण कैसे चलते हैं, कैसे कदम उठाते हैं, कैसे नयन नीचे ऊपर करते हैं, वैसी चलन हो तब लक्ष्मी नारायण बनेंगे । **अभी नयन ऊपर करोगे तो देह अभिमान आ जायेगा कि मेरे जैसा तो कोई नहीं है । मेरा तेरा आ जायेगा ।** भक्ति मार्ग में भी कहते हैं नम्रता मनुष्यों के नयन नीचे कर देती है । हर एक को अपने को सजाना है । सदैव खुशबू देते रहो । लक्ष्य जो मिला है वैसा ही लक्ष्मी नारायण बनना है ।

18.9.69... जब तुम याद में बैठते हो तो देह-अभिमान से देही-अभिमानी में कैसे स्थित होते हो? क्या कहते हो? बात तो बड़ी सहज है। जो आप सबने बताया वो भी पुरुषार्थ का ही है। लेकिन जानते और मानते हुए भी देह अभिमान में आने का कारण यही है जो देह का आकर्षण रहता है। इस आकर्षण से दूर हटने के लिए कोशिश करनी है। जैसे कोई खींचने वाली चीज होती है तो उस खिंचाव से दूर रखने के लिए क्या किया जाता है? चुम्बक होता है तो ना चाहते हुए भी उस तरफ खिंच आते हैं। अगर आपको उस आकर्षण से किसी को दूर करना है तो क्या करेंगे? कोई चीज ना चाहते हुए भी उसको खींचती है और आपको उस चीज से दूर उसे करना है तो क्या करेंगे? या तो उनको दूर ले जायेंगे या तो बीच में ऐसी चीज रखेंगे जो वो आकर्षण न कर सके। यह दो तरह से होता है या तो दूर कर देना है या दोनों के बीच में ऐसी चीज डाल देंगे तो वो दूर हो जाते इसी प्रकार यह देह अभिमान या यह व्यक्त भाव जो है यह भी चुम्बक के माफिक ना चाहते हुए भी फिर उसमें आ जाते हैं। बीच में क्या रखेंगे? स्वयं को जानने के लिए क्या आवश्यकता है जिससे स्वयं को और सर्वशक्तिमान बाप को पूर्ण रीति जान सकते हो? एक ही शब्द है। स्वयं को और सर्वशक्तिमान बाप को पूर्ण रीति जानने के लिए संयम चाहिये। जब संयम को भूलते हो तो स्वयं को भी भूलते और सर्वशक्तिमान को भी भूलते हैं। अलबेलेपन का संस्कार भी क्यों आता है? कोई न कोई संयम को भूलते हो। तो संयम जो है वो स्वयं को और सर्वशक्तिमान बाप को समीप लाता है। अगर संयम में कमी है तो स्वयं और सर्वशक्तिमान से मिलन में कमी है। तो बीच की जो बात है वह संयम है। कोई ना कोई संयम जब छोड़ते हो तो यह याद भी छूटती है। अगर संयम ठीक है तो स्वयं की स्थिति ठीक है और स्वयं की स्थिति ठीक है तो सब बातें ठीक है। तो यह देह की जो आकर्षण है वो बार-बार अपनी तरफ आकर्षित करती है। अगर बीच में यह संयम (नियम) रख दो तो यह देह की आकर्षण आकर्षित नहीं करेगी।

17.11.69... जैसे कोई शरीर के वस्त्र उतारते हो तो कितना सहज उतारते हो। वैसे ही यह शरीर रूपी वस्त्र भी सहज उतार सको और सहज ही समय पर धारण कर सको, किसको यह अभ्यास पूर्ण रीति से सीखना है। लेकिन कोई-कोई का यह देह अभिमान क्यों नहीं टूटता है? यह देह का चोला क्यों सहज नहीं उतरता है? जिसका वस्त्र तंग, टाइट होता है तो उतार नहीं सकते हैं। यह भी ऐसे ही है। कोई न कोई संस्कारों में अगर यह देह का वस्त्र चिपका हुआ है अर्थात् तंग, टाइट है, तब उतरता नहीं है। नहीं तो उतारना, चढ़ाना वा यह देह रूपी वस्त्र छोड़ना और धारण करना बहुत सहज है। जैसे कि स्थूल वस्त्र उतारना और पहनना सहज होता है। तो यही देखना है

कि यह देह रूपी वस्त्र किस संस्कार से लटका हुआ है। जब सभी संस्कारों से न्यारा हो जायेंगे तो फिर अवस्था भी न्यारी हो जावेगी। इसलिए बापदादा भी कई बार समझाते हैं कि सभी बातों में इज़ी रहो। जब खुद सभी में इज़ी रहेंगे तो सभी कार्य भी इज़ी होंगे। अपने को टाइट करने से कार्य में भी टाइटनेस आ जाती है।

14.5.70.. .. आप लोग कन्या समर्पण समारोह मनाने आये हो लेकिन बापदादा वह समारोह मनाना चाहते हैं। वह कब मनाएंगे? इसके लिए कहा कि दर्पण ले आये हैं। उसमें तीन बातें देख रहे हैं। **एक स्वभाव समर्पण, दूसरा देह अभिमान का समर्पण और तीसरा संबंधों का समर्पण।** देह अर्थात् कर्मेन्द्रियों के लगाव का समर्पण। तीन चीज़े दर्पण में देख रहे हैं। जब स्वभाव समर्पण समारोह होगा तब सम्पूर्ण मूर्त का साक्षात्कार होगा।

11.6.70.. .. अब सर्विस पर उपस्थित हो रही हो तो उसके लिए मुख्य यही धारणा रखना है कि मैं पन का त्याग। **मैंने किया, मैं यह जानती हूँ, मैं यह कर सकती हूँ, यह मैं पन का जो अभिमान है उसका त्याग करना है।** मैं के बजाय बापदादा की सुनाई हुई ज्ञान की बातों को वर्णन करो। मैं यह जानती हूँ। नहीं। बापदादा द्वारा यह जाना है। ज्ञान में चलने के बाद जो स्व अभिमान आ जाता है, उसका भी त्याग। जब इतनी त्याग की वृत्ति और दृष्टि होगी तब सदैव स्मृति में बाप और दादा रहेगा और मुख पर भी यही बोल रहेंगे। समझा। तब विश्वपति बन सकेंगी। विश्व की सर्विस कर सकेंगी।

25.6.70... .. माया भिन्न-भिन्न रूप से आलस्य ही लाती है । देह अभिमान में भी पहला रूप आलस्य का धारण करती है । उस समय **श्रीमत लेकर वेरीफाई कराने का आलस्य करते हैं फिर देह अभिमान बढ़ता जाता है और सभी बातों में भिन्न-भिन्न रूप से पहले आलस्य रूप आता है ।** आलस्य, सुस्ती और उदासी ईश्वरीय सम्बन्ध से दूर कर देती है । साकार सम्बन्ध से वा बुद्धि के सम्बन्ध से वा सहयोग लेने के सम्बन्ध से दूर कर देती है । इस सुस्ती आने के बाद फिर विकराल रूप क्या होता है? देह अहंकार में प्रत्यक्ष रूप में आ जाते हैं । पहले छठे विकार से शुरू होते हैं । ज्ञानी तू आत्मा वत्सों में लास्ट नंबर अर्थात् सुस्ती के रूप से शुरू होती है । सुस्ती में फिर कैसे संकल्प उठेंगे । वर्तमान इसी रूप से माया की प्रवेशता होती है । इस पर बहुत ध्यान देना है ।

6.8.70.... अगर वृत्ति देह अभिमान की है, चंचल है तो आपकी दृष्टि से साक्षात्कार भी ऐसे ही होगा । औरों की भी दृष्टि वृत्ति चंचल होगी । यथार्थ साक्षात्कार कर नहीं सकेंगे ।

तुम विशेष आत्मायें हो, यह नशा ईश्वरीय नशा है । देह अभिमान का नशा नहीं । ईश्वरीय नशा सदैव नैनों से दिखाई दे ।

21.1.71... .. सदैव अपने को अकालमूर्त समझते चलेंगे तो अकाले मृत्यु से भी, अकाल से, सर्व समस्याओं से बच सकेंगे। मानसिक चिन्ताएं, मानसिक परिस्थितियों को हटाने का एक ही साधन याद रखना है -- सिर्फ अपने इस पुराने शरीर के भान को मिटाना है। इस देह-अभिमान को मिटाने से सर्व परिस्थितियाँ मिट जायेंगी। अब कुछ पूछने का रहा ही नहीं। सिर्फ सम्बन्ध में आते रहना।

18.3.71... .. बन्धनमुक्त बनने की इच्छा है लेकिन पहले देह-अभिमान का बन्धन तोड़ना है। फिर सर्व बन्धनमुक्त आपेही बन जायेंगे। समझा?

25.3.71... .. स्वार्थ का अर्थ क्या है? स्वार्थ अर्थात् स्व के रथ को स्वाहा करो। यह जो रथ अर्थात् देह-अभिमान, देह की स्मृति, देह का लगाव लगा हुआ है। इस स्वार्थ को कैसे खत्म करेंगे? उसका सहज पुरुषार्थ, 'स्वार्थ' शब्द के अर्थ को समझो। स्वार्थ गया तो न्यारे बन ही जायेंगे। सिर्फ एक अर्थ को जानना है, जानकर अर्थ-स्वरूप बनना है। तो एक ही शब्द का अर्थ जानने से सदा एक के और एकरस बन जायेंगे। अच्छा।

9.4.71... .. सदैव आसन पर बैठते हैं, वैसे अपनी एकरस आत्मा की स्थिति के आसन पर विराजमान रहो। इस आसन को नहीं छोड़ो, तब सिंहासन मिलेगा। ऐसा प्रयत्न करो जो देखते ही सब के मुख से एक ही आवाज़ निकले कि यह कुमार तो तपस्वी कुमार बनकर आये हैं। हर कर्मेन्द्रिय से देह-अभिमान का त्याग और आत्माभिमान की तपस्या प्रत्यक्ष रूप में दिखाई दे।

30.5.71... .. जैसे वह लोग अन्डरग्राउण्ड चले जाते हैं ना। आप भी मनन करने से अन्दर अर्थात् अन्डरग्राउण्ड चले जाते हो। अन्डरग्राउण्ड रहने से बाहर के बाम्बस् आदि का असर नहीं होता है। इसी रीति से मनन में रहने से, अन्तर्मुखी रहने से बाहरमुखता की बातें डिस्टर्ब नहीं करेगी। देह-अभिमान से गैर हाज़िर रहेंगे। जैसे कोई अपनी सीट से गैर हाज़िर होगा तो लोग लौट जायेंगे ना। आप भी मनन में अथवा अन्तर्मुखी रहने से देह-अभिमान की सीट को छोड़ देते हो, फिर माया लौट जायेगी, क्योंकि आप अन्तर्मुखी अर्थात् अन्डरग्राउण्ड हो। आजकल अन्डरग्राउण्ड बहुत बनाते जाते हैं - सेफ्टी के लिए। तो आपके लिए भी सेफ्टी का साधन यही अन्तर्मुखता है अर्थात् देह-अभिमान से अन्डरग्राउण्ड। अन्डरग्राउण्ड में रहना अच्छा लगता है! जिसका अभ्यास नहीं होता है वह थोड़ा टाइम रह फिर बाहरमुखता में आ जाते हैं, क्योंकि बहुत जन्मों के संस्कार बाहरमुखता के हैं। तो अन्तर्मुखता में कम रह पाते हैं। लेकिन रहना निरन्तर अन्तर्मुखी है। अच्छा।

19.8.71..सभी से कड़े से कड़ा बन्धन कौनसा है?(देह-अभिमान)यह तो सभी बन्धनों का फाउण्डेशन है। लेकिन प्रत्यक्ष रूप में सभी से कड़ा बन्धन कौनसा है? लोक-लाज तो

बहुत छोटी बात है, यह तो फर्स्ट स्टेप है। सभी से बड़े ते बड़ा अन्तिम बन्धन है श्रीमत के साथ अपने ज्ञान-बुद्धि को मिक्स करना अर्थात् अपने को समझदार समझकर श्रीमत को अपनी बुद्धि की कमाल समझकर काम में लगाना। जिसको कहेंगे ज्ञान-अभिमान अर्थात् बुद्धि का अभिमान। यह सभी से सूक्ष्म और बड़ा बन्धन है। इस बन्धन से क्रास किया तो मानो सभी से बड़े ते बड़ा जम्प दिया। कोई भी बात में अगर कोई मधुर शब्दों में भी कमजोरी का इशारा दे और उसी समय कोई संस्कार, स्वभाव वा सर्विस के लिए बुराई आकर करते हैं; तो दोनों ही बातें सामने रखते हुए सोचो कि ज़रा भी वृत्ति में वा दृष्टि में वा सूरत में फर्क आता है? ज़रा भी फर्क नहीं आये, ज़रा भी हिम्मत-उल्लास में अन्तर नहीं आये-इसको कहा जाता है इस बन्धन को क्रास करना। अगर मुख से न बोला लेकिन सुनी हुई बात का व्यर्थ संकल्प भी चला तो इसको कहेंगे बड़े ते बड़ा बन्धन।

25.8.71.. .. निराकारी अवस्था का अटेन्शन कम होने के कारण मुख्य विकार देह-अभिमान, काम और क्रोध - इन तीनों का वार समय प्रति समय होता रहता है।

15.9.71.. .. अगर स्वयं कोई भी देह-अभिमान वा देह की दुनिया अर्थात् पुरानी दुनिया के कोई भी वस्तु के रस में ज़रा भी फंसे हुए होंगे, तो वह अन्य को मनरस का अनुभव कैसे करा सकेंगे? कलियुगी स्थूल वस्तुओं की रसना वा मन का लगाव मिट भी गया है, लेकिन इसके बाद फिर कौनसी स्टेज से पार होना है, वह जानती हो? लोहे की जंजीरें, मोटी-मोटी जंजीरें तो तोड़ चुकी हो, लेकिन बहुत महीन धागे कहां-कहां बन्धनमुक्त नहीं बना सकते। वह महीन धागे कौनसे हैं? यह परखना भी बड़ी बात नहीं इस ग्रुप के लिए। जानती भी हो, चाहती भी हो फिर बाकी क्या रह जाता है? सभी में महीन से महीन धागा कौनसा है, जो ज्ञानी बनने के बाद नया बन्धन शुरू होता है? (हरेक ने सुनाया) यह सभी नोट करना, यह नोट काम में आर्येंगे। और भी कुछ है? इस ग्रुप में गंगा-यमुना इकट्ठी हो गई हैं। यह विशेषता है ना। सरस्वती तो गुप्त होती है। इसका भी बड़ा गुह्य रहस्य है कि गंगा कौन और यमुना कौन है! पहले यह तो बताओ कि सभी से महीन धागा कौनसा है? फिर इससे आपेही समझ जायेंगे गंगा कौन, यमुना कौन? सभी से महीन और बड़ा सुन्दरता का धागा एक शब्द में कहेंगे तो 'मैं' शब्द ही है। 'मैं' शब्द देह-अभिमान से पार ले जाने वाला है। और 'मैं' शब्द ही देही-अभिमानी से देह-अभिमान में ले आने वाला भी है। मैं शरीर नहीं हूँ, इससे पार जाने का अभ्यास तो करते रहते हो। लेकिन यही मैं शब्द कि - "मैं फलानी हूँ, मैं सभी कुछ जानती हूँ, मैं किस बात में कम हूँ, मैं सब कुछ कर सकती हूँ, मैं यह-यह करती हूँ और कर सकती हूँ, मैं जो हूँ जैसी हूँ वह मैं जानती हूँ, मैं कैसे सहन करती हूँ, कैसे समस्याओं का

सामना करती हूँ, कैसे मर कर मैं चलती हूँ, कैसे त्याग कर चल रही हूँ, मैं यह जानती हूँ” - ऐसे मैं की लिस्ट सुल्टे के बजाय उल्टे रूप में महीन, सुन्दरता का धागा बन जाता है। यह सभी से बड़ा महीन धागा है। न्यारा बनने के बजाय, बाप का प्यारा बनाने के बजाय कोई-न-कोई आत्मा का वा कोई वस्तु का प्यारा बना देता है। चाहे मान का प्यारा, चाहे नाम का प्यारा, चाहे शान का प्यारा, चाहे कोई विशेष आत्माओं का प्यारा बना लेता है। तो इस धागे को तोड़ने के लिये वा इस धागे से बन्धनमुक्त बनने के लिए क्या करना पड़े? ट्रॉन्सफर कैसे हो?

ज़िम्मेवारी, ताजधारी ग्रुप को ही मंगाया है ना। ज़िम्मेवारी के लक्ष्य को धारण करने वाला ग्रुप तो हो ही। बाकी क्या चाहिए? निरहंकारी हो? निराकारी हो? अगर निराकारी स्थिति में स्थित होकर निरहंकारी बनो तो निर्विकारी आटोमेटिकली हो ही जायेंगे। निरहंकारी बनते ज़रूर हो लेकिन निराकार होकर निरहंकारी नहीं बनते हो। युक्तियों से अपने को अल्प समय के लिए निरहंकारी बनाते हो, लेकिन निरन्तर निराकारी स्थिति में स्थित होकर साकार में आकर यह कार्य कर रहा हूँ - यह स्मृति वा अभ्यास नेचरल वा नेचर न बनने के कारण निरन्तर निरहंकारी स्थिति में स्थित नहीं हो पाते हैं। जैसे कोई कहाँ से आता है, कोई कहाँ से आता है, उसको सदा यह स्मृति रहती है कि मैं यहाँ से आया हूँ। ऐसे यह स्मृति सदैव रहे कि मैं निराकार से साकार में आकर यह कार्य कर रही हूँ। बीच-बीच में हर कर्म करते हुए इस स्थिति का अभ्यास करते रहो। तो निराकार हो साकार में आने से निरहंकारी और निर्विकारी ज़रूर बन जायेंगे। यह अभ्यास अल्पकाल के लिए करते भी हो, लेकिन अब इसी को सदाकाल में ट्रॉन्सफर करो।

21.1.72... माया कमजोर बनाने के लिए पहले तो देह- अभिमान में लाती है। देह-अभिमान में ही न आयें तो कमजोरी कहाँ से आयेगी। तो सभी को अपने स्वमान की स्मृति दिलाओ और उस स्वरूप के अनुभवी बनाओ। जैसे समझते हो -- “मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ”; तो संकल्प करने से स्थिति बन जाती है ना। लेकिन बनेगी उनकी जिनको अनुभव होगा। अनुभव नहीं तो स्थित होते-होते वह रह ही जाते हैं, स्थिति बन नहीं सकती और थकावट, मुश्किल मार्ग अनुभव करते हैं। कैसे करें - यह क्वेश्चन उठता है। लेकिन जो अनुभवीमूर्त हैं वह कड़ी परीक्षा आते समय भी अपने स्वमान में स्थित होने से सहज उसको कट कर सकते हैं। तो अपने स्वमान की स्मृति दिलाओ।

21.1.72... देह-अभिमान से छूटने के लिए मुख्य युक्ति यह है-सदा अपने स्वमान - में रहो तो देह-अभिमान मिटता जायेगा। स्वमान में स्व का भान भी रहता है अर्थात् आत्मा का भान। स्वमान - मैं कौन हूँ! अपने इस संगमयुग के और भविष्य के भी

अनेक प्रकार के स्वमान जो समय प्रति समय अनुभव कराये गये हैं, उनमें से अगर कोई भी स्वमान में स्थित रहते रहें तो देह-अभिमान मिटता जाए। मैं ऊंच ते ऊंच ब्राह्मण हूँ - यह भी स्वमान है। सारे विश्व के अन्दर ब्रह्माण्ड और विश्व का मालिक बनने वाली मैं आत्मा हूँ - यह भी स्वमान है। जैसे आप लोगों को शुरू-शुरू में स्वप्न के, देह के भान से परे होने का लक्ष्य रहता था; मैं आत्मा पुरुष हूँ- इस पुरुष के स्वभाव में स्थित कराने से स्वप्न का भान नंबरवार पुरुषार्थ अनुसार निकलता गया। **ऐसे ही सदैव अपनी बुद्धि के अन्दर वर्तमान वा भविष्य स्वमान की स्मृति रहे तो देह-अभिमान नहीं रहेगा।** सिर्फ शब्द चेन्ज होने से स्वमान से स्वभाव भी अच्छा हो जाता है। स्वभाव का टक्कर होता ही तब है जब एक दो को स्व का भान नहीं रहता। तो स्वमान अर्थात् स्व का मान, उससे एक तो देह-अभिमान समाप्त हो जाता है और स्वभाव में नहीं आयेंगे। साथ-साथ जो स्वमान में स्थित होता है उनको स्वतः ही मान भी मिलता है।

27.2.72.... **ईश्वरीय शान से नीचे उतरते हो तब देह-अभिमान में आते हो।** तो सदाकाल के संग से संग का रंग लगाओ। हर सेकेण्ड बाप से मिलन मनाते हर रोज अमृतवेले से मस्तक पर विजय का तिलक जो लगा हुआ है उसको देखो। अपने चार्ट रूपी दर्पण में, जैसे अमृतवेले उठकर शरीर का श्रृंगार करते हो ना, वैसे पहले बाप द्वारा मिली हुई सर्व शक्तियों से आत्मा का श्रृंगार करो। जो श्रृंगार किये हुए होंगे वह संहारीमूर्त भी होंगे। सारे विश्व में सर्वश्रेष्ठ आत्मायें हो ना। श्रेष्ठ आत्माओं का श्रृंगार भी श्रेष्ठ होता है। आपके जड़ चित्र सदा श्रृंगारे हुए रहते हैं। शक्तियों वा देवियों के चित्र में श्रृंगारमूर्त और संहारीमूर्त दोनों हैं। तो रोज अमृतवेले साक्षी बन आत्मा का श्रृंगार करो। करने वाले भी आप हो, करना भी अपने आप को ही है। फिर कोई भी प्रकार की परिस्थितियों में डगमग नहीं होंगे, अडोल रहेंगे। ऐसे को होली हंस कहा जाता है।

15.3.72... **पुराने संस्कारों का त्याग भी क्यों नहीं होता है? उसका मुख्य कारण देह-अभिमान है।** देह-अभिमान को छोड़ना बड़े ते बड़ा त्याग है, जो हर सेकेण्ड अपने आपको चेक करना पड़ता है। और जो स्थूल त्याग है वह कोई एक बार त्याग करने के बाद किनारा कर लेते हैं। लेकिन यह जो देह-अभिमान का त्याग है वह हर सेकेण्ड देह का आधार लेते रहना है लेकिन यहाँ सिर्फ रहते हुए न्यारा बनना है। इसी कारण हर सेकेण्ड देह के साथ आत्मा का गहरा सम्बन्ध होने कारण देह का अभिमान भी बहुत गहरा हो गया है। अब इसको मिटाने के लिए मेहनत लगती है।

15.3.72... अगर मानो सारे दिन में कुछ समय देह-अभिमान का त्याग रहता है और कुछ समय नीचे रहते हैं अर्थात् देह के भान का त्याग नहीं, तो उतना ही संगमयुग में श्रेष्ठ भाग्य से वंचित होते हैं।

15.3.72... जब कहते हैं और बाप से सर्व सम्बन्ध जोड़े हैं, तो क्या बाप के स्नेह में यह उलटा देह-अभिमान का त्याग कोई बड़ी बात है? छोटी बात है ना! फिर भी क्यों नहीं कर पाते हो? यह तो एक सेकेण्ड में कर देना चाहिए। बच्चा अगर एक मास बीमार होता है तो मां का जो अल्पकाल का सम्बन्ध है, देह का सम्बन्ध है, फिर भी मां एक मास के लिए सब-कुछ त्याग कर देती है। देह की स्मृति, सुख त्याग करने में देरी नहीं करती। मुश्किल भी नहीं समझती है। तो यहां क्या करना चाहिए? यहां तो सदाकाल का सम्बन्ध और सर्व सम्बन्ध है, सर्व प्राप्ति का सम्बन्ध हैं, तो यहाँ एक सेकेण्ड भी त्याग करने में देरी नहीं करनी चाहिए।

10.5.72... वर्तमान पुरुषोत्तम संगमयुग का आप ब्राह्मणों का जो ऊंच ते ऊंच स्वमान है उसमें स्थित रहना है। इस एक ही श्रेष्ठ स्वमान में स्थित होने से भिन्न-भिन्न प्रकार के देह-अभिमान स्वतः और सहज ही समाप्त हो जाते हैं।

19.7.72... जब सभी आधार खत्म हुए तो फिर यह देह-अभिमान, संस्कार आटोमेटिकली खत्म हो जावेंगे। यह बातें ही देह-अभिमान में लाती हैं। बातें ही खत्म हो जावेंगी तो उसका परिणाम भी खत्म हो जावेगा। छोटे-छोटे कारण में आने से भिन्न-भिन्न प्रकार के देह-अभिमान आ जाते हैं। तो क्या अब तक देह-अभिमान को छोड़ा नहीं है? बहुत प्यारा लगता है? अभी अपनी भाषा और वृत्ति सभी चेंज करो। कोई को भी किस समय भी, किस परिस्थिति में, किस स्थिति में देखते हो लेकिन वृत्ति और भाव अगर यथार्थ हैं तो आपके ऊपर उसका प्रभाव नहीं पड़ेगा। कल्याण की वृत्ति और भाव शुभाचिंतक का होना चाहिए। अगर यह वृत्ति और भाव सदा ठीक रखो तो फिर यह बातें ही नहीं होंगी।

19.7.72... अब स्वयं भी बार-बार देह-अभिमान में आते हो तो दूसरे को निराकारी वा आकार रूप का साक्षात्कार नहीं होता है। यह तीनों ही होना चाहिए - मन्सा में निराकारी स्टेज, वाचा में निरहंकारी और कर्म में निर्विकारी, ज़रा भी विकार ना हो। तेरा-मेरा, शान-मान - यह भी विकार हैं। अंश भी हुआ तो वंश आ जावेगा। संकल्प में भी विकार का अंश ना हो। जब यह तीनों स्टेज हो जावेंगी तब अपने प्रभाव से जो भी वारिस वा प्रजा निकलनी होगी वह फटाफट निकलेगी।

15.9.74.... जैसे शुरू-शुरू में देह-अभिमान को मिटाने का पुरुषार्थ रखा कि "मैं चतुर्भुज हूँ" इससे स्त्र-भान, कमजोरी, कायरता आदि सब निकल गई और आप निर्भय और शक्तिशाली बन गये। तो जैसे आदि में देह-अभिमान मिटाने के लिये, कि 'मैं चतुर्भुज

हूँ, यह प्रैक्टिकल पुरुषार्थ चला ना? चलते-फिरते व बात करते यह नशा रहता था कि 'मैं नारी नहीं हूँ, मैं चतुर्भुज हूँ' तो ये दोनों संस्कार और वह दोनों शक्तियाँ मिल गई जैसे कि ये दोनों कार्य हम कर सकते हैं, तो वैसे ही अन्तिम लक्ष्य कौन-सा स्मृति में रहे, जिससे कि ऑटोमेटिकली वह लक्षण आ जाएं? वह अन्तिम लक्ष्य पुरुषार्थ के लिये कौन-सा है? वह है-अव्यक्त फरिश्ता हो रहना। अव्यक्त-रूप क्या है?-फरिश्ता-पन। उसमें भी लाइट-रूप सामने है-अपना लक्ष्य। वह सामने रखने से जैसे लाइट के कर्व (Aura) में यह मेरा आकार है।

29.8.75... जैसे गायन है कि पाण्डव अन्त समय में ऊंची पहाड़ी पर गल गए अर्थात् स्वयं देह-अभिमान व दुःख की दुनिया के प्रभाव से परे ऊंची स्थिति में स्थित हो गये। ऊंची स्थिति में स्थित हो नीचे रहने वालों का साक्षी हो खेल देखो। ऐसी स्थिति में रहने वाला ही समस्या-स्वरूप नहीं लेकिन समाधानस्व रूप हो जायेगा, तो वर्तमान समय ऐसी स्थिति चाहिए। ऐसी है? जरा भी हलचल में तो नहीं आ जाते? क्या होगा, कैसे होगा, हमारा क्या होगा? अचल स्वरूप हो ना? अचल में कोई हलचल नहीं। ऐसी स्थिति वाले ही विजयी रत्न बनेंगे।

14.9.75... जैसे गायन है कि पाण्डव अन्त समय में ऊंची पहाड़ी पर गल गए अर्थात् स्वयं देह-अभिमान व दुःख की दुनिया के प्रभाव से परे ऊंची स्थिति में स्थित हो गये। ऊंची स्थिति में स्थित हो नीचे रहने वालों का साक्षी हो खेल देखो। ऐसी स्थिति में रहने वाला ही समस्या-स्वरूप नहीं लेकिन समाधानस्व रूप हो जायेगा, तो वर्तमान समय ऐसी स्थिति चाहिए। ऐसी है? जरा भी हलचल में तो नहीं आ जाते? क्या होगा, कैसे होगा, हमारा क्या होगा? अचल स्वरूप हो ना? अचल में कोई हलचल नहीं। ऐसी स्थिति वाले ही विजयी रत्न बनेंगे।

22.9.75... बाप भी कहते हैं - मास्टर हो। तो अब समझा कि मैं कौन हूँ? - जो हूँ, जैसा हूँ, वैसा ही अपने को जानने से सदा स्वमान में रहेंगे और देह-अभिमान से स्वतः ही परे रहेंगे। स्वमान के आगे देह-अभिमान आ ही नहीं सकता।

28.1.76... देह-अभिमान अर्थात् होशियारी का अभिमान और बुद्धि का अभिमान।

11.1.77... सभी पाण्डव कल्प पहले की तरह अपनी ऊंची स्टेज को प्राप्त होते हुए देह-अभिमान से पूर्ण रीति से गल गए हैं? जैसे पाण्डवों को दिखाते हैं कि पहाड़ों पर गल गए अर्थात् समाप्त हुए। ऐसे देह-अभिमान की स्थिति से समाप्त हो गए हो? अभी पूरे पाण्डव समान मरजीवा नहीं बने हो? मरजीवा अर्थात् देहभान से मरना। तो मरजीवा बने हो? मरना तो मरना, या अभी मर रहे हो? ऐसे होता है क्या? एक स्थान से मरना दूसरे स्थान में जीना होता है। यह सब में होता है ना? यहाँ भी देह-अभिमान से मरना

और देही-अभिमान से जीना। इसमें कितना टाइम चाहिए? कम से कम 6 मास तो हो गए हैं ना। पाण्डव प्रसिद्ध हैं - ऊँची स्टेज को प्राप्त करने में। इसलिए पाण्डव के शरीर भी लम्बे-लम्बे दिखाते हैं। शरीर नहीं लेकिन आत्मा की स्टेज इतनी ऊँची हो। तो वही पाण्डव हो ना। तीव्र पुरुषार्थ का सहज साधन है - दृढ़ संकल्प। देही-अभीमानी बनने के लिए भी दृढ़ संकल्प करना है कि मैं शरीर नहीं हूँ, आत्मा हूँ। संकल्प में दृढ़ता नहीं तो कोई भी बात में सफलता नहीं। कोई भी बात में जब दृढ़ संकल्प रखते हैं तब ही सफलता होती है। दृढ़ संकल्प वाले ही मायाजीत होते हैं।

23.1.77... देह-अभिमान और देह की पुरानी दुनिया, पुराने सम्बन्धों से सदा ऊपर उड़ते रहते हो अर्थात् इससे परे ऊँची स्थिति में रहते हो? जरा भी देह-अभिमान अर्थात् मनुष्यपन की बदबू तो नहीं? देह- अभिमान, इन्द्रप्रस्थ निवासी नहीं हो सकता। ऐसे अनुभव होता है कि देह-अभिमान बहुत गन्दी बदबू है? जैसे बदबू से किनारा किया जाता है, वा मिटाने के साधन अपनाए जाते हैं, वैसे अपने को देह-अभिमान से मिटाने के साधन अपनाते हो? यह साधारण सभा नहीं - यह अलौकिक सभा है, फरिश्तों की सभा है। अपने को फरिश्ता अनुभव करते हो? एक सेकेण्ड में इस देह की दुनिया से परे अपने असली स्थिति में स्थित हो सकते हो? यह ड्रिल (Drill) करनी आती है? जब चाहो, जहाँ चाहो, जितना समय चाहो, वैसे स्थित हो सकते हो?

26.12.79....स्नेह 'याद और सेवा' में सफलता का विशेष साधन बन जायेगा। ऐसे ही अहंकार विकार देह-अभिमान से परिवर्तित हो स्वाभिमानी बन जायेगा। स्व-अभिमान चढ़ती कला का साधन है। देहाभिमान गिरती कला का साधन है। देहाभिमान परिवर्तित हो स्व-अभिमान के रूप में स्मृति-स्वरूप बनने में साधन बन जायेगा। इसी प्रकार यह विकार अर्थात् विकराल रूपधारी आपकी सेवा के सहयोगी, आपकी श्रेष्ठ शक्तियों के स्वरूप में परिवर्तित हो जायेंगे। ऐसे परिवर्तन करने की शक्ति अनुभव करते हो? इन तीन स्मृतियों के आधार पर पाँचों का परिवर्तन कर सकते हो।

9.5.84....देह-अभिमान में आना अर्थात् माया की तरफ गिरना। और रूहानी स्मृति में रहना अर्थात् बाप के समीप आना। गिरने वाले नहीं, बाप के साथ रहने वाले। बाप के साथ कौन रहेंगे? रूहानी कुमारियाँ ही बाप के साथ रह सकती। जैसे बाप सुप्रीम है, कब देह-अभिमान में नहीं आता, ऐसे देह-अभिमान में आने वाले नहीं। जिनका बाप से प्यार है, वह रोज प्यार से याद करते हैं, प्यार से ज्ञान की पढ़ाई पढ़ते हैं। जो प्यार से कार्य किया जाता है उसमें सफलता होती है

14.1.85... पुरुषार्थहीन वा ढीला पुरुषार्थ देह-अभिमान की रचना है। स्व अर्थात् आत्म-अभिमानी। इस स्थिति में यह कमज़ोरी की बातें आ नहीं सकतीं। तो यह देह-अभिमान

की रचना का चिन्तन करना यह भी स्वचिन्तन नहीं। स्व-चिन्तन अर्थात् जैसा बाप जैसे मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ। ऐसा स्वचिन्तन वाला शुभ चिन्तन कर सकता है।

18.2.85... जैसे भी फरिश्तों के पाँव धरनी पर नहीं होते। सदा ऊपर। तो आपके बुद्धि रूपी पाँव कहाँ रहते हैं? नीचे धरनी पर नहीं। **देह- अभिमान भी धरनी है। देह-अभिमान की धरनी से ऊपर रहने वाले।** इसको ही कहा जाता है - 'फरिश्ता'।

23.1.87.... आज विश्व में जो भी मुश्किलों हैं, उसका कारण ही है कि एक-दो को रूह नहीं देखते। देह-अभिमान के कारण सब समस्याएँ हैं। **देही-अभिमानी बन जायें तो सब समस्याएँ समाप्त हो जायें।**

17.12.89.... आप विश्व के नव-निर्माण के आधारमूर्त हो। बेहद के ड्रामा अंदर हीरो एक्टर हो और हीरो तुल्य जीवन वाले हो। तो कितने बड़े हुए! यह शुद्ध नशा समर्थ बनाता है और **देह-अभिमान का नशा नीचे ले आता है।** आपका आत्मिक रूहानी नशा है इसलिए नीचे नहीं ले आता, सदा ऊँची उड़ती कला की ओर ले जाता है।

2.3.92... बलि चढ़ना अर्थात् महाबलवान बनना। बलि किसकी चढ़ाते हैं? कमजोरियों की। जब कमजोरियों की बलि चढ़ा दी तो क्या बन गये? महाबलवान। सबसे बड़ी कमजोरी है देह अभिमान। देहार्पित -भान समर्पित करना अर्थात् उनके वंश को भी सम-किया। क्योंकि देह-अभिमान का सूक्ष्म वंश बहुत बड़ा है। अनेक प्रकार के छोटे बड़े देह-भान की बलि चढ़ाना अर्थात् वंश सहित समर्पित होना-भान है। तो देहअंश भी नहीं रखना। अंशमात्र भी अगर रह गया तो बारबार चुम्बक की तरह खींचता रहेगा। आपको - पता भी नहीं पड़ेगा। न चाहते भी चुम्बक अपने तरफ खींच लेगा। ऐसे नहीं समझना - ऐसे कोई समाय के लिए यह देह अभिमान का कोई प्रकार काम में लाने के लिए काम नहीं चलता। काम चलता है इसके बिना - किनारा करके रखें। फिर क्या कहते हैं लेकिन थोड़े समय की विजय दिखाई देती है। अभिमान को स्वमान समझ लेते हो। लेकिन इस अल्पकाल की विजय में बहुत काल की हार समायी हुई है। और जिसको थोड़े समय की हार समझते हो वो सदा काल की विजय प्राप्त कराती है। इसलिए देह अभिमान के अंशमात्र सहित समर्पित हो इसको कहा जाता है शिव बाप के ऊपर बलि - चढ़ना अर्थात् महाबलवान बनना।

21.11.92.... सहजयोग का अर्थ ही है-'एक' को याद करना। एक बाप, दूसरा न कोई। ऐसा है? या बाप के साथ और भी कोई है? **कभी अभिमान में आ जाते हो।-कभी देह-** जब 'मेरा शरीर' है तो याद आता है, लेकिन मेरा है ही नहीं तो याद नहीं आता। तो तनधन तेरा है या मेरा है-मन-? जब मेरा है ही नहीं तो याद क्या आता? देहभान में आना, बॉडीकॉन्सेस में आना अर्थात् मेरा शरीर है। लेकिन सदैव यह याद रखो कि मेरा -

नहीं, बाप का है, सेवा अर्थ बाप ने ट्रस्टी बनाया है। नहीं तो सेवा कैसे करेंगे? शरीर तो चाहिए ना। लेकिन मेरा नहीं, ट्रस्टी हैं। मेरापन है तो गृहस्थी और तेरापन है तो ट्रस्टी। ट्रस्टी अर्थात् डबल लाइट।

26.3.93..... सबसे विशेष कहने में भल एक शब्द 'देहअभिमान-' है लेकिन देहअभिमान - अभिमानअ-का विस्तार बहुत है। एक है मोटे रूप में देह, जो कई बच्चों में नहीं भी है। चाहे स्वयं की देह, चाहे औरों की देहअगर औरों की देह का भी आकर्षण है-, वो भी देहअभिमान है।- कई बच्चे इस मोटे रूप में पास हैं, मोटे रूप से देह के आकार में लगाव वा अभिमान नहीं है। परन्तु इसके साथस्कार साथ देह के सम्बन्ध से अपने सं- विशेष हैं, बुद्धि विशेष है, गुण विशेष हैं, कोई कलायें विशेष हैं, कोई शक्ति विशेष है- उसका अभिमान अर्थात् अहंकार, नशा, रोबअभिमान है। अगर इन सूक्ष्म -ये सूक्ष्म देह- निरन्तर बन-अभिमान में से कोई भी अभिमान है तो न आकारी फरिश्ता नेचुरल सकते, न निराकारी बन सकते। क्योंकि आकारी फरिश्ते में भी देहभान नहीं है, डबल लाइट है। देहअहंकार निराकारी बनने नहीं देगा। सभी ने- इस वर्ष अटेन्शन अच्छा रखा है, उमंगउत्साह भी है-, चाहना भी बहुत अच्छी है, चाहते भी हैं लेकिन आगे और अटेन्शन प्लीज-चेक करो !"किसी भी प्रकार का अभिमान वा अहंकार नेचुरल स्वरूप से पुरुषार्थी स्वरूप तो नहीं बना देता है? कोई भी सूक्ष्म अभिमान अंश रूप में भी रहा हुआ तो नहीं है जो समय प्रमाण और कहाँ सेवा प्रमाण भी इमर्ज हो जाता है?" क्योंकि अंशरखा मात्र ही समय पर धोखा देने वाला है। इसलिए इस वर्ष में जो लक्ष्य- है, बापदादा यही चाहते हैं कि लक्ष्य सम्पन्न होना ही है।

26.3.93..... देहबन्धन-अभिमान में आना अर्थात् कर्म- में आना। देह सम्बन्ध में आना अर्थात् कर्मसम्बन्ध में आना।- दोनों में अंतर है। देह का आधार लेना और देह के वश होनाकारी आत्मा देह का आधार लेकर देह के बंधन दोनों में अन्तर है। फरिश्ता वा निरा- में नहीं आयेगी, सम्बन्ध रखेगी लेकिन बन्धन में नहीं आयेगी।

15.11.99... माया के दरवाजे हैं - ``में और मेरा"। तो तन भी आपका नहीं, फिर देह- !अभिमान का मैं कहाँ से आयामन भी आपका नहीं, तो मेरामेरा कहाँ से आया-? तेरा है या मेरा है? बाप का है या सिर्फ कहना है, करना नहीं? कहना बाप का और मानना मेरा सिर्फ पहला वायदा याद करो कि न !बॉडी- कान्सेस की- `में है, न मेरा'। तो जो बाप की आज्ञा है, तन को भी अमानत समझो। मन को भी अमानत समझो। फिर मेहनत की ज़रूरत है क्या? कोई भी कमज़ोरी आती है तो इन दो शब्दों से आती है - ``में और मेरा"। तो न आपका तन है, न बॉडीकान्सेस का- ``में"। मन में जो भी संकल्प चलते हैं अगर आज्ञाकारी हो तो बाप की आज्ञा क्या है? पॉजिटिव सोचो, शुभ

भावना के संकल्प करो। फालतू संकल्प करो यह बाप की आज्ञा है क्या -? नहीं। तो जब आपका मन नहीं है फिर भी व्यर्थ संकल्प करते हो तो बाप की आज्ञा को प्रैक्टिकल में नहीं लाया ना सिर्फ एक शब्द !याद करो कि - 'मैं परमात्मआज्ञाकारी - बच्चा हूँ।' बाप की यह आज्ञा है या नहीं है, वह सोचो। जो आज्ञाकारी बच्चा होता है वह सदा बाप को स्वतः ही बाप के :ही प्यारा होता है। स्वतः स्वतः ही याद होता है। : समीप होता है। तो चेक करो मैं बाप के समीप, बाप का आज्ञाकारी हूँ? एक शब्द तो अमृतवेले याद कर सकते हो - 'मैं कौन?' आज्ञाकारी हूँ या कभी आज्ञाकारी और कभी आज्ञा से किनारा करने वाले?

12.12.98... आजकल तो मेरेका झमेला ज्यादा हो गया है मेरे में एरिया-, मेरी एरिया ! विश्वकल्याणकारी की क्या हद की एरिया होती है? यह सब छोड़ना पड़ेगा। यह भी देह का अभिमान है। देह का भान फिर भी हल्की चीज़ है, लेकिन देह का अभिमान यह बहुत सूक्ष्म है। मेरामेरा इसको ही देह का अभिमान कहा जाता है।- जहाँ मेरा होगा ना वहाँ अभिमान ज़रूर होगा। चाहे अपनी विशेषता प्रति हो, मेरी विशेषता है, मेरा गुण है, मेरी सेवा है, यह सब मेरापन यह प्रभू प्रसाद है -, मेरा नहीं। प्रसाद को मेरा मानना, यह देहअभिमान है। यह अभिमान छोड़ना ही सम्पन्न बनना है।- इसीलिए जो वर्णन करते हो फरिश्ता अर्थात् न देह अभिमान, न देहभान-, न भिन्नपन -भिन्न मेरे- के रिश्ते हों, फरिश्ता अर्थात् यह हद का रिश्ता खत्म।

20.2.2001.... सबसे बड़े ते बड़ा देहअभिमान का कारण है- "मैं पन"। यह "मैं पन" जब अर्पण कर लेते हो तब ही ब्राह्मण बनते हो। तो बकरा भी क्या करता है? मैं, मेंतो ... पन बहुत सूक्ष्म भी-अभिमान का मैं-पन की निशानी है और देह-अभिमान के मैं-यह देह है और भिन्नभिन्न प्रकार का भी है। सबसे पहला मैं पन है मैं शरीर हूँ -, फलाना हूँ। फिर आगे चलो तो सम्बन्ध में फंसने का भी भिन्नपन है। और आगे चलो -भिन्न मैं-पन -पन है। उससे भी सूक्ष्म अपनी विशेषता का मैं-न्न पोजीशन का भी मैंभि-तो भिन्न ऊपर से नीचे ले आता। विशेषता हर एक में है, ऐसी कोई भी मनुष्य आत्मा नहीं है जिसमें चाहे स्थूल, चाहे सूक्ष्म कोई भी विशेषता न हो, यह नहीं। ज्ञानी जीवन में भी हर ब्राह्मण के अन्दर कम से कम एक विशेषता अवश्य है, लेकिन ज्ञानी जीवन में विशेषता परमात्म देन है, परमात्मा की सौगात है। जब परमात्मा की देन को देह-पन में लाते हैं-अभिमान वश मैं, मैं ऐसा हूँ, यह रॉयल अभिमान बड़ेबड़ा-ते- 'मैंपन-' है। तो समर्पण तो हुए ही हैं लेकिन आगे क्या देखना है?

टीचर्स सभी अपने को क्या कहती हैं? समर्पण हैं नाटीचर्स सभी समर्पण हैं !? अच्छा-प्रवृत्ति में रहने वाले समर्पणहैं? हाँ या ना? पाण्डव समर्पण हैं? बहुत अच्छा मुबारक

हो। आगे क्या करना है? समर्पण तो हो गये, बहुत अच्छा। अभी आगे यह चेक करना है, बतायें क्या? आप कहेंगे समर्पण तो हैं ना फिर क्या करना है? तो एक है समर्पण और आगे है - 'सर्व समर्पण'। 'सर्व' में विशेष अन्डरलाइन है अपने मनसंस्कार -बुद्धि-सहित समर्पण क्योंकि जितना आगे बढ़ते हो, पुरुषार्थ में तीव्रगति से कदम उठाते हो और उठा भी रहे हो लेकिन वर्तमान वायुमण्डल प्रमाण ब्राह्मण जीवन में भी मन और बुद्धि के ऊपर व्यर्थ का प्रभाव, बुरा नहीं, बुरा खत्म हुआ लेकिन व्यर्थ और निगेटिव का प्रभाव ज्यादा है, इसलिए यथार्थ और सत्य निर्णय करने की महसूसता शक्ति कम हो जाती है। समझ से महसूसता होती है हाँ यह रांग है -, यह ठीक नहीं है लेकिन एक है विवेक से महसूसता, दूसरा है दिल से महसूसता। अगर दिल से कोई भी बात को महसूस कर लिया तो दुनिया बदल जाए लेकिन स्वयं नहीं बदलेगा। और संस्कार, पुराने 63 जन्मों के होने के कारण नेचुरल हो गये हैं, जिसको दूसरे शब्दों में कहते हो 'यह गलती नहीं है लेकिन मेरी नेचर है'। तो पुराने संस्कार कुछ मिटते हैं, कुछ दब जाते हैं फिर निकल आते हैं। लेकिन सर्व समर्पण का अर्थ है- मन का भाव और भावना हर आत्मा के प्रति परिवर्तन हो जाए, जिसको बापदादा कहते हैं कैसी भी आत्मा हो, भिन्नभिन्न तो होगी ही-, कल्प वृक्ष है, वैरायटी नहीं हो तो शोभा नहीं लेकिन हर आत्मा के प्रति शुभ भावना और शुभ कामना। अशुभ भावना को भी परिवर्तन कर शुभ भावना रखना वा शुभ भावना देना। हर आत्मा के प्रति शुभ कामना, यह अवश्य बदलेंगे। ऐसा नहीं कि यह तो बदलना ही नहीं है, उसके प्रति जज बनके जजमेंट नहीं दो, यह बदलना ही नहीं है। जब चैलेन्ज की है कि प्रकृति को भी परिवर्तन कर सतोगुणी बनाना ही है, बनाना ही है। बनेगी, नहीं बनेंगी क्वेश्चन - नहीं, बनाना ही है। 'ही' शब्द को अन्डरलाइन किया है। तो क्या प्रकृति बदल सकती है, आत्मा नहीं बदल सकती? आत्मा तो प्रकृति का पुरुष है। तो प्रकृति बदले, पुरुष नहीं बदले क्यों? तो वर्तमान समय यह मनसंस्कार-बुद्धि-, स्व के परिवर्तन और सर्व के परिवर्तन यही सेवा है। -

3.2.2002... स्वमान और देह-अभिमान। देह-अभिमान का कारण है स्वमान में कमी हो जाती है। तो देह-अभिमान को मिटाने का बहुत सहज साधन है - देह-अभिमान आने का एक ही अक्षर है, एक ही शब्द है, वह जानते भी हो। देह-अभिमान का एक शब्द कौन-सा है? (में) अच्छा तो कितना बारी में-में कहते हो? सारे दिन में कितने बारी "में" बोलते हो, कभी नोट किया है? अच्छा एक दिन नोट करना। बार-बार में शब्द तो आता ही है। लेकिन मैं कौन? पहला पाठ है, मैं कौन? जब देह-अभिमान में मैं कहते हो, लेकिन वास्तव में मैं हूँ कौन? आत्मा या देह? आत्मा ने देह धारण की, या

देह ने आत्मा धारण की? क्या हुआ? आत्मा ने देह धारण की। ठीक है ना? तो आत्मा ने देह धारण की, तो मैं कौन? आत्मा ना! तो सहज साधन है, जब भी मैं शब्द बोलो, तो यह याद करो कि मैं कौन-सी आत्मा हूँ? आत्मा निराकार है, देह साकार है। निराकार आत्मा ने साकार देह धारण की, तो जितना बारी भी मैं-मैं शब्द बोलते हो, उतना समय यह याद करो कि मैं निराकार आत्मा साकार में प्रवेश किया है। जब निराकार स्थिति याद होगी तो निरहकारी स्वतः हो जायेंगे। देह-भान खत्म हो जायेगा। वही पहला पाठ मैं कौन? यह स्मृति में रख करके मैं कौन-सी आत्मा हूँ, आत्मा याद आने से निराकारी स्थिति पक्की हो जायेगी। जहाँ निराकारी स्थिति होगी वहाँ निरहकारी, निर्विकारी हो ही जायेंगे। तो कल से नोट करना - जब मैं शब्द कहते हो तो क्या याद आता है? और जितना बारी मैं शब्द यूज करो उतना बारी निराकारी, निरहकारी, निर्विकारी स्वतः हो जायेंगे।

28.2.2003... एक बॉडीकॉन्सेप्सनेस का 'मैं' बदल जाए, 'मैं' स्वमान भी याद दिलाता है और 'मैं' देह-अभिमान में भी लाता है। 'मैं' दिलशिकस्त भी करता है और 'मैं' दिलखुश भी करता है और अभिमान की निशानी जानते हो क्या होती है? कभी भी किसी में भी अगर बॉडीकॉन्सेस का अभिमान अंश मात्र भी है, उसकी निशानी क्या होगी? वह अपना अपमान सहन नहीं कर सकेगा। **अभिमान अपमान सहन नहीं करायेगा।** जरा भी कोई कहेगा ना - यह ठीक नहीं है, थोड़ा निर्माण बन जाओ, तो अपमान लगेगा, यह अभिमान की निशानी है।

30.11.2003... जैसे सेकण्ड में लाइट का स्विच ऑन करने से अंधकार भाग जाता है, अंधकार को भगाया नहीं जाता है या अंधकार को निकालने की मेहनत नहीं करनी पड़ती है लेकिन स्विच आन किया अंधकार स्वतः ही समाप्त हो जाता है। **ऐसे स्वमान की स्मृति का स्विच ऑन करो तो भिन्न-भिन्न देह-अभिमान समाप्त करने की मेहनत नहीं करनी पड़ेगी।** मेहनत तब तक करनी पड़ती है जब तक स्वमान के स्मृति स्वरूप नहीं बनते।

18.1.2005.... इस ब्राह्मण जीवन में सबसे ज्यादा विघ्न रूप बनता है तो देहभान का मैं-पन। करावनहार करा रहा है, मैं निमित्त करनहार बन कर रहा हूँ, तो सहज देह-अभिमान मुक्त बन जाते हैं और जीवनमुक्ति का मज़ा अनुभव करते हैं।

ओम शांति

अव्यक्त वाणी संकलित विकर्माजीत भव पुस्तिका

भाग 1

कामना / काम
क्रोध
लोभ
मोह
अहंकार
रोब
5 विकार कम्बाइंड
जिद
कमी कमजोरी

भाग 2

अधीनता
अपवित्रता
असफलता
आसक्ति
आकर्षण
आलस्य /
अलबेलापना
अवज्ञा
असंतुष्टता
कोमलता

भाग 3

बंधन
भारीपन / बोझ
चिंता
कम्प्लेंटस्
इफेक्ट और डिफेक्ट
देह अभिमान

भाग 4

देह अभिमान
दुख
फिकर
घृणा
हिंसा
ईर्ष्या
लगाव-झुकाव
चंचलता

भाग 5

इच्छा
उलझन
रोना
व्यर्थ संकल्प
सुस्ती
स्वभाव संस्कार

भाग 6

मैं और मेरापन
नाज नखरे
नाराज
परदर्शन
मुश्किल

भाग 7

मनमत
निर्बल
परेशान
संशय बुद्धि
थकावट
वेस्ट अँड वेट
प्रभावित होना

भाग 8

विघ्नरूप
परचिंतन
संगदोष
टेन्शन
उदासी

अव्यक्त वाणी संकलित अन्य पुस्तकें

- मेरे ब्रह्माबाबा
- दिव्य गुण (भाग 1-6)
- दिव्य शक्तियाँ (भाग 1-4)
- सहज योग (भाग 1-4)
- उदाहरण मूर्त भव।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क : -

बी. के. निलिमा : (मो) 9869131644, 8422960681